

गंगारो का गंगर दवाड़ भी इलाज है,
मगर मौत का कोई इलाज नहीं।
दुनियावां हँस्ताव-किंताव है,
कोई दमा-प-युदाई नहीं।

V- 12

ASTROLOGY BASED ON PALMISTRY

ज्योतिष की
मदद से हस्त रेखा के जारिये दर्रस्त
की हुई जन्म कुण्डली से जिंदगी के हालात देखने के लिए

Free by Astrostudents



शर्मा गिरधारी लाल,

पद	पृष्ठ नं.
वृहस्पति	1
वृहस्पति घाना नं:	1 5
" " नं: 2	9
" " नं: 3	12
" " नं: 4	13
" " नं: 5	16
" " नं: 6	18
" " नं: 7	19
" " नं: 8	21
" " नं: 9	23
" " नं: 10	24
" " नं: 11	27
" " नं: 12	29

सूर्य	31
सूर्य घाना नं:	1 36
" " " 2	38
" " " 3	39
" " " 4	40
" " " 5	42
" " " 6	44
" " " 7	46
" " " 8	49
" " " 9	50
" " " 10	51
" " " 11	53
" " " 12	54

चन्द्र	55
चन्द्र घाना नं:	1 61
" " " 2	63
" " " 3	65
" " " 4	68
" " " 5	70
" " " 6	72
" " " 7	73
" " " 8	75
" " " 9	77
" " " 10	79
" " " 11	82
" " " 12	83

शुक्र	87
शुक्र घाना नं:	1 89
" " "	2 91
" " "	3 94
" " "	4 95
" " "	5 97
" " "	6 99
" " "	7 102
" " "	8 105
" " "	9 106
" " "	10 108
" " "	11 109
" " "	12 111

मंगल	112
मंगल घाना नं:	1 115
" " "	2 116
" " "	3 117
" " "	4 119
" " "	5 122
" " "	6 124
" " "	7 125
" " "	8 127
" " "	9 128
" " "	10 129
" " "	11 131
" " "	12 132

वृद्ध	134
वृद्ध घाना नं:	1 139
" " "	2 141
" " "	3 143
" " "	4 145
" " "	5 146
" " "	6 147
" " "	7 149
" " "	8 150
" " "	9 153
" " "	10 155
" " "	11 156
" " "	12 157

शनि	160
शनि घाना नं:	1 164
" " "	2 166
" " "	3 168
" " "	4 170
" " "	5 171
" " "	6 173
" " "	7 175
" " "	8 177
" " "	9 178
" " "	10 181
" " "	11 182
" " "	12 184

राहु	186
राहु घाना नं:	1 188
" " "	2 190
" " "	3 191
" " "	4 192
" " "	5 193
" " "	6 195
" " "	7 196
" " "	8 198
" " "	9 199
" " "	10 200
" " "	11 201
" " "	12 205

केतु	
केतु घाना नं:	1 207
" " "	2 208
" " "	3 208
" " "	4 210
" " "	5 211
" " "	6
" " "	7
" " "	8
" " "	9

वृहस्पति

फियाता जपत मुरु ब्रह्मा जी

दो रंगी दुनिया के रंग दोनों देखो¹मगर आख दुःख जाए अपनी न देखो²

1. दो रंगी दुनिया एक मूँह काली तो दूधरी सफेद ।

2. दर्द आख, मकानों, मशीनों की खराखियां, शानु या सांप की गंदी पटनाएं धोखा देही या जहमत की बीमारियां बर्दां ।

मनुष्य की मुट्ठी के अन्दर खाली खलाझों या आकाश में फेले रहने, हर दो जहान में जा सकने और सेरे ब्रह्माण्ड तथा मनुष्य के अंदर बाहर चक्कर लगाने वाली हवा को ग्रह मंडल में वृहस्पति के नाम से याद किया जाया है । जो बंदहास्त में कुदरत के साथ कही हुई भाग्य का भेद और खुल जाने पर अपने जन्म से पहले भेजे हुए खजाने का मुक्त और बंद और खुली हर दो हालत की बीच की हर प्राणी के जन्म लेने तथा मर जाने का बहाना होगी ।

३. ये ग्रह दोनों ही जहानों या स्थानी गाना गया है और वृहस्पति सब ग्रहों का गुरु है अतः एक ही घर में देठे वृ. का असर देशक राजा या फकीर, सोना या पीतल, सोने की बनी लंका तक दान कर देने वाला प्राणी या सारे जमाने का चार सालू निश्चक पर्व ईमान न हो हर दो हालत में से चाहे किसी भी दंग का हो, मगर उसका दुख असर शुरू होने की निश्चानी सदा शनि के प्रभाव के जरिये होगा³ और शुभ प्रभाव स्वयं वृ. के गुरु की ओरें या [जद्दी जपह]⁴ से उत्पन्न होगी ।

विभिन्न भावों में वृहस्पति की दोहरी चालें

घर शुभ हालत	अशुभ हालत
1 प्रसिद्ध राजा	फकीर कमाल का मगर निर्धन
2 सबको यांटने याता जगत गुरु	अपने घर को बरबाद करे या कुलनाशक
3 शेरों का प्रसिद्ध शिकारी	मुजदिल, मनहूस, भ्रेदभाव
4 राजा इन्द्र और विक्राण्डित्य के साथ का स्थानी	धन्यवाद से चाहे किसी भी दंग का हो
5 औलाद के जन्म दिन से प्रसन्न	बच्चा ऐट से ही मुर्दा पेदा हो
6 हर वर्तु थपने-आप मिले	निर्धनता से दम पुटता है
7 धर्म कार्य का मुखिया व धनी	इसका दत्तक पुत्र भी दुखी ही हो
8 सोने की लंका भी दान कर दे	धन खजाने की राख का स्थानी
9 परेतु चमकता सोना, पैतृक नस्त	भाग्य में रेत के बरबार भी चमक नहीं
10 जिर कदर टेढ़ा चले, मिट्टी सोना हो	निर्धन, दुःखी
11 सांप भी उजदा करे	कफन भी पहुंचा हो
12 दीत्या की तरह घर में धन आये	धन का प्रयोग न कर रुके चाहे राज्यानी का त्वानी हो

वृहस्पति में मिलावट

1। नर ग्रह [वृ., म.] के साथ या दृष्टि आदि दे मिलने पर तांबा सोना हो जायेगा ।

2। स्त्री ग्रह [शु. च.] के साथ या दृष्टि से मिट्टी से भय पानी भी उत्तम दूष बन जायेगा ।

3। वृहस्पति के सिना सब ग्रहों में मिलने जुलने की या दृष्टि की शक्ति पेदा न होगी ।

4। पाणी ग्रह [श., के. तथा रा.] के गंदे होने पर वृ. सोने की जगह पीतल दोगा, दोगा की जगह जहरीली भी होगी ।

5। वृ. और यह दोनों याना नं. 12 [आणगान] में इकट्ठे ही जाने गंय हैं । वृ. दोनों जहां भी तथा दृष्टिगंचर का मातिक दे जियां आने जाने के लिए भीले रंग में राहु का आत्मानी दरवाजा है अतः जेगा ये दरवाजा होगा यैसा ही हवा के जाने

'जाने या मान जागा । अगर राहू टेढ़ा चलने वाला हाथी, सांस को रोकने वाला कड़वा पुआं या जर्मान को पाताल ऐ भूताल
; बनकर हिताजा रहे तो वृ. भला नहीं हो सकता ।

उच्च राहू या पहले वैठा, आया तरफ गुरु पहली हो
गुरु मालक हो दोनों जहां का, शक्ति भी तथा स्थानी हो
दागर हालत में गुरु गृहस्थी, मालिक जहां इक होता हो
मापा दौलत का बन्दा गुलामी, ताकह स्थानी धीड़ल है

- 6। यदि राहू उत्तम दरवाजा हो, तो वृ. वुध प्रभाव न देगा ।
- 7। अकेला वृ. [हर तरह से] चाहे वह दृष्टि आदि से कितना ही मंदा हो जातक पर कर्मी वुध प्रभाव न देगा ।
- 8। बरवाद हो चुन्ना वृ. आम असर के लिए खाली दुध गिना जायेगा जिसका फैलता दुध के अपने स्वभाव पर होगा ।
- 9। शमु ग्रहों [उ., शु., ई., श.] पापी ग्रह यानि जब श. की राहू या केतु किंजी तरह भी साय या दृष्टि से आ मिलते होने के समय मंदा हो जाने की हालत में वृ. सदा वृ. का प्रभाव ही देगा और वृ. उपाय योग्य होगा जिसके लिए सापी शमु ग्रह का उपाय सहायता देगा ।
- 10। ग्रह मंडल के सब ग्रहों को छेड़छाड़ करने, राहू केतु को चलाने आला वृ. है, याने ए., के. की झटक करने से पहिले वृ. स्वयं अपनी चाँजों या कार्य या रिस्तेदार वायत वृ. के जरिये खबर दे देगा इच्छिए कहा है :
असर जलत दो जहान¹ का, ग्रहण² शमु³ सायी जो ।
चोर बनता 6 तो 11, मंगल टेवे जहरी⁴ जो ॥
- 1। दोनों ही [जानने या दुष्प्रयुक्ति हुए] जहान या वृ. के नेक और बुरे हर दो तरह के अचरणों की शक्ति ।
- 2। सूर्य ग्रहण [ए., सू. एक साय], चं. ग्रहण [चं., के. एक साय] वृ. के शमु ग्रह वृ., शु., ई. या श. पापी ग्रह ।
- 3। खाना नं. 2-9-11-5 में वृ. ए. एक साय या जुदा जुदा हो तो वृ. का असर मंदा ही होगा ।
- 4। मंदा मंगल वद या मंगलीक जिसके लिए मं. खाना नं. 4 देखें ।

पिण्य घर में वृ. देख हो

1 से 5 तक या 12 में
6 ऐ 11

पिस ग्रह को सहायता देगा

श. और सू. दोनों
केवल श. को

बृहस्पति 12 घण्ठे में आम हालत

विद्या आयु घर पहले सोना¹ गुरु जगा घर दूर्घ हो² ।
शेर गरजता तीसरे माना, भला वैठा दुध जब तक हो ।
चोय बिक्रमी³ तख्त बर्तासी⁴, पांच पूर्व ग्रहण होता हो ।
जटे मिले हर चीज जो मुफ्ती, दुखिया रेट घर छरवें हो ।
भाग्य उदय 8 आपु हो लंयी, योगी 9वें स्वयं बनाता हो ।
10वें कगी घन, चाहे असल हो कितनी, धर्म कर्म घर ॥ ११ हो ।
राहू कैन्तु प्रभालत पर यहत की निद्रा, गृहस्थि सुखी घर 12 हो ।
काम छोड़े जब राम भरोगा, शमु देरी तिर कटता हो ।

- 1। जब वृ. जानता और यायम हो ।
- 2। जब तक नं. 8 चाँजी हो, वृ. का स्थानी असर उत्तम होगा ।
- 3। यहां पिक्रमर्दित्य [मुंपत वाला]

4। 32 पर्वतों के कन्धों पर उड़ता रहने वाला तच्छ ।

३. का साना होगा

२ धर्म स्थान

११ वृ. के पर्वत दरवार लगाने और वृ. की अपने जज की प्रति भैंसे की जगह

वह जगह जहां धर्म का कारोबार एवं पूजा उपदेश हो ।
धर्म अदालत अलंकारी आवाज का दरवार ।

१२ वृ. की समाप्ति लगाने की जगह

परलोक की हवा, गुन्त पर्विक विचार, प्रजा ।

५ संतान के सून में धर्म और सोने का हिस्सा ऐद करने वाला गृहस्थी पर्वतार का स्थानी ।

९ सोने की तरह पृथ्वी [पूर्वजों की हालत] जैसा सोने का देवता, दोनों जहान के धर्म की नाली, घर से ही धर्म का स्थानी ।

१-४-० जातक के अपने लिए उत्तम, प्रकृति साय लाई हुई भाग्य का भेद, अपने शरीर के लिए उत्तम, हकीकी और दुनियावी

७-१० प्रेम की ताकत, आंतरिक शक्तियाँ, दुनियावी ताकत की बरकत हो ।

१ रे ५ उत्तम आएम देने वाला, उत्तम सहायक, सुरक्षा जैसा बृहस्पत होगा ।

तथा १२ ६ से ११ मंदी हालत, वृ. लोहे जैसा, निर्धन,

३, ५, ९, ११ बाहरी चातु, व्यवहार, अपने जन्म से पहले भैंसे खजाने का भेद ही अगले जहान में ले जाने की नेकी चीज़ को पा सकने की शक्ति हो । चमक जो भारी दर्शक होगी ।

२, ८, १२ धन के लिए दरम्यानी हालत में रखेगा, मगर रुहानी हालत में उत्तम, जागती किल्लत का स्वामी हो, हर दो जहान, जन्म से मृत्यु तक हर समय मध्य हालत देगा ।

६ संसार की उत्तमता में जकड़ा साधारण साधु की तरह भाग्य के चक्र में घूमते गृहस्थी की तरह सत्त लेगा हो ।

बृहस्पत का ग्रहों से सम्बन्ध

एहुः जन्म या वर्ष कुंडली में जब राहु कुंडली में उत्तम, उच्च या वृ. से पहले पर्ये में हो यानि । से ६, ८ (३-६ विशेषकर) में हो और वृ. के मित्र ग्रह सू. , चं. , मं. उत्तम प्रभाव के हो ।

कंत्र नेक हो : और भासा ऐ जनी हुई चीजों का उत्तम असर होगा । उत्तम भूतकाल के हालात तुष्ट रहे ।

सूर्य नेक हो : स्वयं अपने आप का और संतान का उत्तम प्रभाव होगा । भविष्य उत्तम, एजा प्रजा को भद्र उत्तम मिलेगी ।

मंस्त नेक हो : मित्र व भाई बन्धु उत्तम सहायक हैं वर्तमान उत्तम ।

मं. वद [सू. के तु एक स्थ] वृ. तो साधु बनकर चोर के काम करे । सोने के नुकसान हो । जातक के रस्ते में रुकावट, य वृ. साना नं. ६ से ॥ हानि की घटनाएं मंदी से निशानी होगी ।

सू. चं. मं. के वर्तिरिक्ष मिली भी उह के सब हो

वृ. केवल एक जहान का स्वामी रहेगा ।

सू. य. साय या चं. के के स्थ हो ।

ना केवल वृ. का अपना प्रभाव मंदा और निराश होगा बल्कि दृष्टि के ढंग पर जिस पर या ग्रह से सम्बन्ध हो वहां भी मंदी हालत हो, निराश हो, दम थोड़ा आंधी हो, या बर्फनी हवा हो, मंदा भाग्य हो ।

मं. उ. या मं. चं., वृ. को देखते हो [असु रेत्य के स्थ एक और रेत्य दोगी]

तो तुष्टी सहायता मिलेगी और वृ. आमु रेता होगा ।

शनि से सम्बन्ध :

श. नं. १ और वृ. नं. ६, ७ या
वृ. नं. १ और ३, ६, ९ में शनि

धन रेखा जो वियाह से और वड़ों जब तक दोनों शनि [वृ. और
श.] में से कोई एक या दोनों नंबर न हो यानि श. नं. १ और
वृ. नं. १० में वर्षफल में न क्या ज्ञाये ।

मेरे फल के समय शनि की चीजें पर्व स्थान में हैं। जब शनि वृ. को देखे किसी और उह के साथ, यद्यपि वृ. और शनि दोनों पुढ़ा-गुढ़ा हो तो इस प्रकार प्रभाव होगा :

शनि टैंठा हो

तो वृ. किसी घर में बेठकर मंदा झर देगा। हालांकि दोनों बराबर के उह हैं।

1
2
3
4
10

7
8, 12
5, 9, 11
2, 8, 10, 11
2, 3, 4, 5

5, 6, 7, 8, 9, 11, 12 में अकेला शनि
1, 6

अकेला ऐसा वृ. कभी मंदा प्रभाव न देगा चाहे वह कैसा भी और
कहीं भी रहे हो।
वृ. का प्रभाव प्रायः मंदा ही होगा।

वृ. अगर हवा माने तो शनि को पहाड़ मिनें। मानसून पवने जब कभी भी पहाड़ से टकरायेंगी ताम्र प्रद वर्षा होगी
लेकिन अगर किसी दूरी वजह से हवा उलट चल पड़े तो न सिर्फ़ शनि के मकान विकावा देखे बत्तेक शनि के पहाड़ों को बारीक
मिट्टी की तरह पीस कर उनके कप-कप उड़ा देगी जिसकी वजह प्रायः शू. व सच्चर की निट्टी या स्त्री जात या श्रीश्रूत्या(मुर्दा
माया)बुद्ध(वापदा फणमोशी)या एहु की गुप्त शरणतों की आदत होगी।

खाना नं. ६ में शनि का अपना प्रभाव सदा शक्की होगा, यद्यपि श. नं. ६ के समय वृ. अवश्य ही मंदा होगा। ऐसे समय
घरते पानी में नारियल या बादाम बहाना उत्तम दोगा।

यदि शनि पहले पर्ये में, वृ. नाद के घरों में तो भारिश की हवा खाली चर्ती जायेगी।

लेकिन वृ. पहले घरों में, शनि नाद के घरों में तो कीमती वर्षा होगी।

वृ. देखता हो शनि को

दृष्टि 50 प्रतिशत

वृ. का घर

शनि का घर

झर

5 9

जादूरी का स्वामी कर देगा।

3 9 या 11

योगाध्यात्म का स्वामी।

दृष्टि 25 प्रतिशत

2 6

योगाध्यात्म का स्वामी।

8 12

शनि देखता हो वृ. को :

उम्र शनि में पिता पर भारी, मकान शनि जब बनता हो।

पश्चा चन्द्र पन हर दम जारी, जर्मन चन्द्र पर रखता है।

शनि २ या ५ में और वृ. हो ९ या १२ में और शनि की आयु के ९, १८, ३६ वर्ष वृ. [पिता, जन्म, मुस्त] की आयु तक
के लिए मंदा, नियमित सूक्त उच्चके मकान में लांडे का ताता [मकान बंद रहना] मंद भाव या अतर्क्ष दोगा। कुदरती और शारीरिक
कमज़ोरी और पन की हातत नहीं होगी।

केतु'से सम्बन्ध :

जब वृ. और केतु दोनों जुदा-जुदा हो और केतु पहले घरों में, वृ. बाद के घरों में तो वृ. भंडा होगा ।

वृ. पहले घरों में, केतु बाद के घरों में तो दोनों की व्यापक चन्द्रफल रुदी हो ।

कुप से सम्बन्ध :

वृ. के साथ या वृ. की दृष्टि में कुप हो तो वृ. का ही नाश हो जायेगा । परन्तु 2 और 4 में कुप अकेला या वृ. के साथ सदा अच्छा प्रभाव देगा, दुश्मनी न करेगा । विशेषकर माती हालत भंडी न होगी । यदि कुप कुंडली के बाद के घरों में [1] से [2] यदि वृ. पहले घरों में [1] से [6] तो वृ. का 34 साला उमर तक अच्छा फल और कुप का 35वाँ वर्ष भंडा प्रभाव शुरू कर देगा और यदि कुप कुंडली के पहले घरों में और वृ. बाद के घरों में हो तो कुप 34 साल तक अच्छा और वृ. 34 साल तक मन्दा रहेगा । गले कि कुप और वृ. आपस में देख रहे हों तो वृ. का अचर भंडा ही होगा बल्कि वृ. को कुप बपने चक्र में बाय लेगा । ऐसी हालत में वृ. का विगङ्गा अचर निम्नतिथित हालत पेदा होने पर ठीक होगा :

1- वृ. अपनी चाल के हिसाब से [यानि वर्षफल में] शनि के घरों [10, 11] में आ जाये या जब श.स. में से कोई वर्षफल में वृ. के घरों [2, 5, 9, 12] में आ जाये या जब शनि खाना नं.5 में आये और सूर्य खाना नं.2, 5, 9, 12 में हो जाये ।

ऊपर कही हुई हालत में यदि सू. चं. श. में से कोई भी शुभ हो तो वृ. का प्रभाव नेक होगा बरता बिना भत्तलव और तवाह करने वाली कहानियों में एत गुजारता होगा ।

वृ. का प्रभाव खाना नं.।

इस रुज तेह खाने की चाबी, फकीरी पूर्व या पावण नवाची ।

एक ही समय पेदा हुए ये दो भाई, एक रुज हो दूषण फकीर बना है ।

विद्या ऊंची हो कोई डिग्री, लम्बी आयु धन विधाता हो ।

आप देवे ऋषि² टेवे वी.ए. पद्म ना कुत कोई हो ।

केतु³ चन्द्र कुप अच्छे होते, पीरी रुज सन्यासी हो ।

सूर्य शनि⁴ आठ ग्यारह मंदे, गुरु हवा तब भिट्टी हो ।



हस्त रेखा : वृहस्पति रेखा : भाग्य रेखा की जड़ पर जब चार शाखाएँ रेखा हो । सूर्य के नुज़ पर कुप की ओर एक चक्कर हो वृ. का अपना निशान ५/ या दोनों हाथों को इकट्ठा बिनकर उम्हिलियों पर एक शंख या एक चक्कर या एक सीरे रेखा वृ. के पर्वत पर हो ।

1. चाहे एक ही माता से या एक समय दो माताओं से एक रुज के यहाँ दूषण निर्वन के पर जन्म से परन्तु वह भाई के जाएंगे ।
2. ऋण पितृ : खाना नं. 2, 5, 9, 12 में कुप, शुक्र, एहू या श. पापी ग्रह होकर हों तो ऋण पितृ होगी ।
3. केतु नं. 5 में उत्तम, 16 से 75 साला आयु सुखी, ओलाद से, चं. 5 में हो तो आखीरी आयु सुखी । वृ. 5 में हो तो रुज़ ।
4. सू. श. स्वयं मंदे या जिस जमह इनका प्रभाव भंडा गिना गया है ।
नं. 7, 8 दूर्घट के सम्बन्ध में, 8, 11 अपने भाग्य के सम्बन्ध में ।

शुभ हालत :

अपना भाग्य अपने दिगाव ऐ, रुज दरवारी लोगों की मिस्रता ऐ मंडेगा । वृ. की यस्तुएँ रिश्तेदार या काम में भाग्य उदायता भिसरी भीर उच्च नीच शाना नं. 11 में उपा पार्मिक भेद और दूर्घट जहान का आम या सांसारिक सम्बन्ध खाना नं. 8 नें गुरु के हालत पर होगा । व्याप्र : पेशार्नी से फ़सल दोगा । पर नं. 11 देखे ।

लगन, मनुष्य और माया के मिलाय की जगह, वक्त की इकूमत के स्वानं का तत्त्व मत्त है। वृ. खाना नं. । में हो, यह यिद्या पार हो या न हो, घनवान अवश्य कर देगा, जातक का पर्व, दयातुला से उसे हरदन तरकी हो। भाग्य 5। साता आपु तक साय देगा। चं. का वस्तुएं के काम से, या चं. सम्बन्धी रिश्तेदार सहायता पर होंगे। के. की वस्तुएं काम या के. सम्बन्धी रिश्तेदारों का फल उत्तम होगा। स्त्री या शु. की वस्तुएं या रिश्तेदारी उत्तम अपने तिए नेक, एजदरबारी और भद्रती मुकदमें या लझर्ड मगड़े। शु. की वस्तुएं या सम्बन्धी से शुभ परिणाम। स्वास्थ्य कच्छा और शंखर तंदुल्स्त होगा।

मकान जापदाद, शनि की वस्तुओं का या सम्बन्धी, काम औरों की दृष्टि कभी खण्डन न होनी, शेर की तरह गुस्सा होते हुए भी वह साफ दित, शान्त वृत्त का मनुष्य होगा जिसमें चालाकी को फोल उठाने और खेलने की शक्ति होगी। शनुओं के होते हुए भी टेरेंग नहीं, विनय सदा साय देगी। औलाद की उमर में क्रम में 8 वर्ष से अधिक बंतर नहीं होगा। जब कभी 8 से अधिक हो जावे तो आगे औलाद न होंगी। आपु का हर आठवां वर्ष उन्नति का न होग, घरे होग तो उसका बचन और आशीर्वाद सदा पूर्ण होगा। परन्तु दूसरे के लिए श्राप या बुध सोचने से उसका अपना श्राप खण्डन होगा।

- | | |
|---|--|
| 1. जातक की एग्य यिद्या, गी.ए. या कोई जंसी डिग्री
होगी। घनवान होने की बात शनि कहेगा।
[स्थाप्त : उंगलियों की पोरी में दो सदफ हो।] | पर्दि खाना नं. 7 में कोई न कोई उह अवश्य हो। [यह मिन्न चाहे शनु और खाना नं. । में वृ. के शनु न हो।] |
| 2. जातक कई प्रकार की विद्याएं जानता है और राजा की
भाँति उत्तम हाकिम होगा। [उंगलियों की पोरी में एक
चक्कर हो।] | पर्दि ऊपर की हालत के साय जब कुछ भी उत्तम हो। |
| 3. वृ. की आपु [4, 8, 16 सात की आपु] से माता पिता को
और उनसे सुख होगा और स्वयं उसकी अपनी आपु 75
वर्ष आपु तक का सुखिया भाग्य होगा। भाग्य मुलारी
पर हो। [उंगलियों की पोरी पर एक शंख हो।] | जब केतु उत्तम हो। |
| 4. आपु के साय-साय सुख भी बढ़ता जाये। नेक, उत्तम
राजा, या उत्तम हाकिम होते हुए, आविर आपु सन्धारी
की भाँति हो। लोगों का भला करे या करना पड़े।
जिसका फल उत्तम हो। | जब चन्द्रमा उत्तर हो। |
| 5. पुरखों से जापदाद घन या विरुद्धत में सोना मिले। | जब खाना नं. 1, 2, 5, 9, 11, 12 में वृ. के शनु न हो और
साय ही खाना नं. 7 उत्तम हो। |
| 6. अपनी कमाई से पीले रंग के सामान की अधिकता और
बरकत होनी। स्त्री पूजन, खूबसूरत मिट्टी या स्त्री की
पातना या गाय रेवा फालतू पन की नींव होंगे। शुक्र
की हफ्तोंकी ओर जैर हफ्तोंकी प्रेम। | जब खाना नं. ।। उत्तम हो। |
| 7. विवाह से या शुक्र के काम या सम्बन्धी कायम करने से
बढ़ेगा। | पर्दि खाना नं. 7 खाती हो। |
| 8. 28 वर्ष की आपु से पहले या 24वें या 27वें याल स्वयं
अपनी शादी या अपने पिता सून के रिश्तेदार की शादी
या अपनी रामाई से भयन बनाने या नर औलाद के हो
जाने से पिता की आपु पर भारी होगा। मिट्टी में मंगल
की वस्तुएं देखने से लाप होगा। | पर्दि खाना नं. 7 खाती हो। |

समन, मनुष्य और माया के मिलाप की जगह, वक्त की इकूमत के स्वानं का तज्ज्ञ मना है। वृ. खाना नं. 1 में हो चाहे यिथा पार हो या न हो, घनयान अवश्य कर देगा, जातक का पर्व, दयालुता उे जहे हरदन तत्काली हो। भाग्य 5। साल आयु तक साय देगा। चं. की वस्तुएं के काम से, या चं. सम्बन्धी रिश्तेदार सहायता पर होंगे। के. की वस्तुएं काम या के. सम्बन्धी रिश्तेदारों का फल उत्तम होगा। स्त्री या शृं की वस्तुएं या रिश्तेदारी उत्तम अपने लिए नेक, उजदरवारी और अदातरी मुकदमे पा लड़ाई झगड़े। शृं की वस्तुएं या सम्बन्धी से शुभ परिणाम। स्वास्थ्य बच्चा और शर्हर तंदुरुस्त होगा।

मक्कन जायदाद, शनि की वस्तुओं का या सम्बन्धी, काम आदि की दृष्टि कभी खण्ड न होनी, शेर की तरह गुस्सा होते हुए भी वह सफ दिल, शान्त वृत्त का मनुष्य होगा जिसमें चालाकी को फोरन उन्नति और ठेकने की शक्ति होगी। शशुओं के होते हुए भी ढरेगा नहीं, विजय सदा साय देगी। औलाद की उमर में क्रम में 8 वर्ष से अधिक बंतर नहीं होगा। जब कभी 8 से अधिक हो जावे तो आपे औलाद न होंगी। आयु का हर आठवां वर्ष उन्नति का न होगा, यदि होगा तो उसका बचन और आशीर्वाद सदा पूरा होगा। परन्तु दूरों के लिए आप या तुम सोचने से उसका अपना आप खारब होना।

1. जातक की एज्य यिथा, बी.ए. या कोई जंची डिग्री

होगी। पनयान होने की बात शनि कहेगा।

अक्षयप्रभ : उंगलियों की पोरी में दो सदफ हो।।

गदि खाना नं. 7 में कोई न कोई उह अवश्य हो। यह मित्र चाहे

शशु और खाना नं. 1 में वृ. के शशु न हो।

2. जातक कई प्रकार की विधाएं जानता है और राजा की

भूति उत्तम हाकिम होगा। उंगलियों की पोरी में एक घक्कर हो।।

गदि ऊपर की हालत के साय जब क्य भी उत्तम हो।

3. वृ. की आयु 4, 8, 16 साल की आयु से माता पिता को

और उनसे सुख होगा और स्वयं उसकी अपनी आयु 75 वर्ष आयु तक का सुखिया भाग्य होगा। भाग्य बुलंदी पर हो।। उंगलियों की पोरी पर एक शब्द हो।।

जब केतु उत्तम हो।

4. आयु के साय-साय सुख भी बढ़ता जाये। नेक, उत्तम एज्य या उत्तम हाकिम होते हुए आविर आयु सन्यासी की भूति हो। तोगों का भ्रष्ट करे या करना पड़े।

प्रिस्क्रम फल उत्तम हो।।

जब चन्द्रमा उत्तम हो।

5. पुरुषों से जायदाद पन या विएरत में सोना मिले।

6. अपनी कमाई से पीसे रंग के सामान की अधिकता और

बरकत होगी। स्त्री पूजन, खूबसूरत मिट्टी या स्त्री की पालना या गाय रेवा फालतू पन की नींव होंगे। शुक्र की हकंकी और गेर हकंकी प्रेम।

जब खाना नं. 1, 2, 5, 9, 11, 12 में वृ. के शशु न हो और

भाग्य ही खाना नं. 7 उत्तम हो।

7. विश्वास से पा शुक्र के काम या सम्बन्धी कायम करने से बढ़ेगा।

8. 28 वर्ष जी आयु से पहले या 24वें या 27वें याल स्वयं अपनी गार्दी या अपने पिन्डी शून के रिश्तेदार की गार्दी या अपनी कमाई से भगवन बनाने या नर औलाद के द्वा जाने रे पिता की आयु पर भाग्य होगा। मिट्टी में मंगल की वस्तुएं दर्शन से लाभ होगा।

गदि खाना नं. 7 खाली हो।

गदि खाना नं. 7 खाली हो।

9। एनदरयार हे यमाया घन [चाहे एक तांबे का पेणा ही जब खाना नं. 1, 2, 4 में सूर्य, चन्द्र, मंगल हो ।
हो] योने की तरह काम देगा । बरकत हो ।

10. गुरु पहले हो मंगल सातवें, ठाठ लम्बी जारीहो का ।
शर्त वृहस्पत पूरी करता, खून शार्हा या बर्नीहो का ॥
यही शर्त कुलपुरेहितों पर भी लागू हो रक्ती है ।

जारीहो का मालिक होना उसके कुल पुरेहित नाप दादा जब मंगल खाना नं. 7 में हो ।
लम्बी जारीदारों याते होंगे ।

11. मामा की आयु छोटी चाहे हो जाये [जो कि जल्ही नहीं] जब खाना नं. 2, 3, 4, 8 सभी उत्तम हो ।
परन्तु उसकी अपनी आयु लम्बी होगी, जो कम से कम
75 साल हो चाहे इससे अधिक हो ।

12. ऐसे व्यक्ति की ओर उसके कुल की आयु उसकी इच्छा- जब सूर्य खाना नं. 9 में होगा ।
नुसार लम्बी होगी ।
[क्यापा : किस्त रेखा की जड़ पर चार शाखी रेखा हो ।]

मंदी हालत

[फकीर कमाल का भवर निर्णय]

पीली गैस¹ और संचार की मंदी² हवा पितृ ऋषि³ शत्रु⁴ ग्रहों की जहर और भाग्य की कही आम⁵ का चक्र⁶ यदि वे के सोने को पिपला भी दे यानि यदि वृ. का अहर मंदा ही हो जाये तो वह भी अपने पहले दोरे [आयु का 35 सत्त्व चक्र] नहीं तो दूसरे चक्र में तो अवश्य जो [49 साल आयु से शुल होता है] अपनी सारी पिछली कमी पूरी कर देता है । शर्त यह है कि ऐसा मनुष्य भीख के लिए दूसरे के आगे अपना हाथ न फेलाए और स्वयं अपने भाग्य पर सबर करता हो ।

- 1- वृहस्पति की चीजें ।
- 2- वृहस्पति की चीजें ।
- 3- 2, 5, 9, 12 में पापी ग्रह बुध, शुक्र, शनि, राहु ।
- 4- 2, 5, 9, 12 में पापी ग्रह बुध, शुक्र, शनि व राहु ।
- 5- मंदा सूर्य ।
- 6- मंदा बुध ।

ऐसी उह चार के समय वह मनुष्य

1. अनपढ़ परन्तु फकीर कमाल का होगा । जब वृ. मंदा चं., वृ. के घरे 2, 5, 9, 12 में जहर हो यही आपसी शत्रु या वृ. के शत्रु ग्रह हो ।
2. उसने भाष बल्क उसके कुल में किसी ने नी.ए. पत्र न किया हो और न ही कोई और डिग्री ली हो । जब टेबे में ऋषि पितृ 2-5-9-12 में वृ. के शत्रु ग्रह हो ।
3. 8 से 12 तक की आयु में दूधरों की शहरतों या राहु की चीजों के याम या सम्बन्ध हे रोता पीतल हो जाये । हर तरफ मुशीबत ही लगे । जब 2-5-9-12 या वृ. के साथ राहु बेठ हो ।
4. 13 से 15 साल की आयु में मायूसी मिट्टी की स्त्री या शुक्र की चीजों का काम या संबंधी सोने को मिट्टी रना कर उड़ा दे । भाग्य के भैदान में मिट्टी भरी आधी काली रत होगी जब वृ. के साथ या 2-5-9-12 में शुक्र बेठ हो ।

5. 16 से 19 या 21 वर्ष में जुध की चीजों का काम या सम्बन्धी पन हर्बन का बहाना हो। भाग्य जलती रेत वाली तरह पन वाली हालत में हर तरफ वीरानाकरती होती। जब शृं. के साथ या 2-5-9-12 में जुध देय हो।
6. 36 खाल की आयु के बाद |42 साल की आयु से| शनि की चीजों का काम या सम्बन्धी से हर ओर बुर्ड, नुर कामों के लिए और स्वास्थ्य सहाय। पेशाव और पाखाना की नाली तक दुखने लगे। भाग्य साथ न दें दिल हिला देने वाले काम हो [जो दुख दें] भाग्य की जहरीली हया दम की दम में घून करती जाये या इहवनी घटनाएं हो। जब शृं. के साथ या 2-5-9-12 में छने पापी ग्रह होकर देव हो।
7. अपना बनाए उच्च महल, मुग्हल |पाप| के ठिकाने हो जाये और खुद के लिए दुख के कारण बन जाए अपनी संतान और स्वास्थ्य के लिए। जब शनि नं. 5 में हो।
8. अपना स्वास्थ्य विषड़ जाये। जब शनि नं. 9 में हो।
9. स्वयं की संखन दुखी और जातक के लिए दुख का कारण हो जाए। जब शृं. मंदा या मंदे घरों में हो या शनि या द्वे शनि के साथ उसके शत्रु ग्रह सू. चं., मं. हो या शनि ही हो अपने मंदे घरों में।
10. पिता से जुदा होकर अपना काम करने लगे और अपने काम से घर के भार उठाए हुए हो (खाना नं. 9, 10 का शनि कभी भी 18 से 21 तक खाना नं. 7 में नहीं आता बल्कि उत्तम फल देगा)
11. मुकदमेवाली, दीवानी था दूसरी नाजायज उलझनों में पन की हानि होती, चाहे उसका फैसला उसके हक में ही होता जाये। अपने भाग्य और सांसारिक कामों की हिम्मत के सम्बन्ध में वृं. सेना देने की बजाए उसकी मिट्टी उड़ात्व जाएगा। जब 18 से 27 साल आयु में वर्षफल में जन्म कुण्डली का मंदा। शनि खाना नं. 7 में आ जाए। [अच्छा शनि ऐसा प्रभाव देगा]
12. जातक की हर ओर से निंदा, दूररों को शाप देने वाला होगा जिसकी स्वयं अपने भाग्य की मंदी हवा उसके गृहस्थी प्रभाव को मंदा करते जाएंगे। ऐसी हालत में घोटी आयु की शरदी |22 वर्ष की आयु से पहले| उत्तम होती वरना 24वां वर्ष मंदा जाएगा। उस समय मंगल की चीजें, काम संस्थी का उच्चय लाभ करेगा। जब शृं. सोया हो या खाना नं. 8-11 में ज्वर के शत्रु जुध, शुक्र, रहू या शनि पापी ग्रह हो।
13. पिता की मृत्यु दमा या दिल के फेल होने से हो, यदू यी उस में हो या उसकी अद्यता में दुःख आ जाए, दिमाय विषड़ जाए या टासों की रीमाई कापनी, गूँखने लग जाए। जब रहू नं. 8, 11 में हो।

वृहस्पत का प्रभाव खाना नं. 2

[जपत का पर्षभुरु और विद्या का स्वामी]

जद माया गे, दान रे तेह वदता, मगर रेवा¹ उत्तम मुर्दाफर जो करता ।
राजा जनक की साधु अवस्था², दानी मुरु³ जर माया हो ।
मंदा गुरु⁵ जब हो कोई बेठा, जेर⁴ हुम्म मुरु साया हो ।
चार मंदा, 5-10 से 12, शूष्टि रद्दी चाहे केतु हो ।
काम सोना खुद मिट्टी देगा, मिट्टी देती जर सोना हो ।
शुक्र रद्दी या हो शनि दरवें में, यह दुखी मंद औरत हो ।
कोई बेठा आठ दस ता 12, सुखिया बच्चों जर दीलत हो ।

यह वृ. की असली जगह, जहां चं. उच्च करता है, जो वृ. का मित्र है । इस रथि को नीच करने वाला कोई उह नहीं है । इसी कारण वृहस्पत को सब का गुरु मानते हैं । यही घर कुंडली में वृहस्पत को दौलत का व मान का मिला है ।

1. 27 साला एजदरवार का उत्तम फल ।
2. जब तक नं. 8 खाली, रुहानी असर अच्छा, मान होगा ।
3. लक्ष्मी हवा की तरह आये, पानी की तरह जाये । 16 से 32 साला उमर में ।
4. वृहस्पत का उपाय मंदे ग्रह को उत्तम करेगा । मंदे ग्रह का उपाय वृहस्पत का होगा ।
5. बरना गुरु मंदी हवा देगा ।
6. तपाम टेवे में चाहे कहीं भी बेत पर साधु की उपासना शिवजी बेत पर सवार मानेंगे । इस घर के सब घरों ने मान से देखा है और इस घर में वे रिक्फ गुरु को ही विठायेंगे ।

वृहस्पत रेखा : Free by Astrostudents



2 सदफ या वृहस्पत के पर्वत पर दो सीधी खड़ी रेखाएं या वृहस्पत का निशान हाथ में घर नं. 2 की जगह हो तो मंद चाहे औरत हो जगत गुरु देता है । हर हालत में एका की तरह मानसरोवर की शांति होगा । मुरु को सब ग्रहों का प्रणाम । हयंती में वृ. के पर्वत खाना नं. 2 गुरु के सामने [वृहस्पत नं. 2] और दूसरा कोई उह 2 या 6 में बेठा हो जैसे ही 2 में बेठा हो तपाम ही ग्रह वृ. के साय सायी या द्विष्टि में हो या न हो, उन प्रणाम करने को बेठे हैं ।

उह खाना या पर्वत प्रभाव की तरह

शनि	10	सांप कान बन्द किए भगव टिकटिकी लगाये चुपचाप बेठा है ।
सूर्य	1	गुरु की प्रतीक्षा में है, बंदर बना बेठा है भगव फूंक नहीं भार सकता यानि वृहस्पत की हवा को संसार माना है जिसे वह नाहर नहीं निकाल सकता, बल्कि वृहस्पत की हवा को ढूँढता है ।
यह	12	यह का हाथी, केतु खाना नं. 6 के साय मिलकर अपने कान लग्ने करके खाना नं. 2 की जड़ में गुरु के उपदेश की खातिर चुपचाप लंगा दुआ है ।
केतु	6	गुरु का आएन जो नं. 2 की जड़ से मिला रहता है कि ना मातृम कब गुरु को आएम करना है । केतु को गाय और कुत्ता दरवेश भी माना है जो गुरु के ही साये में रहते हैं ।
चन्द्र	4	दिल रेखा, दिल या दर्दना सदा वृ. नं. 2 को चताता है ।
शु. तु.	7	शादी रेखा य खुद सिर रेखा बनकर नं. 2 की जड़ में ।
मंदत	3	इएकी जड़ ही नं. 2 से इकट्ठी है ।

* पंच केतु कुत्ते ने खाना नं. ६ लेकर वृ. नं. २ के पाय और उसके सामने रहना पञ्च किया तो बुध की सिर रेखा कुत्ते की दुम की तरह केतु के साथ नं. ६ में पक्की हो गई। बुध केतु दोनों ही शुक्र के भाष हैं, और एक खाना नं. २ में शुक्र की ही चीज़ या गाय स्थान है जिस पर बैठा गुरु सबको देख रहा है। बैल पर शिवर्णी सवार देवताओं का दृश्य देखते हैं।

नेक हालत :

सबको गारने वाला जप्त मुह : मर्दर का पुजारी परहेजगार होगा। दोलत वेशक देहयत से बढ़े मधर मुस्तिफ़ की सेवा से वह और भी उत्तम होगा। अपना भाग्य गृहस्थी कारोबार। सिवाय बच्चों के पेंडा होने से। और स्तुतित खून के सम्बन्ध से बढ़ेगा। खाना नं. २-४ में दें हुए शत्रु ग्रहों का अपना असर चाहे कितना भी मंदा हो मधर उनकी जहर वृ. पर प्रभावित न होने। वृ. का प्रभाव सारे ग्रहों पर होगा। इत्याए सूर्य के निषिका अच्छा या बुद्ध प्रभाव टेवे में दें हुए घर के अनुसार अच्छा या बुद्ध नेता होगा। रहेगा। ऐसा व्यक्ति स्त्रियों का अवश्य गुरु होगा, हो सकता है कि पुत्रों का भी गुरु हो जाए। ऐसा पुरुष पिता के पन को बढ़ाता है त्वयं भी गृहस्थी होते हुए भी जानी गुरु मर्दाहा होगा। माया व दोलत हवा की तरह आती और उसे पानी की तरह बहाती होगी। उत्तम दिमागी हालत। मान रेखा, हर जगह मान होगा, जो दिन प्रति दिन बढ़ेगा। सोने का काम। [घरफ़ी, जीहारी, सुनार] करने वे हानि होगी। मिट्टी के काम, सड़कों पर मिट्टी ढलवाना, कच्चे भक्कन बनवाना, खेती बाड़ी, स्त्रियों के प्रयोग की चीजों का काम लाभदायक रहेगा। रजदरबार में २७ वर्ष का उत्तम समय उन्हें का होगा। चाहे सूर्य मंदा हो और जन्म चाहे उरक्क निर्देश और निर्दंदी कसराई के घर का हो।

16- से ३२ वर्ष की आयु तक मैलज्जी पर ब्रह्मा का साथ। धन जमा करेगा चाहे कबीला पढ़ा हो या न हो। [खुद विधाता का हाथ होगा] मगर बादशाह या भारी कबीला की शर्त ना होगी। इस का बाप जायदाद बना देगा वरना वह स्वयं बना सेगा। चाहे खाना नं. ५। माता। ५। ओलाद। १०। पिता पुरुषों की हालत। ॥।। अपनी आमदनी। नं. १२। पूजा पाठ, यह का आहम सब ही रददी हो। दिनांक खाना नं. २ यानि शुक्र से सम्बन्धित सब तरह के त्याद देख कर भी गुरु धर्मात्मा बन जाएगा। मगर हर हालत में दिल का साफ होगा। दृढ़ निश्चयी और शासन की ताकत होगी, ऊंच विचार होने।

क्षाप्त:

क्षाप्त	ग्रह चाल	प्रभाव
वृ. की भाग्य रेखा कायम तर्जनी सीधी हो।	वृ. नं. २ में कायम व उत्तन और हर तरह से उत्तन और हर तरह जब ९ बंद न हो और न ही वहाँ वृ. के शत्रु वृ. शु. शु. हो।	रज दरबार का २७ साला अच्छा सम्बन्ध सबको सहायता देगा। उत्तर दिन धन ७५ साल, मान धन दोलत चतुर्हत से निर्दे, अपने व्याप आए। लट्टरी और बंद न हो और न ही दना धन गिले। धन की ब्रेष्ट रेखा मृहस्य रेखा का उत्तम फल। पिता उसे तार दे वरना खुद बढ़े।
तर्जनी का सिए चौकोर तर्जनी बहुत लम्बी तर्जनी का सिए गोत मध्यम तर्जनी की तरफ सुरक्षी दोगी।	मंदत ८ हक्मत ९ सुध ८ द्वंद्व ८	सच्चाई पसन्द होगा। हक्मत राज्य की शक्ति होगी। साहिब तदनीर होगा। एंसार को ढोड़ देने याता होगा, मुर्दा विचार और उदास रहे।
तर्जनी का रिए गोदा तर्जनी बहुत लम्बी तर्जनी का रिए नोकदार	रात् ८ याद् ९ रेत् ८	शक्तिशाली भीर दोगा। रोच विचार वी शक्ति का त्यानी होगा। ईमानदार और तीक्ष्ण मुद्दे का होगा।

स्थान	ग्रह हो	खाला से	प्रभाव
तर्जनी लम्ही हो	केतु	9	एजय की शक्ति, बड़ों की जैरी चात करने वाला, जीवन खुद चुनने वाला ।
अनामिका तर्जनी से वड़ी	सूर्य	10	प्रिंट जीवन होगा ।
अनामिका तर्जनी बरावर	सूर्य	12	प्रिंट जीवन होगा ।
	केतु	6	अपनी मृत्यु को पहले ही जान सेगा ।
	सू. बू. श.	8	पक्का विचार साहर भए आदमी होगा ।
तर्जनी मध्यमा समान	शनि	12	नेपेंटेन जैसा साहसी ।

1. ददा माल या लाटाई या बिना ओलाद वाले का घन मिले । जब 2-6-8 शुभ हो या नं.8-10 से मंदी हवा नं.2 में न जाए और नं.12 भी मंदा न हो ।
2. वृ. सब कठिनाईयों को स्वयं दूर करे । [उभी उंगलियां तर्जनी की ओर शुकी हों] बच्चों से सुखी, धन होश, वृ. की मदद, स्वतंत्र प्रकृति, उन्नति प्रेमी, दृढ़ निश्चय, आशावादी हो । जब नं.8-9-10-12 में कोई न कोई ग्रह अवश्य हो चाहे वह ग्रह वृ. का शत्रु या मित्र हो ।
3. विद्वान् होगा, जिसकी नीव और फैसला शनि पर होना । यिथा की कमी या अधिकता उसके भाग्य की चमक के कम न करेगी । जब शनि साय या सारी हो । [उंगलियों की पोरे पर दो चरक हो ।]
4. नेपेंटेन की तरह जमाने का एक वीर, काम का आदमी हो, सुखी हो । जब शनि नं.12 में हो । [जब तर्जनी मध्यमा समान हो ।]
5. अपनी पुन का पक्का परन्तु परिवार बहुत होगा । जब नं.8 खाली हो और साय में सू., चं., श., य. या बू. में से कोई भी नं.6 में हो ।
6. मान रेखा राजा वी तरह हो, दाता होगा । वृ. के पर्वत पर एक सीधी रेखा । यह नेक हो मगर बुम न हो ।
7. नेक काम और भलाई करने वाला होगा, हर जमह मान होगा जानीं उसके पास हों या न हो, दुनियावी सुख सानर उत्तम हो । यह नेक और काम हो । [वृ. के नुर्ज पर दो सीधे चर होंगे ।]

मंदी हालत :

गुरु जहान दो मंदिर कच्छ, या बेठक खुद चाली हो । [एहु केतु पाप। मारक घर (8) से गुरु भी ढरत, आठ दृष्टि खाली जो ॥]

1. अपने ही कुल को भाने वाला, गरक करने वाला । याने दर्ही [शुक्र] गोवर [शुक्र] की मिलावट में पैदा बिच्छू की भाँति हो । [नं.8-2 के मदे प्रभाव की पहली निशाने केतु कह देगा ।]
2. स्यस्य विगड़, स्मुहल में धन की दानि होगी ।
3. वृ. का फल यहु के सम्बन्ध में मंदा ही होगा ।

जब 8-2 किंसी तरह भी मंदा हो रहा हो, जिस प्रकार याना नं.8 में चं. बं. दो ग्रह इकट्ठे हों । चाहे वह वृ. के मित्र हों परंतु एक साय दोनों के कारण नं.8 मंदा ही होगा । इसी तरह नं.2 में भी ग्रह अपना-अपना प्रभाव करते हैं । मगर नं.2 में मंगल चर हो तो नं.2 मंदा ही होगा ।

जब शनि वर्षकल में नं.2 में आयेगा । नं.8 खाली हो ।

4. जिए जगह भी ऐसा व्यक्ति जाएः या मेहमान ये वहां हानि हो, मनहूस परन्तु उनकी अपनी कोई हानि न हो। [मदे प्रभाव की खिल पहते हाँ केतु या लंगरा कुत्ते से जाहिर हो जाएगी परन्तु टेये बाते पर वृ. के प्रभाव पर बुध अनुर न होगा।]
5. यह दुखी, स्वास्थ्य और स्वीकार की हालत, भीनर।
6. घन हानि, चड़ी भीनाद् स्वयं भी हना की केद में जाये।
7. ईश्वर्यातु होगा। उंचलियाँ छोटी हो।
8. मंदी हवा, उब तरह से मानहर्षन, लानत मुर्छाबत हो।

उपाय

नं. 10 में किस त्रह का मंद्य प्रभाव

जब नं. 8-2 में कोई न कर्म मंद्य उह हो चाहे वह ग्रह स्थाय नं. 8 में हो।
चाहे वह वृ. के प्रभाव को ट्रैट्स के सहाय करे।

जब शुक्र मंदा भीर छने नं. 10 में हो।
बुध नं. 8 शनि नं. 10 में हो।
जब बुध नं. 9 में हो।
जब नं. 8-10 में बुध शु., ग., श. पापी ग्रह हो।

किस त्रह का उपाय करें

नं. 8 वृ. के शुभ ग्रहों [उ., श., ग., श. (पापी)] के लिए उन हर एक के साना नं. 8 में दिया हुआ उपाय सहायता देगा। स्वयं मदे वृ. या मदे ग्रह के समय गान्धी रम दोलतों में वृ. का अपना उपाय सहायता देगा। रमान् ५०। नं. त्रैप, दृष्टि के मदे ग्रह के गांधी का उपाय दृष्टि-नं. १। त्रैप, दृष्टि के ग्रह के गांधी का उपाय दृष्टि-नं. १। त्रैप, दृष्टि के ग्रह के गांधी का उपाय दृष्टि-

(रमान्ता और व सानदानी मुहूर्त, ज्योतिष व वास्त्रीय का स्थान)

महुत ऊंचे शिवजी चाहे मुद्दों के सेखे, मगर ऊंचे तू एक से क्यों है देखे।
शेर स्वप्नाव¹ रंगार के लिखाए, दुर्गापूजन² घन दोलत रम का हो।
असर भते जब तक उत्तम³, नष्ट सुशामद चं. 12 होत्य हो।
4 छने बुध टेये मन्दा, मारे मिन्ने कुल दुखिया हो।
दूजे मंचल या 9वें शनि बेठा, तारे⁴ सभी खुद सुखिया हो।

1. जब तक बुध उत्तम, एक शेर का स्वभाव।
2. कन्या की रेखा ऐ उहकी आशीर्वाद ते या दुर्गा पाठ करना आदि बुध की जहर को दूर करता है।
3. विलोकी का सुख या जलता मंगत।
4. यदि दोनों शर्तें न हो तो पहले निर्देश फिर घनी।

हस्त रेखा

तीन सदफ, 7 चक्र या 7 संश्ली रेखा या गृहस्थ रेखा वृ. के पर्णत पर हो।

घनवान तथा झेरों का शिकायी भैण होगा।

फरिशता अजल भी गो तुनरे डरेगा, मगर जुल्म तेह न इरण्जन फलेगा।

दिमागी खाना नं. 7 मंगल, इंगाफ पसंद, दुर्गा जी [बुध/शेर] वृ. की उपायी का साय होगा।

विद्यावान होश, उन्दरवार दे पन देर तक मिलता रहेगा। [गोकरी करेगा] जब तक कि दुर्गा पाठ या कन्याओं की रेखा से आशीष ते। वरना वृ. नं. 3, बुध नं. 3, 9 का मंदा फल देगा। हर और रे सुखी होगा, ऊंचे ढंक होंगी, मादृ, ज्ञान नंक, ओलाद की आपु लम्ही और सुर्दी होंगी।

1. विलोकी के दरवाने पर तजवार ना पनी, मृत्यु यो रोकने याता खुद ही बेठा हो। ज्ञा नम्नी। विद्यावान हो। उत्तम रेहत, पनी अवश्य, समृद्ध हो, अपना भाग्य भाई-बहन मे द्धो। जाती प्रेम याता हो।

जब वृ. कायम हो।

2. थपने यहन-भाई यो सहायता करें। 26 साल की आयु से 46 साल की आयु तक सब और उन्नति हो। सुखी कन से कम 20 साल, धर्मी हो।
3. इम्प्रत मान होगा, गुजारा बहुत ही अच्छा चलेगा, कमाई शुल्क रहने से करते रहने तक सब फल उत्तम होंगे। ८८ में इकट्ठे रहने से लाभ, औलाद पेदा होने से लाभ।
4. आयु घन बढ़ेगा।
5. चालाक, मनुष्य को उसकी आवाज से पहचान ले।
6. सबको तारने याता। स्वयं भी सुखी।
7. पनी होगा।
8. स्वयं साहस्री होगा।

मंदी हालत :

कायर, मनसु, मंद भाग्य

1. एक स्वभाव का स्वामी, यदि मित्र हो जाए तो सब कुछ देवे, दुद किया शिकार तक दे डाले - यदि शत्रु हो जावे तो दूसरे का वित्तर तक जला दे। आएम नष्ट कर दे।
2. अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होने के स्वभाव से नष्ट हो।
3. कायर, सब और से दुखी, मंद भाग, औरतों से भौंकर मप्प हाँकने वाला। [युप नं. 3 और 9 का दिया हुआ मंदा फल होगा] रेहत खण्ड, दुरी जिन्दगी, हमेशा रोग - रक्तदोष, संतान दुखी केतु के भैंदे फल।
4. सबको लूट कर स्वयं अमीर बन, जानै बालों मित्रांशुती नास्तिक हो। [उसके सभी सम्बन्धी दुखी, खासकर औलाद और मामा तो अवश्य दुखी।] 3 साल रहीं, चाहे वह लड़ाई में बहादुर हो भगर फिर भी मंद भाग्य वाला होगा। शरीर दे दुर्गम्य आये शहरती झगड़ातू हो, प्रायः कायर।

जब मंज़िल नेक हो, खाना नं. 2 उत्तम हो, या नं. 2 में सू., चं., मं. [मित्र ग्रहहो] और दृ. वर्षफल में फिर नं. 3 में आवं [गृहस्य रेखा हथेली में खाना नं. 3 में सनात्त हो।]

जब दृ. कायर हो, खाना नं. 11 में कोई भी ग्रह हो। खाना नं. 5 में कोई भी मित्र ग्रह हो या खाना नं. 9 में कोई भी ग्रह हो।

शनि नं. 9 में हो [हथ में अर्ध रेखा कायरम्]
शनि नं. 2 में हो [पर्वत नं. 2 पर 7 सङ्कीर्णा]

मंस्त नं. 2 में या शनि नं. 9 में, गृहस्य रेखा नं. 2 में समाप्त, वर्द्ध रेखा होगी।

शनि नेक हो [उंगलियों की पीरियों में 3 सुदफ हों]
युप नं. 7 में हो [पीरियों पर 7 चक्र हों]—

जब दृ. चेया हुआ हो या शत्रु ग्रहों दे खिंह हो।

जब चन्द्र नं. 12 में हो।

जब मंज़िल बद हो।

जब रहने नं. 4 और दृश्य भी मंदा हो।

नृहस्ति सन्न नं. 4

[चन्द्र की उज्ज्यनी का मुल्की मूल, तरु और वाय-वसीय।]

पश्चा गाया चन्द्र पानी दुनिया जो चढ़ता,
फले पाप दुनिया जो चन्द्र मुद्दी करता।
सिंहासन पिङ्गमी 32 परियां, ब्रह्म पूर्व कोई अपन हों।
जगीन मुरम्बे दूप की नदियां, शेर उम्य धानी तैरता हो।

मंद शनि बुध इन्जत मंदी, 10वें भैरी जर ढोलता हो ।
केतु बुरे शाह लेगा फकीरी, यहू भले सब उन्नत हो ।
शुक्र चन्द्र और मंगल मोती¹ दूढ़ भरे त्रिलोकी² जो ।
नाश बड़ो का कुल सब होता, इश्क गदे जब स्वयं करता हो ।

॥ जाहे कही भी केने हो । ॥२॥ खाना नं.३ के ग्रह ।

इस्तर रेखा :

4 सीप, 4 शंख या 4 रुद्रीय रेखाएं या 2 चक्र, चन्द्रमा पर्वत पर शंख, सिर्फ एक चन्द्र रेखा वृ. के पर्वत पर खत्म हो ।

नेक हालत :

राजा इन्द्र विश्वादित्य की तरह प्रचिद होगा ।

एक ही सीप में, पैदा हो 2 मोती । एक ताज [बुद्ध] शाह के सिर पर, दूजा खत्म [बुद्ध] में ज्ञित हो ।

अपने भाग्य का प्रभाव व्यहानी शक्ति जाता खानदान से होगा । शू., चं., शनि, मं., सू. ही उत्तम फल देंगे । खाना नं.३ का ग्रह कभी बुध प्रभाव न देगा । देश और शक्ति, बाग और बर्गीचे और उपी शक्ति का स्वामी होगा । अपने इलाके में लाखों में एक प्रचिद होगा । दोती, दूध की नदी, पशु उचके आगम के लिए होंगे । बाप-दादा या स्वयं पुरी इच्छा का स्वामी होग, धर्म का पक्षा, सब की मदद करने वाला, दूरदृष्टि, आपु लम्बी, मान, हर मनहव को मानने वाला, झगड़े से दूर, अपना घर, लालच का नाम तक न हो । राजा इन्द्र की भाँति हो, लोक-परलोक का स्वामी, रहन दिल चंगार में किसी भी विष्वेत्र में सहायक होगा । चौड़ा माथा, प्रसन्न चित्त हो । उत्तम चरित्र, व्यवहार में उत्तम, अपनी सुखी उत्तम, शांत प्रकृति, उक्ता का उत्तम । विना प्रयत्न लक्ष्मी आये । दिनांक खाना नं.२ [चन्द्र], हनुर्दी, दशातु, जमाने का शेर, हृदूमत, दिनाय, तेज कुद्दे, त्वरण शक्ति उत्तम हो । सोने के बर्तन में दूध की तरह नेक फल खानदानी खून का सबूत होगा । मुर्दीबत के उन्नय गोण तरने वत्यं शेर होगा ।

1. भाता-पिता की तरह सब को सुख देने वाला, साहसी, उज्जदरवार में सदा लाभ । 24 साल तक विद्या मिलेगी । साहसी, उपा पन, जुड़ा-जुड़ाया पन, ऐसी जायदाद जिसका मालिक न हो, प्राप्त करे । उपी शक्ति और प्रभु की उहायता का फल उत्तम हो ।

पिता की तरह बहादुर रेटा³, 32 परियों वाला तज्ज्ञ हो । उसका भाषूली तांवे का पेजा ढेने का लाभ दे । मकान आलीशान, पन का दरिया हो ।

2. पिता खून के मुकदमे का फैलता कर सकता हो या बड़ा हाफिम हो या उसके जन्म के बाद हो जाये, परन्तु उसकी स्वयं की भाग्य की शर्त नहीं ।

3. हर तरह की सवाई का सुख नित्यगा ।

4. भाग्य का फैलता शनि राहू की नेक, बद हालत पर होगा । टेये में जेशा हो । यदि नेक तो जाहे अपने बाप से कम ही हो परंतु फिर भी लाखों में एक होगा । बड़ों के काम काज उत्तम फल देंगे । यदि स्वयं राजा नहीं तो उसका भाई या गम्भन्यी अवश्य होगा । प्रायः स्वास्त्र्य पर कमाई का चौथाई हिस्सा अवश्य खर्चगा । मोटर गाड़ियां हर मन्य उपस्थित होंगी । पनी, घ्यजा-घारी, उत्र वाला होगा ।

³ मां पर धी पिता पर पोड़ा ।



जन्मक खाना नं.२, ५, ९, ११, १२ में बुद्ध, शुक्र, शनि, यहू [पापी ग्रह होकर] न हो । चन्द्र के पर्वत में रेखा वृ. के पर्वत नं.२ में जाकर सम्पन्न हो ।

जब सूर्य या मंगल [नर ग्रह] उत्तम हो ।

चन्द्र नं.१ और शनि नं.१० में हो ।

जब चन्द्र नं.२ में हो । [चन्द्र के पर्वत पर एक शंख या चक्र हो ।]

5. वृ. सोया होगा यदि ऐसा मनुष्य किसी को अपना नंगा शरीर न दियाएँ या दूसरों की टृप्टि अपने नंगे शरीर पर न पड़ने दे तो निर्वन न हो । वृ. नं. 4 का उत्तम फल होना ।
जब वहां नं. 10 साली होगा ।
6. टेपे में बेटा मंदा चन्द्र भी उत्तम फल ही देगा । स्थान्त्र्य पर फूल खर्ची की शर्त न होगी ।
चन्द्र रियाप नं. 2 के कही भी हो ।
7. मातृ के होते विद्या कभी रुके कभी चले पर पूर्ण होनी । यदि मातृ न रहे तो विद्या पूर्ण बिना रुके हो ।
जब चन्द्र कायम हो या चन्द्र कायम रखा जाये ।
8. विद्या पर किया खर्च चाहे अपनी ओलाद की माकिसी विद्या के साथी की हो सूद सहित वापिस मिलेगा । यदि चर्चिय ठीक तो आपु लम्ही होगी ।
केतु उत्तम हो । [उंगलियों की पोरी या पर्वत पर 4 शंख हो ।]
9. विद्या का पनी, वृस्त जारी परन्तु पन, भाग्य की शर्त नहीं । हुनरमंद हो । सीप में मोता की तरह वंश में नाम पावे । एज दरबार से धन ही धन का लाभ पावे ।
बुध उत्तम या उत्तम सूर्य नं. 10 में हो, [उंगलियों की पोरी में दो चक्र]
10. नेक प्रसिद्ध, सब को तारने वाला, या शानदार, उव प्रकार के आराम वाला ।
ज्ञाने नं. 2, 9, 10 में हो [उंगलियों की पोरी पर 4 सीप]
11. चन्द्र की जानदार यस्तुओं माता/पोती का फल उत्तम हो ।
नेक झंडे रेखा कायम ।
- मन्दी हारत :** Free by Astrostudents
1. उलटी खोटी हवा से (श्यास 34 साल आयु के बाद) जब खुदरा होता हुआ मदे इश्क में हवाई घोड़े चलायेगा तो न सिर्फ खुद बर्त्तक आगे कुल के नाश का बहाना होगा । बड़ी की आज्ञा मानने से वह तर जायेगा । अपनी अक्ष की बेत्तनाम कार्यवाही से बरबादी होगी । अपनी ही बेड़ी हुओ देने वाला मल्लाह, हर तरह से उद्धी । एजधानी की बेड़ी में सुख कर देगा जो नं. 4 के सुमुद्र, माता के पर या पेट में आते ही यक्क हो जायेगी ।
बुध नं. 10 में हो, ऐसा बुध जब कभी वर्षफल नं. 4 में आवे बरबादी का बहाना कर देगा । [11, 23, 34, 48, 55, 71, 75, 85, 97, 119 साल आयु में]
2. बुरे काम में सदा खुश, शाराय, मीट, स्त्रीमाली । मंदो प्रेरिदी पर्वत करने वाला । उसकी ओर्खों में खण्डी होगी और केतु भला न होगा । टृप्टि खण्ड ।
ज्ञाने नदा हो या मंदा कर लिया जावे क्योंकि वृ. आमतौर पर वृ. नं. 4 के समय शनि कभी मंदा न होता पर कर लिया जायेगा । यदि वह सांपों को मरवाये, भक्तों को गिराये, रुहर पीना, या स्त्रियों से योन सुन्दर्य बनावे ।
3. खेंच, धन खतरे में होगे ।
जब शु. दु., य., श. नं. 10 में हो ।
4. चन्द्र की जानदार या बेजान चीजों का फल भरबाद, पानी तक जलता होगा ।
रहू मंदा हो ।
5. एना होता या फर्कीर हो जायेगा या दुःख के समय छू कर जंपत में भाग जायेगा ।
केतु मंदा हो ।

वृहस्पति याना नं. 5

गुप्त्यता का स्वामी, इन्द्र भान वाला, उत्तम जानी परन्तु आप का बंदू फुर्से करता।

घर्ष नाम पर मांग, दुनिया को खाता।
इशारा ही हे बेच, अपना वह जाता।

ओलाद¹ कदर से बुढ़ापा⁵ उत्तम, योदा इमानी बड़ता हो।
हाल बड़ो का देशक कैसा, नसल आयदा फलता हो।
इउके गुल के दिन लड़का जन्मे, या कि जन्म शनि² 9 हो।
तेष्व सोया भी आ तब जागे, जोड़ी शेरे की बनती हो।
केतु मंदा ओलाद हो मंदी, भद्र गुल छप पितृ³ हो।
चं., सू., तु. उत्तम पापी⁴, लावल्द होता न वह कर्मी हो।

1. यदि खुद पर्सद में मानक तो उत्तम पत्थर में भोती होगी।
2. शनि नं. 9 वर्ष या जन्म में व्यते उत्तम फल।
3. 2, 3, 8, 11, 12 तु. शु. गहु या पापी।
4. एजा इन्द्र की तरह लोक दर्लोक का स्वामी, विक्रमादित्य की तरह बुलन्द विशेषकर जब गहु उत्तम हो। हजारों का अफसर व सबको आएम देने वाला नहीं तो भिक्षा के लिए उड़ता साबू।
5. जद्दी जायदाद व मालोदीत।

हस्त रेखा :

पांच सीप, 5 चक्र या 5 रेखा तमाम उण्ठियों में। सहत रेखा नीचे जाकर भाग्य रेखा के बारम्ब में मिल जाती है।
वृ. नं. 5 के समय तु. की जेरी हालत होगी वृ. के प्रभाव में जें ही बच्चे या मंदे चक्कर चर रहे होंगे। नाक की हर नेक व मंद हालत जेरी हो येसी झर डालती।

[क्यापा नाक]

नाक बगर लम्बी, नीचे को दूकी	बुद्धेमान, धन-मन प्रसन्न
तोते की चोंच की भाँति पस्ती में एक	परहेजगर
छोटी नाक	धर्मात्मा
लम्बी व चौड़ी	मेहनती मगर हुप कर कम करने वाला
लम्बी व पतली नाक	बहादुर
बहुत लम्बी नाक	ऐपांच तज्जाहीन व गरीब
मोत बड़ी भोटी नाक	नेक व्यवहार करने वाला
छोटी व चपटी नाक	नेक व शाहाना स्वभाव
मुंह की तरफ दूकी नाक	धन्धोग पसन्द
भोटी, छोटी बैठी हई नाक	कम अकल, काम काम में परेजानी
मारीक नाक	नेकनियत मगर अकल कम
मध्य साईज मगर अंदर को दूकी	कम अकल, काम काम व गरीब
बीच में चौड़ी, लिरे से तंग या बीच में बैठी हुई नाक	बदनाशील, मनहूर
बीच में ऊँची और लिरे से तंग नाक	घनधान
बहुत छोटी	बुरी अकल, घोड़ेबाज



नेक हालत :

बड़े जितनी संतान, भाग्य हो बढ़ता । अकल ज्ञार चंगार, न कुछ काम करता ।

अपना भाग्य का उत्तम प्रभाव अपनी सब संतान से होगा । ईमानदारी के काम, ध्यापार, सांसारिक धन्य बढ़ता रहेगा । जवा में संतान की आवश्यकता यो मानते हुए उनकी कदर करने से बुद्धा उत्तम होगा ।

यार्थार को लड़के के जन्म से पिता पुत्र भाग्य के भैदान में दोनों दो शेरों की भवित हो जाएंगे । ऐसे पुत्र से पहले भाग्य हुआ मानो । घर 2, 9, 11, 12 में यदि वृ. के मित्र सूर्य, चन्द्र या मंसुर जैंठे हों तो उनकी सहायता मिलती रहेगी ।

चाहे ऐसा ध्यक्ति गुस्से से हरदम जलने वाला हो मगर पूर्ण उत्तम होगा । दिमागी खाना नं. 2 [सूर्य] द्वारा व्य मान कर वाला, अपनी इयूटी का पूर्ण पावन्द । अन्दर बाहर दोनों ओर से उत्तम जातक ।

1. बिना औलाद के कभी न होगा । प्रसन्न चित्त भाग्यवान होया ।

2. सरदार या हाकिम फोज का बड़ा आफिरर होगा । जिसके साथ में कई प्राणी आगम करते होंगे और उसकी संतान के तिए प्रार्थनाएं करते होंगे ।

3. घन और संतान मंदे न होंगे । आगे कुत बढ़ता रहेगा । यदि वह घोड़े की लीद में मानिक तो और पत्थर में मोती [परन्तु यदि पुरखे निर्वन हो, येह शर्त न होगी] परन्तु वीरवार को संतान उत्पन्न होने से उसकी सुमुद्री बेड़ी बड़े-बड़े जहाजों का काम देती परन्तु आगे संतान होने पर सब प्रकार से दुःख नरक धेर देगा ।

4. वाप से लेकर पोते तक सब सुखी हो और वृ. नं. 5 का उत्तम फल होगा ।

5. शनियार यो पैदा हुए लड़के के जन्म दिन से उत्तम शनि या शनि वृ. नं. 7 की मच्छ रेखा का 60 साला उत्तम प्रभाव होगा परन्तु यह वृ. से सम्बन्धित वस्तुओं रिश्तेदारों या कामकाज से कोई ताप्त न होगा ।

6. इज्जत भान बढ़ेगा, वृ. और भी उत्तम हो जायेगा ।
मंदी हालत बृहस्पति नं. 5 में

1. धर्म के नाम पर मांग खाना या दान लेना तो निचंतान होना और बिना कफन मरने की पहली निशानी होंगी । यच्चे मुदरं ही पैदा होंगे ।

2. संतान मंदी होगी ।

3. औलाद याहे मंदी न हो परन्तु यह स्वयं अपना देढ़ा नरक करने वाला नायिक होगा और 25 [शुक्र] 34 [मुण्ड] 42 [यहू] 48 [रेत्न] शनि [36 ये 39 साला आयु] के बाद हालत अच्छी होगी मंदी हालत में यह खाना नं. 5-9 में केतु ना हो तो भी नं. 5 का वृ. वर्षफल में बरबाद हो तो उसका युग प्रभाव उदा नाना या भासा की संतान पर होगा और स्वयं जातक पर कोई प्रभाव न

जब सूर्य चन्द्र और पापी उत्तम हो ।

यह उत्तम [मुर्ज नं. 2 पर 5 घड़े खत]

जब मित्र ग्रह सू. चं. म. 9 में हो । [चिह्न रेखा पृ. के घड़े खत या भाग्य रेखा कलाई से निकलकर सेह रेख पर जा निकले तो सूर्य नं. 9 होगा], चन्द्र के बुर्ज में जा पहुंचे तो चन्द्र नी में हो ।

जब 2, 5, 9, 11, 12 में शु., शु., श., यह न हो [पार्षद]

जब शनि नं. 9 में हो या वर्षफल में आ जाये ।

जब उत्तम हो । [उंगलियों की बोरी में 5 लंब हो ।]

जब केतु नं. 11 में हो ।

केतु नंदा हो ।

2-5-9-11-12 में शनि ग्रह - शु. शु. श. यह हो [मुर्ज नं. 2 पर 5 घड़े खत]

होगा ऐसे समय केतु का उपाय लामदायक है ।

4. वृ. चुप रहेगा मगर बुन न होगा । जब यह नं. 9 में हो ।
 5. भिसा के लिए दोड़ता साथु मंदा हवा के झोके, सब ओर तंगी जब यह मंदा हो ।
 ही तंगी होगी ।

बृहस्पति खाना नं. 6

| मुफ्त खोर मवर साथु स्वमत ।

मुफ्त ऐटी गो¹ तुझको हर दम मिलेगी, मगर माया तो दूढ़नी ही पड़ेगी ।

मानसरोवर बाप का उत्तम, शर्त अपनी कोई न हो ।
 हालत शनि पर फिलहाल होगा, यजा बुल या निर्यात हो ।
 5, 12, 9 उत्तम दूजा, बुल होता स्वयं चन्द्र हो² ।
 खेष्ट बड़ों के नाम पर बढ़ता, एजसभा चाहे मन्दिर हो³ ।
 बफेले बुल बुद्ध केतु फलता, भला चलन जब तक हो ।
 उत्ट मुकद्दर चक्र चलता, खाक मरा, सब मस्तक हो ।

वृ. हनेशा राशिफल का होगा ।

1. 2, 5, 9, 11, 12 में वृ., श., यह. श. नहीं ।

2. वृ. अब चन्द्र नं. 2 का फल देगा जिसमें वृ. व केतु का उत्तम प्रभाव होगा । यह है कि दृष्टि खाती हो नं. 2 से । मात्रा बुद्ध खानदान की उन्नति होगी ।

3. बुद्ध मंदा, बुरे दिन हो; केतु मंदा, फकीरी का नशा ।

हस्त रेखा :

भाग्य रेखा की जड़ में केतु का चिन्ह या खाना नं. 6 में नुद्द से शाख हाय की तंबाई में स्तम्भ हो । उंगलियों की पोरी में 6 चक्र ।

नेक इत्तरत :

हर चीज बिना भागे निते । अपना भाग्य दोहते, भानजे या मामा के घर के प्रभाव से उत्पन्न होता । बड़ों के नाम का खेष्ट अपने भाग्य की नींव होगी, जिससे अवधूत दर्याश [खुद परंदी] बाद दर्येष्व की हद बंदी सहानक होती । उसका पिता जब तक रहेगा दाता होगा तो पूरे मान का मालिक होगा मगर टर्टने वाला भेदक न होगा । फिर भी होता तो धन की वर्षा का स्वामी या सोने की खानों में रहने वाला होगा । मृत्यु रमय पर उस समय सब ओर रे सुखी होगा । लेकिन टेवे चाले के जाय ऐसा होने की शर्त न होगी । यदि ऐसा न हो तो पिता छोटी आयु में चल दे जो कि व्यावशयक नहीं कि जल्दी ही हो । मुफ्त खोर यह आदमी ऐसी पट्ठा होगा । जायारप जीवन का स्वामी दिमागी खाना नं. 18 केतु जिस दिन से संतान हो और बुद्ध व्यापार आदि का साय होने पर फोकी उम्मीद का मालिक होगा । अपना भाग्य राजा या फकीर की हालत का फेरता [धन की हालत] शनि की नेक या बद हालत पर होगा । नाम तरफ के उत्त प्रलन्त होने परन्तु [मामा या उड़के पर के] जातक के त्रिए 40 वर्ष की आयु तक शाथु या बिना अर्थ के होमे या शवु होमे ।

1. चन्द्र नं. 6 का फल और बुद्ध लेते मान रेखा के उत्तम फल होंगे । [तइके] केतु की चाँच रितंदार या कार्य [गणेश जी के चूहे बहुत छोटी रेशिफल] से स्वयं श्री गणेश जी [जिसको

2, 5, 9, 12 में वृ., श., ज., य. न हो मित्र ग्रह याहे हो और शान्त नं. 2 से दृष्टि भी बज्जो हो हर ओर से जर्दी और अकेला ही । वृ. हो । [उत्त नं. 2 से शाय बुर्ज नं. 6 पर

छार पूजता है। और लड़कियां गल्ड भगवान्। [बड़ी उत्तम हस्तों] की तरह मान के जीवन का स्वामी होगा।

चरों जाये।

2. ऐं व्यक्ति को रोटी के लिए भेदनत करने की आवश्यकता न होनी। यदि उसके पास हजारों भेदमान आ जायें तो रोटी दे सकता है। परन्तु नकद मुद्रा के लिए मारा मार किरण। कमाने का मोका आवेगा नहीं, ना ही काम करेगा।
3. ऐश्वी पट्टा [नेक अदौं में] मतलब परस्त होगा।
4. चाल चलन नेक होने पर मामा और सम्बन्धी प्रसन्न होंगे और टेवे वाला स्वयं प्रसन्न जीवन का स्वामी होगा। मगर उसके मामा उनके लिए 40 वर्ष तक विना अर्थ के होंगे।

2, 5, 9, 12 पापी ग्रह बु., शु., श., रा. न हो, 2 से दृष्टि स्थानी हो या न हो। [उंगलियों की ओरी पर खड़े खत कितने हों हो।]

मंदी हस्तों :

1. 34 वर्ष की आयु तक उल्टा चक्र चलता रहे, मंदभाग्यता देखने को निले, भाग्य की मार का मुकाबला करे।
2. जब हाय में प्यासा लिए फकीरों की तरह रोनी के लिए सर्द आहों से मर रहा हो। मंदे समय केतु का उपाय लाभ देगा।

बुद्ध उत्तम हो। [उंगलियों की पोरियों पर 6 चक्र।]

जब केतु उत्तम हो।

[भाग्य रेखा की जड़ में केतु का चिन्ह।]

जब बुद्ध मंदा हो।

जब केतु मंदा हो।

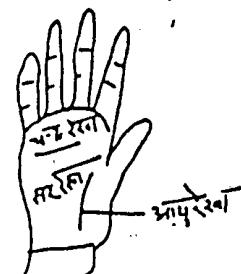
बृहस्पति खण्ड नं. 7

पिछ्ले खण्ड का साधु जो जन्म से परन्तु चंक्षु में रूप के लिए नहीं स्पा और गृहस्थ। [नं. 7 में] एजा जनक की तरह उन्नासी साधु। [बु.] जो माया। [शु.] में होता हुआ लक्ष्मी। [शु.] को संस की हवा। [बु.] की तरह ज्ञानने वाला, चुपचाप शांत परिवार का गुरु होगा।

पुरुष के टेवे की हालत से घर में कुत्ते से भी कम कीमत, नियन साधु परन्तु स्त्री के टेवे में सन्तान तथा धन किसी के लिए मंदा न होगा।



धर्म माला पेती, न परिवार देती।
बड़ी शानोशीकत, विला हिरत है।
संतान नेकदरी¹ गौर न करता, नकद माई न हृकृत हो।
वक्त बुद्धापा हो सुख किरका, जारी² तरलता धन को हो।
9वें में शनि 7 हो मन्त्र रेखा, रिलक चन्द्र खुद देता हो।
घर से बाहर क्षों दोड़े किरता, नक्ता लिखा हो घर में जो।
तज्ज्ञ साधी या घर गुरु बैठ, मंदा शूक्र³ या शनि हो।
॥ शनि, मुष 5-2-12, मुत्तकने⁴ मरे ओलाद नहीं हो।



- 1। नर ओलाद से दुखी, प्रायः दुखी
- 2। सू. नं. 1 में हो तो कई प्रकार के दाय के काम ज्ञानने वाला तथा ज्योतिर्णी होंगा मगर धन की अधिकता की शर्त न होती।
- 3। स्त्री स्वयं सुन्दर य सुख देने वाली होगी मगर धन की कमी ने मिट्टी में किसी होगी।
- 4। नं. 2-5-9-12 में बु., शु., श., रा., विशेषकर शुक्र मंदा तो चतान बरसाद परन्तु जब 2-6-11-12 में बु. श. तो स्वयं बरसाद।

हृत्त रेखा :

3 चक्र, 3 शंख, 3 संष, 3 खत, 6 खत, चार चक्र या 5 शंख या शुक्र का बुध हो यदि या वृ. वा बुजे बहुत बड़ा हो या नरम हाथ का वृ. होवे। उंतान रेखा ज्ञादी रेखा को काटे। भाग्य रेखा की जड़ पर बुध का चक्र। शुक्र के पर्वत पर भाईयों वीरेखा, सम्मा और टेढ़ी हो। सर रेखा आयु रेखा से अलग होकर वृ. के पर्वत को जाये।

वृ. नं. 7 [नेक]

(44x)

पर्वत कार्य में भ्रुखिया व धनो। पर्वत का झंडा हर समय हाथ में होगा। अपना भाग्य मासूल शक्ति या ल्ली जाती से बढ़ेगा। अपनी सारी शक्ति या धन की हालत चन्द्र की अच्छी या बुरी हालत पर निर्भर होती। प्यार असूल नीबू होगा। परदेश की जापदादों की तरफ क्यों भाषे जब मरना घर में हो। सफर से जीवन सुखी और वह सफर में कभी भी न मरे। यदि वहाँ मर भी जाये तो उसकी लाज्जा अपने ही जद्दी भक्तान में आयेगी। स्त्री के देहेज का समान भाग्य बदलनेवाला। वह एक कानूनीय मुद्दाफिर होगा और सहायक होगा। मरन स्वयं 34 सात की आयु तक आएग, धन संतान की ओर से आय लगी होगी, परेशान रहेगा। 34 साल या 45 साल की आयु में लड़का होगा, वह पिछ्ले सब दुखों को दूर कर देगा। अखण्ड समय वह कर्वे छोड़कर न मरेगा। न ही लायलद होगा।

1. बड़े परिवार और धन के भंगार यदि शनि के स्वभाव का [चालाकी] का स्वामी हो।

जब वृ. नं. 7-9 में। [मच्छ रेखा जब छने नं. 7, उर्ध रेखा उत्तम जब छने 9]

2. पूजा पाठी, तपत्वी पर धन की अच्छाई की शर्त नहीं।

केतु उत्तम हो। [उंगलियों की पोरी में 5 शंख।]

3. वृ. और बुध दोनों का उत्तम फल होगा।

बुध उत्तम हो। [उंगलियों की पोरी पर 6 खड़े खत।]

4. आणम से भग्न जीवन विशेषकर जवानी।

एहु उत्तम। [उंगलियों की पोरी पर 6 खड़े खत।]

5. ज्योतिष और संखार के मेंदे जानने वाला अनुभवी। आणम पसंद ज्यादा धन की शर्त नहीं।

सू. नं. 1 में। [बुध के बुन्दे पर सूर्य क्षेत्र और वृ. का चिन्ह, चक्र, शंख, सीप हो।]

6. अपने पुरुखों का टाठ-शाट शादाना करे चाहे अपने तिए धन की शर्त नहीं परन्तु पर्वत कार्य में प्रेरिद्ध होगा और पर्वत का दिवाना होगा।

1-2-5-9-12 में वृ. के मिश्र ग्रह [सू., चं., मं.] हो।

वृ. नं. 7 मंदी हालत :

लड़की के टेवे में कभी नदा न होगा। मगर लड़के के टेवे में उसका अपना लड़का तो क्या दत्तक पुत्र भी न रहेगा। अच्छा यही है कि पर्वत की खातिर उंतान न बेदे, नहीं तो बुझापे में पछतायेगा।

रद्दा धर में क्लेन्टर न परिवार देगा।

बचे लड़का जब, तो वह मिट्टी करेगा।

1. येरा बहन बुआ, मंदे यग रंग का शोक पहली मंदी निशानी है। निर्पत्ती और मंदे हो हाल में होंगा, चोर, डानू, ठग भी हो सकता है। जल्लत के समय बुज्जे भी न मिले। आवाह सापु का याय या शहर दर शहर पर्वत प्रवार करते फिरना मंदा फल देगा।

2. दूषणे यों चाहे योना तोत तात पर गुप्त दे अपने भेट के लिए भेदनत यारनी ही होंगी। जानकर्ता योना बुज्जा भी स्वयं भेदनत करके ही रोटी नितारी।

मंदल चर [मंद बुध का लम्बन्य।]

[उंगलियों की पोरी पर चार चक्र।]

योना नं। बाली [योना वृ.।

[उंगलियों की पोरी में तेट खत निरल।]

3. 'न ही भाई ये रक, न ही राजदरबार में अच्छी जगह पद मिलं

वृ. स्वयं 7 में मंदा हो रहा हो । [शुक्र के नुंम 7 पर लम्ही पर टेढ़ी लकीरें]

4. जलाने में ज्ञान की तरफ भागता और संतान की परवाह नहीं करता । दुष्टों में शुभ भौंर धन कहाँ से आएं तरहना पढ़ेगा ।

मंगल वद [शुभ का सम्बन्ध]

5. गद विशेषकर जब शुक्र मंदा हो । मुत्तवने भी भरे । गप या चाबे को दमा हो । मिट्टी का मायो । चने की तवे पर का हाल हो । सोने की जगह हर ओर निट्टी ह ही उड़ने लगे ।

1-2-5-9-12-7 में तु., शु., ए., श. पापी हों ।

के लिए तरसता रहेगा जो 45 साल में होने लगा । परन्तु वह खुद बरसाद हो जायेगा । मुत्तवना भी दुर्बी हो ।

[वृ. रेखा शादी रेखा को काटे या शुभ के पर्वत पर वृ. के सीधे खड़े खत]

नवान का युत्तलापन, आयु किस्मत या पर्व सभी मंदे । जन्म में भैंद हो ।

श. या तु. 2-6-12 में हों ।

मंदी हालत की निशानी पर में रुत्ताया या लाल रंग व मंगल वद की चाँजे होगी । रुत्ताया जो गोता तो दाने के काग भारी । और इनको पीते कपड़े या सोने के साथ रख दिया जाए तो सहायता हो जायेगी । मंदी हालत में चन्द्र का उपाय सहायक होता ।

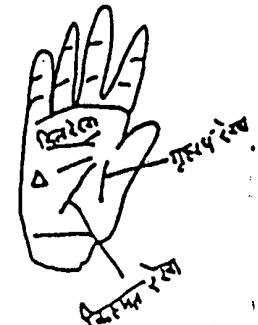
जब श्वने या शुभ 9-11 में हो और मंदे हों ।

[भाग्य रेखा की जड़ में गोल दायरा हो]

नृहस्त्रि स्तन नं. 8

[जुंगीयत के सभ्य परमात्मा की मदद का मालिक, हर वत्ता से बचने वाला, घर का पुरखा, कविस्तान का सशुभिस्तक सर रख से भर जुका होगा ।]

बड़ों का दो साथ, जब यह करता ।
धन सोना माया, आयु उच्च बढ़ता ।
उड़े खोपड़ी फिर भी जिन्दा¹, साथ फकीरि न देगा ।
आठ बाजा न देशक बैठ, भैंद² उपा बत्ता देगा ।
बेठे शुक्र घर 2-6 साथी, संतान रहित वह न होगा ।
दान सोने की लंका अपनी, शिवजी एवज के कर देगा ।
शुभ मंगल वद³ पापी मंदा, कवर विहने कर देगा⁴ ।
शनि मंगल 7-4 जो बैठ, एव खाने घर देगा ।
जिस्म पर सोना कायम रखे, दुखेया कभी वह न होगा ।
शुभ⁵ एह इष्प पितृ टेवे, आयु शक्ती तब पालेगा ।



1. जब नं. 2-4 उत्तम हो । 2. जब चन्द्र उत्तम और 2-5-9-12 उत्तम । 3. 2-5-9-12 में तु., शु., श., ए. ।
4. वृ. या शु. की चाँजे पर्व स्त्यान में देना मुबारक होगा । 5. काला, काना, संतान रहित टेवे में मंगल वद तेते हैं ।

हस्त रेखा :

2 शंख, 8 सीधे खत, गृहस्थ रेखा गीधी हो, 8 या ।। चक्र या 6 अंगुलियाँ हो, भाग्य रेखा सूर्य रेखा से न मिले । वृ. का पर्वत विल्पुल न हो । इष्प पर त्रियोग हो । भाग्य रेखा या दिल रेखा 2 शाखी हो । भाग्य रेखा की जड़ पर त्रिक्लेष हो ।

नेक हस्तरत :

1. स्वयं धनवान हो या न हो मगर उंसार के सब तुख बहुत ज्वरे पास होने । दुख के समय परमात्मा की सहायता दित्तेवी ।

सौंच को आंच नहीं, यरना सुद आग जले की कोत का आई होगा। अपना भाग्य परनात्मा और धृष्टिमक शक्ति ते चनाए। जब तक ज्ञान पर सोना रहे दुःखी न हो। स्वास्थ्य मंदा न होगा। संसार में दमकता सोना होगा। किर्दा का मोहताज न होगा। फकीर या संगोट बंद साधु न होगा। बाबा की आयु 80 वर्ष से कम न होगी। परन्तु टेवे बाला और उसके बाबा कभी एक साथ न होंगे। घर के सभी व्यक्तियों की लम्बी आयु का पट्टा लिख देगा। अपने भाग्य को जाने या न जाने मगर उपर्युक्त भेद को समझ से पहले ही बता देगा। जब तक उपस्थित रहेगा मरने वाले के प्राप्त नहीं निकलेंगे। हो सकता है कि बाबा उसके पैदा होने से पहले ही घल पढ़े या 8 वर्ष की आयु में ऐसा हो जाये नहीं तो बाबा की आयु 80 वर्ष होगी।

1. भाग्य को जगाने का स्वामी तिर घड़ से उतर जाने तक साथ देगा। वीरन जंगल में सब कुछ खोकर लिन के कपड़े तक बंधा कर जहाँ पर भी बठेंगा वहाँ ही हरियाली और सोने की खाने, धन की ढूँढ लेगा। स्वास्थ्य, धन, परिवार से कभी दुखी न होगा।

खाना 2, 4 उत्तम है।

2. हर ओर सोना ही सोना भरे भंडार। उपर्युक्त भेद बतलाने की हिम्मत, आयु लम्बी।

चन्द्र उत्तम हो और 2, 5, 9, 12 उत्तम हों।

3. कभी संतान रहित न होगा। पुत्र 6 तक होने, अपनी और सबकी आयु लम्बी होगी।

शुक्र 2, 6, 8 में हो।

4. खानदान की लम्बी आयु का ठेकेदार होगा, खारक अपनी और बाप की।

जब तक दुय नं. 9 में न हो।

5. शिव जी [चन्द्र] अपनी दयालुता से रावण गुरु [शुप्त] को सोने की लंका दान कर देने की शक्ति देगा। मरते को पानी और दुखिया के आंसू पोछने वाला पर्वतीर होगा।

जब भंगल नेक हो या भंगल खाना नं. 2 से शुभ सम्बन्ध हो।

वृहस्पति की लम्बी हालत :

1. कद्र, वीरने और खजाने राख से भर देगा। जमाने की हवा को शैत के खूनी तृफान से गुंजा देगा।

शनि या भंगल खाना 4, 7 में हो।

2. भंदा, बदनाम आधिक होगा।

वृ. मंदा या शुनु से खिह हो। [हाय पर दुर्जन नं. 2 नीचा हो।]

3. आप ठीक होते, हुए भी कर्जाई, स्वास्थ्य धन हर दो मदे, उल्लू की तरह जिस जगह बैठे वहाँ ही सब्ज कदमा सामित हो और स्वयं शमशान की खाक तिर में ढाले और दून जले साधु की भाँति होगा।

भंगल मंदा या दद या दिल रेखा पर भंगल दद त्रिकोण $\triangle \angle \wedge >$ के निशान हो, गृहस्त्री रेखा सीधी छड़ी हो या दुर्जन नं. 2 या 4 या भंगल दद के निशान हो।

4. बार-बार जन्म लेने का दुःख भोगे और आयु कम ही होगी।

2, 5, 9, 12 में दु., शु., ई., श. पाणी होकर बैठे हो।

5. घेटे दिल का, दरिद्री, रीमारी का भंडार, बैठे-पिठाये मुसीबत बढ़ी कर ले।

जुध मंदा हो।

6. दून यी यानी गार्ता य शार्दूलक परेशानी हे भय दांगा।

खाना नं. 12 खाली हो। हाय यी उंगलियों के नाखून पीले।

7. भाग्य की कोई किरण न होगी।

जब सू. अच्छी हालत में न हो। भाग्य रेखा सू. रेखा से न मिले।

१३

8. जीवन खाना पूरा का नाम हो । जब यह मंदा हो । [जुर्ज नं. 2 पर यात्रा खड़े रहत]
9. निर्वन, कम दिल वाला, दर्दी । केतु मंदा हो । [उंगलियों की पीरी पर दो शख्ब]
10. पक्का इहां, स्वतंत्र विचार, बढ़ने का विचार, उत्तराह भरी तर्जनी शुक्र नम्बरमा की तरफ । शनि प्रबल हो वृ. से ।
उम्मीद, सब बातों ऐ उट प्रभाव हो ।

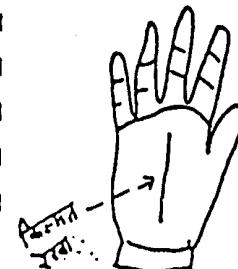
३ उपाय :

मंद समय में बुध या शुक्र की वस्तुएं धर्म स्थान में देना सामराज्यक होगा ।

नृहस्त्रि खाना नं. 9 में

सुनहरी खानदान यत्न स्वयं धन का त्यागी और योरी जिसके पांच, पर्याप्त और कुलुरी सदा सहायता पर होती ।

माया छोड़ संसार की न धर्म बत्ता ।
धर्म स्वयं उलझत, सभी कुछ ही जलता ।
धन की थेली पांच³ टीने, योग पातन 12¹ हो ।
माया धन मुतर समझे, फिका पानी बंगा² हो ।
पांच चौथे बुध जो बढ़ा, एजा योरी होता हो ।
पापी शुक्र पांचवें आया, देट⁴ दुखिया भरता हो ।



1. २-५-९-११ में बुध शुक्र या पापी न हो । 2. धन, परिवार, बंग
3. जब ३-५ दोनों खाली तो माया उत्तरके पीछे दौड़े और जब सूर्य उत्तम हो तो कभी धर्महीन न हो ।
4. पहली निशानी पर्महीनता व खुद पसंदी होती पर जब नं. । खाली तो स्वास्थ्य मंदा और दिल की बीमारियां होती हों ।

हस्त रेखा :

भाग्य रेखा सीधी छण्डे की तरह खड़ी होते ।

नेक छालत :

अपना भाग्य पुरखों की सहायता या धर्म की सहायता से बढ़ेगा । प्राप्त जाये पर वचन न जाये का कायल, वचन से धर्म और धर्म से धन जाए हरे नहीं, ज्यो-ज्यो आयु बढ़े योगी, उत्तम जाना होता जाए आयु करना से कम 75 साल होती होगी । जन्म समय उत्तरके बड़े मालदार होते, जमीन के मालिक होते । रूपया गिनने की बगाय तोते जाते । चाहे स्वयं त्यागी होगा और योरी भी ममर उत्तरका शाप भी शुभ फल देगा । उत्तरका और उत्तरको फोका धनी भी भंगा जल की तरह होगा । [यानि मंत्र = दरिया, आ = आल ओलाद] धन दोलत की आमदान व बरकत होती । माता-पिता का सुब । पर वाले हस्ता दिखाएं । हकीमी जानता हो । चाल चलन उत्तम हो । शराब न पीता हो । उर्ध्व, नीचे होते कमाल का होगा, लहानी कर्म सदा ऊंचा होगा । दिमागी धान नं. 9 वृ. का उत्तम फल । धन की हालत खाना नं. 3, 5 से पता चलेगी । यदि दोनों खाली तो भेहनत से अमीर हो जायेगा

परन्तु प्रयत्न उत्तम सफल होगा ।

1. प्रभों और यचनों का पालन करेगा । योग पालन य करता हो । 2, 5, 9, 11 में शुक्र ग्रह तु., शु., श., एहु न हो ।
जगत् धर्म में पक्का । योग पालन की अच्छी या बुरी हालत खाना नं. 12 के गुहों पर होती ।
2. एजा दोते दुए भी योरी । बुध खाना नं. 4, 5 में हो ।
3. कभी पर्महीन न होगा, यदि होगा तो संसार में न रहेगा, दुनियां में सफल हो, स्वास्थ्य मिले, चाहे वृहस्पति मंदा ही हो जाये । जब सूर्य काष्ठम हो ।

4. घन के लिए भाग्य शनि की ज्यु [33-39] [16-1/2 - 19-1/2] से निर्णय जायेगी। घन बहुत परन्तु औलाद के लिए शनि का फल मंदा होगा।

शनि नं. 5 में हो।

5. कभी शाह कभी वर्षय, कभी फर्कार, कभी अमीरी के छठे, कभी वरीबी के सुग्रह की रेत की चमक भी न होगी।

शु. और चं. दोनों ही खाना नं. 3, 5 से देखें। [वृ. के सुडे सप्त वुर्ज नं. 4 या 7 पर हो। खाना नं. 9 की हृदवंदी पर हो।]

6. शू. का प्रभाव तीन बुना हो जाए और जो नर ग्रह नं. 3, 5 से देखता हो, उससे सम्पूर्णत प्रभाव भी पलटा हो जाए। प्रभाव यदि उसके जन्म से पहले स्पष्ट गिन गिन कर प्रयोग किये जाते हों तो बाद में तथाजू से तोल कर प्रयोग किए जायें अर्थात् धन के ट्रैक लग जायें।

जब नर ग्रह 3, 5 से देखें।

मंदी हालत :

1. निर्धन, नास्तिक, धर्म को छोड़ जाये परन्तु निर्धनता कारण न हो।

जब दृष्टि आदि से वृ. की हालत मंदी हो।

2. हर समय अपने आप खुदगर्ज, दुर्दरबादी का तूफान जोरे पर हो, औलाद मंदी, बैटे से दुखी मर जाता हो। पहली निशानी धर्म-हीनता हो।

शु. बु., शु., श., ए., या पार्षी खाना नं. 5 में हो।

3. सेहत मंदी, दिल की बीमारी।

जब खाना नं. 1 खाली हो। उंगलियों के नाखूनों का रंग पीला।

4. अपने भाग्य के लिए दुनियां के विस्तर आप ही मेहनत करनी होगी।

खाना नं. 3, 5 दोनों ही खाली। [भाग्य रेखा अकेले ढड़ की तरफ खड़ी हो।]

5. कम आयु, मंद भाग्य चर्त्तिक मंदत बद का नुय प्रभाव होगा।

नुय मंदा हो। उंगलियों की पोरी पर।। चक्र हो।

वृहस्पति खन्ना नं. 10

[पहाड़ी इलाके का वृहस्पति, हर झे के लिए कल्पना दरवेश।]

लिखा माया दीलत न या जो विधात।

बनाएगा क्या तू वह आंसू बहात।।

ब्वारी महल¹ न कीमत अपनी, न ही पिता घन छोड़ता हो।

लेव मंदा चाहे अकल सयानी, सिर्फ़ शनि² ही तारता हो।

रहम लालच शनि चन्द्र³ चौथे, एष सोने⁴ की होती हो।

शुक्र मंगल जब चौथे बैठे, मिट्टी सोना⁵ खुद देती हो।

10वें शर का नीच वृहस्पति, रवि⁶ से सोना करता हो।

शनि का गिरदां पहरा होये, हर दो चूलहे⁷ धरता है।

रवि मगर खुद जला जलाया, मदद चन्द्र की पाता है।

शनि से हो जो पत्थर फूँकि, लाल रवि कर देता है।

1. नाक साफ रखना मदद देगा।

2. शनि नं. 11, तांया भी खोना हो विशेषकर जब 2, 4, 5, 6 में सूर्य या चन्द्र कापम हो। शनि के काम, जब 2, 4, 5, 6 सब खाली तो मंद भागी। नं. 2 खाली कम धन उत्तम स्थास्य।
3. शनि नं. 4-6 हो तो 18 वर्ष की आयु ऐ पिता या जीवन फलता है। च. नं. 4 हो तो भाता 16 ऐ 27 वर्ष की आयु में बहकी होगी।
4. वृ. कापम करना, केतु का उपाय चलते पानी में तांये का पैसा बहाना, बहाते रहना सहायक होगा।
5. ज्व. 4 में श., चं., वु. या नं. 5 में सूर्य हो तो शुक्र का फल संतान धन, स्त्री बरवाद।
6. सूर्य नं. 4 में हो।
7. शनि नं. 10 में हो।

हस्त रेखा :

सूर्य के बुर्ज पर युध की ओर एक सीप, 10 चक्कर या आयु रेखा चन्द्र पर सनात्त हो यद्यनि पितृ रेखा बनी हो। च. और शनि के बुर्ज दोशाद्वी से मिले।

नेक हस्तरत :

अपने भाग्य का उदय, शारीरिक कार्य [हाय से करने वाले] होना। जिस कदर कर्मी, धर्मी और नेकी करने वाला हो उतना ही यंग, उतना ही दुखिया, और हर ओर से मायूस फोकी उम्मेदें। न निते ऐ न माया। लालच की मंदी हवा हो तो आए माये। परन्तु इसके बदकारी धोया ही देगी। धन न होते हुए भी झक्कत का घनी हो। भाग्य का उन्नत या नीच होना और टेवे वाले को भाता-पिता का सुख शनि की अच्छी बुरी हालत पर चलेगा।

जब शनि उत्तम हो, और खाना नं. 2, 6 में सूर्य या चन्द्र कापन हो तो बृहस्पति [का मकान], सेहत, मकान के किसी भी एक तरफ परन्तु बांध में नहीं या धर्म स्थान का साय नेक शनि का काम देगा। शनि की तरीयत चालकी कामयादी का मेद कार्य, भाता-पिता का सुख नेक रहेगा।

1. मिट्टी की सोना देगी। अगर इश्क, धोरी छुपा कर न रखेगा। मंगल या शुक्र खाना नं. 4 में।
स्त्रियां रेशक 2 या कई हो परन्तु अपनी बनाकर रखी हुई हों तो कोई मंदा प्रभाव न होगा।
2. माता का सुख सामर जैसा शनि रेखा होगा। शनि उत्तम तो 33 से 39 साल में भाग्यवान और उल्टी हवा के चक्कर में सून्न पड़ेगा। शनि की हालत पर फैलता होगा। [आयु रेखा चन्द्र के बुर्ज पर बत्त हो या पितृ रेखा ज्व. रही हो।]
3. वृ. ज्व. नीच न होगा, उत्तम हो जाएगा, खोना होगा, जले हुए पत्थर से भी सोना बन जाए। सूर्य नं. 4 में हो।
4. मंगल की चाँचे व रिश्तेदार कार्य, भाई की मदद या उसके शुभ रंग पर्यने से 28 साल की आयु में उत्तम हालत का स्थार्थ तथा एवके पूछने की जगह होगा। जब मंगल नं. 4 में हो।
5. पर शट में पूरी बरकत। जब शनि नं. 2 में हो।
6. सोने धांडी के कार्ड से फायदा, मगर शनि के कार्ड से हानि, आदि से मंदी पटनारं हो। सूर्य नं. 3-5 में हो और शनि नं. 9 हो।
7. एंजेंट्स के कार्ड से पूर्णता, उनसे मोती पैदा हो और नेक हो। सूर्य या चन्द्र खाना नं. 2 में हो।

8. टेवे या बुध अण्ड, टेवे याते के याप के निर्वन और येटे को गांड़ी राहायता चाहे जीवन में, चाहे मरने के याद अपर कभी कोई हो तो सब भावे पर होगा । याप पर बुध अतर न होगा ।

गुरुं खाना नं. ५-५ पर हो ।

9. संतान सङ्के ही लङ्के, तांचा भी सोना हो जाए, खुशहाल होगा, उत्तरदायित्यपूर्ण होगा ।

बुध उत्तम और वृ. को बरवाद न करता हो । [उंगलियों की परियों पर १० चक्र हो ।]

मंदी हालत :

ऐसा गनुप्य स्थयं धर्म मर्यादा का स्थानी, मर मिर्झन ज्यू-ज्यू नेकी बढ़े निर्वनता बढ़े । जग्ना इच्छा, शुद्ध तेल भी ऐशान के बहवर भी न माने । बचपन, बुद्धापा दोनों मरे । पिता भी निर्वन होगा । मरते वक्त कोई धन नहीं छोड़कर मरेगा । यदि कुछ छोड़कर मरेगा भी तो टेवे याता उम्रका प्रयोग नहीं कर सकेगा । न कभी अच्छी हालत देखने को आएगा । छवाब चाहे महतों के पर जागते ही अपनी चारपाई को बीमार पशु के तब्देले में ही देखता हो । आरजू पूरी न हो ।

उपाय :

1. माये और पगड़ी पर पीले केसर का तिलक लगाना और नाक साफ करके काम शुरू करना सहायक सिद्ध होगा ।

2. पिता की हालत मुश्वार के लिए 40/43 दिन चलते पानी में तांबे का खेता बहाना सहायक होगा ।

3. वृ. नं. १० में मंदा हो, वृ. को उड़ाने की कोट होगा, हर तरफ लानत मलामत मिले । हर दखाने का मंदा भाषूर दरवेश हो ।

1. फ़लतू खर्च बढ़ी का सहायक । जाहिल सम्प्रदायिक होगा । जुने मंदा हो [तूर्य के दुर्ज पर दुव की ओर एक सदफ हो ।
हर बात का फ़ेरला उठके उत्तर होगा ।

2. शरीर पर तरस खाकर जब कभी भी अच्छा काम करे दंड भोगे ।

अपनी जान पर इन्हों के जुल्म देखो यदि किसी को मूल कर मेजन दे तो जहर के इल्जाम में पकड़ा जाए ।

3. सोना राघु हो जाए दिल में भ्रती सोचने से संस में जहर भर जाए [केतु कायम करना या वृ. कायम रखना सहायक होगा ।

4. सब और मंदी हालत, न मान मिले न मात, निर्वनता में कुत्ते की तरह योद्धी रोटी को भी तरसता रहे ।

5. भ्राया कोसी दूर भावे । परन्तु ईश्वर से डरने वाला, स्वास्थ्य अच्छा रहे । भाती हालत नाजुक [खरब अर्थ है ।

6. मंद भ्राया परिवार में अकेला । अपनी भेहनत से काम-काज । आयु का कोई भी सहायता न देगा । स्त्री पर स्त्री या लम्बा खाय न दे, एक बच्चा देकर भाय जाए या जुदा हो जाए ।

7. पिता के लिए निर्झन का असामी होगा । टेवे याते की जोटी आप में अप्राकृतिक शून के जहर के प्रभाव से मर जावे । पन भी हालत थोथा चता जाने पना सी हो । लोक कहे इसके पियाह के लिए जर्खि यह ३४ साला आयु तक अंदर से खाली दोस हो जाये । [नाम गाफ रखना और नाम छेदन परना सहायक होगा]

जब शनि नं. ४-१०-१ या चं. खन्ना नं. ४ में हो ।

केतु भरवाद हो ।

ज. खाना नं. १, ४, १० हो और २ खाली ।

सिर्फ खाना नं. २ खाली । हाय के नादून पत्ते, शुके, टेढ़े हो ।

2, 4, 5, 6 सभी खाली हों [भ्राय रेखा ऊर रेखा से अलग ढण्डे की तरह शुरू हो ।

बुध ४, ९, १० में हो ।

8. शनि के कार्य या चीजें या सम्बन्धी, शनि के मंदे वाक्या, आग, जहर, झगड़ा फसाद आदि के बुरे परिणाम होंगे ।
9. स्त्री, लक्ष्मी, जंतान्, सफर सभी मंदे, चोरी हो सकती है ।
10. जिसका सम्बन्ध हो उसका भी बेड़ा गर्क करे । मंदी प्रेरिद्धि हो । घर में कुत्ते को रोटी, चीटी को आटा न भिले । उसके उठठ चलने वाला चब भी सामने आए खुद की फोरन गर्क हो जाये और यह [आने वाला] पछताने का भी मौका न पाये ।
- सूर्य 3, 5 और शनि खाना नं. 9 में हो ।
5-4-9 में सूर्य, शनि, चुप हो ।
जब छने त्वयं वृहस्पति को सहायता दे ।

वृहस्पति खाना नं. ॥

[शनि का एज्य (ईगन से खाली) के समय एिवाए धर्म वाकी सब कुछ बल्कि कफन तक पहुंच, खजूर के पेड़ की भूमि बकेता]

कफन दूधरे पर जो तू देता रहेगा ।

विना कफन घर से न बाहर भरेगा ॥

इश्कहस्त से यर हो गुरु जलता, मर्द माया पर ढोलता¹ हो ।

चुप दवाया हो शनि मंदा², रिफर गुरु त्वयं होता हो ।

धर्म पालन से हो गुणा ॥, मर उत्तम वृहस्पति बनता हो ।

पेशाव पड़ेगा उसको नहाना, नाली चलन चब मंदा हो ।

जंच हुआ चाहे शुक्र टेव³, दुखी स्त्री ज्वको होती हो ।

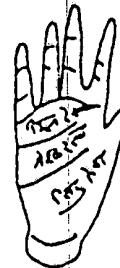
1. मं. 3 में तो, घर की मौतों से दुखिया, बृ. नं. 3 में हो तो अच्छी कर्माई करता हुआ भी कर्जाई होगा ।

2. ऐसे मनुष्य से लिंगों को लाप न होगा, विशेषकर जब नं. 3 खाली हो । आनंदों पर अपने लिए नं. 3 खाली उत्तम होगा । नं. 3 में मित्र 23 जाल की आपु में मदद देंगे ।

3. स्त्री दुखी मर जाए या तलाक दे जाये ।

हस्त रेखा :

7 चक्कर या सर की छेष्ठ रेखा हो ।



नेक हालत :

अपने मार्ग का शुभ प्रभाव, मरीबो पर दया धर्म पालन उपर्युक्त से होना । जब तक घर में एक साय रहकर काम करता जाये, दुश्मि से निर्वाह करने वाला । परंतु जब खजूर के पेड़ की भाँति अकेला रह जाए तो बृ. मंदा हो जाए । पिता के रहने तक चांप भी सजदा करे । मगर ज्यो ही पिता का साया उठा, मर्द की माया, उजा, चापु वृक्ष उबका साया उठ जाएगा, संसेप में पिता लादोपति होते हुए भी भरते समय पुत्र के लिए कुछ भी न छोड़ कर न रे । देटा पिता के धन से लाप न पावे । दिमारी खाना नं. 15 [शनि में सम्बन्धित] खुददारी मगर हस्त (ईस्य) से मुर्दे, दिमारी खाना नं. 35 [चन्द्र से सम्बन्धित] पेशानीं जुर्हे बातों का याद आना । धर्म, अदालत, दरवार का मालिक रहा जहां शनि भी पहले बृ. का हतफ उठाकर बैठा है । इसलिए धर्म पालन ऐ पन के भूमार और बृ. यम प्रभाव ॥ गुणा उत्तम होगा, किए हुए पर्यन, दायदं पूरे फरने से उत्तम हालत मनेगी ।

1. बृ. सोया हुआ । फैलता शनि पर मगर टेवे याले के लिए फिर भी हर समय उत्तम ।

2. 23 जाल ऐशा के बाद फिर अंधेरी रात हो जायेगी अतः बृ. को 3 में बृ., च., म. हो, मित्र हो ।

3. अपना ही कोई भाई नहु मिलने ये या मिलाने से भाग्य उदय होगा । 12 साल ऐसा के होने फिर प्रायः मंदा जो जरूरी नहीं कि हो ।
4. सूर्य यनि एजटरबार या आश के जागा ये कमाया तांगा भी और सोने का काम दे । वृ. नं. 10 की तरह अब वृ. नं. 11 का मंदा अवर यदि कुछ हो भी तो पिता की बजाए बाने पर होगा ।
5. वृ. घुप होगा मगर युध न होगा ।
6. जो वृ. का मुफ्त माल नदारद मगर खुद ऐदा किया अवश्य हो और ज्यादा धर्नी होगा ।
7. चाहे पिता की मदद न होगी मगर वह स्वयं रदा प्रसन्नता से बुजर करेगा और उत्तम हात होगा । मं. भी उत्तम फल देगा ।
8. शनि व वृहस्पति दोनों का फल उत्तम होगा ।

वृहस्पति नं. 11 की मंदी हालत :

अमूमन युध [वहन और बुआ] का फल मंदा ही होगा । धर्म विमुख एजा की भाँति स्वयं वह किंचि को साम न दे मगर टेवे यादे की अपनी हालत उत्तम होगी । पिता की मृत्यु के बाद मच्छर से भी लड़ने पाने की शक्ति रहेगी । चाल चलन मंदा तो बंदी नालियों में नहाए होगा । इसके सम्बन्ध में सुन्दर मिट्टी तक भी न जाएगा । परिवार चाहे कितना हो, कफन पराया ही मिलेगा, विशेषकर मंदे ग्रहों के रिस्तेदार की मौत पर कही बाहर ही जाकर भरेगा । अतः दूसरों की मौत पर कफन दान करना उपाय है ।

1. हस्त, इश्क की अधिकता से तबाही होगी । उसका सोना गंदी गिट्टी भी तरह चिक जाएगा । क्योंकि इश्क वृ. की शक्ति को जला देगा ।
2. बुझाये में मंदा हात, आयु कम 90वां साल मंदा, आंखे कमज़ोर और शनि का अपना प्रभाव मंदा होगा ।
3. वृ. की पहली उम्र का अवर शक्ति हो । घर की मौतों से दुखिया, मगर स्वरुपत्र के लिए उत्तम ।
4. अच्छी आमदान के होते हुए भी कर्जाई, पिता से खुद दुखी ।
5. स्त्री दुखिया हो ।
6. मंसल, वृ., शनि तीनों का फल मंदा हो ।
7. धर्म को बेचने वाला याहे एजा ही क्यों न हो । किसी को साम नहीं मगर अपनी दासत अच्छी हो ।
8. वृ. गोपा होगा निराग फैरता शनि पर होगा, कद लंगा होगा, मर्द होगा, नर्म दिल, पर्मात्मा हो । यदि अपनी ही उंगलियों के ऐसाने से 68 उंगल हो तो भाग्यहीन और 52 उंगल हो तो भाग्यवान् ।

5 में सू., चं., मं. हो [भाग्य रेखा के समानान्तर नं. 11 में दूसरा खत]

सूर्य नं. 1-4-5 में हो ।

यह खाना नं. 9 में हो ।

युध उत्तम हो [हाय की प्लेटियो पर 9 चक्कर । जब वृ. 6 में हो, उर रेखा ब्रेस्ट य दो हो ।]

शनि उत्तम हो ।

इन्हीं सभी हो, क्य 2 में शनि 10 [हाय में दो शाखी से मिले हो ।]

चं. नं. 1 या जब वृ. सोणा हुआ ट्रैष्ट बादि के सम्बन्ध से मंदा हो रहा हो ।

वृ. नं. 6 में और चं. नं. 2 में हो ।

खाना नं. 3 मंदा हो । मंसल नं. 3 में हो ।

युध नं. 3 में हो ।

शुक्र कितना ही उच्च हो ।

चन्द्र मंदा हो ।

युध दमाय य नंदा हो ।

नं. 3 खाली हो ।

वृहस्पत खाना नं. 12

। नुर का भला करने वाला उत्तम जानी बेही ।

प्रार्थनाएं भले की सबकी, अमर तू करेगा,
खगाना न, शर्मिता का तेह घटेगा,

हालत यहू¹ पर्यन है चलता, केतु धर्म स्वयं बोलता हो ।
चुप समाधि वर्षा सोने की, धर्म² बढ़ो क्य दिया बोलता हो ।
8-9 घर 2-10 खाली, माया दौलत सब छोड़ता हो ।
हुआ शनि जब 2-9 सारी, पाता दौलत मच्छ रेखा हो ।
गुरु³ धरो जब पारी⁴ धेठे, नुप, शुक्र स्वयं मंदा हो ।
पाप यदि जब उच्च हो टेये, फरेवार दौलत धन सुखिया हो ।
गुरु उत्तम 2⁵ यहू⁶ विगड़े, साधू खेवा से बदता हो ।
नेकी करे सर झशु कटते, सरहाने पानी जब घरता हो ।
बेठा शुक्र चाहे टेवे केसा, अरर बच्छा ही होता हो ।
नुप आपु तक केतु मंदा⁷, पाप यहू रुक दुखिया हो ।



1. मंदी हालत में चन्द्र [खेती, जमीन आदि] के बीएन खुले भेदान की फोजी उम्मीदें, 42 साल आपु तक पिता निर्धन दुखिया कलपता रहेगा ।
2. जमाने की हवा का पूण और शुभ प्रभाव होगा या हवाई फैस के कामों से उदा ताम ही होगा ।
3. 2-5-9-12 4. यहू केतु शनि नं. 9-12.
5. 11, 19, 31, 42, 53, 67, 84, 101, 114 साला आपु ।
6. दण फरेव, धोखा, झूठी शहादत, बदकारी आदि खुदसाड्ता भंडे काम ।
7. नुप मंदा तो 34 साला आपु तक केतु का प्रभाव मंद मगर शुक्र [स्त्री भाग] कभी मंद न होगा और न ही सांसारिक स्थान की कमी होगी । नेकी से रहत का आहम मिलेगा ।

हस्त रेखा :

3 खत, 6 शंख, 12 चक्कर [जब उंगलियां 6 हों]। भाग्य रेखा की जड़ पर यहू का चिन्ह हो या मच्छ रेखा शुक्र के पर्यंत पर या शुक्र और चन्द्र दोनों पर्यंतों के बीच मुंह ऊपर किये हुए और ज्यं रेखा या ऊन रेखा उसके मुंह में हो ।

नू. 12 नेक हालत :

गुरु पवन माया चाहे चाना ही बड़े,

मगर मंद त्यारी जो देखे न रखें,

अनने भाग्य का शुभ प्रभाव नुच से उच्चन्धित काम योग तपस्या, पूजा पाठ से होना । छोटी न्यु में यहू के समय [पिता] को सर्व की अधिकता⁸ की जिंता । माया पर पेशाव करने वाला वृहस्पति । उरके घर में यंगा होर्षा खाना नं. 9 का उत्तम प्रभाव । माया सर्वांती स्वयं पाय पकड़ती होगी, चाहे नुप गंदा या येतु नुप ही मगर माया की कफी न होगी । शुक्र फही भी केसा भी ही उत्तम होगा । ऐसे व्यक्ति के आशीर्वाद से लाभ और सताने से छाने होंगी । स्लैर के लिए मंडार छोले तो अपना घर सोने से भर ले । चुप समाधि की आदत से सोने की वर्षा होगी । दयालुता के असूल पर पर्ण कहाँ नुचाक होगा [जो रहत का आहम देना] नेक काम करने का अमूल, यहू के हाथी को नू. के सोने की जनीर से जाप देने का शस्त्र देना । निसुसे रहत का आहम और धन मिलेगा, कभी निर्धनता न भाग्य साधु न होगा । ॥ गाल की आपु ने मंत्री की भज्जे उत्तम होना इनदारी का स्थानी, त्यारी होगा खुश गुणहन [दिमागी खाना नं. 12] । नुपी हुई शक्ति उत्तम होगी । उर्चा चाहे अदिक हो पर कर्मितदारी पर ही तरेगा ।

किंतु के घर भेहनान मनहूर गया हुआ, धर्म-स्वान में पूजा-पाठ करता या आयु के निम्न वर्ष उत्तम ही होते और गृहस्य का सुख मिलेगा शर्त यह कि शूठी गवाई, धोया, फरेय, बैझानी। [एहू] से परहेज करें। अपनी समाधि और परलोक के विचारों में लहर में या साथी गृहस्यों के भ्रंत की मर्त्ता और धुन में मन होगा जिरको कोई सत्ताएँ तो शाप पाएगा और सेवा में वशीष पायेगा। आयु के साल 9-11-19-31-42-43-57-84-89-101-114। शुक्र अब अपना पूण प्रभाव कम से कम 25 साल आएग देगा और अपने लिए मन्त्री समझदार होगा।

शनि के कारणार। मोटर लाए, मर्शान आदि से उच्च भाग्यवान हो। यह को आएग पाए। उन्दरी का स्वार्थी। कूच की तेयारी की फिकर में शर्त यह कि शनि मंदा न हो यद्यनि अब शनि को एहू केतु किंतु न हो। फैसला सांस पर हो। यदि जब दोनों या दोनों सांस चल रहा हो तो शुभ कार्य देर तक रहने वाले कार्य शुभ फल देंगे। वायं सांस में किया काम या देखे ही किया काम कोई शुभ फल न देगा।

शनि के कार्यों में मध्य रेखा का अच्छा भाग्य। मगर फिर भी त्यारी।

वृ. दो जहां का स्वार्थी होगा, यह को आएग देगा परन्तु सन्तान की लगन, फजूल खर्च और शत्रु से रकाव और मृत्यु समय उत्तम हालत होगी।

यदि एहू उत्तम होता तो सोना और न उत्तम और सुख देंगे, यहना सोना भी पीतत के भाव दिकता और दुख का कारण होगा। [यद्यनि पन की हालत का फैसला बुद राहू की हालत पर होगा।] धर्म समाधि का फैसला केतु की हालत पर होगा। बड़ा ही अमीर और संतान हर तरफ से उवका सुख हो।

बृहस्पति नं. 12 की मन्दी हालत :

चाहे अपनी आयु लम्बी परन्तु दूरहो के लिए भारी मनहूस।

बंदी का काम मौत का कारण बनेगा। लोगों के सामने हाय फैलाने से एख मिलेगी।

42 साल की आयु तक फोकी उम्मीदें विशेषकर नुष्ठ, शुक्र हर दो ग्रहों के मध्य प्रभाव होते।

एना होता हुआ भी साम न उठाये अपितु फक्कार हो जाये। वृ. योगा होगा।

बुद्धिमान मगर यिथा काम नहीं और कार्य लाभ न है। यिचार धर्म विस्तृद हो। फजूल रुच ग़ज़ा रहे। पिता को एहू की आयु तक कष्ट रहे।

स्वयं भाग्यवान परन्तु नंतान के पिता।

श. साय-सर्वा या द्याना नं. 9 में हो। [मध्य रेखा शुक्र के पर्यंत पर या दुर्व नं. 9 में महती का चिन्ह इसके मुंह में अर्थ रेखा हो या उपर रेखा इसमें द्यत्त हो।]

शनि साय या सत्य 2-11 में हो।

एहू [जंच] नं. 6 में।

एहू की हालत वृ. के बने जहां की हालत। [निस्तर रेखा की जड़ में एहू का निशान।]

केतु उच्च का उत्तम हो। [उम्मीदों की पोही पर 6 शंख।]

वृष्य मंदा हो। [उम्मीदों की पोही पर 12 चक्कर - 6।]

2-5-9-12 में केते पापी रिवाय केतु नं. 9-12 के।

2-8-9-10 खाली हो। [भाग्य रेखा भव्यमा की जड़ पर चढ़ जावे।]

एहू नीच [9-12] में हो। [वृ. 10 के दुर्व पर 3 चंद्र निशान।]

मध्य बृहस्पति।

चन्द्र धरती जो खेती के प्रयाग में सुते भेदान वीरग और चन्द्र के दूर कामों में फाँसी उम्मीदे ।

केतु 34 साल तक मंदा ही प्रभाव देगा ।

मंदा वृहस्पत ।

नुपु मंदा हो ।

उपाय :

१. वृ. की मंदा चीजों के काम, हरदम गले में माला, गुल, सनु या पीपल कटवाना, मंदे भाग की निशानी होगी । वृ. की खींची चीजें, पीला तिलक लगाना या नाक का पानी साफ रखना सहायक रहेगा ।

१ मैर + इन्द्री का फिल्म लगान

सूर्य

| एवका पातन करने याला तप्स्ती एजा, विष्णु भरवत थी ।

गर्म शोक तेह है नीव उन्नति, भगर बद न जाये कि इर चीज हो जतती ।

पाप⁴ मंगल नुपु¹ फैरता करता, ग्रहण होता खुद पाप से हो ।

उत्तम रवि हो जिस दम बैठा, भला च., वृ., शु. हो ।

तत्त्व केतु 6 मंगल बैठा, उच्च रवि खुद होता हो ।

आग जली चाहे 6-7 होता, दान भोती का देता हो ।

मदद मित्र पर चाप से बढ़ता, नमक छोड़े खुद फलता हो ।

शत्रु साथी से केतु² मरता, दान दिए सब बचता हो ।

पांच पहले घर ग्यारह बैठा, शनु मदद पर होता हो ।

ग्रहण टेखे हो जिस दम आया, पाप सुमय तक मंदा हो ।

रवि देखे जब चन्द्र भाई तत्त्व बैठा न जन कि हो ।

आपी आपु जब चन्द्र होगी, लेव भला रब होता हो ।

नुपु नजर जब रवि पर करता, दर्जा द्वृष्टि कोई हो ।

अत्तर भला तब दो का होगा, सेहत याया या दिमारी हो ।

रवि द्वृष्टि शनि पर करता, नुपु शुक्र का होता हो ।

शनि रवि से पहले बैठा³, नर ग्रह स्वी उत्तम हो ।

शनि शुक्र जब सूर्य देखे, भोत भरे दुःख होती हो ।

मकान बनाने रिश्तेदारों के, याया खत्त हो जाती हो ।

1. सूर्य रोशनी गर्मी, वृ. तेज, म. किरण, नुपु आकार, चन्द्र चमक ।

2. सूर्य स्वयं अफेला नीच या मंदे पर्हे का तो भरवाद करने याला गुत्ता उत्तान का भाग्य व आयु, या चाप की मदद मंदी होगी । राहु से अपने विचारों की/पर गंदगी, शनि से बेर्इमानी, शुक्र से इश्क, केतु से कानों का कच्चा, ऐरों की चात ढाल ।

3. उत्तराय सूर्य मंदी हालत के समय स्वयं सूर्य का अपना उपाय काम देगा ।

4. नेक हालत का फैलता पाप | राहु केतु⁴ की हालत पर होगा ।

आकाश में हंगानी, पृथ्वी की गर्मी, राजा भिखु से, सच्चाई और पातना और उन्नते की शक्ति को नूर्य का नाम दिया है । जिसका दोना दिन और न होना रात, मनुष्य के शरीर में रुह, अपने शरीर से दूर की सहायता की हिम्मत का नाम नूर्य है । राती | चन्द्र|, रोशनी, गर्मी | नूर्य का अपनापन्, लाली | मंगल | और खाली जगह का पेह | नूर्य का आकाश व आकार | इसके जल्दी भाग हैं और सुमय की एवा जगत गुरु वृ. के शान, संसारी बुद्धि और भाग्य की नीव इसकी देन है जिसे हर सांस लेने वाले तक पहुंचना वृ. का काम है । चलते रहना, अपना अंत न भताना और इपर-उपर त्रुए दिना एक ही जगह रहते रहना इसी सूर्य देव का ही एक झनूना है ।

32

12 घण्टे में सूर्य की हालत

सतमुग्नि¹ राजा घर पहले का, दाता सुखी जब 2 का हो ।

पन गंदारी स्थान तीरे होगा, जो 6 परे पर 4 का हो ।

भौताद घेठी हर दम पांच के, फिकर धन नं. 6 का हो ।

परिवार करी चाहे होगी सातवें, राजा तपत्वी 8 को हो ।

आयु लक्ष्मी 9 बढ़ता परिवार, दसवें स्वास्थ्य धन उत्तम हो ।

धर्म पूर्ण घर ॥ उसका, यह सुखी घर 12 हो ।

1. बाप की पूरी मदद को, बेटे से उम्मीद न करे । चाहे बाप से धन न मिले पर बेटे को देकर जायेगा ।

सूर्य दुनियावी राजा - जातक के किसी और राजदत्तवर का कस्त

खाना नं. 1

पिता की पूरी सहायता करेगा, बेटे की तरफ से मदद की आशा न करेगा । बाप से चाहे धन न मिले परन्तु संतान को अवश्य धन देकर जायेगा । एजा होगा जिसे रिवाए न्याय के ओर कोई सम्बन्ध धर्म आदि न होगा । हक्कमत धर्म की दुकान-दर्शी नं की त्रियत शुभ होगी । पर रहस्य से भय होगा ।

खाना नं. 2

मंदिर की ज्योति जो किसी मनहव के अनुगार दरी नहीं है, धर्म देवता, माती हालद, स्फ्यम, स्वभाव सत्पुरी, छोटी जगह का एजा जो अपने भाग्य की शर्त नहीं करता भगव साधियों, बन्धों, सम्बन्धियों को जल्दी धनदान कर देता है । चाहे अपने बाप/निर्धन दरवेश क्यों न हो । सेवा साधन उन्नति की नींव होगा ।

खाना नं. 3

मृत्यु को ठेकने तक की शक्ति याता जिससे मृत्यु भी ढेर । खुद हलवा पूरी खाये दूरहो को भी खिलाये । जो शुभ कार्य कर दिखाएगा, झूठे को काट खाएगा । बुद्ध जो इस घर का स्थानी है अपने जंगल के इतना फ्ला कर देगा कि सूर्य नं. 3 की जगीन रक्ष धूप ही न आने पाए भगव सूर्य की अपनी गर्मी से जंगल को ही व्यग्त तक तज्ज्ञ को तेचार होगी । या तो जंगल में छारियती हो या तुप हरे रंग की बजाए खाकी रंग हो जाये । भगव ऐसा व्यक्ति यदि दूरहो को पालेगा तो स्वयं भी पलत्व जाएगा नहीं ढेर कर भर जायेगा ॥

खाना नं. 4

एजा के घर जन्म ले या न ले परन्तु त्वयं एजा अवश्य हो । आप ने चाहे जन्म रे ऐसा न देखा हो परन्तु संतान को रिशम के कीड़े की तरह ॥ ऐसा सर्वने की शक्ति दे जायेगा । माता जीवित हो न हो नज़र बाप की तरफ से हो सकता है कि माताएं अवश्य हों परन्तु स्वयं चाल-चलन याता होगा । ऐसा व्यक्ति स्वयं चाहे हानि जड़ा ते दूरहो की हानि नहीं करेगा । यदि एराई स्त्री को साथ रखे तो संतान न पावे या निरंतान होगा । अगर दान देगा तो माती देच ॥

खाना नं. 5

मनुष्यता की शणफल और दुनियावी मर्यादा से भय एजा जो अपने पारिवारिक दून को अपना घंटेर बना लेगा । जन्म से ही भाग्य का जलता दिया होगा । जो किसी के जलाने से न जलेगा यानि जन्म रे भाग्य का स्थानी होगा । आयु के साथ-साथ धन भी बढ़ेगा । उसके ब्रह्म किए दुए धन से संतान के लिए धन अनाज के रहते खुल जायेंगे, नलामाल होगा । मनुष्यों में कोई बंदर नहीं, ये दुए व्यक्तियों, बंदहों को भाजाद करवाने का हासी होगा ।

खाना नं. 6

आसमान तो गर्म, सूर्य की गर्नी से जगीन भी जलने लगी निरुपकी आंच एते को भी ढंडी न दुर्द । देवकूफ शाह तीस मारखां ।

येत मैं कनक के धोज जलने लगे ऐसी हालत मैं वही बचा जिसने अपने पर पार्ना की जगह दूध दिया, और बुद्धि करने वाले को भी आशांप दी। ऐसा आदर्श जिद पर आया हुआ कैसा ही होगा जैसा कि एक देश से निकलता हुआ उजा अपनी प्रजा को आप की लपटों में जलता हुआ देखकर रोने की बजाय हंस देगा। चाहे वह स्वयं निरंतर या मंद बुद्धि ना होगा। ऐसा व्यक्ति कभी मन और यारी से गंदा न होगा। चाहे उसे भाग्य का लालू मुकाबला करना पड़े।

खाना नं. 7

ऐसे व्यक्ति के पैदा होने पर ऐसा लगेगा कि वह का सूर्य पैदा हुआ। परन्तु चढ़ते-चढ़ते वह दुमदार गाह बन जायेगा। उसने सब कुछ समझ और नेक बुद्धि से किया मगर जब उसने स्वयं होसला किया तो साह जलने से आथा ही बचा लिया। अंत में जब जिम्मेदारी उसने खुशी से संभाली तो सुख की रोटी मिलने लाई और साथ वाले भी आचाद हुए। रुबद्धवार का सब मिला, द्विती पकी मगर अनाज से जले की नू आने लाई यदि ऐसा उजा होगा जिसकी ताज मुम हो मई हो अर्पात सब कुछ होते हुए भी कुछ न होगा। बेशक उजगद्दी पर जन्म लेकर भी गद्दी पर न बेठ पाए। हाकमी यमी की डुकान, नर्मी का हामी होन्, ठीक रहेगा। अगर कोई जला देवे हम भी उसे जलना सिखाएँगे मगर बुद्धि न जलेंगे।

खाना नं. 8

ऐसा व्यक्ति जन्म से ही कहने लगेगा, भरने वाले पूछ कर मैं, जन्म लेने वालों पर कोई बन्धनमहीं जो आए अपना सर्व साय लाए और जाने वाला कोई चीज साय लेकर न जाए। जन्म चाहे इमशान का हो मगर मुर्छ गद्दी/उजा गद्दी का स्वानी हो उसको कोई नहीं हटाएगा मगर अपने हाथों से हाय भाग्य वापिस न पाएगा। यदि भंडारी रहे तो भंडारे भर परन्तु यदि भिषु बने तो भिषा न पाए। जब तक अपने खानदानी खून पर हमला न करेगा, बरबाद न होगा। मर मए का अफसोस तो है मगर जीवित करने की भी हमारी ही जिम्मेवारी है का स्वभाव और शक्ति रखेगा।

खाना नं. 9

हकीमों को यिना दवाई ठीक करने की हिम्मत देने वाला। शाह और स्वयं भी बड़ा हकीम, डॉक्टर। अपने परिवार के बलाया अपने साय सभी को पालेगा। "पिछली को छोड़ और आगे को न पछाड़" लेकिन संसार का सूर्य तेरे साय चल रहा है की भाति कार्य करने वाला होगा।

खाना नं. 10

पैसा तो खाए है मगर बाजार में कोई उसका सोदा नहीं देगा। संसार उसके उच्चें होने पर उससे ढरता है। असती बच्ची आग को भूत-प्रेत की आग समझती दुनिया है। मगर फिर भी उजा घंटांगी गुल्चे वाला दूसरे को माफ करना तो एक तरफ अपने मां-बाप को भी फांसी का तुकम लिख देगा। नाक पर मस्ती नहीं बेठने देगा। जब तक रहेंगे, मुक कर नहीं रहेंगे। जब शुकना पड़ा तो हम नहीं रहेंगे और अगर रहेंगे तो सिर्फ उसी के साय जो हम प्यासा हम नियता हो, की प्रवृत्ति वाला।

दिखाने को सच्चा मगर दिल से शुठा होने की बदमाशी की नियानी अगर नहीं देखी तो वह कर दिखाएगा।

खाना नं. 11

गो लालची मगर पर्म तपत्यी हांगा यदि कोई धर्म देचकर खाएगा तो हमारे क्या खाएगा, के विचार बुलंद स्थानी, जिस तरह नेकी से बढ़े बढ़ता चले। लेकिन जब स्वयं रोटी [कनक सूर्य] के साथ मांस [श.] मिला कर खाए तो सूर्य जूनि के झड़े में केतु [नर संतान] बरबाद हो परन्तु परिवार में ऐसा व्यक्ति आप चाहे किसी भी खून रे हो हम नेकी ही कर दिखाएँगे का फस्का देयता होगा।

खाना नं. 12

सुख यी नीद योने वाले वैफिकर उजा ऐसा जिसके राज्य में नंदर भी पर बनाना दीखे लेकिन जब पर्म-हृष्णि का आदी हो तो अंधी देवी नाक कटे पुनार्पि, दिन दशांडे चोरी की पटनाएँ। बेआएग जीवन जिसके लिए सापु की खेला, शुक की पालना सहायक होगी। सुखह की मीठी हया का शानदार जमाना ना भी हो और अगर जले भी तो आकाश का सूर्य मंदा जमाना ना रहने देगा।

34

उसके चाहे और नितनी भी आफतें [नोरमा] हो मगर वह बरबादी [पतझड़] न देखेगा बारं न ही निवं और चंतान रहित होगा ।

12 स्टो में सूर्य की उत्तम हालत का प्रभाव और अन्य उहों से सम्बन्ध

उत्तम सूर्य याता कुल संग्रह को चमकाये, धन देता हो, लम्ही [100 वर्ष] आयु पाये, अंदर जाहर सब सच्चा हो । भैंद समय बुह प्रभाव इत के स्वन्ध की भाँति बुधे दंग से रहे । किसी का सवाली न हो बल्कि स्वयं देहत पूर्ण कर दे । भीख चाहे न दे मगर किसी की झोली से भी कुछ न ले । स्वयं चोटें खाकर बढ़ेगा मगर दूरहे को चोट न मारेगा । चाहे मृत्यु को कोई अच्छा नहीं मिनता फिर भी सूर्य उत्तम याते की मृत्यु अच्छी ही होगी । 22 साल की उम्र में एजदरबार से धन कमाने लगेगा । सूर्य की भर्मी, धूप और उसका नाप तौल एहु केतु से पता चलेगा । उत्तम सूर्य के समय चन्द्र, शुक्र और बुध का फल भला ही होगा । केतु नं. १ या मंगल नं. ६ हो तो सूर्य का प्रभाव नेक उत्तम होगा । चाहे सूर्य किंचि भी धर में और कैसा भी बेठा हो ।

1. सूर्य देखे च. ये पर सूर्य न. । न हो ।

चन्द्र या फल चन्द्र के आपे समय तक सूर्य के प्रभाव में दृश्य हुआ होगा । इसके बाद वह अपना जुदा असर सूर्य की तरह उत्तम फल देगा । सूखे कुरं भी पानी देने तथा जांयेंगे । [जन्म कुण्डली 24-12-6 साला आयु में हो और वर्षकल 12-6-3 मास हो]

2. चन्द्र देखे सूर्य को

अब चन्द्र सूर्य को कोई सहायता न देगा अपना प्रभाव चाहे कभी भंदा कर ले ।

3. बुध ६ और सूर्य कायम

अपनी कलम से एजदारी का धन बढ़े । इमानदारी का धन साय दे ।

4. सूर्य देखे बुध को 100%

सूर्य को सहायता होगी ।

सूर्य देखे बुध को 50%

समुदायल अमीर, स्त्री का भाग्य शीर्ष की तरह चमके ।

सूर्य देखे बुध को 25%

योगाभ्यास, गणित, ज्योतिष आदि उत्तम हो ।

5. बुध देखे सूर्य को दर्जा द्वितीय कुछ भी हो

बुध का प्रभाव उत्तम । स्यास्य, बुद्धि, स्त्री सभी पर प्रभाव उत्तम ।

6. शनि देखे सूर्य को 25%

सूर्य का प्रभाव बरबाद मगर शुक्र आबाद होगा और उत्तम फल का गणित, संपादक होगा ।

शनि देखे सूर्य को 50%

शनि की चीजें सहायक होगी, जैसे मकानों की विद्या ।

शनि देखे सूर्य को 100%

जादूगरी का स्वामी होगा ।

7. सूर्य देखे शनि को याने सूर्य हो पहिले घरों में, शनि हो बाद के घरों में ।

शुक्र बरबाद, स्त्री पर ल्ती मरे । पर ज्ञानेत्र घञ्जत कम न होगी ।

8. शनि हो पहिले घरों में और नूर्य बाद के घरों में ।

सूर्य का प्रभाव भंदा और शनि उसके [नूर्य] प्रभाव में अपना भंदा प्रभाव अवश्य मिलाता होगा । यानि सूर्य की योग्यता तबाही ते भी होगी । शारीरिक कमजोरी होगी । मगर चन्द्र [रद्दी], मंगल [लाली], वृहस्पति [हवा], बुध [आकाश] जो सूर्य में आवश्यक अंग हो उन पर कोई बुह प्रभाव न होगा यानि सूर्य की दी हुई भाग्य और कर्माई पर भंदा प्रभाव न होगा । ऐसी हालत में रहने के मकान में दक्षिण [जनूब] (पूर्व की ओर मुंह करके दाँद तरफ) पानी का कोय बर्तन भरा हुआ दायाए और उसका पानी 40/73 दिन तक सूखने न दे ।

माता-पिता की आयु शक्ति जिस धर में शुक्र देव हो उसी धर की शुक्र से संबंधित चीजों की दालत मंदी । सूर्य बेठा होने याते धर पर शुक्र का कोई बुह प्रभाव न हो ।

9. सूर्य की जड़ ५ में पापी और उर्जा समय शुक्र नं. २-७ में चन्द्र, एहु ।

• सूर्य की जब अपने मित्र [चन्द्र, मंगल, वृहस्पति] की सहायता हो या टेवे वाला नमक कम या बिल्कुल न खाये तो वह नेहीं और सांर्थिक घटनों में अपने पिता से आगे बढ़ जायेगा ।

जन्म कुण्डली में सूर्य के १-५-११ में होने से टेवा बालिग होगा जो बच्चे के गर्भ में भाने से ही प्रभाव देने तय जायेगा । ऐसी हालत में यानि जब सूर्य १-५-११ जन्म कुण्डली या वर्षफल भेठा हो :

नं. १ का सूर्य नं. १ के साथी ग्रहों को चाहे मित्र हों या शत्रु दोनों को मदद देणा । नं. ५-११ में सूर्य होने पर दूसरे ग्रह स्वयं सूर्य की सहायता करेंगे । चाहे वह सूर्य के शत्रु ही हों । टेवे में ग्रहप [सूर्य ग्रह], [चन्द्र केतु] के समय सूर्य ४५ साला आयु तक कोई मंदा फल न देणा बल्कि मंदा फल ही देणा, माना याया है ।

सूर्य स्वयं अकेला नीच या ऊंचे घरों में हो तो वह स्वयं कभी नीच न होगा मगर सूर्य की जगह केतु [नर संतान का भाग्य, आयु या पिता को संतान का सुख] बरबाद या मंदा होगा । येहद गुस्सा बरबादी का कारण होगा और इसका उपाय दान कल्याण माना याया है ।

सूर्य जब कभी नं. १ में आए अपनी जन्म कुण्डली में चाहे कहीं भी हो, शुक्र का प्रभाव नीच होगा । मगर तूर्य स्वयं के लिए उत्तम होगा । ऐसी हालत में नुष्ठ की पालना सहायक होगी ।

२-६-७-८-१०-११-१२ में अकेला भेठा सूर्य इन घरों से सम्बन्धित चीजों पर अपना अच्छा प्रभाव न देणा परन्तु यह भी अर्थ नहीं कि बुध प्रभाव देगा । शत्रु ग्रहों के साथ यानि सूर्य-शुक्र, सूर्य-शनि, सूर्य-राहु, सूर्य-केतु चाहे किसी भी घर में हो साय भेठे हुए ग्रह की उर खाना नं. से सम्बन्धित वस्तुओं पर जिनमें कि वह भेठा हो दोवाह उसी घर में भाने पर [वर्षफल में] मंदा प्रभाव देगा । ऐसी हालत में २२ से ४५ साला आयु के मध्य शत्रु ग्रह अपनी जाती मियाद पर भी बुध प्रभाव देंगे । मरुलन सूर्य शुक्र नं. ५ में हो तो जब भी कभी वर्षफल में नं. ५ में फिर आये [वह आयेंगी केवल ३४ या २५ वर्ष (शुक्र की मियाद) में] स्त्री पर शारीरिक चमड़ी पर मंदा प्रभाव देगा । नुष्ठ की पालना से शत्रु ग्रह को नेक कर लेना सहायक होगा । लेकिन यदि शत्रु ग्रहों [शुक्र, शनि, राहु, केतु] के साथ ही सूर्य के साथ उसके मित्र ग्रह [चन्द्र, मंगल, वृहस्पति] भी भेठे हों तो मंदा प्रभाव मित्र ग्रहों से सम्बन्धित चीजों उस खाना नं. की जहां भेठे हों, पर होगा और शत्रु बचा रहेगा । शत्रु ग्रह यदि एक दो तीन की मिती से सूर्य से पहले घरों में और दृष्टि के अगूत पर भी पहली तरफ में भेठे हों तो सूर्य का मंदा प्रभाव टेवे वाले पर होगा । लेकिन यदि शत्रु ग्रह बाद में भेठे हों तो कुण्डली वाले की जगह मंदा प्रभाव शत्रु ग्रह और घर पर होगा ।

मंद प्रभाव का उपाय :

यदि सूर्य का स्वयं अपना ही प्रभाव दूसरे ग्रहों पर बुध हो रहा हो तो सूर्य के मित्र ग्रह [चन्द्र, मंगल, वृहस्पति] को नेक कर लेना सहायक होगा । खाना नं. ६-७ में भेठा होने के समय आम मंदी हालत में नुष्ठ का उपाय सहायक होगा तथा चन्द्र नष्ट करने से भी सहायता निल उकेगी । [यानि रहत की रोटी के बाद चूल्हे की बाकी बची आग पर दूध के छींट मार कर उसे बुझाते रहना] सहायक होगा । जब कोई ग्रह सूर्य से नष्ट या बरबाद हो रहा हो तो स्वयं सूर्य का उपाय करे । जब सूर्य का अपना प्रभाव नष्ट हो रहा हो तो शत्रु ग्रह जो उसे बरबाद कर रहा हो को नेक करना सहायता देगा ।

सूर्य के शत्रु [शुक्र, पार्श्व] ग्रहों के पर [भालकियत व पक्का पर] २-६-७-८-१०-११-१२ में अकेला भेठा सूर्य उन घरों के मालिक परों से सम्बन्धित वस्तुओं पर अपना शुभ प्रभाव बंद करेंगे :

सूर्य का शत्रु उपका पर	सम्बन्धित वस्तुएं
शुक्र १८८ ^२ पुरा	स्त्री धन, गांगादय, बचत जो कि अपनी कमाई से हो, पति उहृत या प्यार से फँचाई ली ।
शुक्र १८९ पुरा	सम्बन्धियों से : माता, दुआ, फूफ़ी, नाती, आत् गाय-स्थान, ऐ, अभक, सुकंद काफूर, बैर सींग [भोड़ी गाय] शारीरिक अंग गुदा ।

केतु नष्ट ६

संतान [लड़का] व उसका सुख माता पिता के ताल्लुक के रितेदार [वह रितेदार जो टेवे वाले की पदाइश से पहले कायम थे, मामा, नाना, नानी आदि, रक्षार चाल, साटुपाए, बरगोञ्च, चिङा यानि

सूर्य का ज्ञान का पर

सम्बन्धित वस्तुएं

विद्या का नं. शारीरिक भाष कमर।

जुकु	7	बहरी स्त्री, शारीरिक त्वचा की सुंदरता, शादी गृहस्थ फल, चरी जवाह, सफेद भाष, कांसी का वर्तन, हर दो प्यार शारीरिक त्वचा, चमड़ा।
शनि	8	स्त्री पुरुष, विच्छू, कनपटी।
शनि	10	जद्दी जायदाद, पिता वा माता का सुख, नमक काला व तेल लोहा, तकड़ी, दृष्टि, आयु, बाल, सात से रहने का मकान, मगरमच्छ, सांप का घर, भैर, घुटना।
शनि	11	जन्म समय आयु तक अपनी आय, खण्डा हुआ मर्कान, संतान की आयु व निनती, पहला हार्फिस, शारीरिक शक्ति, यह केतु के कार्यों का निर्पाय, चूतङ्ग।
यह	12	धन आप, हड्डी, पारिवारिक घून, सर, दिनानी काम-काज, स्त्री पुरुष की आपसी आयु का सम्बन्ध, विचारों का भासरना, अचानक पैदा होना, बदनामी की प्रेरिद्धि, कोपते, हसी, खोपड़ी, सर की हड्डी।

सूर्य खाना नं. ।

Free by Astrostudents

सत्पुरी एवं हृकिम

हुई एवं दुनिया है, दिन एत जलती
सिर्फ धर्म बनी है, एहसान धरती ।

पर्मी¹ एजा खुद उमर सदी का, पांच प्रहले घर ॥ जे
शनि कल्पा चाहे नेक हो कितना, हड्डी मन्दी यज्ञ ढातत्व है ।
दूजे चेत्र शनि ग्यारह बैठा, भाषा स्त्रव्य बढ़त्व हो ।
हुकु राह जब सात आया², उमर छोटी सिता भरता हो ।
शनि टेवे हो आठ जब बैठा, मुर्दा स्त्री पर स्त्री हो ।
पांचवें मंगल हो जब कभी आया, बेटा, बैटे पर भरता हो ।
मित्र दूसरे सुर सूर्य मन्दा, बुध मन्दे आकार न हो ।
निति हुकु चुध टेवे बैठा, उमर रिजक दरवार का हो ।



उने विचार और गरीबों की भूहास्ता करने याता, नेक धर्मान्तरा, नं. 7 खातों तो घटी से भाग्य जानेगा ।
[ग्री. शी. तक]

वे ली न्यास्त्य रेखा गे निले जूरे और सूर्य रेखा त्वय ठीक हालत में जुर्ज नं. । पर पाई जाये । सूर्य का
दूसरा जन्म जुर्ज पर चुध की तरफ हो । दूसरे का जुर्ज कुण्डली का खाना नं. । हे नगर सूर्य नं. । में तब ही होगा जब
जुर्ज के जुर्ज पर चुध की तरफ दूसरे का उत्तरार कादम । यरना सूर्य खाना नं. 5 होगा । [सूर्य का रेहत रेखा नं. ।] के आदीर तक ।

लत :

टेवे याता एवं र्म भर्कान देना और कुरुं लाने का शौकीन हो । एता की भूति बपनर होता । चुणने विचार धर्म की
पालना करने याते होने । उसके भूतिक भाई बहन होने की शर्त नहीं है । क्षापम् {लूपं कादम नं. । सूर्य का चिताह चुध की ओर ।

बाप की आखरी आयु तक पूरी सेवा करेगा, और सहायता करेगा। मगर अपने बेटे से उम्मीद न रखेगा। बाप से उसे चाहे धन न मिले मगर बेटे को जमा धन दे जाएगा। जो उसे तबाह करने की गरज से मरेगा वह स्वयं ही बरबाद हो जाएगा। ज्ञान-पीठ से दूर मगर गरीब की सहायता करने को हर दम तेयार। दो धार्य तलवार के स्वभाव का स्वासी होगा और शर्हर में सांप का गुस्सा होगा। कुछ भी हो उएका रिजक कभी बन्द न होगा। वह स्वयं बना अन्नार होगा। माता पिता तथा स्वयं की आयु लम्बी होगी। पूरे 100 साल होगी। राजदरबार लम्बा साव देगा। सफर से धन मिलेगा या पैदा करेगा। अपना झटीर व स्वानन्दी प्रभाव उत्तम होगा। तमाम अंग आखीरी दम तक शक्तिशाली होंगे। ईमानदारी का धन फलता रहेगा और बरकत देगा। संतान बेशक गिनती की होगी, मगर संतान का सुख और औरत का सुख आखीर तक होगा। वह अपनी अच्छी पर निश्चय करेगा। मगर कलों पर ऐतावार न करेगा। परोपकार और सेवा साधन संतोष माया तथा तरक्की की बुनियाद होगी।

1. यदि मित्र ग्रह साव या उनकी मदद मिले तो माया धन को पैदा करेगा, मगर उनका गुलाम न होगा।

उत्तम फल भाग्यवान होगा धन दोलत उत्तम

जब चन्द्र नं. 2 और शनि नं. 11 हो।

शुक्र दुव चाहम ट्रैप्ट में।

2. अपने लिए हर तरह से रिजक उत्तम कभी मंदा न होगा। चाहे सूर्य को जुदा धर में चाहे ग्रहण ही भौंन तम जाए।

हस्तरेख्य : सेहर रेखा कायम हो। सूर्य के दुर्ज से रेखा दुर्ज के दुर्ज नं. 7 में चली जाये।

3. नेक धर्मात्मा होगा। बदकारी, हहमकारी से कोई दूर भागता होगा। शुक्र का फल अमूमन शुभ होगा। दिनांगी शक्ति जिनमें सूर्य का उत्तम व नेक प्रभाव।

जब दुव खाना नं. 7 में हो।

मन्दी शालत :

1-5-11 में सूर्य होने के उमय धर्म अवस्था के लिए सदा ही शनि का 1/4 हित्त्वा प्रभाव शामिल होगा। चाहे सूर्य कितना ही अच्छा हो। योगी राजा के हवन [यज्ञ] कुण्ड में कव्या यन्दी हड्डी लाकर ही डाल देगा। आप का जोर चाहे कितना भी ऊँचा हो रहा होगा। जिसके लिए एक टुकड़ा भीट का कव्ये को डालना रहायता देगा।

1. पिता बचपन में ही गुजर जावे। स्त्री की सेहत मंदी, जलता हुआ जिस्त वर्तिक तपेदिक भी हो खासकर जब दिन के उमय स्त्री भोग का आदी भी हो।

जब शुक्र नं. 7 हो।

जब मंदत नं. 5 हो।

2. लड़के पर सङ्का मरे।

3. सब ग्रह धोखा दें, अपना याजारी मूल्य शून्य, अंधेरे में जीवन का मरिक। खुदकुशी तक नोबत। जलती हुई आप का गर्भी से भरी हुई तक का मंदा भाग्य होगा।

जब दोत्त ग्रह मरे हो।

4. स्त्री पर स्त्री मरे।

जब शनि नं. 8 हो।

5. सोया हुआ सूर्य छोटी उमर की शादी [24 साल से पहले] शुभ होपा नहीं तो अपने याप जगा सूर्य। एजदरभार की नौकरी या स्वयं कर्माइ शुरू करने की शालत में सूर्य उमर के 24वें साल मंदा फल देगा।

जब खाना नं. 7 खाती हो।

उपाय : जद्दी मकान में बुदरती पानी [ईंड पम्प] यायम होने से 10 साल बाद भाग्य उदय होय।

३८

सूर्य खाना नं. 2

[यही दाता बपने मुजा बत का स्थानी]

ह खाना मुवारक, कमा खुद ही सीखे ।

हुए मंद सूर्य उफ्त दूध जो पीते ।

(शब्द)
दर्जा सुखावत एज हो ऊँचा, शत्रु नेही सब भरता हो ।
पिता माता नुप्र प्रभाव कर्वीता, सभी घरों के तारता हो ।
छठे चन्द्र खुद चन्द्र बदता, आठ चन्द्र रवि भरता हो ।
पहले मंगल और चन्द्र 12, दुखिया अंसू घर भरता हो ।
न ही स्त्री जाति बदती, न मुरु प्रथन² हो ।
याद इतनी हो जस्ती, छोड़ देना दान³ के ।

1. नं. ४ खाती हो तो स्वयं सूर्य तथा खाना नं. २ की चीजों का शुभ प्रभाव हो ।
2. सूर्य, वृहस्पत का जुदा प्रभाव न दिखेगा या अब वृहस्पत स्वयं सूर्य के अनुचर चलेगा ।
3. दान लेना अशुभ बल्कि पूरी तरहाई हो ।

इत्तरेख :

भाग्य रेखा या सूर्य रेखा जब वृहस्पत का रुख करे मगर शनि के दुर्ज पर न हो ।



नेक हास्तर :

1. मामा की हालत उत्तम होगी । अपनी लझकियों के रिश्तेदारों के खानदान हरे भरे ॥ दिन, ॥ रात, ॥ साल की आयु में शत्रु की मौत होगी । नृ. का प्रभाव जुदा न दिखेगा बल्कि सूर्य भी वृ. की भाँति होगा, सवाई तथा चीपाया का सुख होगा । ऐस कदर सखीदाता उसी कदर बड़े शत्रु दबे रहें । अपने मुजा बत पर भरेसा करने वाला । मातृ-पिता, माता और अपनी बहन लड़की का कर्वीता [एहु] सुखेत का कर्वीता अपनी स्त्री समेत [केतु] नर संतान का कर्वीता इन सब को पार लगाने वाला तथा पालने वाला होगा ।
2. स्वयं हाथों से काम करने वाला होगा । हुनर को जानने वाला होगा बाबत कारेवार ।
3. चन्द्र का फल नेक और सूर्य का प्रभाव भी ऊँचा शक्तिशाली होगा
4. बहादुर होगा
5. हुनर मंद होगा
6. दस्ती काम को व्यापार गे अच्छा समझे
7. स्वयं सच्चा और उच्चाई पहुंच होगा ।
8. बहुस्पिया, प्रणिदी को चाढ़ने वाला होगा ।
9. लक्ष्मीं बनाने वाला होगा, पेटर आदि ।
10. दस्ती काम की शक्ति वाला होगा, टैक्सीशिपन ।

सूर्य व वृहस्पत साथ, जाती या दृष्टि से नं. ४-२-६-१२-५-९-१० पर मगर शनि का सम्बन्ध न हो, | भाग्य रेखा या सूर्य रेखा नृ. के दुर्ज का स्वयं करे मगर शनि के दुर्ज में या शनि के दुर्ज के नीचे खल्म न हो ।

सूर्य नं. 2 कामन [अनामिका विलक्षुल सीधी]

जब चन्द्र नं. 6 हो ।

जब नुघ नं. ४ हो [अनामिका का सिंह गोल हो]।

जब एहु नं. ४ हो [अनामिका का सिंह चौड़ा होगा]।

जब नुघ नं. ४ [अनामिका अनामिका की ओर शुकी हो ।

केतु नं. ४ में [अनामिका का सिंह नोकदार]

नुघ नं. ९ [अनामिका छोटी]

एहु नं. ९ [अनामिका बहुत लम्बी]

केतु नं. ९ या नुघ खाना नं. १० [अनामिका लम्बी]

11. शोर्कन विचारे कम स्थानी होगा ।
12. सूर्य स्थानं तथा खाना नं. 2 की चीजों का उत्तम प्रभाव देगा ।
13. मान और चुंद का स्थानी होगा ।
14. कभी खुश कभी उदास हर दम तरीपत बदलने वाला होगा ।

मन्त्री शक्ति :

न स्त्री जाति बदली न मुरु प्रयान हो ।
याद इनी हो जल्दी, छोड़ देन दान को ।

इस घर में बैठा सूर्य अपने शुभ ग्रह की चीजें [स्त्री धन, पर्तिहान या भाशक स्त्री, आत्म धी, अधिक, सफेद काफूर, बगेर की गाय, राग, स्वाद, माता, बुआ, मसी, गुदा] पर अपना नेक प्रभाव बन्द कर देगा । जब जोरु जमीन के स्फरण, मिट्टी में आंके वाले [तुवाही का कारण] होंगे ।

स्त्रियों की गिनती अपनी भाईयों की माताएं औरते तथा बहने घटती ही जायेंगी । किसके लिए शनि का उपाय न्यौरेपल, ते बादाम, धर्म स्थान में देते रहना सहायक रहेगा । जिस कदर जोरु, जरु जमीन के झागड़े बदल जाएंगे, सूर्य मंदा होता जाएगा ।

1. दान लेना तबाह कर देगा । अच्छा है कि वह स्वयं कमा कर खाना सीखे ।
2. हर तरह से दुखिया या तंग हाल होगा । तीनों ग्रहों का फल मन्दा होगा ।
3. लालची होगा ।

मंगल नं. 9 [अनामिका बहुत लम्बी]

जब खाना नं. 8 खाली हो ।

जब शनि नं. 10 हो [मध्यमा अनामिका दोनों बड़ी होगी]
शनि नं. 11 हो ।

जब चन्द्र नं. 8 हो ।

मंगल खाना नं. 1, चन्द्र खाना नं. 12

जब मंगल खाना नं. 8 होगा [अनामिका का चिह्न चौकोर हो ।]

सूर्य खाना नं. 3

[धन का रुजा, स्वयं जग्य कर खाने वाला]

हुआ धोखा कुदरत न किस्मत का डर या

बजा बिगुल मन्दा चतन जब तो बद या ।

बाप दादा चाहे गरीबी¹, या पढ़ोसी भर ये ।
लेकिन उमर पिछली अपनी², माया जर न कम रहे ।
जहर मंगल व चर कोई भलती, न ही प्रारब्धः शुक्र हो ।
माया खड़े दिन चोरी लुटती, हुआ बुध जब चन्द्र हो ।
मंदा असर बुध टेवे पापी, केतु भार्णे घर जाता हो ।
उमर लम्बी संतान हो अपनी, सोया सूर्य चाहे जागता हो ।

1. पर नं. 9-11 का मंदा प्रभाव हो ।
2. जब चन्द्र उत्तम हो तो आखरी यकीनी तोर पर अयस्या उत्तम होगी ।

हस्त रेखा :

सूर्य रेखा से शाख मंगल नेक को ।

नेक हालत :

धन का रुजा आप कमा कर खाने वाला, पूरी घूर्घूरती का मालिक होगा । टेपे में भव चन्द्र का फल रद्दी न होगा औ



न ही भंगत बद होगा । यर्तक बुद्ध या शुक्र का फल भी उत्तम होगा । अपनी और अपनी संतान की आयु लम्बी होगी । न भाग्य मंदा न कुदरत पांचा दे । दिनों की चात अकल से घोखा फरेव से कर्मी मंदा हात न होना और दुर्दिया न होगा । दिनांकी काम से बुद्ध का प्रभाव सदा नेक होगा । ज्योतिष विद्या गणित विद्या एवं मर्ता रहे । चोरी के माल से सदा दूर रहें । मंदा चात चलन तेरी गिन्नारी तथा नर्तायों की दूषमूरती को बदनाम कर देगा ।

आखरी अवस्था में कर्मी निर्वन न होगा यर्तक आर्हीरी समय जब चन्द्र उत्तम में अपने कर्वातों के सूर्य को तरक्की पर होता देखता जाएगा । चन्द्र की चंचे खास कर [माता, पोड़ा आदि] का फल नेक और उनकी लम्बी आयु का साय हो ।

सूर्य की चंचे खाना नं० ३ सम्बन्ध [दिन की संतान] मार्द मतीने की मंदा प्रभाव न देने । मगर बुद्ध के स्वयं की संख्य चीजों के नेक प्रभाव की शर्त न होगी तोकिन अब सपाट हाय का साय हो तो बुद्ध उत्तम होना [जदी जगह, मसलन उंगलियों की बीच की गाठ मोटी हो ।] (जब बुद्ध साय सारी हो)

मन्दी हातत [सूर्य]

- | | |
|---|--------------------------|
| 1. दिन दहाँ चोरी होगी चाहे सूर्य सोए हो या जागता हो । | जब चन्द्र मन्दा हो । |
| 2. बाप-दाद निर्यन होये । | जब खाना नं० ९ मंदा हो । |
| 3. पड़ोसी बरबाद होने । | जब खाना नं० १ मन्दा हो । |
| 4. मामा घर पर नुण प्रभाव । | बुद्ध या पापी मंदा हो । |

सूर्य का प्रभाव मन्दा होगा जब चाल चलन मन्दा हो या स्वयं मंदे काम करे । मगर भाग्य का कुदरत घोखा न देगी और न ही भंगत बद का टेवे वाले पर नुण प्रभाव होगा मगर दूसरों के लिए बद की बदी [मंदे ग्रह का फल] का साय जल्द होगा ।

सूर्य खाना नं० ४

| दूधेरे के लिए जोड़ जोड़ कर मंदे नन्हों के लिए दबाया फन ।

(लालच)
तमा माया मे क्वों तुँ छोड़ा रसेण्

करोड़ों पति नाम लेया जो रेण ।

भंगत हातत परिवार कबीला, चशमा रिजिक मुर्ल चन्द्र घर ।
कीड़ा रेशम जर घन देता, बुध शनि दोनों के घर ।
माया लालच शर्म से अपनी, पेट हरणी भरता हो ।
आय लगी न लंका बुझती, माठ काटे घन हत्ता जो ।
पांच चोये घर चन्द्र मोती, व्यापारी उत्तम बुद्ध 10 का हो ।
मंद पानी ओलाद हो मंदी, नोहरता शनि घर सात का हो ।
मंदा यहू शनि तज्ज्ञ^१ पे बेठा, असर सूर्य कुल मन्दा हो ।
चोर गुरु^२ 10 भंगत काना, इजाद मोजूर^३ खुद होता हो ।
तज्ज्ञ भाता 5 शुक्र बेठा, सात शनि खुद उच्च का हो ।
तुङ्ग बदी किंची काम न आता, नामर्द ओत या हिजड़ा हो ।
10वें मिश्र, 5 शुक्र बेठे, मोती चाहे चन्द्र पांच का हो ।
रुपि मिले कुल नन्ही होंगे । उपायं भला खुद^५ भंगत हो ।

1. माता पिता की रेवा जिसका मोका कम ही मिलता है, नीय होगी ।
2. बुद्ध भंगत की वर्षा और शनि पहाड़ी इलाके की वर्षा की तरह माया घन बढ़ता जाएगा । बेशक स्वयं पत्ते खा कर गुजाय करे । मगर अपने पीछे रेशम ही होड़ जाएगा ।



3. वृ. नं. 10 के समय शानि के काम या सामान [लोहा लकड़ी] मंदा फल दे ।
4. जब चन्द्र उत्तम तो ऐसा काम जो उसके बड़ों ने न किया हो फायदा देगा । समुद्र सफर से मोती पैदा होगे ।
5. निर्झ अंधों को ही मुक्त खुराक या भिक्षा देना खाना नं. 5 और 10 में ऐसं विष को धो देना होगा ।

इस्तर रेखा :

सूर्य के बुर्ज से रेखा चन्द्र के बुर्ज को मगर मंगल वद का संबंध न हो । चन्द्र और सूर्य के दुजों के मध्य रेखा दोनों दुनियों को नितानी मानुम होये मगर मिलाये न । शणफत रेखा जब बाबू में से ऊपर को मुक्ती हो । सूर्य रेखा दित रेखा पर समाप्त हो सूर्य की नेक हातत :

रेशम के कीड़े की तरह चाहे पत्ते द्या कर गुजाय करे और इसी प्रकार जीवन पूर्ण कर दे । मगर उसे धन का फ़िक्क होयेगा । भरते समय धन दोलत जमा रूप में छोड़ जायेगा । उसकी उन्नतान के सदस्य करेइचरि होये । स्वयं दरयादित साफ दित बुद्धनान और हक्कनात का स्वामी होगा चन्द्र भैठे हुए घर से माया सेना धन की वर्षा या माया का अचानक मिलना बुद्ध मंगल धीरे धीरे देर से पाये । और शनि [पहाड़ जल्द जल्द और जोर की] बैठा होने वाले बहे पर होये । अच्छा स्वास्थ्य धन का फव्वार हर दम चलता रहेगा । भाता पिता की उमा [जिस का भोका कम मिलता है] फलतू धन जमा होने या करने की तुम्हार होयी स्वयं धन या दोलत और रिजक के चशमा का हात चन्द्र और बृहस्पत देठे घरे से मिलेगा । परिवार करीता का हातत मंगल का हातत पर फ़सला देगी ।

1. नई इजाज से लाभ का स्वामी
2. एजदरबारी यात्रा से मोती पैदा होगे, उत्तम व्यापारी
3. धर्य स्वभाव तथा नर्म स्वभाव का हो
4. अब वृ. नीच न होगा । बल्कि पूर्ण सोना और वृ. का उत्तम फल होगा ।
5. सोन चांदी के काम मुवारक । इजाद या ऐसा काम जो कि उसके बड़ों ने न किया हो फायदा देगा । समुद्र के सफर से मोती मिलते ।
6. माता पिता की ओर से पूर्ण भला और उत्तम खून भला लोय, भला काम, भाग्य का उत्तम ।
7. उक्खरे से लाभ, उत्तम व्यापारी

सूर्य की मन्त्री हातत :

माया के लालच या संसारी शर्म से हरमालोरे का बोझ गले लगेगा जलती हुई लंका की आम से तंय होगा । चौटी के आदत, गन्दे शोक और लोगों की गाठ काटने से स्वयं अपना धन बरबाद और हर जगह हानि हो और हनुमान जी की आग से यवष की लंका में आग के शोले नजर आयें, जिन के बुझाने के लिए सारी दुनियों का पानी पहले ही समाप्त हो चुका होगा । यानि अपनी बरबादी, गरने हे पढ़ते अपने गाने ही सब युद्ध जलता देख जाए मगर अंगु न पहा सके ।

संतान मंदी होगी

जब पार्षी मन्दे हो ।

दिन को नजर आये रात को न दिखे (रतोधी)

जब शनि नं. 7 हो ।

सूर्य का उब प्रभाव मन्दा होगा । चन्द्र की मदद मिलते पर चन्द्र के उपाय में शनि की तवाह की हुई या शनि की तवाह हुई चीजों को

राह मन्दा । शनि नं. 1 वृ. नं. 1

42

सूर्य के उपाय के जर्तये या सूर्य की मदद से कोमती लाल | मंगल भी नेक|प्रसर-देगा । हृ के मंदे अनुर के समय सुनुहाल पराना से पापी श्रहों की चीजे लेना जहर का उचून होगा ।

योने की घोटी की पटनाये होगी । शगि लोहे नी सकड़ी के काग मंदा फल देंगे । मगर आग की पटनाएं गुमनाम तथा हुपे झगड़े फलाद खण्डी | धन की| मगर चन्द्र |कपड़ा, चादी|, वृ. |सोना| और माला-पिता से सम्बन्ध कार्य उत्तम फल देंगे ।

एक बाख से काना होगा मगर भाष्य उत्तम होगा ।

नामरद, न अक्षल न गांठ, यिन बुलाया भेहमान

सब ही श्रहों का |चिवाए मंगल| के फल मन्दा होगा । ऐसे समय मंस्त का उपाय जद्दों मकान के द्वाय करें उदाहरणतया वहां यज्ञ, मुफ्त बुधक चांटने का या भिक्षा देना । सिर्फ अंदों को ही देना उत्तम होगा जो खाना नं.5-10 दोनों ही जहर पो सकेंगे ।

श्वारी और भौलाद में मडबड़, हर तरह की मंदी अवस्था होगी ।

क्षाम्भ - चन्द्र के बुर्ज से सूर्य रेखा निकल कर बुध के बन्दर चली जाये ।

बृहस्पति नं.10

मंगल नं.10 में हो ।

चं. नं.1-2, शु. नं.5, छने नं.7 हो ।

चं. शु. या दुय में से कोई भी सूर्य के सामने खाना नं.10 में हो । जी उमय खाना नं.5 में शुक्र या पापी हो खाना नं.4 में शु. शु. 2-5-9-12 में या 3-6 में चन्द्र खाना नं.10 में - हृ केतु नं.5 में

बृहस्पति खाना नं.10 में - शुक्र, बुध 2-5-9-12 में

बुध खाना नं.10 में - चन्द्र नं.6 या 3 में

चन्द्र उत्तम वृ. नं.4 मगर जी उमय मंस्त बद हो ।

सूर्य खाना नं. 5

| परिवार तरक्की का मालिक, कीमत भय |

पक्षी मुर्ग बाल बच्चे जो पाले,
पड़ा सोया तू किस वजह लंगर तू डाले ।

आपना¹ दिल न जब तक, [कीना] वफजून² से चूर हो ।

लिपटी हुई न आरजू कोई कफन³ से हो ।

ग्रह⁴ पांचों से अपने घर का, या पापी 9-11 जो ।

सूर्य की वह होगे प्रजा, हंस हुमाँ⁵ [एक जानवर] भी त्रृता हो ।

बेटे जन्म से हर दम फलता, कदर बेशक न करता हो ।

पांच पहले घर शशु तारता, उज सभा रवि भरता हो ।

त्वियां मरती गुरु दस रेठे, लड़के शनि 3 मारता हो ।

गुरु रेठे जड़ कटते, सन्तान भला न होता हो ।

1. चन्द्र या खाना नं.4.

2. मन्दा केतु या मंस्त बद शशुता दूरों से हस्त ।

3. खासकर जब बृहस्पति उत्तम हो ।

4. वृ. [9-12], सूर्य [कामना], चं. [5], शुक्र [-8], मं. [1-8], बुध [3-6], (पापी उ. के. श. 9-11)

5. 'हंस भोती खाने वाला पक्षी' [हुमा] एक ऐसा जानवर माना या है कि वह जिस के सिर से गुजर जाए उज्ज बन जाए ।
 6. सूर्य की जड़ खाना नं. 1-5, बृहस्पति की जड़ खाना नं. 9-12.

हस्त रेखा :

सूर्य रेखा बिल्कुल सीधी सूर्य के नुर्ज पर हो और सूर्य के अपने घर में ही मालूम होवे । और सूर्य का नुर्ज कायम हो । स्वास्थ्य रेखा नुपु से चलकर हयेती में खाना नं. 11 तक समाप्त होवे ।

सूर्य जात्या, जिसम और स्वास्थ्य का स्वामी है । इसलिए इसकी दूसरी रेखा का नाम स्वास्थ्य रेखा है । स्वास्थ्य या तरक्की रेखा हयेती में शनि के हैडप्वार्टर से ऊपर सूर्य की ओर नुपु के नुर्ज को जाती है या सूर्य का प्रभाव नुपु [दिमान] में पहुंचाने लगती है । इस रेखा का हाय में न होना कोई नुपु प्रभाव नहीं देती बल्कि उत्तम स्वास्थ्य की निशानी है और हाय में इस रेखा का होना उत्तम स्वास्थ्य के अलावा आयु, सिर और दिल रेखा आदि के टूट-फूट के नुर अचरण से बचाता है । स्वास्थ्य रेखा नुपु, चन्द्र और मंगल वद को हयेती से जुदा करती है । जिस जगह स्वास्थ्य का आखरी वा उमर रेखा का आखरी समय या खात्मा या जगह मौत है ।

नेक हातर :

ओलाद के पैदा होने के दिन से रेटी पानी की बरकत होगी और पूर्वी दीवार में रोई सूर्य नं. 5 का उत्तम फल देगी । दो धारी तलवार, सफ्फ दिल तो सब उत्तम नहीं तो भेड़िये ने कान से पकड़ कर भगाई हुई भेड़ की तरह का मन्दे भाग्य का साय स्वयं जलता होगा [मगर राजदरवार, सन्तान फिर भी मन्दे न होगे]। ओलाद की बुद्धि और परिवार की तरक्की का स्वामी स्वयं मृहस्त्री होगा । यहा होगा तो परेपकारी होगा लेकिन यदि चायु भी हो तो लम्ही आयु का स्वामी होगा । यानि जब यदि यहा न तोरे तो सायु अवश्य तारेगा । बकरी तथा भेड़िये दोनों एक ही जगह आहम से रखने की शक्ति वाला होगा । उदापा सदा उत्तम होगा ।

1. ग्रह पांचों से अपने घर का या पापी 9-11 जो सूर्य की । वह मंगल नं. 1-8 नुद नं. 3-6 पानी नं. 9-11 [यःकःशः]
 होगे प्रला, हंस हुआ भी तारता हो ।
2. हंस-हुआ भी तारता होगा जिस तरह हंस जोती खाने वाला हो न. 9-12, स. नं. 4, सूर्य कायम [सूर्य रेखा कायम हो सूर्य की तरक्की रेखा कायम हो]। [शुक्र खाना नं. 2-7]
 उसी प्रकार व ऐसा व्यक्ति यहा समान हकिम और अच्छे हालत का स्वामी होगा । जिस का रिज़क कभी बन्द न होगा ।
3. हर तरह की बर्कत होगी । ओलाद की उन्नति होगी । सूर्य शनि का झगड़ा न होगा बल्कि एक दूसरे की सहायता करें । नं. 11
 याता पिता का सुख लम्चा और उत्तम होगा ।
4. मिरत यहा इस्ताल मन्द होगा । च. नं. 4
5. सूर्य अब शशु ग्रह को भी सहायता देगा जो घर नं. 1-5 में हो । शशु ग्रह नं. 5
 यह दरवार में या हर जगह उस का मान होगा ।
6. कोई भी आरजू कफन में लिपटी बाजी न होगी । दिमानी न. 10
 खाना नं. 20 स्वयं की बुद्धि नं. 22 चढ़ों के मान का स्वामी होगा नुद का सारी उम्र जुदा फल न दिखेगा जिस तरह सूर्य बादतों के बिना होता है फल देगा । न. 10

मन्दी हातर :

1. 'विवाह एक ऐ अधिक, स्त्री पर स्त्री मरे'

44

2। लड़के पर लड़ा मरे । पुरां पाइ दुःख का रुदी पहाड़ । शनि नं. 3
सन्तान पर मात्रां खण्डी का बहाना होता है और सन्तान मन्दी
या वरवाद हो ।

सूर्य धारा नं. 6

[बाष जला, धन से वे फिकर भाग्य पर सन्तुष्ट]

जो तरसे न ऐंगी को, पत्थर का कीड़,
तो भाये की तेरी को, धो कौन देण ।

न जल्ही रज दोलत, न दुआ नित्तचन्तान हो ।
चलन मन्दा लाख स्त्री, गुजर उत्तम शर्त हो ।
दिवार तोड़ी न पिछली अपनी, न ही भली हठ धर्नी हो ।
रसम पुरानी 7 कायम चलती हो, सूर्य उत्तम उच उच्चरे हो ।
उमर एवं¹ पर भाष न स्कता, चन्द्र दुह पांच पापी हो ।
शनि 12 पर शुक्र मरता, दिति मरे दो खालो जो ।
10 मंगल हो लड़के खाता, रज गले दुद्द 12 का ।
पापी दोयं जो तज्जत का करता, श्रुत लगा हो भाग्य का
तीन कुत्ते गर दुनिया पाले, केतु पालन² चाहे तज्जत का हो ।
पालत अग्नि से लड़का निकले, लाख पापी चाहे मन्दा हो ।

1. सूर्य के आम दोयं की आयु 22 वा 11 साल है ।
2. यह या शनि नं. 1। [मन्दा हाल] केतु नं. 1-7 सब कुछ उत्तम होगा ।

केतु [सन्तान, भाषा] पर मन्दे अंडर के समय, बन्दर [एर्पण] को सूर्य की चीजें [नुड़] देना शुभ होगा । यद्या बुद्ध का उपाय सहायता करेगा ।

हस्त रेखा :

सूर्य रेखा हाथ की बड़ी आयत में समाप्त हो ।

नेक हालत

अब मंगल नं. 4 होता हुआ भी कभी मंगल बद या मंगलीक या मंदा न होगा । जिस तरह आम तथा पत्थर में कीड़ को भी ऐंगी मिलती है उसी प्रकार ऐसे प्राणी के भाये की भी लकीर्हे को धो कर भी कोई ज्वलिक बन्द नहीं कर सकता । इस पर वह अपने भाग्य पर भरंगा करने वाला होगा । राजदरबार की दोलत से वे फिकर नगर बाष की तरह जल्द सर्व हो जाने वाले स्वप्नाय का होगा । दिमारी खाना नं. 23 रुद्ध परंटी का स्वप्नी होगा । स्त्री और दूरी चीजें सुन्दर होंगी । भयर उसे उस की खूबी या रिस्त की भरवाह न होगी । चाहे लाख स्त्रियों का मिलायी, चलन मन्दा नगर धन की कमी न होगी, रिजिक मन्दा न होगा । रज दरबार का संख्य उत्तम । जन्म नानके के पर या जदी पर से बाहर होगा । जन्म के समय पर बार सुधी कुछ राजस्थान रितला होगा । राजदरबार कई बार ठोड़ कर एक बार तो अवश्य कार्य में गिरवट आएगी जो सन्तान के पन्न से ठीक हो जाएगी फिर मुलाजिम होगा, भगर लड़के के दिन जिस जगह की ऐंगी से चल रहा होगा सदा के लिए उसी जगह टिक जाए । अर्यांत लड़के के जन्म से या तो काम न बदले या बदले तो आगे से स्थित हालत का हो आएगा और जीवन भर सुख देगा । संजारी तीन कुत्तों में से किसी की पालना सहायक होगी ।

1. पुराने घर में अन्तर्गत को चलाएँ रखना सहायक होगा जो सूर्य को उत्तम करेंगा जंयंद [लड़की के पति] को लाभ होगा ।

2. एज दरवारी हात उत्तम् नर उन्नान जल्ल पैदा होगी और कायम रहेगी । उन्नान के यांग चाहे लाय मन्दे हो । संगारी तीन कुत्तों का पातना सहायक होगा । यिन उपाय ही 42 साला आयु के बाद सब दुरे दिन अपने आप ही ठीक हो जाएंगे ।

मन्दी हालत :

अफेला देव सूर्य इस घर में अपने शवु ग्रह केतु की चीजें [नर उन्नान और उस का सुद, मामा, नाना, नानी, सहूकाय, रस्तार, खरणोश, चिड़िया का नर] पर अपना नेक प्रभाव बन्द कर देगा । मकान की पिछ्टी परेचनी दिवार तोड़ कर रेखनी करना या हथ्यर्मी का ऊल उत्तम बनाना, सूर्य की आग से उस के शरीर को जला देणा । यह का आएम चारपाई और दुदापे में नजर का सहाय या तड़का मन्दा होगा । केतु के जानदार चीजें [उन्नान या मामा] और स्वयं अपने स्वास्थ्य पर भन्दा प्रभाव के समय सूर्य का प्रभाव यानि बन्दर को गुड़, मैहू या भूंडी चीटी को सूर्य की चीजें बन्दम [बाजय] देना शुभ होगा । केतु की देजान चीजों में फन्दे प्रभाव समय कुप को नेक कर लेना सहायक होगा । सूर्य के अपने मन्दे प्रभाव के समय [एनदरवार की खण्डियों] चन्द्र की चीजें [धोड़, चांदी दरिया का पानी] कायम कर लेना या चन्द्र नष्ट कर देने से यानि शाम की रुटी के बाद आग को दूध से दुशाना सहायक होगा ।

1. 22 साला सूर्य की आयु में पिता और टेवे वाला दोनों में से सिर्फ एक ही सरकारी आमदन क्षम त्वामी होगा । और यदि दोनों ही किसी कारण एक साथ नोकटी पर हो तो एक शहर या जगह में एक साथ रह कर सरकार से पन नहीं ले सकते । जुदा ही रहेंगे । टेवे वाले के लिए एज दरवार का दरवाजा कई बार खुलता और बन्द होता है । पिता का आयु समाप्त करने के लिए वह पिता पर भाई होया । जिस के लिए धर्म स्थान में कुत्ते की सुएक की चीजें देते रहना सहायक होगा । पिता की आयु टेवे वाले की 5-11 । 2-23 साल में शक्की होगी । इसलिए धर्म स्थान में कुछ देते रहना चाहिए ताकि पिता की सहत, आयु, पन बच रहें ।

2. अग्नि वाण सूर्य की आयु पर 11-21-22 मंदा प्रभाव होगा ।

3. अमृमन स्त्री भाग और स्त्री बत्ताद

4. लड़के पर लड़का भरता जाए । घर में किसी तरह भी जमीन की तह में अन्दर रखी रहने वाली आग न हो तो बचाव होगा सोते समय चन्द्र की चीजें अपने उरहाने रख कर प्रातः लोगों में बाटना सहायक होगा ।

5. एनदरवार गर्क और मन्दे परेपाम होगे । ब्लड प्रेशर की बिमारी, मंदा दोगा । गर्मी के दिनों में दुपहर के समय बिल्कुल सिर पर आए हुए सूर्य की तेज धूप की गर्मी तेजी की तरह सूर्य की आग एनदरवारी संक्षय में जलन पैदा करती है ।

३. उत्तम घेर जागता हो यद्देन नं.2 में सू. के मित्र चं., मं., नू. हो ।

केतु नं. 1-7 हो या जब कभी 1-7 आयें ।

बाना नं. 2 खाली

चन्द्र बुध और पापी नं.5

ज्येन नं. 12

मं. नं. 10 में

जुप नं. 12

6. आग्य या श्रहण तथा हुआ। इर और सूर्य की मन्दी रोशनी होगी। जिस में भी न होगी जन्म समय माता पिता की हास्त मन्दी हो। यह ए.ज. की आयु या वर्ष फल में खाना नं। में आने के समय एक बार जल्द ही श्रहण जैसा मन्दा समय आयेगा जो उत्तान के दिन या केतु नं। - 7 में जाने के समय या 45-48 साला आयु में समाप्त होगा।
7. सूर्य ग्रहण या एजदरबार और अपने स्वास्थ्य की मन्दी घटनाओं के समय घर्ष स्थान में दूसरे लोगों की बेहायत की हुई चीज अपने पास रखना सूर्य की रोशनी को बहाल कर देगा।
8. स्वयं या स्त्री एक आंख से काना हो
9. जन्म अपने घर घट से बाहर या नानके घर होगा। जद्दी मकान की दिवार का पिछला भाग फाड़ लेने से रोशनी कर लेने से आग्य का उजाला न होगा, बल्कि अग्नि वाप से भड़कते शोलों की आन से साह उत्साह भर होगा। जद्दी रसों का बन्द कर देना कभी आवादी या और खुशहाली न देगा।
- य. पा. श. नं।
- ए.न.2 शनि नं.8
- च. नं.12
- य.नं। केतु नं.7

सूर्य स्थान नं.7

[कम कच्छित् दृत्या भर रहे ।]

जवान नर्म हृष्टिम व्यापारी हो जलता,
जवान उसे क्यों हैं पापात् करता ।

घर पहले के खाली होते, सांतवा फौल सोआ।
दिन उसी ही सूर्य निकले, 8¹ जब दूने होय।
रोच सूर्य हो, न दुन्या, माया जर परिवार हो।
युध, गुरु या शुक्र उमदा, 2 भला तीन पांच जो।
रिंक बाहर साहि उप्र, भौत आखिर घर में हो।
गुपरते बुध आयु अपनी, होते माया जर में यो।
गुरु चन्द्र या मंगल दूजे, बड़ी गुलदी बनता हो।
शुक्र मगर जब घर हो बैठे, साथ परहै नन्ता² हो।
मुँ³ शुक्र व पापी रजा, जुदा हुआ नुप नन्दी हो।
नोत⁴ मारे घर इकदम इतना, मिले⁵ कफन न दफनी हो।
हात गृहस्त्री सूर्य माया, चोने से घर निट्टी पाया।
जन्म समय या लाख जो साया, बोलते बोलते आप जलाया।
गुरु मंगल उस घर से भागे, शुक्र रहे न चन्द्र जामे।
पापी ग्रह भी गिने अमागे, मिली मदद नुप जर ही जागे।
न पन रहे पनाढ्य, न गुल रहे मुलगार हो।
सब मात तपा जान बरवाद हो, गर नुप का ना दान भाय हो।

47

1. १३-२९-४१-४५-६४-७५-८६-९८-११४ साला आयु में ।
2. स्त्री रहे तो लाजवन्ती रहे । वरना वह और उसका पराना कुण्डल सब बरवाद ।
3. तपेदिक की विमारी में पुल्प स्त्री दुखों के पुतले होंगे जो हइ 34 साल आयु तक की समय मंदा होगा ।
4. तपेदिक, शुदकुर्णी, आग की पटनाएँ, गवन, आदि बहाने होंगे । गृहस्थ से तंश होकर भावे हुए फकीर का सा माय्य होगा । बहद गुन्जा शुदगर्जी जिह की नींव होगी ।
5. जमीन में तांवे के चौकोर टुकड़े दमाना जब गृहस्थी हालत नंदी हो, तो चन्द्र नष्ट [दूष से आन बुझाना] का उपाय सहायक होगा । जब शनि का टकराव हो रहा हो ।

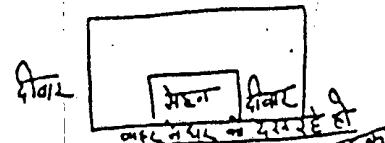
हस्त रेखा :

शुक्र के बुर्ज से रेखा सूर्य के बुर्ज को । शुक्र का पंतग्य हयेली पर क्षयम हो । खाना नं. 7 जो नुय का बत्ती घर है । दुय जुदा प्रभाव नहीं करता ।

क्षणफ़ :

सेहन गली के साथ होगा यहाने घर के साथी भली बाजार और मक्कन के दरम्यान सिर्फ खाली दिवार होगी । जिस पर कोई छत न होगी । गली और सेहन की दरम्यानी दिवार छोटी ही होगी बाहर क्षी में छड़ हो तो दिवार के साथ सेहन के साथ लगत हुआ मकान नजर आएगा । तो सूर्य नं. 7 का प्रभाव देगा ।

नेक हालत :



दिमानी खाना नं. 24 होउला, मुझ से दूसरे अपनी शान न बढ़ाने पाये का आदी होगा । नुय की 34 साला आखरी हइ फल्जी गुजरने पर माया जर और परिवार की हइ शुल होगी । स्वयं अपनी जान तथा जिस्म पर सूर्य का नुय असर न होगा, बर्लिंक टेवे वाले का अपना परिवार उत्तम और फिर आगे ओलाद के दिन से माया दोलत की बरकत मगर मात्रा पिता कुनवा व मुमुहल स्थानदान का रुज दरवारी संबंध में सूर्य का नुय असर बास पर आय पड़ी हुई की तरह नुय ही होगा । सूर्य कभी मंदा न होगा । सब कुछ उत्तम होगा मर्द स्त्री दोनों की आयु लम्बी होगी । फलोर नं. 3 न होगा । [प्रथम तो बद किस्मत ही हो तो भी बना फकीर होगा] उफर से जिन्दा जल्लर यापिस आएगा और ऊंचे सूर्य की तरह किसी सचाती को बगर मिला देगा तो चांदी या मोती ही देगा । मगर मिट्टी खाना नं. 7 शुक्र गृहस्थ मिट्टी का घर न देगा । बेशक कितने दुख देखने पढ़े फिर भी अपने में एक उदाहरण पुल्प होगा । स्त्री का सुख 25 साल ही हल्का होगा स्त्री रहे तो लाजवन्ती के फूल की तरह उक्ती रखते ही गुन्जा जाने वाली और अपनी इन्जत स्वयं बचाने वाली होगी, तो जीवन भर आएग से रहे । वरना यह न रहे बगर बद हो फिर भी रहे तो उस का घर [मुमुहल तरफ या शुक्र का साथी ग्रह जन्म कुण्डली के हिलान् ही न रहे । फिर भी रहे तो संचारिक घन दोलत माया लक्ष्मी की जगह मन्दी मिट्टी या पराई ममता । गैर मुर्चिकत । ही गते लगेगी । फिर भी रहे तो उस घर में टिवे वाले का स्थानदानी या शुक्र बेगा होने का घर । जन्म कुण्डली के हिलान् कोई न रहे ।] बहरहाल ऐसा व्यक्ति नुय की आय । 17/34 से इकबालमंद होगा ।

1. चाहे रिजक साथी आयु परदेस में होगा मृत्यु अपने जद्दी मकान पर होगी ।
2. स्त्री भाग हल्का, मगर मंदा नहीं गिनते, पराई ममता गले लगी रहे ।
3. ऊंचे दर्ज का मंत्री होगा ।
- 4! आपदन घन अच्छी मगर अक्षत की शर्त नहीं ।

नं. 2-3-5 या नुय गुरु या शुक्र उत्तम हो ।

शनि, नुय केतु तं. 2

गुरु, मंगल या चन्द्र तं. 2

नु. उच्च या नुय नं. 7 या मंगल वी सहायता तं. 7 में ।

कर्त्ता हालत :

धर की हालत उसके जन्म के दिन से जोलना सीखते सीखते मन्दी [हूँ युहारी की तरह] और जन्म दिन से बुआ फूँकी बरबाद। टेवे वाते में रुहानी कुम आम होते हैं। इस धर में अकेला बेठा हुआ सूर्य अपने शत्रु शुक्र की चीजें [शादी या गृहस्थ का फत, स्त्री की बाहर की शान, जिस्म की जिल्द, कांडी के बरतन, भरी जवार, सफेद याद, हर दो प्यार] पर अपना अच्छा प्रभाव बन्द कर देगा।

नर्म जुबान हाकिम और नर्म स्वभाव दुकानदार होने की हर दो हालत में टेवे वाता बरबाद ही होगा। बेहद मुस्त दाल सब्जी में हृद से ज्यादा नमक खाना, मन परन्दी, मन्दी प्रेरिदी बरबादी तथा मन्दी हालत की निश्चानी है। परिवार की कमी और सोने की जगह मिटटी से भरती जाए खुदकुर्शी तक की सलाह मगर होता ना मुकाल [गृहस्पत का उपाय सहायता करे] यदि सब ग्रह मन्द हों। स्त्री सुब्ज 25 साल ही हल्का होगा।

1. कोई न कोई स्त्री दुखी होकर उसके मते लगती रहेगी। कोई स्त्री [गृहस्ती बोझ बनी रहेगी] जर्की अपनी स्त्री भी अपने माता पिता को हर दम दुखी देखकर ऐसी रहेगी और हो उकता है कि स्सुरुल बाकी ही न रहे, मगर खुद इकबाल रहे। पर्हे ममता मते रहे। शुक्र या पापी नं. 2
2. धर में इतनी नीतें हों कि न कफन मिले और न ही लाशों को दफनाने वाला या जलाने वाला ही निर्ते। एजदरबार में खरबियां। दमा तर्पेदिक या स्त्री पुरुष दुखों की जोड़ी मन्दा जमाना हर 34 साला आयु तक होगा। मन्दी हवा और जहरें हवा हर गृहस्ती से सम्बन्धित स्त्री का दम घुटता हुआ। भरीज में भर्ज का पता, हकीम के धर का पता न चले। पितृ ऋष का बोझ धोखा देता रहे। आत्महत्या आम की घटनाएं, गवन, गृहस्थ से तंम आकर भागे हुए फकीर की तरह की नीयन माय्य होता। दीयाननो दिमारी खरबियों तक नीबत चली जाए। दद्यमिजाजी खुदगर्जी बेहद तबही का गुस्सा। एजदरबार की कमाई तबह हो। मुरु, शुक्र या पापी नं. 1 और बुध किसी और धर में बरबाद।
3. लोगों में देअनदाहे। न धन रहे धनाद्य हो, न जुल रहे जुलजार हो, सब मालोजान बरबाद चाहे कितना भी घरबार हो। जन्म समय लाख हजारी, जोलन सीखने तक या टू-टू करने पर ही कामन पर फेलने वाली स्याही की भाति भाग्य का मंदा हाल होगा। बुध नं. 9
जब बुध का स्त्र या मदद न हो।
4. पूर्तमहरी होगी। मं. या श. नं. 2-12 और चन्द्र नं.
5. न धन रहे धनाद्य हो, न जुल रहे जुलजार हो, सब मालोजान बरबाद चाहे कितना भी घरबार हो। जन्म समय लाख हजारी, जोलन सीखने तक या टू-टू करने पर ही कामन पर फेलने वाली स्याही की भाति भाग्य का मंदा हाल होगा। केतु नं. 1 या बुध नं. 11
जब बुध का स्त्र या मदद न हो।
6. पूर्तमहरी होगी। जब खाना नं. 1 खाती हो।
7. नर्म जुबान का अफसर, नर्म जुबान का दुकानदार हो तो बरबाद। दोहता पोता की पैदाइश पर स्यास्थ गंदा होगा।
8. उर्दी के मौसिम में पूप में तपस कम होने की तरह सूर्य का प्रभाय सोया हुआ या मंदा ही होगा। और उर्दी दिन ही उत्तम होगा जिस दिन खाना नं. 8 का ग्रह नं. 2 में जा जाये। आयु के 13, 29, 41, 54, 64, 72, 78, 86, 98, 119 जाल में।

उपायः

संगर वी जहिरदारी उत्तम रखना शुभ । दुकानदारी नर्म की अफसोसी मर्म की चाहे फर्जी ही हो नहीं तो सूर्य ही तेरी अपर्णा मिट्टी उड़ा देगा । अगर शनि का टकराव आ जाए यानि शनि नं. । आ जाए तो चन्द्र नप्ट । शाम की रोटी पकाने के बाद चूल्हे की आग को दूध से बुझाना । करने से सहायता होगी । इसी गुरुशी आग को प्रातः सूर्य निकलने तक फिर न जलाएं । आवश्यकता समय दूरी राग आग जलाएं । दोबाप चूल्हा पोचा फेर कर फिर प्रयोग कर सकते हैं मगर सूर्य निकलने के बाद । आम मन्दी हालत में दुय को नेक कर लेना सहायक होगा । माली गृहस्थी का केतु । नर सताना । की मंदी हालत के समय जमीन में तांबे के छोकोर टुकड़े दबाना सहायक होगा या योड़ा सा मीठा मुंह में डालकर या ऐसे ही पानी के कुछ घूंट पीकर काम करना शुभ होगा । स्याह रंग या बिना सींग गाय की सेवा करना शुभ फल देगी । उसका रंग देखना जल्ही है । उफेद । शुक्र रंग दही रंग । वशुम । स्याह । शनि रंग लोहे रंग । शुभ, बगर सींग गाय शुभ रहेगी । मगर लाल रंग । सूर्य या मंगल । श्वन्ती । मंगल नेक/बद । पर देगी । इष्के अंतिरिक्ष रोटी खाने से पहले भोजन का टुकड़ा आग में आहुति हूप डालना गृहस्थ में सहायता करेगा ।

सूर्य खाना नं. 8

| तपस्वी एजा, सांच की ओच |

सच्चाई में ब्रह्माण्ड जब तुम से कापे ।

तो फिर शूल दुनियां का क्यों तू है दापे ॥

एज तपस्वी जिस धर भेठे, मौत भागी खुद कोसो हो ।
मर्द नामर्दी ब्रह्माण्ड जागे, निन्दा करेगा मुर्दों को ।
उमर रुचि से उजतरक्की, भण्डारी दोलत जर बनता हो ।
हालत पापी खुद किस्मत, लेख साथी नुप होता हो ।
संगे दुनियां दिलदादा चोरी, लग्न बहुरूपी मन्दा हो ।
इश्क तबाही करता ऐसी, नाम रहे ना लेवा क्यों ।
शनि तीरो गुल हो मन्दा, दरवाज़ दक्षिण बद मंगल हो ।
पांच पहले धर शुक्र बेठा, उगर छोटी जले जंगल वो ।

1. को - कोई

2. योड़ा मीठा मुंह में डालकर पानी पीना सहायक होगा ।

हस्त रेखा :

सूर्य के नुर्ज से रेखा मंगल बद को, भाग्य रेखा न हो, सूर्य रेखा न हो, या भाग्य रेखा और सूर्य रेखा दोनों न मिले ।

नेक हालत :

स्वयं का भाग्य का हाल पापी गहों की अच्छी या बुरी हालत पर फैरता देगा । तेरी सच्चाई की जब सारे संग्राम की बदी की लहर को जला देगी । और तेरे तुम्हे शशुओं को भी जला छोड़ेगी । तपस्वी एजा निर्देश में भी कस्ती दूर भाकती हो । यानि उसके होते हुए उसके खून के किसी भी रिश्तेदार की मौत नहीं हो सकती । जब कोई हुई होगी वह इधर-उधर बाहर मया हुआ होगा । दिगारी याना नं. 28 पापी गहों से मुश्तरका । बहुस्थियापन । नकल करने की आदत का मालिक होगा । सूर्य की आयु से । 22 साल आयु । 22 साल तक राजदरबार में तरकी पन दोलत का भण्डारी होगा । सूर्य की गर्मी की आप अब जलाने की बजाए आकाश से वर्षा करने लगेगी । उन्हें मकानों को बराने याता, पानी भरे बादलों को बराने याता, पत्थर । शनि । से भाग्य आये पानी । मंगल नं. 8 का मालिक, मंगल अब सूर्य की उहायता से मंगलीक न होगा । और पानी से मिट्टी । नं. 8 चलाया करता है शुक्र को निषका पर नं. 7 । है या याह संसार पैदा करने याता होगा । मारक स्यान के विरुद्ध मंगल बद की जहर से जले हुए पत्थर । शनि । से सांख्या और सांखड़ से हिजड़ों और नामदी को जवान मर्द गिना देगा । खल्क उसके होते हुए मुर्द भी जीवित

हो जाएगे। जब तक वह संघर के तीन कुत्तों में से कोई एक कुत्ता या चोरी करने वाला न हो।

1. मंगल वद और शनि के मन्दे अहर की बजाये अब सब फल भित्र ग्रह नं. 1 का साथ, साथी पर मंगल नेक हो। नेक होगा। दस्त ग्रहों और सूर्य स्थापन का फल हर ओर हर तरह उत्तम होगा।

मन्दी हालत :

इस घर में येठा अकेला सूर्य अपने झनि की चीजें [पुड़पढ़ी, स्त्री लिप्ता, विच्छु, जहर्तले जनवरों] की सहायता से नुह प्रभाव देगा रुचात रहे कि कहीं वह प्यार जिस ने अक्षर कोमों को खा कर छोड़ा तेही तबाही के सम्मन न इक्षुठे कर रहा हो। यदि स्थापन बड़ा भाई या भाय की रेवा करने वाला हो तो लम्बी आयु की निशानी होती। सफेद शय मन्द भाग्य होगा। दक्षिण के दरवाजे का साथ मोतों की पहली निशानी होगा। संगे दुनियाँ [दुनियाँ के तीन कुत्ते या किसी एक हालत का भी जो होते हैं या चोरी का प्याप [दिल दादा] हो। नहुसर्पिया पन की लगन या शोक हो या मन्दे प्यार में संगता हो तो ऐसा तबाह होगा कि न सुद उस का निशान दवे और न ही नाम सेवा हो।

1. उमर छोटी और जंगल में जलता होगा जब दक्षिण के दरवाजे का साथ हो और जब बड़ा भाई न हो और टेवे वाला जब अपने बड़े भाई से बुदा हो या उल्ट हो तो मंगल वद होगा। शनि नं. 3, वृ. मन्दा नं. 1-5 या मं. वद हो [स्पाफा शुक्र का परंपरा काम रेखा होती]।
2. काग रेखा का मन्दा फल शुक्र नं. 1-5-10
3. दूसरे को तो मौत तक से बचावें मगर खुद अपनी किस्ति के भेदान में बहुत हल्का [मन्दा ही होगा]। जब वृ. मन्दा हो।
4. माती हालत में हल्का [मन्दा] ही होगा। जुध नं. 2

सूर्य खाना नं. 9

[समी उप्र मारी करीता, खानदानी परवरिज्ञ वस्तु, सूर्य उष्ण के बाद का सूर्य]

उमर लम्बी में पाप तो खूब करेगा,

मगर धर्म को क्यों तु जँचा करेगा।

(अस्त्री)

स्वीकार कर खुद किस्ति अपनी, सात पुरुत तक तारता हो।
दान लेना न चन्द्र चांदी, न ही मुफ्त खोती पालता हो।
पांच तीजा न शुक्र मन्दा, न ही नुह अब चन्द्र हो।
हाय हकीमी बरकत दुनिया, राजगुरु चाहे मन्दिर हो²।
साथ दृष्टि जुध जो मन्दा, जलता सूर्य खुद अपना हो।
पांच पहले तीन राहु जो येठा, ऐसी, धर्म में कच्चा हो।

1. खानदानी धून के लिए अपना सब कुछ बहा देगा मगर इनाम न मांगेगा। परेपक्कर का असल अपने घर से चला कर पूर्ण करता रहेगा।
2. ऐसा प्राणी जिस के खानदान में उस के जन्म से पहले किस्ति की हर तरफ मन्दी हालत थी अब उस के जन्म से कुल खानदान का पुण्या मन्दा समय खत्म हो गया और उनकी किस्ति का ग्रहण हट कर सब तरफ उत्तम रोशनी [भाग्य] और अच्छी [काम में आने वाली] आग पेदा होगी।

51



किस्त रेखा :

किस्त रेखा की जड़ पर चार रेखाएँ शाखा हों। | ↗ |

नेक छात्र :

उमर लम्बी दिमाग खाना नं. 26 मस्तुरी हृद से ज्यादा भेवकूफ कर दें। भोलापन, सादा, नेक, होगा और ऐशनी का उत्तम हैशा सहायक होगा। दृढ़निश्चय उत्तम देगा। बढ़ता हुआ कर्माता पाते पहली बार का सुख देख कर जायेगा। खानदानी पालना करने वाला। किसी का कुछ बने या न बने मगर वह अपने खानदानी खून के लिए अपना सब कुछ बहा देगा। मगर बदले में कुछ न मांगेगा और न ही खुद कभी ऐटी से भूखा रहेगा। मगर वह अपनी किस्त पुश्टों का रखवाला और सहायक होगा। परेपकार का असूत अपने घर से चलाकर कुल दुनिया के लिए पूरा कर देगा। उजदरवार और नू. से संबंध चाहे मन्दे ही क्यों न हो मगर उस के हाथ में इलाज की बरकत तो जरूर होगी। सात पुरुष तारने वाला होगा। अब खाना नं. तीन बहन भाई खाना नं. 5 अपनी सन्तान का प्रभाव उत्तम होगा। शुक्र चाहे कद्र हल्का मगर चन्द्र अब बुध असर न देगा। भाता पिता की ऐटी कमाने का टांग। [घन्या] अमूमन सरकारी नौकरी होगी खच्चा कर्माल दारी के कामों में बहुत होगा। खाना ओलाद भी अब हर घर होगा चाहे इस में पापी या नन्दे ग्रह भेठ हो।

1. उस का खानदान उसरे पहले उस के बाप दादा और स्वयं लम्बी दोत्त ग्रहों का गल्लुक, किस्त रेखा की जड़ पर चार शाखी खत।
2. किस्त अमूमन जयानी [34 साला आयु के बाद] में आजायेगी। चुप नं. 5

मन्दी छात्र :

चन्द्र की चीजें खार कर चांदी का दान लेना मन्दे चन्द्र की निशानी है और मुफ्त खोए से सूर्य हिपने का समय [गिरावट का समय] निकट होगा।

1. सूर्य का मन्दा प्रभाव जोर पर होगा घर में पीतल के बड़े बड़े पुरुने वर्तन दुय का जहर हटायें। नू. का स्वयं या चुप नं. 5
2. हृद से ज्यादा गर्म या नर्म होने से बरबाद होगा। गर्म में कच्चा और मुफ्त खोर ऐशी पट्ठा होगा। ए.नं. 1-3-5 में हो।

सूर्य खाना नं. 10

[सेहर मान फन का मालिक मरर बहसी]

अतायत जो नदों की करता चलेग,
जमाने में तेह कुछ बनके रहेगा।

बड़े बुजुर्य भाला [उम्दा] चाढ़े लाखो उसमें अकेला रहे न उत्तम होगा।
रंग शनि रुद्र! सर जब नंगे, लेख नीची येता हो।
गुरु मं. ना जिस दम सभी, पांच प्रथा मंद चन्द्र हो।
सात छठे चाहे हो कोई पापी, अत्य अयु दुख मन्दिर हो।
4 शुक्र शनि टेवे मन्दा, उम्र ऐटी पिता मरता हो।
उच्च कायम 2 चन्द्र रेता, सुख 24 ना भाता हो।

1. सफेद पगड़ी [शर्वती रंग] उत्तम मगर सिर पर काले नीले रंग या नींवा सिर हण्डे कारक होगा।

हस्त रेखा :

सूर्य रेखा शनि के बुरे पर हो ।



नेक हातत :

मान स्वास्थ्य और धन का मालिक मगर एक बहमी आदमी होगा । मंगल तिर पर सफेद या हल्के शर्वती रंग [जो काले, नीले न हो] की पर्दी या टोपी उत्तम होगा ।

मन्दी हातत :

इस घर में सूर्य अकेला बैठा अपनी ज्ञान शनि की चीजों को [जद्दी विरहस्त पितृ या उनका सुख, नजर, उम्र तक काती, देत्, लोहा, लकड़ी, भैंस, बाल, मगर मच्छ, तान साला रहने का घर, पिण्डा घुटना] पर अपना नंक प्रभाव बन्द कर देता है । जब तक समुहत का साथ या उनके घर ही रह पड़ना या गहू से सम्बन्धित काम या चीजों का साथ हो तो गहू सदा ही सूर्य उत्थप या मंदा कच्चा पुंछा ऐदा करता रहे गा । अपने नुस्ख का ढिंढोए और मुसिबत में दूरहों के आगे रोना मन्दे समय की पहली निशानी है और बरबादी की । घाह कोई दर्जा विद्या या छिंगी हासिल की हो और उसके बड़े देशक कितने उत्तम भाग्य बान हो मगर वह नंगा रिर रहने का आदी होने पर आम तौर पर चिल्लता ही होगा । और उसके लिए हर यद्यह नाकामयादी ही होगी । परिचयी दिवार में रोशनी या परिचयी दिवार [और अपने मकान की], पड़ोसी सावन्द या गहू की सानत से जलता हुआ होने मन्द सूर्य की आम निशानी होगी । रुदरवार में स्याही से सिफारिशी कामज, स्याह कर के कई बार देखा और देखा न उसे कभी पार देखा बल्कि नरग्रह की सहायता [साय सायीपन] के बिना न उसे न दर जहां देखा । फिर भी देखा सूर्य की आर की योगी और अपने स्वयं में गुस्सा के जोर से मंदे हाल वाला देखा और ओलाद तबाह देखा । किस्मत अपनी के सेखे में न कभी शाह देखा फिर शाही तिक्टू में भी न उसे लिखा देखा । पर मगर देखा तो सफेद पर्दी या दस्तार हे ही उसे गुल के दरवार देखा । तो आखिर में उसे शाहों का शाह देखा । मगर दुष की उम्र 34 साल ही न यह हात देखा । फिर भी देखा तो उसे न कभी योगी अलंकार देखा यानि अकेले सूर्य का प्रभाव मन्दा ही होगा । खस्त कर नंका रिर या बाहर की स्याही या स्याह कपड़े पहनने वाला या रिर पर या सारे शरीर पर काते नीले कपड़े मन्दा मनहसु प्रभाव देंगे । हल्के शर्वती रंग, उत्तम होंगे ।

1. बल्प आयु दुखों का भय हुआ निस्म और धर्म और ओलाद की हर तरह से हानि देखता होगा ।

खाना नं. 5-6 और चन्द्र मंद और वृ. और मं. का साथ न होगा ।

2. उम्र 12 दिन होगी जब नर ग्रह साथ साथी या सहायता पर न हो ।

चन्द्र नं. 5

3. घोड़ा तथा माता तथा पर्दी सब हो निष्क्रिय चंडिक वृ. भी वर्य मगर रुदरवार उत्तम सूर्य को उसर प्रबल होगा ।

चन्द्र नं. 4

4. पिता टेवे वाले की छोटी उम्र में ही चल्य जाए ।

श. 4, शनि मन्दा ।

5. ऊंच चन्द्र जो टेवे बैठा, भला दोलत जर होता हो, साल 24 न माता सुखिया, रुदर असर चाहे उम्दा हो । 24 साल की उम्र में माता दुखिया, अमूमन चल बरी होगी । मगर जल्दी ही नहीं कि वह मर जाये ।

च. नं. 2, उच्च कायम हो ।

6. 34 साला आयु तक मच्छर हे मर पूर भाग्य यानि न स्वयं सुखी न पिता का आहम । न स्वयं योगी अलंकार और न शाही मदद की कोई गुरुदाइश । न संतान कायम । न सुख शाह । न रुदर दरवार में ऊंचा दरजा । मगर बाद में उसे शाहों का शाह भी जाना है ।

खाना नं. 6-7 में कोई बैठा हो ।

7. शूर्ज शनि या लम्बा प्रगङ्गा होगा मगर राजदरबार उमदा हो तो शनि के मकानों व दीगर सम्बन्धित चीजों का असर मंदा होगा बत्सुक शनि की महादशा से समय 19 साल पिता को कष्ट जुटाई और घन दोलत की मन्दी होगी । दरिया और तह जमीन का पानी |कुआ, हेड पम्प| सदा मदद देगा ।

8. सूर्य का राजदरबारी संबंध में सोया हुआ प्रभाव होगा यानि बुद्ध शान के अनुभाव ताकत या अच्छी आदतें के होते हुए भी दरबार में उसकी कोई कदर या गिनती न होगी, दरिया नदी नाला में चलते पानी में 40-43 दिन तक लगातार तांबे के फैसे बहाते जाना सहायक होगा ।

शनि मंदा ।

खाना नं. 4 खाली ।

सूर्य खाना नं. ॥

पूर्ण धर्मी मधर बफनी ही ऐश्वर्य फल्न्द ।

जुबान तेरी जो गोशत खाने को भाँगे ।
लिखे खुद निसंतानता विधातु कलम से ॥

पूर्ण धर्मी नेक चलते पूर्ण, शरीवार मुखिया आप हो ।
शहन खोरी गोशत छोड़, तीन बेटा बाप हो ।
मंद शनि बुध तीजे आया, आठ चन्द्र खुद बैठा हो ।
उमर लम्बी चाहे हर दम होगा, हरमकारी का पुतला हो ।
5 चन्द्र दे उमर जो बारह, औलाद पैदा न होती हो ।
खुराक शनि निसंतान होता, दान मुशरिक मूली हो ।

1. मूली |उन्नी गजर आदि| सुकेद रंग या शनि की चीजों का दान |एत को सहाने रख कर प्रातः धर्म स्थान में दे आना| बादान शनि की चीज है । इस जगह शनि की काले रंग की चीजें न तैयार कीजिए वकरे छोड़ने से दूर होगा ।

हस्त रेखा :

सूर्य रेखा हथेली पर खाना नं. ॥ बचत में रमाप्त हो ।



नेक हालत :

चढ़े दाल खांव तो नर उन्तान जल्दी आयेगी । चाहे लालची मगर हजा को पदवी का आदमी । अगर धर्म में पूर्ण हो तो शरीवार सुर्दी हो । अमूल्य पूर्ण पर्मी नगर अपना ही ऐश्वर्य फल्न्द होगा । अगर शनि के मंदे कर्मों से दूर रहे तो कम से कम तीन नेक लड़कों का बाप होगा । आयु लम्बी होगी ।

मन्दी हालत :

इस घर में अंकेला देख गूर्ध अपने शशु शनि की चीजें |उप्र तक जाती आमदनी, खुद चर्हाद किये हुए बने बनाए मकान, औलाद की आयु, शान गिनती, नन्हे उमय, पहला हाकिम, नफलानी शक्ति, एहु केतु के कानोंका फसला| पर अपना नक असर बन्द कर देगा । गोशत छाने याता हो तो कम हे कम 45 साला आयु तक ली जैसे की अपनी उन्तान का मंसू उचात कर खा रहा हो । नर उन्तान व्यर्य अंत में निन्तान होगा । खास कर जब उरके मकान के गाय उन्होंने हुई गती और वृष्ट वाला सेहन हो । शनि और बुध की नर्दी कार्यपालियों तबाही को पहले ही बता देगी न स्वर्ण में सांचे का तमाशा, जबान का खोटापन

|तद्वाई| मगढ़ा या गारी देने की अदत्| वायदा फरामोश, सूठी शहादत, सोटी अमानत, फरेब घोखापड़ा, यानि जो लट्ठ मारे या झूठ शहर याते या पत्थर शनि की चीजों का साथ सूर्य की चमक पर स्थारी फेर देगा। वृहत्यत के दरवार जिस जयह शनि हस्तफ उठाए किस्मत का फेनला कर रहा है। उसी कलम से अपने आप सूर्य पर कत्तल का हुम्म लिव देगा। यानि शनि की चीजें |पोशत, शराब| की सुएक की मन्दी चीजों के प्रयोग से संतान की तबाही का हुम्म गादर कर देगा। जिसे यहू केतु की आयु |45 वर्ष की उम्र तक| कहना मनुष्य की शक्ति ऐ नाहर होगा। शनि की सुएक ऐ जब ऊपर लिखी गाड़ आ रही हो तो 45 साता आयु के बाद जिन्दा बकरे छोड़ने से लानत दूर होगी।

1. उम्र सम्मी और झूठ और हरामकारी का प्रुतला होगा। सूर्य चन्द्र 8, शनि मंदि, बुध नं. 3
बुध दोनों की चमक गुम होगी मगर उसकी अपनी आयु यकीनी तोर पर लम्बी होगी।
2. आयु 12 सत्, जब नर ग्रह साथ साथ या सहायता पर न हो। चन्द्र नं. 5
नर सन्तान व्यर्य की लाश मुर्दा पैदा हो। |मूली, इलजम,
गण, सम्मी| शनि की चीज |बादाम| इस जयह कस्ती चीज
|शनि की| न तेवे को सहाने रख कर सबेरे धर्म स्थान पर
देना शुभ होगा।

सूर्य स्थाना नं. 12

| सुष की नीद, मगर परायी आय से जब भरने वाला |

हस्त जाती जलता या ममता पराई

शहादत भवन दे जमानत तबाही ।

ऐ शनि न मगढ़ा कोई, न ही शुक्र बुध भंदा हो।
असर गुरु चाहे देशक शक्की, मर्द स्त्री सब सुखिया हो।
सापु हुआ न होगी त्वाल्दी, साभ पापी न देता हो।
माया मिले या हो तंत्र दस्ती, धर्महीन न होता हो।
पापी तल्ल पर रज खएवी, नीद सुएक न मिलती हो।
समय मंद जब देता मुझाफ़ी, फतह कलम सर करती हो।

1. दस्ती कमाई या हुनर मन्दी होने में सूर्य ग्रहण होगा, मगर व्यापार |बुध| उत्तम रहेगा।

हस्त रेखा :

सूर्य रेखा हथंती पर खाना नं. 12 खर्च पर खत्म होवे।

नेक शारत :

सूर्य की बुनियाद पर अब यहू का साथा चल रहा होगा। युखिया रात का नाईक मगर पराई आय या ममता में अपने आप मिर कर भरने याता होगा। अब गूर्धे और शनि क्ष किंसी भी तरह मगढ़ा न होगा और न ही शुक्र या बुध भंदा होगा। वृ. का प्रभाव चाहे लम्बी मगर मर्द स्त्री का जोड़ा युखिया पर्नी हो या न हो। नाईक रहे या नौकर भव कर रहे, निर्धनता से चाहे भंदी धर बिके, नगर धर्महीन संतान रहित या लंगोटा बंद जापू न होगा। नर होगा तो लम्बी जापीयों का न्यामी आजाद जीवन याफ स्वृहत् शारी और जिन्दा। दिल दोगा अपार्ट जितना पर्म में पक्का ज्ञान ही चुखी गृहस्ती होगा। किस्मत के भेदान में अगर बहुत चमकता जात न हो तो कम चमक का भी न होगा। पर में जाटा पीछुने की चक्की |जब जन्म कुण्डली में शुक्र बुध एक साथ हो| के होते हुए रिंक कर्भी बन्द न होगा। भगर एनदरवार उदायदा न करे तो व्यापार रे लाभ होगा। दरती शनि



की भर्तानों के काम से घाटा पड़ेगा। [सूर्य ग्रहण होगा] फिर भी पर्व पालना आवाद करती रहेगी। और जब तक मकान का सहन काम रहे सूर्य का असर मन्दा न होगा या जिस कदर खुले सेहन का साय रहे भाग्य का भेदान बढ़ता रहे।

1. अब शुक्र [गृहस्य] बरबाद न होगे चल्क शुक्र मंदा होता हुआ शनि नं. 6
भी नेक प्रभाव देगा।

2. केतु की आयु [24 साला] के बाद स्वयं कमाई करने वाला केतु नं. 2
होगा या हरी भरी जावन की फूलवाड़ी का स्थानी होगा।

मन्दी हालत :

इस पर में अफेला बेग सूर्य राहु की [अपने शशुरु की] दी गई चीजों पर नेक प्रभाव बन्द कर देता है। [सिर की हड्डी, दिमानी चाल (विचारों का आना जाना), अचानक ऐदा होना, मर्द स्त्री का बाहनी आयु का संबंध, बदलानी की प्रसिद्धी, कोयले, छोपड़ी, हाथों, शहर या बद-दुआ] एउटरबार में खराबीयां, दस्ती टैकर्नीशियन के कानों में हाँने मगर युध उत्तम प्रभाव का होगा जिस कदर मकान का सेहन सुला सूर्य का उत्तम प्रभाव बढ़ेगा। दिन की स्थानी, जाति, ईर्ष्या, अन्येर मकानों का साय, पर्व भ्रमता, किरी की झूठी शहादत, जमानत, बन या अमानत का भार लेना सब के सब सूर्य उत्तम आश को बन्दे पेशावर से दुश्माते होंगे। राहु दे संबंध कारणार संबंधी [सुरुहाल आदि से मुश्तरका] काम करना हर तरफ मन्दा मुचाल बड़ा कर देंगे या चीजों साथ साथी होना मन्दा प्रभाव देगा।

1. रात की नीद सुवह का नाशता दोनों बरबाद। तंम दस्ती सूर्य पापी नं. 1
के प्रभाव में खराबीयां होंगी। मंदे समय में दर गुजर करने
का हरियार या दुश्मनों को माफ करते रहना सफलता विजय
देगा।

2. स्वयं या अपनी स्त्री या दोनों एक आंख से काने। चन्द्र नं. 6

चन्द्र

[आयु की किंशती का सुषुद, जंशत की धरती मात्र, दपातु शिक्की भोजे नाम]

चन्द्र दिल मुहन्त जो पांव पकड़ती।
उमर नहर तेहि चरे जर उहलती।

दिल का स्तनी चन्द्र है जो कि सूर्य से ऐशनी लेता है और संसार में जरका छोटा हुआ है। सूर्य चाहे कितना ही भर्म होकर आज्ञा दे लैकिन चन्द्र उसे ठड़े दिल और शान्ति से पूछ करता है। और उदा सूर्य के पैरों में रहना पसंद करता है। चन्द्र का घर हथेली में चाहे सूर्य से दूर है भगव दिल रेखा सूर्य के पांव में ही चहती है। स्त्री [शुक्र], भाई [चन्द्र], साते, बहनोई [मंगल नेक] और अपने भाई [मंगल बद], गुरु तथा पिता [वृहस्पत] सबके सब इस दिल के दरिया या चन्द्र रेखा की यात्रा को आते हैं जो सूर्य की चमक से दर्दी हुई आंखों [शनि] और दिमान [दुध] को शान्ति ठंडक [चन्द्र का प्रभाव] देती है। या यूं कह सकते हैं कि इस दिल के दरिया के इस किनारे एक ऊंचार के सभी उंचाई और दूरहे और मनुष्य का अपना शरीर तक आत्मा [सूर्य] और यांखे, चिर [शनि], युध [भैठे हैं] और दिल रेखा उन दोनों के बीच चतती हुई दोनों ओर से अपनी शक्ति से आयु बढ़ा रही है या मनुष्य के शरीर को वृहस्पत की हवा के गांस से हिलता रखने वाले चीज यही दिल रेखा है। अतः कईयों ने दिल रेखा को आयु रेखा भी माना है और इसके मालिक चन्द्र की कील से आयु के लत्तों की हद बन्दी रांझी है।

चांदी की तरह चमकती चाटनी रात चन्द्र का राज्य है जिसके शुरू में राहु और चीत में शनि स्वयं रखवाला है, यानि पांव [राहु, केतु, शनि] तीनों एक जय अपनी जन्म याती और नगत मात्र के ही दरबार में हर एक के आगम

५६

और स्वयं माता के अपने दूप में जहर ढालने की शरारतों के लिए तेषार रहते हैं बेज़क दूप [चन्द्र] और जहर [पापी ग्रह] मिल रहे हैं फिर भी दरणा दिल चन्द्र माता संग्रह में सुग्रुंद के पानी में सूर्य की पर्णाई अवश्य होगी जिसकी ज्ञात के लिए संसार की हवा या मनुष्य की सांस का स्वामी [वृहस्पत] हर जगह विराजमान है।

चन्द्र मालिक ग्रह उमर जो देना मुरु राजा इह मंडत² हो।
जन्म, वर्ष कही चाहे हो भैठ, असर आता रवि का हो।
कक्ष शनुता एक से मन्दा, बैज नाश नहीं करता हो।
बाद केतु मुरु पहले बैठ, भन्दा स्वयं चन्द्र होता हो।
गुरु होये जब पहले बैठ, दृष्टि भर न मिलती हो।
माता पिता हो दुखिया बेटा, जहर चन्द्र भर जाता हो।
चावल [चन्द्र] का जितना पुराना, कीमत तुझपे बढ़ती हो।
नजर चन्द्र में गुरु जो बैठ, माया बाल्य मिलती हो।
युध चन्द्र से हो जब पहले, रेत जहर पानी भरता हो।
3-4-7-9 ग्रह बैठे, राख हुए कुल जलता हो।
कुप भले तक दृढ़³ चन्द्र का, मिले पापी फट जाता हो।
मालिक उम्र जो कुल जमाना, विश्व⁴ शुक्र न जलता हो।
मिथ्या सूर्य का हरदम मिलता, मंगल बदी सब जलता हो।
खाली चाया चाहे कोई अकेला, असर उत्तम सुद देता हो।
रवि देखे जब चन्द्र भाई, लक्ष्म बैठ न जब कि हो।
आपी उम्र जब चन्द्र होगी, लेख भले सब होता हो।

1. सूर्य उपने के बाद पकी शाम का स्वामी = राहु

सूर्य निकलने से पहले प्रातः का स्वामी = केतु

सारी की सारी रज का स्वामी = शनि

2. दरम्यानी उहों की चाल के लिहाज से चन्द्र के प्रभाव में सक्षम पहले वृहस्पत का समय, फिर सूर्य और अखिर पर चन्द्र स्वयं के असर का जमाना होगा यानि चन्द्र के प्रभाव में, वृहस्पत, सूर्य, चन्द्र तीनों का ही हिस्सा शामिल होगा।

3. सदा जारी रहने वाला स्थेन्ड्र

[1] भेदाने जब में विजयी होगा

खासकर खाना नं. 3 का चन्द्र

[2] घन दोलत खाद्य अन्न की देवी

खासकर नं. 7 का चन्द्र

[3] चन्द्र मृत्यु से बचाये और लम्बी आयु दे अब सोया चन्द्र

खासकर खाना नं. 8 का चन्द्र

भी उत्तम होगा।

4. फटा हुआ दूप, दक्षी या [शुक्र] का काम न देगा या मन्दे चन्द्र याते को शुक्र के कानों से फायदा न होगा मगर चन्द्र की चीजें लाभ देती जरकि उन चीजों में दूप की सफेदी न मिली हुई हो। पानी की बर्फ लाभदायक हो। मगर आसमानी रंग की बर्फ इनिसरक तथा चन्द्र की स्वच्छता रंग की सफेदी है।

12 अ॒ :

जिन्दा माता जर दोलत पहले, दूजे दोलत दुद अपनों हो।

कमी रिजक न चोरी तीजे, जीये बर्च ने चोनुनी हो।

तर्शीयत धर्म 5 दोलत चलता, धर्म की अन 6 मन्दा हो।

अवतार लक्ष्मी पर 7 होता, माया हुआ न पापं [एहु केन्द्र] का जो।

माता मंदी 8 उमर पे चन्द्र बड़ा मोती 9 माया हो ।
दुनिया धानी 10 जहरी सुग्रु, नाम मात्र घर ॥ हो ।
आतम माया कुल दुनिया चाहती, कोई चाहे न नक्के दुख की ।
चन्द्र 12 की चमक हो ऐसा, जले जलाये हर सुख को ।

1. नं. 4 खाती तो सारी आयु उत्तम फल देगा ।

आप हास्त अन्य ग्रहों से सम्बन्ध :

अपने हाथों माता की सेवा करने का समय 24 छत्ता आयु ।

1. कष्ट का समय एक पर ही मंदा होगा खानदान नप्त नहीं होने देगा ।

- (१) 2. टेवे में जब पहले घरों में वृहस्पत हो और बाद के घरों में केतु तो चन्द्र मंदा ही होगा लेकिन जब तक नुप उत्तम होगा चन्द्र का प्रभाव दूध की भाँति उत्तम ही रहेगा और सोया चन्द्र भी उत्तम फल देगा और स्वयं ऐसा चन्द्र जागता हुआ शोड़ा होगा ।

3. शुक्र देखे चन्द्र को - स्त्रियों की उलट रुप होगी, विरोध होगा ।

चन्द्र देखे शुक्र को - फकीर कमात का, सब नशे याजी का चरदार ।

4. जंगी भी टेवे में सूर्य की हालत हो [सूर्य की छाया] जल्ल ही चन्द्र के घर में साय नितता रहेगा और मंगल नद डर के कोहरों दूर भागता रहेगा ।

- (२) 5. चन्द्र के घर अकेला नेता हुआ यह चाहे कोई भी हो उत्तम फल देगा और जब चन्द्र का घर नं. 3-4 खाती ही हो तो स्वयं चन्द्र सारी आयु ही नेक फल देगा चाहे किसी हालत का ही क्यूं न हो या हो जावे ।

6. किसी के पाय छूकर उसकी आशीष लेना चन्द्र के उत्तम फल पैदा करने की तर उत्तम नीव है ।

7. चन्द्र से नुप का सम्बन्ध : चन्द्र यदि कुण्डली में नुप से पहले घरों में हो तो चन्द्र का प्रभाव नुप पर प्रवल होगा । युष्म हाल अच्छा मगर सांतरिक तौर पर दोनों का ही मंदा फल होगा । यदि नुप कुण्डली में चन्द्र से पहले घरों में हो तो नुप का प्रभाव चन्द्र पर प्रवल होगा । नीचे लिखी तीन हालतों में घन की कमी न होगी । दिल का सम्बन्ध खएन होगा ।
आत्महत्या तक की नोबत आ सकती है । दृष्टि रे आमने सामने एक और स्वभाव बाला -

100 प्रतिशत दृष्टि अति हानिकारक (पोड़ियों के सामने कुंआ खएनी का सबूत) ।

50 प्रतिशत दृष्टि बहुत ही हानिकारक ।

25 प्रतिशत दृष्टि मामूली हानिकारक ।

दोनों में से हर एक जुदा जुदा होने की हालत में दूसरे के घर में यानि खाना नं. 4 चन्द्र के घर में नुप हो या खाना नं. 7 नुप के घर चन्द्र अकेला हो तो नेक फल देगा । लेकिन यदि मुरतरका ही ऐसे घरों में हो यानि [4-7] में तो कमी नेक फल न देंगे ।

8. चन्द्र से शनि का सम्बन्ध :

चन्द्र देखे शनि को - शनि का मंदा अहर, चन्द्र का उत्तम ।

शनि देखे चन्द्र को - चन्द्र का बरबाद मगर शनि का उत्तम पैदा होगा ।

दोनों जुदा जुदा मगर मुरतरका दीयार याले घरों में हुए हो तो आपस में शनि होने के कारण जुदा जुदा रहेंगे । ऐसी हालत में कुंआ [चन्द्र] की दीयार फाइ कर भकान [शनि] या तहखाना बनाना चन्द्र के दूप में विष मिलाने के भगान होगा । माता भरे दोलत और संतान समाप्त हो जाये । बल्कि अपरंग होकर अपना शरीर भी अस्त्र नाकाय हो जाये, आदि तुरे प्रभाव हों ।

9. शनि या पापी [राहु] केतु या शनि [ग्रहों के सम्बन्ध से] [साय-सायी या दृष्टि रे] केतु का असर मंदा लगे और स्वयं चन्द्र का

सर्वत्र दूष फटा हुआ होगा मगर शुक्र न बनेगा या यूं कहो कि फटा दूष [चं. मंदा] दर्शा दा [शुक्र] का प्रभाव नहीं दे सकता बर्त कि उन चीजों में दूष की मुफरी शामिल न हो क्योंकि चन्द्र की असरायत रेख को सर्वें दूष समान है मगर फटे हुए दूष क्य पानी अपने दूष की शक्ति फिर भी दे ही जाता है।

बतः मंदा चन्द्र फिर भी कई दूसरे की भलाई के काम में सहायता नहर देगा या मंदे चन्द्र याले को शुक्र से संबंधी चीजों के द्वारा से फायदा न होगा मगर स्वयं चन्द्र की ही चीज [यहाँ याली] पानी आदि से ताप रोका पानी का बर्फ सहायक मगर अस्थानी बर्फ हानिकारक दूष सुकेद चीजे चं. नेक का सबूत देगी।

10. पापी टोला, सदा चन्द्र के दूष में जहर ही मिलाएगा मगर ऐसे टेवे में उपाय केवल चन्द्र क्य ही होगा। जब यह शुक्र ग्रह को देखता हो तो अपना शुभ असर बन्द कर देता है। जब चन्द्र के सामने पानी यह बढ़ हो तो चन्द्र का युह प्रभाव [यदि किसी हालत में मंदा चं. हो] टेवे वाले की जगह उसके करीबी रिश्तेदारों पर होता। जैसे चं. देखता हो सू. को और सू. के घर [नं. 5] में बढ़े हो पापी [ए.के.श.]।

11. जब टेवे में सू. मं. इकठ्ठे हो तो चं. भला नहीं हुआ करता।

12. चं. देखता हो वृ. को और वृ. के परे में नं. 2-5-9-12 में [बुष शुक्र, गहु छने] पर्ण बढ़े हो तो चन्द्र का फल रुदी होगा।

चन्द्र के पानी और विद्या का टेवे वाले पर प्रभाव :

चन्द्र को यदि पानी भाने तो कुण्डली के 12 घरों में टेवे वाले का पानी किस का बार क्षेत्र से हैसियत का होगा। पानी के भलाया यदि विद्या का चन्द्र से संबंध हो तो उसका परिणाम निष्पत्तिष्ठित होगा।

पर्ण की किस्म और उसका विद्या पर प्रभाव :

चन्द्र खना नं. 1

|1| घर में रखे बर्तन या घड़ का अच्छा पानी।

|2| विद्या पर तथाया पैसा व्यर्य नहीं जाएगा अवश्य आएगा। विद्या सहायक होगी जिसका विशेष लाभ रुजदरवार होगा।

चन्द्र खना नं. 2

पहाड़ से जोर से निकलता हुआ उत्तम पानी।

माता और विद्या जायदाद जदी और नकद नारायण दोनों में से एक तरफ में आबही पूरी दर्जे में उत्तम होगा। माता के होते विद्या होगी जिसके दरिया की बाढ़ दृश्य की हृदयनंदी हो। पिता या बाच्चे के होते विद्या के तुब की काई जर्त न होगी। मगर स्वयं टेवे वाले के अपने लिए उसकी विद्या संसारी ज्ञान समझ या वाकफीयत का बहाना नहीं होती और भाग्य की नींव रही। स्वयं पढ़े दूर्यों को पढ़ाये मगर यह शर्त नहीं कि विद्या विभाग ही भाग्य को सहायता देगा जैसे थोड़े का व्यापार, चांदी के [चन्द्र की कल्पुण] कारोबार, चिंचाई विभाग आदि भाग्य के सहायक हो सकते हैं। याम स्कूल मास्टरी करने की कोई शर्त नहीं।

चन्द्र खना नं. 3

|1| नकल सहाय या ईगेत्तान का पानी।

|2| निम्न कदर विद्या बढ़े पिता की माली [पन की] हालत कमज़ोर होती जाएगी। मगर विद्या लंकेमी नहीं। विद्या अपनी कीमत अवश्य देगी। जब तक दरिया पर पुल हो याने टेवे में केतू अच्छी हालत में हो और चं. को बरबाद न कर रहा हो। वरना माता ही पिता का काम देगी ज्यूं ज्यूं आपु बढ़ेगी विद्या की कीमत कम होती जाएगी। या ऐसा व्यक्ति विद्या विभाग में होता हुआ जप्त से नींवे को गिरेगा या विद्या से कमाया धन पर नार के कानों में तरफ़ी कम ही देगा।

चन्द्र खना नं. 4

|1| नरमा या पानी [मीठा]

|2| यिथा हर दन सहायक विद्या के पूरे करने में सब और से सहायता अपने आप मिलती रहे । चाहे कैसी भी विद्या मारे । सुख देने वाली विद्या माता के अरबी धून का सघूत होगी ।

चन्द्र खाना नं.5

|1| आवादी को हरा भए करने वाली नदी ।

|2| यिथा पर जगाया घन पूरी कीमत न देगा मगर ऐसा व्यक्ति बच्चों की विद्या, तकनीकी विद्या की पूरी डिग्री का स्थानी होगा मगर इसको वह डिग्री या विद्या की कीमत न मिलेगी यानि विद्या की नदी का पानी आम लोगों में पूजने की जरह टट्टी ऐशाव धोने के कान आएगा । आम लोगों का भला करते हुए भी कोई उसका भला न चाहेगा । सर्वथा दुनियावी सभी नदी की मरम्मत का विचार ना करें बल्कि मंदा जल्द करें अपने लिए विद्या व्यर्थ नहीं होगी । यानि स्वयं अपना मन ना के बहर और विद्या अपनी कीमत कुछ भी न देगी चाहे कितना ही विद्वान् ब्यों न हो ।

चन्द्र खाना नं.6

|1| पाताल का पानी कुंआ, हाय पम्प आदि ।

|2| विद्या सहायक होगी लेकिन नूत्य और सर्व से, जिसके लिए कई तरह के काष्ट करने पड़ेंगे ।

चन्द्र खाना नं.7

|1| भेदान और दोतों की जन्मन का हरा भए करने वाली नदी ।

|2| शादी होने वे पहले विद्या पूरी कर लेंगा या यदि विद्या चलती रहेगी तो शादी लकी रहेगी लेकिन विद्या होमी काम की । वेशक थोड़े ही दर्जा की हो । दूध होगा मगर गाय की बजाए बकरी का जिसने विद्या की वही हालत होगी जो बकरी अपना दूध देने में किया करता है । यानि बकरी दूध तो देगी मगर भेदाने डालकर मगर घन की हालत के लिए बकरी का दूध होता हुआ भी चारी के भाव ही विकेगा या वह मनुष्य स्वयं लक्ष्मी अवतार होगा ।

चन्द्र खाना नं.8

|1| अमृत या जहर ।

|2| विद्या हुई तो माता को तररते रहे यह जल्दी नहीं कि माता मर गई हो । माता हुई तो विद्या नहीं अब दूध या विद्या सुखे दूध की तरह होते । यानि ऐसा दूध जिसके खुशक पाउडर में दूध की सब सिन्ने जल्द होती या यूं कहे कि यदि पढ़ेंगा तो पूछ, नहीं तो जंतान को भी पढ़ने से रोकते रहेंगे या वह दोतों को ही तररते मर जायेंगे ।

चन्द्र खाना नं.9

|1| सुंद्र ।

|2| सब को आएन देने वाला विद्या का स्थानी मगर स्वयं विद्वान् होने की शर्त नहीं । लेकिन फिर भी जल्दी नहीं कि वह अनपढ़ ही हो । फिर भी सुन्द्र का भालिक रुजा इन्द्र की तरह सबका दाता होगा ।

चन्द्र खाना नं.10

|1| तो पहाड़ की रुकावट से नंद पढ़ा पानी ।

|2| दूसरे को तो क्या पढ़ाना बल्कि स्वयं ही विद्या रहित यहाँ तक कि पढ़ने वाले को पानी मांगने पर पत्थर से उत्तर दे । उस विद्या में हर और रुकावट के पत्थर ही पड़ते होंगे जो व्यर्थ होंगे मगर खुशक दरवाईयों की हकीकी और प्रयोग की हिक्मत के इत्म का याकिफ जल्द होगा । वेशक दूर जगह मान की जगह मुंह ही काला होता रहे जब तक खाना नं.8 मंदा हो लेकिन यदि खाना नं.2 उत्तम हो तो यह कुछ एवं दो गुना शुभ होगा ।

चन्द्र खाना नं.11

|1| बरसाती नाला

|2| पढ़ेगा पूरा यरना अनपढ़ हाफिज जी होंगे । यही लाभ हानि विद्या का होगा ।

चन्द्र खाता नं. 12

[1] आसमानी पानी ओते बर्फ झाँटि, पाखाना बंद, चंदी नाली, बंद स्क़ा पानी ।
[2] यदि पापी मैद तो मंदी लहर यानि ज्यो विद्या चढ़े घर बार उजड़ता जाये बरना | यदि कुर्च नेक बृ. उत्तम हो| तो ऐसा नेक पानी जिरुमें गंदगी का नाम न हो और पानी साफ होगा जो कि एक बंद जर्मीन साफ नाली या खाती जगह में जुलर रहा हो । अगर आसमान से गिरे तो बर्फ बन जावे । मिट्टी और गंदगी से दूर रहेगा तो भी अंत में पानी से बदलकर दूध ही होगा । बेशक भार और शब्द में बदला हो जाये यानि विद्या छोटी हो या बड़ी नगर उरके द्वाह विद्या के आरम और सुख में पानी की हरियत होते हुए भी दूध की तासीर और रंगत होगी या साथू समझे के लिए मिट्टी की जगह या चांदी का फर्श हरियर होगा या यह और उसकी विद्या चांदी की भी परवाह न करेगी मगर सोने की रंगत में झलकती होगी या तिचे न पढ़े नाम मोहम्मद फ़ायिल । पढ़े या न पढ़े मगर पढ़े हुए का बाल जल्द होगा और विद्या की कींजत हो या न हो मगर मुफ्त की दुकानदारी में पूरे दर्जा की तारीफ की कींपत हासिल कर लेगा ।

ज्यो का निशान

अगूण जुदा छोड़कर निर पर निशान का हाल जुदा दिया गया है दोनों हाथों की अंगुलियों की पेंडियों पर उनके जोड़ों के निलने की जगह पर जो [अनाज के] दानों की शक्त जैसे □ भंगारिक जीवन में खुशी पर्मी से संबंध है । यह निशान सब अंगुलियों पर अधिक से अधिक 32 तक होने माने गये हैं । ऐसे निशान मिनती में 21 तक होने की हालत में चन्द्र का प्रभाव स्वयं अपने तिए शुम माना है और 21 से अधिक निशानों वाला व्यक्त संसार से जुदा होना जो 9 ग्रहों और 12 राशियों [9+12=21] की सारी चाल से जुदे ढंग पर चलेगा । अगर निशान मिनती में 32 हो तो सुख दुख बराबर ।

कुण्डली का निशान निशान प्रभाव
खाता

1	12	सारी आपु धनवान और प्रसन्नता से युजाह करने वाला ।	
2	22 से 32	संसार से जुदा ही होगा ।	
3	17	धनवान् वेइन्जिन न वेइतचार होगा ।	
4	14	ओसत दर्जा का जीवन होगा ।	
5	19	धर्मात्मा राजदूतवार में मान हो ।	
6	20	बुद्धिमान सलाहकार ।	
7	13	धनवान मगर गृहस्थ में दुख ।	
8	16	बद बल्त, जुदा खेलने वाला ।	
9	18	भ्रता लोग, भ्रते काम, नेक स्वभाव	
10	15	चोर डाकू फिर भी पूरी न पढ़े ।	
11	--	चन्द्र शून्य या निरपेक्ष या मंदा ही हो ।	
12	21	कमचलत मंद भाग्य होगा । भाग्य की उत्तमता का यकीन नहीं मंदा मनहूस होगा ।	

निस्त कदर यह निशान 32 की मिनती से बढ़ते जाय उसी कदर ही प्रसन्नता का उमय या भाग्य बढ़ता होगा ।

अगर निशान मिनती 33 हो 32 मंदी के मुकाबले 33 खुशी होगी यानि 33/32 खुशी ।

अगर निशान मिनती 39 हो तो 32 मंदी के मुकाबले 39 खुशी होगी यानि 39/32 खुशी ।

चन्द्र खण्ड नं.।

| माता के जीवित होने तक यह दोलत खलिस दूध |

मुकम पुरा माता का गत तू करेगा ।

उज रिक माया न तेह घटेगा ।

दूध खलिस जर¹ पहले चन्द्र, नहर रिएने आती हो ।
काम मंदे या मुस्त खोयी, शान पहली भी जाती हो ।
बहन माता भरजते पहले, आम निशानी होती हो ।
इरम तपत्या हर दो मिलते, दुध बेचे कुल घटती हो ।
माता चन्द्र जब² तब्त धे बेठे, असर दो मुना होती हो ।
जंच शुक चाह कितना टेवे, दुंखिया स्त्री उच रहती हो ।
शनि सूर्य जब 6वें बेठे, तो मिट्टी पर चढ़ता हो ।
मित्र चेये चाहे दरवें आये, मोती सफर कुल दरिया हो ।
आठ माता सात उत्तम होयें, रेत जली भी दोलत हो ।
उपाय दिप्पा³ हो जिस दम करते, शान भली सब शोकत हो ।

1. सोये चन्द्र को 24 साला आयु से पहले जगाना | खाना नं. 7 में गाय आदे शुक्र की चीजें कायम करना | अच्छा होगा वरना 24 साल में स्ययं जागा चन्द्र आयु के 25वें साल में हर तरफ नंदा प्रभाव होगा । चन्द्र कायम जायदाद जद्दी सद्य उत्तम फल और बढ़ती जाये ।
2. खाना नं. 1 में जब आवे वर्ष फल में 1-13-25-37-39-61-73-85-97-109 साल आयु में ।
3. चन्द्र नं. 1 के उसी खाना नं. 1 में जुटी जगह रिया थया ।

हस्त रेखा :

चन्द्र से गुर्ज के उर्जन. 1 को रेखा हो ।

नेक हालत :

अपनी माता के खलिस दूध की सिफ्टों से कामयाद, जीवन लम्ही आयु | 90 साल | और संसारिक भाग्य में चहलेत्त दूध की कीमत का स्वामी होगा । उल्दरबार उे मान तरक्की होगी | आयु मुख 27 साल | और संतान का सुख विशेष कर होगा । ऐसे प्राप्ती के जन्म लेने से पहले उसके कई एक भाई गुजर गये होगे और वह स्ययं तरस तरस कर बड़ी इच्छायें और साधनों के साथ हुआ होगा ।

माता पिता की माती हालत और उनकी जायदाद जद्दी भी उसके जन्म पर कई ऐसी शानदार न होगी । अमृतन 28 साल आयु से पहले या 28वें साल शादी का संक्षय | अपनी या किसी कंठनी रिश्तेदार अपने खून को | चन्द्र की आयु बरबाद और संतान का फल मंदा कर देगा । यही नुरी हालत 24 साला आयु के पहले या 24 साल स्ययं अपनी कमाई के पहले या 24वें साल स्ययं अपनी कमाई से नया मकान बनाने या अपनी नर संतान के पैदा होने पर होगी । खाउर 24वें साल शादी का संक्षय तो चन्द्र का फल बरबाद कर देगा । चांदी के बरतन में दूध का प्रयोग बड़े परिवार और शाश्वत का या गुप का संक्षय | गुप की चीजें सासकर सञ्जांग | स्यास्त्य की खाक उड़ा देगा । संतान की निनती, उनकी ऊँक की बरकत और सुख के तिए उनको दरिया पर ते जाते समय | जब पता हो कि दूर्घटी जगह 100 दिन से अधिक रुमय से तिए ठहरता है | तांबे या खेज दरिया में निरकर जावे बरता दरिया का मल्त्ताह अपनी मल्त्ताही उनरत मासूल किएया के बदले में संतान पर ही हमला कर देता है और उसकी संतान तक दुखी और ज्येष्ठी आयु की होने लगती है । चन्द्र की चीजें का दान लेने या लाभ उठाने की नियत से देचने की जगह उल्टा दूध की खेहपत



करता या दूसरे को पार्नी की जगह मुफ्त दूध पिलाते रहना चन्द्र के नेक फल को और भी बढ़ाता जायेगा ।

जब की कल्पना सुनी जाति रंग मं. की ओर चाँजों के साथ से और छोटों की पातना या भेहमनों रिश्तेदारों की हरदिल अनींगी [पातौ चांदी] के पात ने पूरी होर्णा घर को आराम का जीवन व्यतीत करने के लिए चारखाई के चारों पायों पर तांबे की भेल्यों गाइकर नेक होना । अगर यह न हो एके तो मामूली खाती पार्नी के कुछ पृष्ठ कभी कभी बड़ के जड़ों में डालना उत्तम होगा जो उसे हर जबह मान और शान्ति देगी ।

वीरान खेदने में पार्नी को नहर आ जाने की तरह उसके जन्म से ही माता के जीवित होते हुए माता का भाग्य और दयातृता से घन दैत्यत की बरकत होगी । 24 से 28 साला आयु में दूध की नईदायां [अच्छा हालत] बहा देश और माया की जल्पना न रहेगी । विद्या, तप्सना का स्वानी होगा । जब तक माता का हुम्म बजा लाता रहेना और उसके चरण छूकर उसका आशीर्वाद लेता रहेच । उस रिंजक की कमी कमी न होगी माँ बेटा दोनों का बुद्धिष्ठ उत्तम होगा ।

1. चांदी के बर्तन में दूध की नाती मंदा फल देशी उदाहरणतया चांदी का नंगा सागर या केततों ऐसे बर्तन का रूप की आयु तक टेवे वाले की 34 साला आयु से शुरू करने या टेवे की माता की चेहरत टेवे वाले की 48 चाला आयु तक मंदी होगी । वह न तिक्क घर दुखां बल्कि अंधी भी हो सकती है । मां के बाद हर और मिट्टी रेत उड़ेशी अतः माता के मरने से पहले ही उसके हाथों से चन्द्र की चीजें [चावल, चांदी] बतोर आखरी आशीर्वाद ले लेना न रिक्फ माता के बाद आयु रिंजक घन के लिए मददगार होने बल्कि माता के पेट में भेठे बच्चे की तरह इस संसार में ज्ञे माता की भोद का बायन देंगे ।

माता के बिना ऐसे टेवे वालों के भाग्य के दरिया में माया दोलत वा सुन्दरी सुख का पर्याय न होगा या वह माता के बिना दुखी ही होगा । सुख नाता की आयु के लिए 24 से 27 या अपनी आयु के 24वें छात और 27वें साल सफर में होते हुए भी कोशिश से वापस आकर नाता के पांव तूते रहना माता की आयु बढ़ायेगा । वरना ऐसे रन्य [24 से 27] और ऐसी हालत में [टेवे वाला घर से बाहर उफर में माता से जुदा होये] माता की चेहरत मंदी बल्कि योत की निष्क्रिया होगी । [मं. की चीजें मिट्टी में दबाना रहायक होना]

समुंद्र से सफर से नक्तों पैदा होने ।

Free by Astrostudent

सूर्य मंसूत या बृ. नं. 4-10 में

जती रेत भी घन देनी

खाना नं. 7-8 उत्तम हो ।

जापदाद जट्टी बिना भेहनत पैदा हो या फिले और वे उत्तम फल दे

जब चन्द्र कापम हो ।

और बढ़ती होगी । पर्हई अमानत भी पास रह जाये ।

हर प्रकार की उदाहरण का सुख होन्, घन बढ़ेगा ।

बृ. नं. 4, शनि नं. 10

बहु-चस्स, माँ बेटी की तरह उत्तम हालत, मगर संतान की मंदी हालत शुक्र नं. 7

बचाने के लिए विवाह के दिन से कुत्तों का घर में रहना सहायक ।

सूखी रेत से भी नंदी बांड बनेगी और उत्तम जीवन होगा तेकिन

शुक्र दूध या मंसूत दूध नं. 7 में

घटि खाना नं. 8 नंदा हो तो मंदी खाड से भी हर और रेत ही होगा

शुद्धि कम, घन अर्पक । एजदरबाही कामों से समुंद्र पार लम्बे सफर

जब दूध नं. 7 में हो ।

लाभायक ।

मंदी हालत :

पार्नी ग्रहों वा चन्द्र के ग्रुओं की चीजें काम रिश्तेदार से संबंध या ऐसे ही दुनियां देने काम और मुफ्त खोरी की आदत से पहली जान भी नाती रहेगी जाम के लिए घन्द की चीजें [खाएकर दूध] देने से अपना घर्तवार कम होता जायेगा । शुक्र चाहे कितना ही उच्च हो उच्ची माता के भेठे स्त्री दुर्विष्पा ही होगी ।

'कुदर्ती पानी | वर्षा का| चायत, चांदी और चन्द्र की चीजें कायम रखना सदा सहायक होतीं। दूसी ओरतों की आर्शीप अपनी माता से कम न होतीं। सोये हुए चन्द्र को | जब खाना नं. 5 खाती हो| 24 साला आयु से पहले जनाना, याहाँ भर में शुक्र की चीजें | गाय, नौकर, स्त्री (नौकरानी)| कायम कर लेना ठीक होगा नहीं तो 25वें साल से मंदा प्रभाव देता। मंगत की चीजें देतीं से मदद मिलतीं।

1. मिट्टी के तंय चढ़ते | यहुत निर्धन होगा। शनि सूर्य दोनों खाना नं. 6
2. हर समय का आधिक स्वामय उसके सोने के भाग को मिट्टी कर देगा। शुक्र के कामदेव की लहर की देवी | स्त्री| के होते ही। | शादी के लग्न| के समय से ही चन्द्र | टेवे वाले की मां, सास, नानी| वरवाद दुर्घट। मंगल के संबंध में पिट, पाई| निकम्भे और मैरी परिपान देगा। खास कर जब शादी ऊपर दिये गये सालों में हो। बृ. नं. 11
3. दिन रात दुखिया - बेआहम मंगल वद | मंदा नुप| या खाना नं. 8 मंदा

कथाफँ :

| गाय सारी चन्द्र के बुर्ज से रेखा सूर्य के बुर्ज के अन्दर जाकर समाप्त हो।

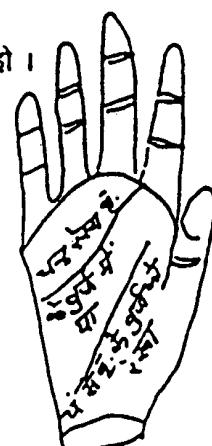
चन्द्र खाना नं. 2

Free by As | स्वयं ऐय की हुई माया की देवी |

तरे बजने पड़ियात मन्दिर जो भर में,
बजा देते घन्टा लावर्टी का टम में।



बंद नत्त न टेवे होती, योष मंदा संतान चाहे हो।
विरण मिलेगा भर क्य जरूरी, चीजे चन्द्र जब¹ रखत हो।
मंदिर² कच्चे चाहे माता बेठी, असर पक्का भर मुल³ का हो।
लिखत भूली कोई जन्म हो पिछली, कर्मा पूरी कर जाता हो।
उम्र लम्ही हो खुद उस माता चक दूजे⁴, 8 जौ।
4-6-10-8-9-12, शशु बैठे न पापी कोई।
बाद उम्र खुद माता अपनी, दस्ती प्रवारक देती जो।
चीज चन्द्र भर कायम रहती, आर्शीवाद आखड़ी हो।
मंद गुरु चाहे तन्त हो मंदा, नुप मंदिर न होता हो।
जहर टेवे की चन्द्र घोता, दोहर⁴ तरत का करता जो।



1. चन्द्र की चीजों के न होते हुए नुदासा मंदा या उत्तम फल न देता और अमूमन चन्द्र नं. 12 का फल देता।
2. गुरु बैठा होने वाले पर का गुरु नं. 2 का दिया हुआ भर, हर दो हाजरत से जो उत्तम वही प्रभाव।
3. खासकर जब शनि नं. 4 - पिटू रेखा - पिटा, जायदाद सुख।
खासकर जब नुप नं. 6 - मातृ रेखा - माता, भाग्य उत्तम।
खासकर जब सूर्य नं. 1, शनि नं. 11 - परग्यान जैसी शक्ति
4. 2-14-26-38-50-62-87-86-98-110 साल आयु

मन्दी हालत :

1. पर में पंट घड़ियाल,(मंदर की तरह)लायल्दी का पंटा बजा देने ।
2. वशक नं.2 का चन्द्र भाग का स्थारी और उच्च होता है मगर अब केतु नं.12 का भी उच्च है जो चन्द्र के लिए ग्रहण देगा। यानि चन्द्र [विद्या] केतु [संतान] दोनों में से केवल एक फल उत्तम होगा । यानि विद्या हो तो संतान नहीं और संतान हो तो विद्या नहीं ।
3. चन्द्र नं.12 का फल देगा और गुल शुक्र भी मंदा ही फल देते । नं.1-2-7-10-11 में । ऐसा व्यक्ति किसी दूरे के लिए किसी भी काम का आदमी न होगा ।
4. अव्यल तो आयु अनून 25 साल ही होगी वरना 25/34 साल सूर्य नं.। आयु का समय हर तरह से मंदा व गरीबी से भरपूर होगा । ऊपर का मंदा हाल अमूमन 50 साल [25 से 75 साल आयु का मध्य] मंदा ही होता ।
5. बुद्धाये में मंदा हाल और उस का अमूमन 75 साल समय मंदा होगा । शनि नं.10
6. नजर कमजोर और श्वने का त्वयं का प्रभाव मंदा होगा । चुप नं.6
7. बुद्धाये में मंदा हाल और आयु का समय 90 वर्ष मंदा होता । वृ. नं.11
8. शनि की आयु [9-18-36] में माता की आयु तक शक्ति होती । नं.9-10-12 में चारी ।
9. सब ग्रहों का मंदा अस्तर होगा । मगर वह खिशफत के उपायों से योग्य होते । नं.1 में चन्द्र के शुक्र शुभ त्रुषुक शुक्र यह और केतु नं.2, 7, 1 में ।
10. अब वेशक वृ. और चन्द्र दोनों आपसी सहायता पर हो मगर फिर भी बकरी देवी दूष में डैने डालकर ही । यानि कारोबार में बरकर होती तो उही मगर राङड़ झगड़ के बाद । उपाय : सन्धि रंख [त्रुषुक] कपड़ा [चन्द्र] लझकियों [त्रुषुक को] 40/43 दिन तक उपतार देते जाना त्रुषुक की जहर को घोपेगा । त्रुषुक वृ. और वृ. नं.9

चन्द्र खन्द नं.3

॥ चारी त्रुषुक मौत का रक्षक, उप्र का शर्तिक फरिश्त जिससे मौत भी ढे ॥

भरी माया होती जहाजों का देज़ ।

पिये दूष स्वयं बहन भाई जो तेह ॥।

त्रुषुक¹ चन्द्र न फल कभी देवे, खाती पझ 9-11 हो ।
होश शुक्र भी उत्तम टेवे, नहीं भंगल बद होता हो ।
मात्र चन्द्र फल पिता का शिवजी², नेक जभी त्रुषुक होता हो ।
उल्ट हालत जब तस्त पर आती³, भला चन्द्र त्रुषुक उत्तम हो ।
पहते सूर्य हो शनि ॥, त्रुषुक पाया भर 5 का हो ।

मंदी हालत :

1. घर में पट घड़ियाल, (निंदर दी तरह) लायल्डी का घटा बजा देंगे ।
2. वेशक नं. 2 का चन्द्र भाग्य का स्वार्थी और उच्च होता है मगर अब केतु नं. 12 का भी उच्च है जो चन्द्र के लिए ग्रहण देगा यानि चन्द्र [विद्या] केतु [संतान] दोनों में से केवल एक फल उत्तम होंगा । यद्यन्त विद्या हो तो संतान नहीं और संतान हो तो विद्या नहीं ।
3. चन्द्र नं. 12 का फल देगा और गुरु शुक्र भी मंदा ही फल देंगे । नं. 1-2-7-10-11 मंदे । ऐसा व्यक्ति किसी दूनरे के लिए किसी भी काम का आदर्शी न होगा ।
4. व्य्वल तो आपु अनून 25 साला ही होगी वरना 25/34 साल सूर्य नं. 1 आपु का समय हर तरह से मंदा व गरीबी से मरपूर होगा । ऊपर का मंदा हाल अमूमन 50 साल [25 से 75 साल आपु का मध्य] मंदा ही होना ।
5. बुद्धापे में मंदा हाल और उम्र का अमूमन 75 साला समय मंदा होगा । शनि नं. 10
6. नजर कमजोर और श्वनि का स्वयं का प्रभाव मंदा होगा । सुप नं. 6
7. बुद्धापे में मंदा हाल और आपु का समय 90 वर्ष मंदा होगा । दृ. नं. 11
8. शनि की आपु [9-18-36] में माता की आपु तक शक्ति होगी । नं. 9-10-12 में पार्श्वी ।
9. सब ग्रहों का मंदा झर रहा होगा । मगर यह रण्यकृत के उपाय योग्य होंगे । नं. 1 में चन्द्र के शुक्र ग्रह बुध शुक्र ग्रह और केतु नं. 2, 7, 1 मंदे ।
10. अब वेशक व्. और चन्द्र दोनों खाप्ती सहायता पर हो मगर फिर भी बकरी देव्य दूष भेजने छालकर ही । यद्यनि कारेचार में बरकर होगी तो रही मगर रगड़े झगड़े के बाद । उपाय : सन्न रंग [बुध] कपड़ा [चन्द्र] लझकियों [बुध को] 40/43 दिन तक उत्तार देते ज्ञान बुध की जहर को घोयें । सुप नं. 3 और दृ. नं. 9

चन्द्र सन्न नं. 3

॥ चोरी तथ्य मौत का रखक, उम्र का मृत्युक परिवर्त्य मिस्त्रे मौत भी ढेर ॥

भरी माया होगी जहाँगों का बेड़ा ।

पिये दूष स्वयं गहन भाई जो तेह ॥

बुध¹ चन्द्र न फल कभी देव, खाली पश्च 9-11 हो ।
होश शुक्र भी उत्तम टेवे, नहीं मंगल रद होता हो ।
मातृ चन्द्र फल पिता का शिवनी², नेक जभी बुध होता हो ।
उल्ट हालत जब तप्ति पर आती³, भला चन्द्र बुध उत्तम हो ।
पहले सूर्य हो शनि ॥, बुध पाया भर 5 का हो ।

भला गुरु हो ९ जब बेठा, राज याग सब दाता हो ।
विचार रुद्ध घन दोतत लम्हा, दिल से छाटापन नेक हो हो ।
ठीक उत्तर शहरत देगा, हुआ चन्द्र⁴ चाहे नप्त हो ।
८ मन्दा⁵ या भाठ पै दुर्खिया, समय निशानी मन्दा हो ।
चोरी कोई न वेशक करता, माया दोतत घन हानि हो ।

1. आयु के हर तासरे दिन, सामु, साल ।
2. दोनों में से एक ही जिन्दा या दो का काम देगा ।
3. ३-१५-२७-३९-५७-६७-७५-८७-९९-१११ साला आयु ।
4. स्वयं या मंदा प्रभाव होवे ।

जुप [तहकी या बहन का जन्म] वास्ते कमी संतान चन्द्र की चाँजों का दान, केतु [लड़का] का जन्म दोहते का साथ,
धर के सदस्यों की कर्मी पर सूर्य की चाँजों का दान । यहू [सुग्रह सूर्यन्य] नाम हानि [अनसुनी] शहरत कन्यादान शुक्र
सूर्य विवाह, याप का आना । चोरी घन भनावटी सूर्य की चाँजे गुरु रंग ।

5. खन नं.४ के मंदे ग्रह की आयु या स्वयं अपनी ८ साला आयु में मंदे ग्रह से सम्बन्धित चाँजों से मंदी निशानी होगी ।

हस्त रेखा :

मंगल नेक से रेखा चन्द्र को या चन्द्र रेखा मंगल नेक के बुर्ज पर चमान्त होवे ।

अपनी लिखाई या खाना नं.४ की हालत चन्द्र की नेक या गंदी तासर दत्ता देगी ।

लिखाई

प्रभाव

बद्ध और मोटा हर्फ	खुते दिल वात्ता
साफ-साफ पद्म जाने याता	मनवूत तया रुद्ध दिल वात्ता
उम्ही उम्ही लक्फीरे	बनेर सोचे चनझे जल्दी करने वात्ता
सुधा साफ	कुदरती अक्त वात्ता
बारेक	कच्छी लियाकत वात्ता
मेल लय बहवर के अधर	कच्छ फैलता करने वात्ता
अधर बुझ हुआ	छननाक डरपेक
खूबसूरत तथा फूलदार	गन्धी

खाना नं.४ की हालत स्वयं हाथ की लिखाई का ढंग होगी ।

नेक हस्त :

1. चन्द्र क्ष सरेवर अब शांति का दाता और जमत माया का पूर्ण अक्षकार तथा धोपी होगा । जायु हो तो लिंगि रिंदि का मातिक ।
शृङ्खल हो तो घन दोतत का भण्डारी । हर दो हालत में वह घनी अवश्य होना या मर्दी की बरकत, आयु की वृद्धि, स्त्रियों
की सेवा बर्त्तक पूजा होगी और तीनों काल उन्नति ही उन्नति होगी । मर्द लौटी की आपरी सेवा उत्तम प्रभाव देगी । नं.३
क्ष शुक्र अगर कुत [यानदान] को तारने वाली लक्ष्मी तो चन्द्र नं.३ जापना या रिंदि लिंगि का दाता और मातिक होगा ।
जन्म के गरीब या यतीम को चन्द्र नं.३ की हालत में कुदरत की ओर से चड़े तन्वे हाथों से सहायता मिलेगी । और मजलूम
मेरे एक दम आगम के रामान मिल जायेंगे ।

इतना तो फल जल्दी का देगा, तीने चन्द्र ।

मौतों से बच रहेगा, सब मातृ जानो मैन्दर ॥

2. संसर्वरक में प्यार ने शृणा करने वाला, शिवजी की तरह मृत्यु पर भी कानू पा लेने की तरह उंची हिम्मत वा स्थारी होगा, न कभी रिजक दो कर्मा, न ही कर्मा चोरी होगा, लड़ाई में सदा जीतेगा । माता भी अब पिता और चन्द्र स्वयं वृ. नं. 3 का काम देंगी । या युप की उम्र में दोनों में से एक कायम् कुल घर में मोते कम होंगी या बे-मोका मोते कम होंगी । चन्द्र अब चोरी, मोते का रक्षक होगा, जब तक पाप गुण केतु मंदा न हो युप की पूजा शुभ होंगी वरना नमकहराम दलाल या घर की बदनस्त लग्ड़ी । नोकरी दूष की कामत में दूष देने वाला पशु भी साय में विकवा देंगे यानि चन्द्र का फल बहुत ही मंदा होगा ।
3. आपु के हर तंसरे दिन, मास, साल कर्मा दुष प्रभाव न देगा । शुक्र उत्तम और मंगल कर्मा वद न होगा चाहे कही भी, कैसा भी देटा हो । अगर किसी कारण पुरुषों की कर्मी हो जाए तो त्वियों की कर्मी या स्त्रियों दुरी हालत में न होंगी ।
4. चन्द्र और युप दोनों ही उत्तम हो जाएंगे वार्की तीन बचने वाला मकान का भाग्य । 3-15-27-39-51-63-75-87-99-111 साला आपु त्वियों की इस पर में पूजा और पालना होगी और वह उन्नति का कारण होगा और चन्द्र नं. 3 का खानदान पर उत्तम प्रभाव होगा ।
5. राजयोन होगा । माता-पिता का सुख सागर उत्तम और लम्बे समय तक उत्तम फल देगा । स्वयं शांति और धन का चश्मा सा चलता होगा ।
6. दूष और मिट्टी हर दो के कारण भले, पशु पालन और पशुओं से सात्त्व होगा ।
7. आपु कम से कम 80 साल ।
8. दिवाशी सान्त नं. 27 गौर तथा खोज की शक्ति का स्थारी, दिली रुद्धि, धन दोलत लम्बे पैमाने का चाहे दिल छोटा ही हो मगर बुद्धि अच्छी, नीपत नेक, शरारत का ठीक जवाब देने वाला और हिम्मत रखने वाला होगा चाहे चन्द्र नष्ट ही क्यों न हो चुका हो ।
- कर्मी इस्तर :**
1. खाना नं. 8 के मन्दे ग्रह की आपु या स्वयं अपनी आपु 8 सात्त्व उम्र में भदे ग्रह की चीजों से मंदी निशानी होगी । अब चोरी तो चाहे ना होगी मगर धन हानि अपश्य होगी ।
 2. अव्यत तो मंगल वद होगा ही नहीं मगर शनि की मिलावट या स्वयं की चीजों या हालात के कारण या मंगल नष्ट करने से तड़की क्या फैसा । लड़की बेचनी और बकरी का दूष छाती में जहर या प्रभाव देंगे । चोर की चोरी से डर कर भर में ताता लंबा कर रखने की जगह आए मेहमान को अगर दूष नहीं तो पानी से खाती न जाने दें नहीं तो आपु की किश्ती में दरिया

जब युप उत्तम या चन्द्र कायम ।

जब 7-11 खाती हो ।

दुष मंदा हो और चन्द्र नं. 1 में आ जावे या युप नं..1 हो ।

सूर्य नं. 1, शनि नं. 11, युप नं. 5, वृ. नं. 9 और नं. 4 पता ।

क्षयम् : पितृ रेत्य हो ।

गहु केतु उत्तम ।

क्षयम् : अंगूष्ठ छेट्य अंशुलियं तथशी हुई ।

युप नं. 11

मंगल नं. 4

या पार्ना जर और उन्हें ईंगत्तान और वारान जगत की सर्वा
रत में जलता होगा ।

3. सद्गुरी की प्रश्नण पर चन्द्र की चीजे दवा देना शुभ होगा । यस्ते धन की बरकत
पूर्व की पृथि थमृन उम्दा वरना नमक हराम दलाल की तरह
दूध की बानत में दूध देने याला जानपर भी गाय ही विकाय देगा ।
4. एँ [म्युण्ड] के साथ या संबंध पर कन्यादान शुभ होगा । बलाएं बद से बचाने के लिए ।
5. सद्गुर के जन्म पर [केतु के साथ] या संबंध पर, सूर्य की चीजों
का दान शुभ । घर के सदस्यों की जिनती बढ़ाने के लिए तथा नुत्रये न
से बचाव के लिए ।
6. शार्दूल या गाय आने पर [शुक्र के साथ] बनायटी सूर्य से संर्घित
चीजों का दान शुभ यानि वह चीजे जो सूर्य रंग की हो तो मगर
चमकदार न हो । बल्टे बचाव जर चोरी मोत जहमत ।
7. माता और मार्द के लिए चन्द्र और मंगल से संबंध चीजों का बुध
प्रभाव होगा । जुदाई या रेजिश ब्यादि हो, मगर फिर भी अपने
लिए शुभ दोर पर्षणाम बुध न होगा मंगल का स्वयं का वह
मंदा फल जो चन्द्र नं. ॥ का हो सकता है [पूर्ण हाल चन्द्र
नं. ॥] यानि चन्द्र अब नं. 3 में होता हुआ वही फल देगा जो
चन्द्र नं. ॥ में हो या जो चन्द्र केतु का हो सकता है । मंगल दुय या मंगल नं. 10 हो । केतु नं. ॥

Free by Astrostudents

चन्द्र खन्ना नं. 4

[खचने पर बोर बदने वाली आय की नदी]

शुकर सुख में क्यूं तू न धन का करता ।
कदर दुखिया जाने - हो आहें जो भरत ॥

आंख मेली तू क्यूं करता, रिजक जब मातिक देता हो ।
दूध बेचे जरूर चश्मा जलता, मुक्ति दिये जर बनता हो ।
मंद पापी न शुक्र हो, न ही बुध ४ दूजा हो ।
आपु मंदी न पिछली अवस्था, बंद मुर्छी^३ इह उत्तम हो ।
माता पिता^४ कुल घर के तारे, शगुन भत्ता दूध होता हो ।
केतु^५ गुरु जब मंदिर टेवे, जहर टेवा चर घोता हो ।
साथ चन्द्र से ४ का टोला, बड़ती माया कुल ४ गुनी हो ।
तीन कमटी तीनों मंदा, पापी मंदा ९ स्त्री जो ।
५ रुप गुरु २ घर बैठ, राजा सुमुद्र नोती हो ।
सुप कभी १० मंगल आया, निरुत राजा स्वयं योगी हो ।

1. जर दोलत का चश्मा [मालोपन की कमी बेशी] के लिए साथ दोलत के हात में देवें । अब आपु के संबंध में यह केतु का
संबंध [मंदा प्रभाव] न होगा याहे वह याना नं. 1-6-6-12 में कही ही हो । शर्त यह है कि जन्म शुक्ल पक्ष का हो और
जन्म यदि शुक्ल पक्ष का न हो तो रात् केतु का संबंध [मंदा प्रभाव] साथ होगा ।

2. जब अकता चन्द्र नं. 4 हो या फैसला आये की हालत पर होगा ।
3. 1-4-7-10
4. जद्दी खाएगर गुन फल देगा ।
5. मृहस्यत, कनू नं. 2 या वाया देवता, या दाहता कुत्ता मार्दिर या पितृ युग ने इच्छाएँ ।

इस्त रेखा :

घन रेखा जब चन्द्र से शुरू हो या सिर रेखा के नीचे विकास △ हो ।



नेक हालत :

1. चन्द्र की कर्मस्यत का फैसला अब मनुष्य की आख पर होगा या खाना नं. 8-10-11 शनि की हालत पर होगा । आयु 85 से 96 साल होगी ।
2. घरने पर और भी बढ़ने वाला माया का दरिया । माता चाहे जब बंकला चन्द्र नं. 4 अर्द्धसे चाहे सौतेरं तथा माता खानदान शुभ फल के । चन्द्र के काम चाहे संवर्या [बजारी] में माता साय से लाभ और सहायता मिलेगी ।
3. दिनार्गी खाना नं. 28 शुक्र से मुत्तरका पुरानी याददाशत की शक्ति, सर्वार्थ का सुख और खानदानी हर रिश्ते की वही हालत होगी जैसा कि उन रिश्ते का संबंध टेवे में हो । जैसे मंगल अच्छा तो दृढ़ भाई ताया, मामा सभी अच्छी हालत के चन्द्र की चंगे जर तथा घन रहेगी, 12 साल संतान के पेटा होने का समय होगा, माता पिता और अपने घर कर्बला में सबको तार देगा । चन्द्र अब दूध उत्तम होगा यानि जब और जिस किसी का चन्द्र नं. 4 में होय तो उसे शुभ काम शुरू करते समय दूध से भर हुआ बर्तन बतीर कुम्भ रख लेना शुभ होगा ।
अब पापी और शनु [शुक्र युप] ग्रहों का मंदा प्रभाव न होगा चैलिंग एहु केतु जो पाप निने जाते हैं वह अब माता के दूध की तरह कसम द्याकर पाप और बुरा नहीं करेंगे । मंगल बद और शनि में अब जहर नहीं रहेगी । उन पापी ग्रह अमर भला नहीं तो बुरा भी नहीं करेंगे । और न ही 8-2 कभी बुरे होंगे चैलिंग खाना नं. 1-7-4-10 के ग्रह उत्तम हालत के होंगे । न आयु की कली न बुद्धापा मंदा जन्म शुक्ल पक्ष तो बुद्धापा उत्तम घरना उत्तम और चन्द्र के साथ पापी ग्रहों की प्रहर मिला प्रभाव शक्ति होगा ।
4. जद्दी काम उत्तम फल देंगे । पुरानी अमानत लेने वाला वापिस वृ. नं. 6 ही न आयेगा ।
5. माया घन 4 मुन्द उत्तम होगी । नर ग्रह बेटे की तरह दुष्क शुक्र बहु देटी की तरह चन्द्र को सहायता देंगे ।
6. भला लोग उत्तम खानदानी का समूत होगा । चं. के साथ कोई हँस ग्रह कुल मिलकर चार का टोला हो ।
7. पूर्ण इकबाल भर्त और नर उत्तान से जन्मदिन से इकबाली होगा शनि नं. 9-11
- राज दरबार ने उच्चित समुन्द्री सफरों से मोती पेटा होंगे । मिलत एजा योगी होगा । इतना सुखी कि उसे दुख का पता ही न हो और कभी झुक्किया तक भी न करेगा । हर दो ग्रह [शुक्र तथा मंगल] का फल उत्तम, राज दरबार से घन और लम्बी समुन्द्रों से बेशुमार लाभ होगा । कामदेव से दूर होगा । सूर्य वृ. नं. 5

मर्दी हालत :

1. यदि किसी को दृश्य देने का दिल नहीं या किसी चाज की कसी ही है तो कम गुण कम आव हो तो मैरी न करे।
2. दृश्य बेचने या जलाने के पैशे से घन का चशमा जलता होता जिसकी अस्त्रमत अदि के लिए पारी पै. बदले में मुझे दृश्य देना उपर्युक्त गृह्य यागर की नीव होगा।
3. सर फट जाये, यह का मंदा असर सुप्रिय की चाजे काम या संपर्की पर होगा। यह नं. 10
4. स्वयं रोटी देकर जहर के अपराध में सजा पावे। वृ. के. नं. 2 हों या जब बाय पांता या दोहता कुत्ता एक साय घर्म स्त्रील में जावे या कोई घन करे तो टेप की सब विष घुल जायेगी। वृ. नं. 10
5. हर एक ग्रह का मंदा प्रभाव होगा। नं. 4-9 के सब ग्रह या पर्यायों का जहर की घटनायें मंदी। मंगल वद प्रिय नाभि दुह हो तो सभव शनि आंख विष भरी। विषेला चांच हो तो सभव शनि का हैडम्याटर नं. 8 मोत पर्यायों के झनेले की जगह हो तो सभव मगर नं. 4 पाप। यह केत्तु के दुरे करने का भवान न होय चाहे वह नं. 2-6-8-12 में कही भी हो। सुख की अधिकता के कारण जब वह शुजुगार न होगा तो इतना दुखी हो जायेगा कि आहें की मरता होगा।

चन्द्र के साथ दो कोई और ग्रह या कुल तीन का टांगा या पारी मंदे का नं. 9 में शुक्र/शनि हो।

चन्द्र स्त्री नं. 5

[चन्द्र के दृश्य की मत्त्वा तथा अतिक्रम नदी]

स्त्रीह नेक की जो बुह करते लेता,
भला उससे बढ़कर नहीं कोई होता।

मर्द हीरा संसार काटे, सुकन्ध चुद आता नहीं।
लेख एजा आपु¹ लम्बे, चोल² पर भीव नहीं।
दरिया को सीधे चलते, आसान हह न होता।
पर कब रुकेगी नदी, पानी मरी जो होती।
शत्रु मंदे 3 दूजे देठे, मित्र मंदे 9-11 जो।
सुप्री तीजे गुरु 9-2 मारे, जलता मर 10-12 हो।
असर भले चाहे 3-8 मंदा, सुप्री मंदी 7-11 हो।
नप्त लालच खुदगर्जी होगा, चिड़ियों से बाज लड़ता हो।



मंदा चोत ही मुसीबत आने की निशानी होगी और दृश्य की मंदी बत्तु का आना इच्छी निशानी होगी।

दृश्य नं. 10 आपु 12 दिन

जब नर ग्रह हो लायी

मंदी हालत में भी देखे।

दृश्य नं. 11 आपु 12 साल

या मदद पर हो।

हस्त रेखा

दिल रेखा गृण के बुर्ज की जड़ तक ही समाप्त हो। चन्द्र बुर्ज रेखा शुद्ध रखा उन्नति।

नेक छत्तत

1. बच्चों के दृश्य की मात्रा तथा आत्मिक नदी, जिए तरह निकलता और वहत हुआ पांते सदा उत्तम होता है उसी तरह ही बच्चों के पालन और पर्ष के स्वभाव पर धन की बरफत की हालत होती है। रहस्ता [निच्छाई] तेह पल्ला सदा भारी रहता। बदला इषाफ की तू दे मनान [तरायू]।
2. दिमारी याना न. 29 कादाकामत और बराबर की कुद्दि पुरुषों में हीर [उत्तम] सा आदर्क होता। मगर उसको किसी के आगे सुकून नहीं आता। कट जायगा तो चाहे मगर सुकेगा कोन। एजा के माय और लम्बी आय का स्वामी होता।
3. एहु अब टेये में ठड़ा होता। आयु 100 साल पूरी लम्बी होती है। चिर्छियो [केतु न. 6 अपनी मामूली संतान] से बाज [चुप युहसी शशु] को मराने के याहस का स्वामी होता। न्याय की तकड़ी का स्वामी, रहमदिल मनुष्य लड़ाई झाँड़ में जिस की ओर ही जाय वही ओर जितेगी। उसका पलड़ा भारी होता। व्यापार झूनून मदा होता। मगर एजदरवार [धन दोलत की आमद का जरिया] में मान होता। जंगल पहाड़ को आशाद करने वाला पर्नाल्ला होता।
4. रफाय याम [आम चलने के नियम] के असूल की पालना करने से उसकी चतान के माव आदाद होते।
5. नेक परिणाम होगे।

मित्र ग्रह [सूर्य बुध] नं. 2-3, शुक्र ग्रह चुप, शुक्र पापी नं. 9-11 में हो।

6. चन्द्र अब मोती की कीमत और उत्तम फल देगा। नं. 3-8 मदा चुप नं. 7-11 होते हुए भी चन्द्र का असर उत्तम ही होता।
7. नर सतान 5 से कम न होती जाहे पापी गहो का साय हो, सतान पर कभी मदा प्रभाव न होगा। केतु उत्तम हो।
8. अब चन्द्र नं. 5 सोया हुआ लेंगे अत. चन्द्र से संचित काम के समय में, जी की मदद लेकर जाना और स्वयं भी घर से चलते समय मीठा घोजन करके चलना मददगार होगा। नं. 9 खाती।

मन्दी हालत.

1. नं. 10-12 में नेक इह होते हुए भी चन्द्र का प्रभाव मदा ही होगा। नं. 10 के ग्रह से चन्द्र बरबाद होगा या समुन्द्र का पानी तक जल जाये। मगर नं. 10 स्वयं बरबाद न होगा और नं. 12 के ग्रह स्वयं बरबाद हो जावे मगर चन्द्र बरबाद न होगा।
2. आम दुनियादार तो अपने मद माय के लेख से मारे जावे मगर ऐसा व्यक्ति जब कभी भी बरबाद होगा स्वयं अपनी जबान मंदी करने से बरबाद होगा अपने में चाहे वह लाखों में एक हो। चुप की चीजें सबसी खत्तकर बहन बुआ, लड़की साली सब के सब मंदे बरबाद या बरबादी का बहाना या कारेबार चुप से उचित भी यही असर देगा।
3. ऐसा कि उरका दिल होता नहीं जबान मंदी या दिलोह पीटने की आदत होती है जिससे कोई भेद एष नहीं सकता। अत. अपना भेदी ही उसे बरबाद करे। लालच, खुदगर्जी नस्त होने की नीव होगी ऐसा व्यक्ति को किसी का चुप करते समय दूसरे भादमी सूर्य या दीयार से पूछ लेना [कि चुप किया जाये या नहीं] साक्षक होगा।
4. शहराज के पांडे [चन्द्र] की तरह [दाई पर की] टेढ़ी चाल जब चन्द्र मंदा हो। जिसके अनुग्राह उसका चुप प्रभाव खाना नं. 3-8-10-12 पर भी होगा।

72

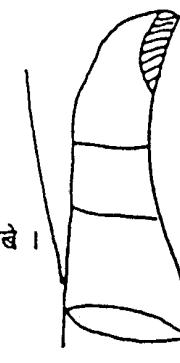
5. विजर्णी की शक्ति के मानक मात के यमा की तरह मंद नर्तजे ने 2-3 में शवु ग्रह पापा बुध शुक्र ने 9 में मिथ ग्रह ।
होगे ।
6. बुध के यम या चाँचे तथा दारावार थोर प्रारंभ के भाग बुध से संबंधित [जीभ, बालना] आदि मंद होगे और आने वाली मुर्हिकत की निशानी और उसकी नींव भी बुध की चाँचों का आना ही होगा जगत [वृष्टि, पहाड़] [शनि] का कामयाब मुर्छाफिर [लाल] न होगा ।
7. वायु 12 दिन हो । मूर्य न 10 जन नर ग्रह ।
8. वायु 12 घात हो । जन मूर्य न ॥ सारी या मदद पर हो ।

चन्द्र खाना नं. 6

[धोका की माता तथा खाए (कड़वा) पानी]

एवज तुझ को दुनिया है तेह ही देती,
ना हो पहले की गरु तो कर देख नेकी ।

आठ दूजे बुध मंगल 12, मन्द हुइं न दोलत हो ।
मात बेटा न हो कोई बेटा, पिता ऐवे स्यं भाष्य को ।
4²-12-8, 34 मंदे, शुक्र, केतु बुध³ मंदा हो ।
उलट मगर दिन 6 कोई तड़पे, शफा धड़ा इक देता हो ।
कुंआ लमे 6,12,24, मुर्छाफिर पानी या खेती जो ।
शमशान जापे कुल नहीं उस अपनी, मेरे भाष्य बिन बरती जो ।



1. वकेला चन्द्र : जयानी या समय उत्तम, शवु मित्र नुदापा उत्तम ।
2. खाना नं. 4-8-12 मंदिर हो तो चन्द्र का फल 34 साला उम्र तक मंद होगा ।
3. शुक्र मंदा तो समुद्रल खानदान बरबाद
बुध मंदा तो माता खानदान बरबाद
केतु मंदा तो पिता खानदान बरबाद
कम्पताल या मुर्द घाट में कुंआ लगाना सहायक होगा ।

मंदी हालत में भी देखे ।

हस्त रेखा :

चन्द्र रेखा जब सिर रेखा को पार करके हाथ की बड़ी आवर में उत्तम हो । अगूठे की नीच वाली पोरी पर ↘
जो का निशान हो मगर सही चालम हो । चन्द्र से उत्तम से जापदाद का फल सम्यम होगा, लेकिन वाकी सब
हालतों के लिए उत्तम होगा । अगर टूटा फूटा हो [चन्द्र शवु ग्रहों से पिण्या या मंदा] नुदापा मंदा ।

नेक शर्वत :

1. जैरी करती भैरी भरती नहीं की तो करके देख । उमर 80 साल । दिनांकी खाना नं. 3 बोझ या चंद्रवर धन, जैसा मुर्द भैरी
चण्ड, अच्छे से अच्छे नुरे से तुष्ण ।
 2. चन्द्र का फैसला यास्ते मान समान
चन्द्र का फैसला यास्ते चशमा रिजक
चन्द्र का फैसला यास्ते आयु
चन्द्र का फैसला यास्ते रात का सुख, गृहस्ती
- [खाना नं. 2 से होगा]

[खाना नं. 4 से होगा]

[खाना नं. 6 से होगा]

[खाना नं. 12 से होगा]

73

3. 6 दिन ये तड़पते हुए गुर्दा के मुंह में पानी ढालते हों। उसे जब नं. 2-4-8-12 सब उत्तम हो ।
आएगा हो जाय ।
4. यदि चन्द्र कोई ऐसा मंदा फल न देगा अगर किसी और कारण वृहस्पति नं. 2
माता का स्वास्थ्य निकम्मा या माया धन का चन्द्र की दूसरी
चांगों याम यायशार [रितवार ठाक समिति न हो तो पिता ॥३॥]
को दूध पिलाना या धर्म स्थान में चन्द्र की चांगे दूध आदि देना
उत्तम फल पैदा करेगा ।

मर्दी हालत :

1. शुक्र और केतु जब भी भर्ते न रहेंगे, पिता खानदान बरबाद । जब नं. 2-4-6-12 सभी मर्दे ।
खानदान माता पर बुहु प्रभाव जो 34 साल तक मंदा ।
2. चन्द्र भाग रुद्धी, तर्क्षया मुर्गाकिए जावन । आत्महत्या तक जब दूध 2-12 में हो जाये ।
मर्दी भी यहाँ रुद्धी कारण न हो ।
3. स्वयं या अपनी स्त्री या दोनों एक भांख से काने जब सूर्य नं. 12 हो ।
4. माता बद्धपन में ही कुजर जावे यदि जीवित तो एक दूधरे के लिए मंत्र नं. 4-8, दूध नं. 6
दोनों मुर्दे से दुरे और बेमदे प्रभाव के ।
5. टेवे खाता छोटी आयु का यदि माता जीवित हो तो दोनों मुर्दे के मंत्र नं. 6-12 और दूध नं. 8
समान ।
6. चन्द्र की आयु 6/12/24 में पर्वती कुंआ या कुंए पर युक्त पानी जब चन्द्र को केतु बरबाद करे ।
पिलाने वाले का प्रबंध करता या आम लोगों के प्रयोग के लिए तगड़ा या खेती में तगड़ा कुंआ मंदा होगा । भगव अस्पताल/
इमशान के भहाता के अन्दर तगड़ा वर्जित नहीं है । स्वयं के
आएगा के लिए कुंआ कोई मंदा न होगा । संतान माता/पिता
खानदान की आयु पर हमला होगा । उसकी चांदी मिट्टी के
बहवर का मूल्य देशी । घन दोलत धर्म ईमानदारी शारीरिक
स्वास्थ्य मंदा, दूध का प्रयोग मंदा, रहत को दूध पीना विष का
काम देश, पिता खानदान पर मंदा प्रभाव देगा ।

उपाय :

धर्म स्थान में कभी कभी चन्द्र के मित्र ग्रहों [सूर्य, मंगल, वृहस्पति] से चंचित कोई न कोई चीज देते रहना या क्से ही
धर्म स्थान जाकर सिर सुकाना सहायक होगा । स्वास्थ्य के लिए दूध जल्ही हो तो केवल दिन में पी जाए । यह के सभ्य यदि
फल दूध या दही या पनीर शुम फल देगा । [दूध को फाइकर पानी या दही में पानी मिलाकर बाफी रहा] पनीर बत्ता जावें ।

चन्द्र स्थान नं. 7

। नन्हों की माता, खुद तस्वीर बवधर ।
नहीं दिन है परिवार बद्धने को लकड़े ।
भरेंगे खजाने जो अपने ही धन से ॥

74

पन¹ या वंगक पहले इतना, न ही चाहे पर्तिवार² हो ।
 मृद वक्ता चन्द्र बेठा, लक्ष्मी अवतार³ हो ।
 मृदय बंध दूध पार्णी, पूर्त माया जलता हो ।
 दूध⁴ स्त्री साय लार्ती, माया बेटा बढ़ता हो ।
 पार्णी शुद्ध दूध हर कोई जलता, शार्दी उमर जब चन्द्र हो ॥२४॥
 गुण पार्णी गुरु मंगल मंदा, गुप्त जसे आठ मंदिर जो ।
 मंद शुद्ध घर चन्द्र मंदे, गुप्त भला न केतु हो ।
 मोत जद्दी घर घाट हो अपने, लेख मंदा लाख बेशक हो ।
 दूध एजा सरदार नशों का, खाक खजाने भरता हो ।
 आठ खार्ती दूध उत्तम बेठा, पहुंच खुदाई⁵ करता हो ।
 एजा तख्त या शशु सर्दी, साय पाप स्वयं चन्द्र हो ।
 उम्र मंदी मंगल तक उड़की, माया जले दूध मंगल जो ।



1. शनि नं.3

2. शू.नं.7

3. शुद्ध बेठा होने के घर का फल ।

4. शार्दी के समय स्त्री के घर से दूति के घर तक चन्द्र की चाँचे स्त्री के साथ आवें ।

5. कवि, ज्योतिषी । अगर फकीर्ही तो अव्यत दर्जा यरत्न चात चलन शक्ती होगा, शुद्ध की बारीकी, दूध दिल गाफ देगा ।

इत्तरेखा :

दिल रेखा जब कनिष्ठका की जड़ या दूध के नुर्ज पर ही समाप्त हो जावे । चन्द्र रेखा चिर की रेखा से निलकर समाप्त हो जावे तो आयु समाप्त प्रभाव होगा । ऐसी हालत में फकीरी रेखा, नशेबाजी रेखा, शणफल रेखा, चिर दिल सभी रेखायें मिल जावें । स्वास्थ्य रेखा दिल रेखा को काटे ।

नेक हालत :

शनि तीजे वृ. सातवें, कितना ही कंगाल हो । स्वयं अकेला चन्द्र सातवें, लक्ष्मी अवतार हो । चाहे चन्द्र अब दूध का फल अमूमन खराब कर देगा मगर स्वयं अपने प्रभाव से वह ॥गृहचाली बच्चों की माता चन्द्र॥ पूर्ण उत्तम और स्वयं नेक लक्ष्मी अवतार होगा जबतक राहू या केतु का दूध असर शामिल न हो । ऐसा व्यक्ति भेदा होते समय चाहे कितना ही निर्भास हो और परिवार भी लम्बा न हो, फिर भी अपने जन्म से निट्टी के चांदी की तरह चमकदार होगा । जायदाद जद्दी या स्वर्वं भैरव की हो या न हो मगर नकद नाहयण जल्व होगा । मृत्यु अपने घर घाट में ही होगी । यहु देवी मां बहन के प्यार से दूर रहेगा । प्यार मोहन से दूर दूध की तरह गाफ दिल होगा । उजदरवार में मान और चन्द्र की चीजों के संबंध का सुख होगा ॥चीजे चाहे जानदार या देजान हो॥। कविता तथा ज्योतिष का माहिर भी हो सकता है, पर चात चलन शक्ती होगा । तिलसी भूत उभान होगा । अस्त की बारीकी या खुदाई पहुंच दर्जा कमाल अगर फकीरी भी हो तो सबसे उत्तम और नेक प्रभाव की होगी । दिमारी खाना नं.31 शुद्ध से गुश्तरका रंग रूप में फर्क जारी की शक्ति दूध से दही और दोनों की शक्ति और रंग का फर्क भांप लेने का स्वारी होगा । स्वयं देवे यासे के लिए संसार का दूध और शुभ स्त्री का आएम होगा ।

1. अन्दर की शुद्ध और खुदाई पहुंच दर्जा कमाल होगी ।

दूध नेक और नं.8 खाती ।

क्याप्त : अन्दस्त्री अस्त रेखा या चन्द्र के नुर्ज से दूध के नुर्ज नं.7 को रेखा हो ।

2. घन दोलत और परिवार की देवी चाहे शनि नं.3 [पन की कमी] ।

जब दूध उत्तम हो ।

दू.नं.7 परिवार की कमी क्यों न हो ।

3. उत्तरक हर पारदार और गृहस्थी हालत में हर द्वारा शान्ति निः।

शुभ निः। क्याप्तः : चन्द्र से शुभ के बुंद नं.7 को रखा जाने रखा।

मर्दी हालत :

पूर्णी माता ने प्रगड़ा टेवे वाले की मिट्टी तक उड़ा देगा। इन् पानी दूष्य वरने से सतान और धन घटता होगा। अमृतन घटाई के समय स्त्री घर आने के समय या उससे पहले उन् चन्द्र की जानदार चांदी घोड़ी माता की आयु शक्ति मिलते हैं। जब शादी की आयु 6-12-24 हो तो पार्षी, शुक्र और बुध तीनों का फल नंदा होगा लंकन अमर घर में चन्द्र की चीजें चांदी या दूष्य या नर्ता या पार्षी। मगर यपने यजना के बराबर। मोजूद हो तो ओलाद बढ़ते रहे यजना चन्द्र शुक्र या प्रगड़ा यजना चन्द्र की जानदार चीजें घोड़ी, माता तो बेशक चले बसे। जो जल्दी नहीं कि बुजर जाये। लंकन लक्ष्मी की बरकत और भी बढ़ती जाये।

1. बचपन का समय मंदा, मंगल मंदा होगा, बुध से संर्वत कानों द

माया दौलत के संदर्भ में बुह ही प्रभाव देगा।

गुरु नं.7 या पार्षी का साय, बुध नं.8-2 में मंदा हो।

क्याप्तः : सिर रेखा और दिल रेखा आयत में मिलकर एक ही रेखा हो जाये या सिर रेखा स्वास्थ्य रेखा को काट जाय या दिल रेखा सिर्फ़ बुध के बुर्ज तक ही हो। पेश बरवाद। रेखा चन्द्र से बुध को रेखा और मंत्र बद हो।

2. शुभ देढ़ा होने का घर मंदा होगा। मगर धन मद्य न होगा बल्कि

न ही आग मंदा हो।

चन्द्र मंदा हो।

3. बच्चे छोटी छोटी आयु में गुजरते जायें।

शुभ पाप के साय किसी भी जगह इकट्ठे हो।

4. सन यहु चन्द्र, शुक्र का प्रगड़ा। सब नशीली चीजें का सरदार।

शुभ नं.1, बुध नं.1, शनि का साय या संबंध।

जायदाद बरवाद करे चाहे हायियार से भोत हो मगर आयु फिर भी सन्ती होगी।

5. घटाई के दिन स्त्री के घर से पति के घर तक स्त्री के साय ही अनर चांदी की चीजें। दूष्य या घटाई। आवें या स्त्री टेवे वाले के घर में पहली बार दाखिल होने से पहले उठके पति के घर में चन्द्र की चीजें। दरिया का पानी, दूष्य, घटाई स्त्री के बजन के बहवर। पहले ही मोजूद हो तो ओलाद बढ़ती रहेगी बतना चन्द्र शुक्र का प्रगड़ा या स्त्री आते ही टेवे वाले की माता या धन बरवाद होने शुरू हो जायेंगे।

चन्द्र स्त्री नं.8

। मुर्द्ध ग्रद्य भज्य दूष ।

मुजुर्गां के दिन, चीम चन्द्र जो देश।

स्के न कमी सांस, जब तक हो लेता ॥

सूर्य मंदा पारी तुरे मंगल वद भी हो, राह केतु तुप मिलते मुर्द्ध शुक्र नीच भी हो।

खर्च य अकारन मालो दौलत अपने भोर देनाने को, चन्द्र 8 दे चाहे सहारे पर हारे न आए को।

सुषुप्ति तारे दामाद तारे, तारे यामा को भी।

उल्टी गंगा हो के तारे, आयु के आखीर भी।

चलन पर्म³ न जब कोई जम्दा, मुंज़ा रेशमी⁴ भरता हो।

नजर कंठीला हर दो जनता, सेहत दौतत सुद मंद्य हो।

नाम बड़ो⁵ के दूष जो देता, तुम्ह तुह न नैरी हो।

महल गुण द्वारा जिस दम बनता, दमा लायल
 पार्षी शुक्र चुय ॥ बेटा, खाली पड़ा खुल
 माता चौथे 8-24 मारे^०, चांज भर्ती न
 सुप मगर जब दूजे बेटा, नींवे गुरु चा
 माता पिता दो आयु लम्बा, असर चन्द्र क
 दुप मंगल न पार्षी उत्तम, जान स्वयं चन्द्र
 3-4 चांद दूजे मंदा, चन्द्र शुक्र फल
 चरण बटों के पार्षी धोते, उम्र सुन्दर
 असर बुह न एह टेबे, माँदर^७ शनि गु



1. चन्द्र की आयु 12, 24, 48 साला आयु के बाद ।
2. सूर्य या शुक्र उत्तम ।
3. जब शुक्र मंदा या स्त्री या स्वयं मंदा, शनि मंदा । सेहत मंदी, हार्यार से
 अचानक हमले ।
4. बुध शनि मंदा ।
5. ग्राद आदि खासकर जब चन्द्र नं. 8 तथा नं. 4 में हो ।
6. 4-8-24 साला आयु से माता गुजरे ।
7. शनि गुरु के घर या नं. 2 पर शनि - गुरु का प्रभाव उत्तम हो ।

हस्त रेखा :

- 1) खिर रेखा के ऊपर निकोप हो । मंसत बद से चन्द्र को रेखा ।
 2) आयु रेखा या भाग्य रेखा दो शाली—< हो जावे कलाई की ओर ह

चन्द्र के बुर्ज पर निकोप बना
 नह जावे ।

नेक हस्तर :

1. अब टेबे में एह का प्रभाव बुह न होगा और न ही मंगल बद
 होगा । चन्द्र की बेगान चीजों पर भला और उत्तम प्रभाव देगा।
 अब चन्द्र नष्ट या मंदा न होगा ।
2. स्वयं की आयु लम्बी होगी और माता के बेटे कभी आयु की
 हार न होगी या पहले स्वयं मरेगा फिर माता बाद में जितकी
 आयु कुएं के बरबर [कम से कम 80 वर्ष] तक लम्बी होगी ।
3. उल्टी गंगा होके तारे
4. माता पिता दोनों की आयु लम्बी और मंगल का प्रभाव उत्तम
 होगा ।

मर्दी हस्तर :

1. चन्द्र बेशक किसी तरह भी मंदा हो मगर टेबे याते की खानदा
 दिशगी खाना नं. 32 इनी से मुश्तरका उकाई जाहिर पुंपलापन
 के शानी के भाग्य का लम्बी होगा उसकी जद्दी जायदाद ;
 आयेगी और दिनों का फंस ही होते रहेंगे । यदि उसके जद्दी
 मंदा संपित हो ।

इ लावल्द नहीं मरेगा ।
 जो की खान और मंदी नाली
 उके अपने किसी काम न
 दो तो जीवन भर और भी

2. चं. अपने दृग्र दीर के बाद यानि 12/24/48 वर्ष की आयु के मंत्र या बुध या पार्श्व में।
बाद उपर प्रभाव देगा। तुलसी की नजर में शार्दा मगर वह स्वयं दुखिया होगा। [मार्गी/नार्ता/दार्दी/पुर्दी माता/जला दूष] तब दुखिया। पहली निशानी मंदा चाल चलन होगी जिससे सुखुरल और थोलाद मी भरवाद होगे। लड़कियां चाहे पेदा हो और गिरती में थार्यक होंगी।

3. चन्द्र या मियाद 4-8-12 हद 24 तक गाता या आयु गंदी होगी और चन्द्र की जायदाद चीजों का फल मंदा होगा।
4. माता पिता का संबंध, जायदाद और संतान में।

5. दूध में कहाँ रेत या विषेली खांड की किस्मत या पेशाव भए लानत का कुंआ होगा। संतान, सेहत दोनों ही में होमें।

6. नजर, चाल बच्चे दोनों बरवाद मंदा प्रभाव। नाक छेदन उत्तम, एन्डरवार मंदा, आम शार्टीरिक दोष हों।

34 साल आयु तक मंदा जीवन और घन न जापा जाये।
7. अपनी स्थर्य की बेवफ़ी से शुक्र या चन्द्र की चीजों का मंदा असर मगर कुदरत मंदा असर न देगी।

उपाय : संतान के तकाजे में शमशान के अहाते के अन्दर के कुंए का पानी अपने घर में रखना सहायक होगा। यदि बझे के नाम पर दूध का दान [श्राद्ध आदि] न करे तो दम, मिरी, लाक्स्ट्री होशी या कुंआ छत कर मक्कन बनावे खालकर जब चन्द्र नं.8, शू., शू. नं.4 हो। बझे के चरण धूना या पानी से धोना देते रहना सन्ती आयु देगा।

8. चाहे शोश, कुंआ, दूध का सथ न चलता होगा मगर इन चीजों के बरवाद चनान्त होते हुए भी दोबाह कायम करना करते रहना लम्बी आयु के लिए भला होगा।

9. महसूस की शक्ति युम होने से में सभय की पहली निशानी होगी।
10. बच्चों और बड़े-बड़े बुजुँगों की आशीर्वाद उनके पांव धोकर लेते रहने से हर जोर बचाव होगा।
11. खेती की खेतावार और जायदाद का फायदा टेये याते के सुखुरल [त्वं यानदान] को मिलेगा।
12. भगर जीहरी या जुआ खेलने वाला हो तो वह बजती होगा।
13. घर में चन्द्र की चीजों का होना लम्बी आयु की निशानी होगी।

चन्द्र घाना नं. 9

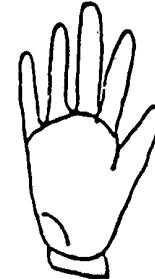
| पढ़े नहर, मोती, दुषियों का रथक सुन्दर। |

असर तुल्मा सोहचत, दरी कृतप्र का।

फर्क दूध गाय जौ, होता घोर का।।

78

माती गुण ६ चन्द्र गिनते औलाद¹ दोलत सब बढ़ता हो ।
 गुण उद्ध चाह शुभ रेट, धर्म पालन जब करता हो ।
 शुभ पापा दुष पाच या तीजे, ६ शरण चन्द्र की आता हो ।
 ताकत चन्द्र मंगल शक्ति तो - माहिर गम्भत होता हो ।
 चौंये बेटा नर ग्रह कोई टेवे, दूध भरी खुद किस्मत हो ।
 पिंड रेखा मुख सागर लम्बे, कर्म धर्म दया दोलत हो ।
 शुभ जगत नव साय या सापी, सुग्रीव हवाई बढ़ता हो ।
 छाँटी बेड़ी उंच हर दम अपनी, बड़ा जंगी कर लता हो ।



1. जब चन्द्र कायम तो ९ गुण माती जब नं.३ में उत्तम या सहायक ग्रह [देत्ता] चन्द्र धन दोलत उत्तम । जब नं.५ में भिन्न ले सन्तान धर्म उत्तम ।
2. सब से जुदा हजारे में एक विंशट्य यानि लिंग के बहवर का दूसरा कम ही हो ।
3. वेष्टक चंद्र के शुभ चन्द्र से सम्बन्धित चांगों के कारांबार में कोई वुग प्रभाव न देंगे भगव फिर भी सुन्दर में रेत [वुग] मिट्टी [शुक्र] पहाड़ी घटान [शनि] कीर तृफान [कुरु] पदा करते ही होंगे ।

हस्त रेखा :

भाग्य रेखा चन्द्र के बुर्ज से कलाई पर शुरू हो ।

नेक हस्तत :

1. शहफत और चन्द्र की शक्ति में उब से उत्तम और दिमागी याना नं.३३ वुग से मुश्तक का गणित जहूलों का वाँकड़ और पूर्ण वृष्टि जानने याता होगा । भूमि लोग, भले काम नेक स्वभाव कर्म धर्म तीर्थ यात्रा का शुभ नाम या तब यात्री नेक कर्म व काम द्वा आदी होगा । ३० यात्रा तीर्थ यात्रा द्वा मोया जल्लर मिले । वेष्टक उत्तर के दिल के सुन्दर में कृतज्ञ इच्छान की नस्त से तनाम दुनिया की मंदी कर देने याता कूड़ा करकट ही क्यों न डाला जाए फिर भी सत्तर्विक हालत में वह द्वूदाई रहनुमा होगा ।
2. खाला सन्तान [५] अब अपने आप ऐशन होगा चाहे नं.३ में या चन्द्र के साथ ही पापी बेठे हों । अब नं.९ का चन्द्र नं.५ में देव हुआ नं.५ के ग्रह नं.५ में बेठे हुए उमस्कर सन्तान का प्रभाव देखा जाएगा । निष्कर्ष में ऐसे व्यक्ति की चंतान अवश्य होंगी । आयु ७५ वर्ष होंगी ।
3. दुर्भियों का रक्षक रफ़्याम आम । मिट्टी के घड़े के बहवर का ९ गुण माती, उत्तम फल होगा ।
4. संतान और धर्म से सब और बरकत बढ़ती होगी चाहे शत्रु चाहे पापी ग्रहों का साय हो । धर्म पालन करने वाला जल्लर होगा ।
5. धन दोलत की बरकत हो ।
6. दूध भरी उत्तम किस्मत होगी । पिंड रेखा [माता-पिता] का सुख सागर सम्बे समय तक, कर्म धर्म और दया दोलत की बरकत होगी ।
6. सुग्रीव और हवाई हर दो ताकतों की बरकत होगी । मामूली बेड़ी [जन्म गरीब पर] का श्वसिक होता हुआ भी भारी जंगी बेड़ी

जब चन्द्र कायम हो ।

क्याप्त : शहफत रेखा चन्द्र की बुर्ज से दू. के बुर्ज में रेखा हो ।

जब नं.५ में देत्ता या सहायक ग्रह हो ।

जब नं.३ में देत्ता या महागर ग्रह हो ।

नं.४ में कोई न कोई ग्रह देव हो ।

क्याप्त : भाग्य रेखा शुरू ही चन्द्र के बुर्ज नं.४ से हो ।

वृहस्पत का साय या सम्बन्ध ।

‘[उत्तम जावन तया भारी पर्यावर] का स्थान हो जाएगा ।
ग्रह ग्रह चाहे कोई भी चाहे 3-5 में बेदा हो चन्द्र के बाद
में होंगे । अब चन्द्र बड़ा भारी समुद्र होगा ।

मन्त्र हालत :

1. ग्राम का दूध और याहर के दूध की सफेदी हर दो दो निम्न
कुर्सि तार्गार पी पाये भै अकस धोखा देगी । यावं ग्रह और
नं. 9 के ग्रहों का प्रभाव जस्तर शामिल होगा ।
2. अब चन्द्र के समुद्र का पानी सिर्फ इतना ही होगा जो एक
कुल्ता [कृति] या [भेड़ बकरी] बुप पी कर सत्त्वन कर देये
यानि याती हालत 34 अल्क 48 साल के पास अच्छी होने
और उस समय तक चन्द्र की चीजें या रिश्तेदार या चन्द्र के
संवायित काठेवार कोई खास लाभ न देंगे । जल्द नहीं कि
होने हो ।
3. शुक्र और चन्द्र की उमरों के मध्य मात्रा की नजर बरवाद । शुक्र नं. 3
दो. नं. 2, नं. 5 ।

चन्द्र स्तन्त्र नं. 10

॥ आक (मदार) का दूध चहरेत्ता पर्नी ॥

कवर मुर्दों की कोन जल्दी प्रोगे ।
उसी ठेकेदारी को बद तु पूर्ण करेगा ॥

किश्ती तेरी मन्दिर अपना पनी दर्शय 5 हो ।
पापवान घर तीने बैठ, तंगर ढाता 6वें हो ।
चांद चमकता रहे हो आयी धोड़ा सफर क्या साथी हो ।
वेद्य धन्यन्तरि साथ चाहे होते, घर्तु² पनी से होती हो ।
आंख शरारत हिकमत मन्दी³, उपरेखा मासा आती जो ।
जहर कांतिल उस दम होगी, धर्न नाली जर मन्दी हो ।
खाली मन्दिर नर चोये नैठ, कलम जहाही 24 जो ।
खुशक कुंए जर दोतत मरते, हुआ चन्द्र चाहे नहरी हो ।
जिस की खबर को बह येद, बंजार मुर्दा हो यता⁴ हो ।
मीठा शर्वत देते देते, जहर कांतिल हो यथा⁵ ।
चार मुसाफिर केतु⁶ पांच हो साषु नहत मन्दिर पुजाँ रहू जलता हो ।
वीणा अग्नि सू. 6 चक्र 8वें [नुपु], तूफान करीते चलता हो ।
सात रेखा 10 कुररती पानी, अर चन्द्र स्वदं उम्दा हो ।
टेवे कोन ग्रह 6-5 कोई चीज चन्द्र दिन दुखिया हो ।

1. यदि खाना नं. 7-1-10 में सूर्य न हो तो असर भला ही होगा ।
2. जब सूर्य नं. 7 में हो तो मृत्यु पानी से और दिन में होगी ।

80

3. मं.नं.७ और गूँथ में हान के बाद के दूसरे ही घर में शर्नि ही तो आंग हान नहीं होगा । श.नं.१ तो स्त्रियों से बतवाद होये । श.३ तो चार हाथ हो फिर इसके बारे में बात होत ।

4. जब नं.३ मंदा या नं.३ में चन्द्र के ज्यु हो ।

5. जब नं.५ मंदा या नं.८ में चन्द्र के ज्यु हो ।

6. पापी नं.४ औलाद भरती जाव ।

दिल रेखा :

दिल रेखा मध्यमा की जड़ शर्नि के बुर्ज तक हो । आपु रेखा दिल रेखा से मिल जाव । चिर रेखा उमर कोर दिल रेखा सीधी मिल जाये ।



नेक हालत :

1. अपनी जिंदगी में जर के पहाड़ों से किरे हुए दरिया को पार करने के लिए खाना नं.२ किसी की हालत द्वारा दुर्दशी की हालत द्वारा दुर्दशी की हालत [खाना नं.५ दरिया के पानी की हालत] निकलने की जगह और बहने की हालत : खाना नं.३ पारियान या भलाहो की हालत जो बेड़ी के चलाने से संबंध रखने होये : खाना नं.६ लंगर बेड़ी आखरी बटकने की जगह अंजाम आखरी की हालत दिखानी ।

2. खाना नं.३४ जगह या मुकान की याद का स्त्रामी होगा ।

3. स्वयं की आपु सांप कवच की तरह लम्बा 90 साल से कम न होगी ।

4. पापी ग्रहों का अब नं.५ पर कोई बुर प्रभाव न होगा और न ही कोई उपाय जरूरी है । स्वयं भाग्य के लिए नं.२ जागता होगा यानि धर्म स्थान से आना जाना भाग्य को बढ़ाता रहेगा भगवन् स्त्रियों की कबूतर शर्जी से बचकर ही चलना सहायक होगा ।

Free by Astrostudents

5. 24 साला आपु [चन्द्र की आपु 24, 12, 6 में जरही (चीरने फाइने की छाटटी) का शुरू किया काम द्वुशक कुंए में माया भर देगा चाहे चन्द्र कैसे भी यिपेला हो चुका हो] (नं.२ खाली नं.४ में नर ग्रह)

6. मातृ पिता का सुख सागर लम्बा भगवन् स्त्रियां [माशुका या बेया] श्वने नं.४ या श.नं.१ बतीर फर्ज बतवाद करेगी ।

7. द्वुशक कुंए भी पानी देने सब जायेंगे उजड़े घर आबाद हो जाएं सूर्य तथा नू. या मं.नं.४ हर ओर घ. के शुभ अवतर रे दूष चांदी और मोती ही मोती बरसे तथा शुभ समय हो ।

मन्दी हालत :

संसार भर की विषेश नदेयों का पानी का सुंदर जो पहाड़ से निकलने की बजाए उल्टा पहाड़ में निर कर पहाड़ को भी बरचाद फर रहा होगा ऐसा चन्द्र होगा ऐसा व्यक्ति आंख के फेरवा से बदनाम होगा और श्वने की आंख की शर्पत जारप होगी। हकीम चाहे फमात फिर भी बतवादी बल्कि कृष्णतान को मुर्दा से भरना का बहाना होय । पानी में जुती दवाईयां और रहत को विशारी पा इताज मंदा प्रभाव देये । शनि [मकान] राहू [झुण्ठल] दोनों का मंदा हाल होगा । जब भाई बंपुओं के संबंध से कोई मकान या शनि की ठोस खासकर पीज ले तो चन्द्र की चीजे स्वयं अपना ही कुआं तक मोत का बहाना बन जाये ।

2. चन्द्र का पानी [कुदरती जल या जर्मन के नीचे का पानी कुआं, हृष्ट पम्प, दरिया, चरमा, नदी नाल्य, मरना, झस्मनी वर्फ के गोले (आते) 10 साल तक जगातार रखा रहने या जारी रहने के 15 साल जादू चन्द्र की उच जहर धो देना रहत को दूष पानी ठीक न रहेगा । घर में दूष देने पासे पशु न रह सकते हैं और न फायदा देये ।

3. चन्द्र की चीजें आन पर दुध खड़े हो जायेगी । नं. 5-6 में कोई भी शुद्ध बेटा हो ।
4. शनि के काम पारावार या चीजें जो शनि रो संवर्यत द, उत्तम फल देने पर दोस्त उर्ध्व रेखा | लोगों का गला काटकर मां दर्द फरव मृठ सानत से माया दी बरकत| के ढंग की होंगी । अंट रेखा शता पिता का प्रभाव तो अवश्य उत्तम हाला मगर वह स्वयं स्वा के | चाहे पर्तहान जिसकी पालना अपनी जिम्मेवारी करे चाहे चालारी या दुर्लभ प्रेमिकाएं बरबाद करे और फजूल पर को घणव करें या करता हो । शनि नं. 6.
5. चोर छाकू फिर भी मंदी हालत शनि नं. 3
6. मृत्यु दिन के समय पानी से होगी । सूर्य नं. 7
7. चंतान मरती जाए माता की आयु शक्ति पाणी नं. 4, शुक्र नं. 7
8. चं. का हाल मंदा ही होगा नं. 2-3 में पाणी शुद्ध
9. जिसकी खदर को वह शए बीमार मुर्दा हो गया । मांठा शर्वत देते देते जहर कातिल हो गया । पानी में मुली दवाइयां विष व प्रभाव देंगी । चूर्प आदि खुशक दवाइयां शुभता देंगी । जब नं. 3 मंदा या नं. 3 में चन्द्र के शत्रु शुद्ध पाणी दुष्क हो ।
10. जब धर्म की नारी मन्दा हो चन्द्र की चीजें जहर कातिल का कार्य देंगी । जब नं. 5-8 में पाणी या दुष्क शुक्र हो ।
11. तीनों ही ग्रहों का मंदा फल हर जगह मनूस ठिक हो । क्षयम् : दिल रेखा शनि के बुर्ज नं. 10 क्षयम् में जा मिले ।
12. चंतान, कबीले या दुखों का तूफान चलता होगा । चन्द्र, बुध, शनि का पारस्परिक सम्बन्ध ।
13. शहर का कोई न कोई हिस्थ मर हुआ होगा । क्षयम् : दिल रेखा, सर रेखा, आयु रेखा तीनों मिलकर एक रेखा ही शत्रुम हो ।
14. चोर घोरेशाज, तेरते को डुखाने वाला, चोर-छाकू का सम्बन्ध नाम होगा । नं. 4 में केतु 5 में वृ., 2-10 में राहु 6 में सूर्य 8 में दुष्क हो ।
15. फेफड़े और छाती की बीमारियां होंगी । मंगल वर मंगल नं. 7 और सूरज बेता होने के बाद के दूसरे घर में शनि हो ।
- मंगल वर क्षयम् : उंगलियों के नाखून लम्बे ।

४३

दो चुप्ता हों यानि एगु व्यक्ति के दर्द जोड़ या गुणिया द्वारा हो चुप्ता हो या किसी और कारण दूष का प्रयोग वर्जन कर दिया गया हो तो यह। गर्भ किया साना पानी में बुझा कर प्रयोग कर सेना मुक्काद और कारथामार होगा फिर उस दूष का प्रयोग उन नुकसानों द्वारा करणा यदि पोष्टप्र शक्ति में शक्त हो तो वृ. [साना] यानि ऐसे दवाइयों जिनमें साना या गाना या गुशता थांद शर्मिल हो, गंड शक्ति को बनाएगा। चं. के साथ वृ. [जाना] हो तो दोनों कर्मों में नहीं होय और नहीं दुष्कृत से मार याते हैं।

३. माता वधपन में या चं. या शनि वीं म्याद दिन में मंदी सहत, श.नं.3

तपाईं भाँती दासत या भर जाधर्णी।

४. वधपन भटा होगा और नीचे की पांच याते विष का प्रभाव देरी खाना नं.3 मंदा

१. बहन का जन्म या बुद्ध की चीजें बुद्ध से संबंधित कारेवार - बुद्धवार

२. शारीरिक अपनी या अपने किसी संबंधी की - शुक्रवार

३. भक्त वनाना, खरीदना, गिराना शनि के काम - शनिवार

४. घन, सेना या देना किसी चीज का कारेवार से उंचंप केतु की - चं. के उंचंप केतु समय।

चीजें का केतु के काम

५. मुर्ग उपदेश सुनना सुनाना, वृ. चीजे काम से उंचंप - शाम के समय पक्की [एहु समय]

उपय : बच्चा होगा कि जब स्त्री को बच्चा भेदा होने के दर्द छुल्ह हो तो टेवे वाले की माता वहों ने किसी और जगह चली जावे और 43 दिन तक न वो बच्चे को देखे न हाथों में लेकर देवे। यदि टेवे वाले की स्त्री के भी चं. नं. ॥ को हो तो टेवे वाले की स्त्री की माता, समझ भी इसी तरह 43 दिन के लिए दूर चली जाए।

५. कूआं लगने पर माता की भोत संतान की भोत उफर [दरिया] केतु नं.3

समुन्द्री में हानि किसी व्यक्ति की गुमहाही से मात और जर का

नुकसान हो।

Free by Astrostudents

उपय : माता की मदद के लिए चन्द्र की चीजें दूष के ऐड़े या दूष जो तोल में इतना हो कि वह एक आदमी की पूरी खुएक हो ॥ मुना करके बच्चों में बोट दे [यानि ॥ १ ॥ = १२] ऐड़े या इतना दूष जो ॥ आदमियों के लिए काफी हो। यदि कोई वहम करें तो दरिया में गिरे दे ।

चन्द्र खन्ना नं. 12

[एते के समय चढ़ तूफ़न से न्तर्यां उचालने वाला दरण]

छोड़ी याद मैंजित दुःख उजाई ।

गया जल बिका उर्में तेह ही क्या या ॥

सुलतान घोड़ पिरदर्म!, इकबाल या शाहाना ।

है याद करके ऐता², पर उजड़े ही विधन ।

मेदान³ पानी चलता, तीर्थ या जो हुआ ।

आबाद करके दुनिया, खुद भर्क जा हुआ ।

तेव जाति सुद चन्द्र अपना, पांच भेठ ९-२ हो ।

सुप रवि पर तीने बैठ, तारे शंग कुत्ता भर उत्त चै ।

सूष साथी या भसर पापी का, नाला गंदा बरसाती हो ।

दूष माया भर दोतत जलता, नरक चन्द्र खुद पानी हो ।

तल्ल भात जब टेवे पाती, कर्म पर्म जर घरता हो ।

दीप मनर जब १२ करती, उजड़ी खेती भर जलता हो ।

पानी^{1xx} पर पानी बरसता रहा [नं. ४ वाला पर]

निकाने^{2xxx} बेचाए तरसता रहा । [सुप देग भर]

६४

1. यह युप शुक्र या पानी नं. 2-12 में हो ।
2. 12-24-35-46-59-71-83-97-105-111 साला आये ।
3. खाना नं. 5-7-9 भेदान, नं. 2 निकाल या भद्रा, नं. 10-11 स्फावट के पहाड़, नं. 4 चरमा, नं. 5 लुन्द्र, नं. 3 गुण्टान का पानी, नं. 6 पानाल या पानी कुआ, नं. 8 आवाई या भेदान, नं. 7 यहा खेती की जा रही हो । इन्हें का भाष्य का फैला [नेक छात ये भी लिखें]
4. नं. 2 ग्रह के अनुग्रह
 - मान घन
 - अग्नि घने वाले सतान
 - उजारक उदय रहने की आयु दररण गुजरान भूत काल के कर्म घन
 - यहाँ के लिए हुए बड़पन ।
5. 4-17-20-40-55-68-80-90-101-116 साला आये ।

इस्त रेखा::

चन्द्र रेखा हवेली पर खाना नं. 12 युनै ने समाप्त हो ।

**नेक हात :**

1. नीम बूढ़ी से पानी टपकता रहा । माता बूढ़ी का पानी भटकता रहा पानी पर पानी बरसता रहा । विकास, बेचाह तरहता रहा ।
 - x मंगल बेठा होने वाले घर का हात
 - xx केतु बेठा होने वाले घर का हात
 - xxx युप बेठा होने वाले घर का हात
 - xxxx चन्द्र खुद का खाना नं. 4 जो पानी [लुन्द्र] का ही है पानी पर पानी और बरसता होगा ।
2. चन्द्र खाना नं. 12 में बेठा हो और उसी उन्द्र भगत, केतु युप 12 घरों में जिस किसी घर में बेठे हो वहाँ द्वा इत होगा । चन्द्र का स्वयं अपना खाना नं. 4, चन्द्र का घर नं. 4 वाले घर में बेठे हुए ग्रह पर पानी पढ़ता होगा । सुद मंगल नं. 4 जो अमूमन मंगल बद या मंगलीक हुआ करता है उब आग से जला देने की जगह ठंडा भर देगा । भर केतु जो नं. 4 के समय कूएं में पिरे कुत्ते की भांति तड़पा करता है अब और भी वर्षा में भीगते हुए कुत्ते की तरह दंदा होगा । इसी तरह ही युप नं. 4 का चन्द्र नं. 12 के समय माता खानदान पर और भी दंदा छात होता होगा । [इसी तरह बच्ची उहों का अब नं. 4 में बेठे हुओं का प्रभाव लेंगे]

खाना नं. मंगल बेठा होने वाले घर का हात

1. राजदरबार में जहर के बदले शहद निलता होगा ।
2. समुहल के घन का दीरा फालतू होकर बरेर रोके उसके घर में आता होगा और रोकने से भी न ल्केगा ।
3. भाई युप पानी की जगह दूप की नहरों में नहाते होंगे ।
4. बड़े भाई तापा या भाता का बड़ा भाई या भाने का बड़ा भाई बेशक उप्र में लम्बे हो या न हो मर जब तक होने कभी दुखी न होंगे ।
5. उसकी ओताद के छोड़े लगें [रुद्र से शहर या गोव होंगे] ।
6. जिस रिश्तेदार से उसकी लझियों का लझके या भाता खानदान के नाते होंगे वहाँ घन का दीरा रहने लगेगा ।
7. गृहस्थी इतनी अच्छी कि पानी मंथे तो दूप मिले ।
8. मरना है तो मरें मगर गत, सङ्कर, दुर्घटना से नहीं ।

- 9 बड़ी के पर घाट में जायदाद जट्ठी में दृश्य की नईतां होंगी । उस स्थिति चाहे शहर से बाहर निकल जाने का इन्हम ही चुना हो ।
- 10 गिर पर चाहे कितनी मुसीबतें आये दिल का दररिया कभी न रुक़ा थोर वह कभी दुखी न होगा ।
- 11 गुनहगार होते हुए भी संसार के जज उन बंगुनाह ही कहेंगे ।
- 12 दृश्य में शहद की जीवन रात को हर तरह का आएन दिल को शर्त देंगी ।
- खाना नं. केतु नेत्र होने वाले घर का हाल

- 1 जिस पर मैं कदम रखा कच्छरी से पकड़ने के खाट आने से ।
- 2 समुंहल में गये तो अपनी जूती गुम या चोरी हो जाने के अलावा उनको भी नांगे पाव कर दिया ।
- 3 स्थिति तो संतान से दुखी थे ही मगर भाई भी धाँधे रहे हों ।
- 4 नलायकों की भौलाद खानदानी सभूत देगी नालायकी में ।
- 5 बेटा जो भी होगा याप बन कर ही दिखाए [मर्दे बद्दे में]
- 6 उसके रिश्तेदार चाहे उसको सुख न देने मगर सुद लुंबायां शायद ही हो ।
- 7 अपने ही घर का कुत्ता वा अपनी संतान स्त्री आदि जनन पर पेशाव करने की बजाए उस पर पेशाव करें ।
- 8 लड़के अचानक गुम होये हो या मरते हो [बत्ताएं बद से]
- 9 मामा खानदान ना हक मंदी अण्डियों से उड़ रहे हो ।
- 10 उत्ते जाती जाती आंधी अपना ही पर उड़ा ले जाएगी
- 11 इंसाफ चाल चलन का शिष्य होगा यानि मामूली सातच [रिश्वत भाई मिलने] पर इंसाफ की गिरटी उझ देखा और भूत के उहाइक सामान प्रेमिका, सुन्दर बद स्त्री की दोषी सी बूझने पर घाल चलन ढीता कर देखा ।
- 12 कमाई बहुत लायों की मगर गिनते शून्य ही हो ।
- खाना नं. दृश्य नेत्र होने वाले घर का हाल

- 1 उर्जदरबार भंदा उजड़ा हुआ प्रभाव देखा ।
- 2 समुंहल खानदान उजड़े बिकानेर विणन के दृश्य लेगा ।
- 3 भाई बन्धु के बाजू कटे हुए ।
- 4 माता खानदान में मातमी ही रहेगी ।
- 5 संतान मर्दे पानी में वह रही होगी [च. की बिमारियां दिल या आंख के टेले की बिमारियां] ।
- 6 लड़कियां जिस जगह विवाही हो वह चिल्ता रहे हो ।
- 7 गृहस्थ हालत [स्त्री जाति] मंदी रेत में जल रही हो ।
- 8 लम्बे खर्च की बिमारियों का कोई अंदाज बाकी न रहा हो ।
- 9 बड़ों की उजड़ी जायदाद को रोते रोते आँखों का पानी उमान्त हो या हो ।
- 10 पहाड़ों के बरबर सुन्दर मकान रात को सोए अचानक उज़इकर ऐन्त्तान हो जाए ।
- 11 बंगुनाह होते हुए भी दूसरे की फांसी अपने भले आ लाए ।
- 12 जिस का सहाय सेने की सोची यह पहले ही आगे भासता नजर आया ।

1. यर्ष का पानी सहायक होगा । घुप रहना और पिछड़े रहना त्वयं ही तराही का कारण होये ।
2. घन्द्र का जानदार धीरों का फल अच्छा घुप विषयान बुद्धिमान और विद्या में उत्तम होगा ।
3. अपने घन में खानदान को तारने वाला होगा । सूर्य नुप नं. 3
4. च. अब मामूली घनी की जगह उत्तम दृश्य की तरह माया घन बृ. जल्तम और सूर्य उत्तम । देगा ।

मंदी हालत :

1. मूँह चन्द्र एत यो बाढ़ लात और वर्जन्तयां उजाड़ने वाला : चन्द्र मन्दी बढ़ते के पानी ये भय दरिया होगा जिससे खेती जलती तथा उजड़ती होगी या दृं कहें कि माता-पिता या दिव्या सब कुछ उजड़ जाए मगर अपना कमाया न उजड़े या मां बाप जो उसके नाम कर दें वह उनकी वरवारी का कारण बन जाए।
2. संसार में कोई दुखी नहीं होता चाहता मगर चन्द्र नं. 12 स्वयं आग की जगह पानी से जलता और दृश्ये को जलाता जाएगा।
3. एत की नींद और दिन नित्य कर्म ही मुख की होगी। चन्द्र की बेजान चीजों का प्रभाव क्षमूलन मंदा होगा। पानी बादत से भरकर जलट, रेता भेदानों भरता हो। उजाड़ खेती जारी राग्य, अर्फाम खाए ते मूष्यह वह। दूप धन जर पानी देता, नक्क चन्द्र धन छालता हो। कर्म धर्म चंडाली सापा, मान इज्जत कुत फुकता हो।
4. गंदा वरवारी नाला होगा हर तरह से दुष्ट हाल खासकर जब चन्द्र नं. 1 में आवे स्नुरुत का जायदाद फुके और स्वयं की भी न छोड़ता हो। पर्म कर्म दोतत की वरवारी टेवे के अनुसार गृ. की सहायता या शृ. के उपाय वर्क की तरह काम में आने याला तथा सहायक होगा। खाना नं. 12 का चन्द्र नं. 1 में आने के समय यहाँ 12-24-35-46-59-71-82-97-106-111 साला आयु में खेती को उजाड़ने वाला पानी होगा जिससे घर पाट सब बरबाद होंगे और अपने जन्म वाले घर आने के समय यहाँ खाना नं. 12 का चन्द्र वर्पंत में 12 में बाने पर वह सब भै देगा जो कि चन्द्र नं. 12 में लिखे हैं। खाना नं. 2 का चन्द्र जाद्यद जद्दी के सम्बन्ध में एक ऐसा दुरिया जो दिन प्रतीदिन ज़ंजार बातों के लिए खेती की जगह छोड़ता जावे और अपना ज़न्जा पीछे या किसी और तरफ करता रहे, जिससे कि आवादी बातों को बाढ़ समय लाभ ही हो मगर चन्द्र नं. 12 का दुरिया का पानी आवाद घरे को उजाड़ता और खेती की जर्मान क्ये वहाँ से जात्य और हर तरफ यद्य पायी और रेत आदि भरता जाएँ। जिसके प्रभाव से टेवे वाला अपने जन्म के बाद चन्द्र के समय से अपनी खासकर जब चन्द्र नं. 12 नं. 1 में आवे या जब नं. 2 का चन्द्र नं. 12 में ही आये तो वहाँ की जायदाद ज्ञान का अपने जन्म से पहरे और बाद का मुकाबला करके देखता हुआ इस पहेली का उत्तर कि अब क्या है और पहले क्या था केवल अंसुखे से ही देख, मुंह से बोलेगा कुछ नहीं।
5. दिग्माणी खाना नं. 35 राहु से मुश्तरका समय गुजरने पर मर्द पञ्चाए या मुजरती हुई घड़ी से बारे आने वाली घड़ी कोई ऐसी सम्भी न होगी। अङ्ग-अङ्ग जन्म गुजरेगा हाल आगे कुछ न कुछ मंदा या हल्का ही होता जाएगा। आता है याद मुझको गुजर हुआ जमाना, या उचाव में ही देखा या हो ये दीवाना। मुल्तान बाद पिदरम् इकबात या शाहाना, तकसीर उनकी आजम या हो या बहाना। है याद करके रोता, घर उजड़े हो वीराना, जाहिल बना वही, जो या माहिरे जमाना।
6. टेवे वाला अब यह कहता होगा मुझे गुजर समय याद आता है, शायद स्वाव में ही देखा या क्षे ही दीवाना [पामल] हो गए। भैया बाप बादशाह या और जन्म का [शान] बादशाहों, का कसूर उनका बहुत बड़ा हो या या या भैये ही कोई बहाना हुआ जिससे कि वह अब समय की याद करके रोता है। पर उजड़ कर रीएन [जंगल, बीएन बियाबन हो ये हैं] और वह स्वयं नालायक बन रहा है जो कि सारे ज़ंजार को जानता था।
7. निर्धन दुखिया। आपी आयु तक से दूबने का ढर ही होगा। भंगत नं. 1 सूर्य नं. 2 ऊपर की सब मंदी हालतों की आखरी हर रंदी आयु का 48वां साल होगा जिसके बाद चन्द्र नं. 12 की जगह नं. 3 का फल देगा।
8. स्वयं या अपनी स्त्री या दोनों एक आंख से काना रोगे। सूर्य नं. 6

९. जो चाह भी बाप अपन घेटे [जातक] के नाम लगा देगा, नोड्डी^१ वर के जताई, विकर्णा वजह कोई भी हो या हो जाव। जव २-६-१२ में बुध शुक्र या पार्श्व हों।

शक्ति पानी, जिसका का रंग याफ न हो, मत पिए

शुक्र

बदी खुफक्या तू जिन से दिन रहत करता।
यक्त मन्दा वही तंर तिर पर पहता।

एष पर्दा इशक खुदाई अकेला उप नहीं होता हो। पाप न्तत का खून गृहस्थी, मिट्टी माया का पुतला हो।
मर्द टेवे में स्त्री बनता, स्त्री टेवे खुद मर्द हो तो। ढी^२ जवानी इशक में अन्या, बूढ़े^३ नर्सीहते करता हो।
रंव दृष्टि शनि पे करता, उप शुक्र का होता हो। शनि रंव से पहते बेठा, नर्त^४ ग्रह स्त्री उन्या है।
नजर शुक्र में जब शनि आता, माया दीगर खा जाता हो। दृष्टि शुक्र पे जब शनि करता, मदद ग्रह सब करता हो।
शुक्र बेठा जब बुध से पहले, असर रहू का मंदा हो। उप पहतो से शुक्र निलते, केतु मला खुद होता हो।
छुर्दे^५ दोनों का साय जो घेटे, असर दोनों ना मिलता हो। शुक्र चंतक है आंख शनि का, तरक चारों ही देखता जो।
चांट शान हो जब कही खाता, अन्या^६ शुक्र खुद होता हो। घर ५वें फारेवार बच्चों का, नीच छठे खुद होता हो।
कहर सायी ग्रह ७वें देणा, जलती मिट्टी घर ८ का हो। जहर नन्त बद ९वें बनता, घर्मी शनि घर १०वें हो।
चरमा दौलत जर ॥। उल्ता, तारे १२ भव सामर जो। काम रेख घर पहते बेठा, मला गृहस्थी दूजे हो।
भाई मरद पर तेरे होगा, जोड़ा औरत दो चौये हो।

१. रहू केतु मुश्तरका [मर्जूई शुक्र]
२. खाना नं. १ से ६
३. खाना नं. ७ से १२
४. जिस घर को शुक्र देखता हो वहाँ का ग्रह मंद समय वर्ष फल के समय शुक्र मंदा।
५. तिथाय सूर्य।
६. शुक्र घर को शनु सू., चन्द्र. रहू बुध का शनु चन्द्र।
७. जिस घर शनि हो शुक्र में वही असर दृष्टि भी उस घर की ओर होगी मर दृष्टि की छल पिछड़ी तरफ खुद शुक्र की अपनी होगी।

वाम हातत :

१. शुक्र के ग्रह [बुर्जी] को संसारिक भाग से कोई संबंध नहीं। रिंक प्यार मुहम्मत की फालतू दो से एक ही अंख हो पाने की शक्ति शुक्र कहलाती है। सब ओर से बिगड़ी या सब की बिगड़ी बनाने वाला सब कुछ दला दला शुक्र होगा।
२. स्त्री संबंध गृहस्थ आश्रम बाल बच्चों की बरकत और बड़े परिवार का २५ साला समय शुक्र समय होगा इस ग्रह में पाप करने करने की नस्ता। खुद रहू केतु मुश्तरका बनावटी शुक्र। कां खून और गृहस्थी हातत में मिट्टी और माया का बजूद है।
३. मर्द के टेवे में शुक्र से अर्थ स्त्री और स्त्री के टेवे में उस क्ष पीति अर्थ होगा। अकेला बेव शुक्र टेवे खते पर कभी तुप्रभाव न देगा और न ही ऐसे टेवे याला गृहस्थी संबंध में किसी दूरे का नुप कर सकेगा।

शुक्र से बुध का ताल्लुक :

जब दृष्टि के हिसाब से [दर्जा दृष्टि २५-५०-१०० प्रतिशत हो]। आमने सामने के घरों में भेठे हो तो चमकती हुई चांदनी रहत में चक्के चक्की की तरह अकेले अकेले होने का प्रभाव नीचे की तरह होगा।

1. अगर बुध कुण्डली में 1-2-3 वाली तरतीव हर 12 तक शुक्र से पहले देखा हो तो इस तरह से दोनों के मिले हुए असर में केतु यीं नंद नायत का उत्तम प्रभाव शामिल होगा लेकिन अगर शुक्र कुण्डली में बुध से पहले देखे हों तो इस तरह मिले हुए दोनों के असर में राहु की वृहि नायत का असर शामिल होगा।
2. द्वृष्टि वाले देखे में बेठा होने के समय शुक्र का प्रभाव प्रबल होगा लेकिन जब बुध पहले देखे का हो द्वारा मंदा होवे तो शुक्र बुध का मंदा असर शामिल हो जायेगा जिसे शुक्र नहीं एक सकता तथा गृहस्थ में मंदी परिष्कार होगे।
3. [थ] जब अफेले थकेवे बन्द बुद्धी के खाने [4-7-10] से बाहर हर एक दूसरे से भवें बैठे हो जैन शुक्र नं.2 और बुध नं.8, शुक्र नं.3 और बुध नं.9, शुक्र नं.6 और बुध नं.12, शुक्र नं.8 और बुध नं.2 में हो तो दोनों की ग्रहों और चारों का मंदा फल होगा।
- [ब] मगर शुक्र नं.12 और बुध नं.6 में दोनों का उच्च फल होना जिसमें केतु का उत्तम फल शुद्धित होगा ऐसी हालत में यानि अपने से छातवें बैठे होने के समय दोनों का असर बाहर न मिल सकेगा।
4. जब दोनों ग्रह युदा-युदा मगर आपस में द्वृष्टि के खानों की शर्त से बाहर हो तो जिस घर में शुक्र हो वहाँ बुध अपना असर अपनी खाली नारी के द्वारा लाकर मिला देगा। और शुक्र के फल को कई बार बुरे से भ्रष्ट कर देख लेकिन अगर बुध के साथ शुक्र के शनु ग्रह [सू.चं.ए.] हो तो ऐसी हालत में शुक्र कभी भी बुध को ऐसी नारी लगाकर बचना बरत [शुक्र] अपने में मिलाने नहीं देगा। यानि ऐसी हालत में बुध किसी तरह भी शनु को रद्दी निकाला या बत्ताद नहीं कर सकता।

शुक्र ग्रहों से संबंध

सूर्य और शनि आपण में शनु है यदि एक साथ इक्कठे बैठे हो तो टेवे वाले पर बुह बरत नहीं होता जोड़ घटा बरहर होती रहा करती है लेकिन जब शनि के साथ शुक्र बैठे का कोई भी ग्रह देखे तो शनि देखने वाले उह को जड़ से मार देगा। यदि टेवे में सूरज और शनि का सगड़ा हो तो शुक्र माझ जायेगा। सूर्य जब शनि को देखे तो शनि की बरबादी होने की जगह शुक्र का फल बरबाद होगा। लेकिन यदि शनि देखे सूर्य को तो शुक्र आवाद या उस का फल उत्तम होगा। बरहात यदि शुक्र के साथ [साथी या द्वृष्टि के ढंग पर] जब शनु ग्रह हो तो शुक्र और शनु ग्रह सब की ही चाँचे, रिस्तेदार या कारोबार से संबंधित [शुक्र या शनु ग्रह] पर हर तरफ से उड़ती हुई मिट्टी पड़ती और किस्मत मंदी का समय होगा।

शुक्र से यहु का संबंध

शुक्र गाय और यहु हाथी इन दोनों का आपसी संबंध कहा तक अच्छा फल दे सकता है।

1. जब कभी कभी द्वृष्टि द्वारा दोनों मिल रहे हों, शुक्र का फल बरबाद होगा। लस्ती और स्त्री दोनों ही बरबाद चैल्क आयु तक बरबाद और समाप्त होते।
2. दो बाहम शनु ग्रह सभी दीवार वाले घर में बैठे हुए युदा युदा ही रहा करते हैं लेकिन अगर शुक्र लप्ने शनु ग्रहों के घर देखा हो और यहु सभी दीवार वाले घर में आ बैठे तो शुक्र का वही मंदा हाल होगा जो कि शुक्र के साथ ही इक्कठे यहु बैठ जाने या द्वृष्टि मिलने पर मंदा हो सकता है।
3. जन्म कुण्डली में शुक्र असर अपने शनु ग्रहों को देख रहा हो तो जब कभी वर्ष फल के हिसाब शुक्र मंदा हो या भ्रदे घरों में जा बैठे तो वह दुर्मन ग्रह जिनको कि शुक्र जन्म कुण्डली में देख रहा या शुक्र के बरत को विस्तृत और मंदा करें चाहे यहाँ शुक्र को देख भी न सकते हो। ऐसे टेवे याता जिससे खुफिया बद्दी किया करता या अब वही [जन चीजें, रिस्तेदार या कारोबार राह्यकृत उन दुर्मन ग्रहों जिनको शुक्र ने जन्म कुण्डली में देखा या के संबंधों में] दुरक्षी और बरबादी का सबक होगा।

शुक्र यो दो रंग मिट्टी

- खाना नं. 1 उटती जयानी में ऐश्वर्य व इश्क की सहरे से निर्दिष्टी यो पुजना में अंगा हाना । काय रेखा या मछ रेखा, इक तरपा छयात का स्वार्मा तख्त के मालिक रंजना मगर इक हृषी गुलाम पर मर मिटी
- खाना नं. 2 उत्तम गृहस्थ हर तरह ये सिवाए बच्चे बनाने के अपनी ही धूवगूर्ती और स्वभाव के आप मालिक खुदपरत्ती स्कूल मिस्टररह दर एक ही प्रिय स्त्री, मगर वह स्वयं किसी को फँद न करे ।
- खाना नं. 3 गाय यो जगह बेल या काय दे ऐसा वर्णशा दे कि ऐसे टेवे वाले पर कोई न कोई स्त्री मर ही जाय करती है (स्त्री मर्द यो हिम्मतयारी)
- खाना नं. 4 एक जगह दो स्त्री या दो पुरुष मगर पुरुष स्त्री दानों ही ऐसा दो गाय या दो बेल कि बच्चा दोनों से न ज्ञाने ।
- खाना नं. 5 बच्चों भए परिवार या ऐसे बच्चों को पेटा करने वाला जो उसे बाप न कह या न कह सके ।
- खाना नं. 6 न पुरुष न स्त्री खुसह मर्द यांझ स्त्री घन भी तल्ली भी ऐसी जिच का कोई मूल्य कोई न दें ।
- खाना नं. 7 सिर्फ सार्यों का असर जो और जैसे उब बेसे हम । दुड़ापे में उपदेश दें ।
- खाना नं. 8 जर्ली मिट्टी और हर सुख से नाशुकरगुजार उत्तम तो भवसागर से पार कर दे ।
- खाना नं. 9 शुक्र को स्वयं अपनी बीमारी के द्वारा घन हानि ननर घर में ऐश्वर्य को निकाल कर ले जावे । अगर मर्द हो तो ऐसा कि वह किरी न किसी दूसरी स्त्री को अपने प्यार में रखा ही करता है ।
- खाना नं. 10 शनि स्वयं यदि स्त्री हो तो ऐसी जो पुरुष को निकाल कर ले जावे । अगर मर्द हो तो ऐसा कि वह किरी न निकल जावे ।
- खाना नं. 11 लट्टु की तरह शूम जाने याली हालत । मगर बचपन की भोग भ्रम्य की भोती भाली स्वभाव की मूर्त और रिजिक के चरमें का निकलना ।
- खाना नं. 12 भव सागर से पार करने याली याय । यानि स्त्री लरन्नी जिचकी सुद अपनी चेहरत के संबंध में सारी ही अपु रेत निकल जावे ।

शुक्र खाना नं. 1

[कान ! तथा : मन्त्र रेखा यो रंग विरंगी याय]

यदि धर्म दुनिया न स्त्री में निकला ।

कोई लेख विद्याता मंदा न लिखता ॥ ॥



बच्चिक दोनों का शुक्र देखो, शनि ननर का भालिक हो स्त्री रिजिक से पहले आवे, शनि उत्तम जब अपने घर शुक्र मर्द से मरती भाली, बुध सूर्य न होता हो सुप्र मंदा सतान हो मंदी, गृहस्थ मंदा रवि करता हो पर्व हालत 8 हो बुरू जैल, उच्च शनि मछ रेखा हो बात पहले घर जन्म सारी रवि आया या पापी हो ऐश्वर्य इश्क चाहे लूटे लेख लिखित न मंदी हो ।

1. अगर शनि मंदा हो या खाना नं. 7-10 याली न हो और उनमें रिर्फ़-पापी या नुप न हो तो कान रेखा न होगी ।
2. यदि शनि उत्तम या खाना नं. 7-10 याली या उनमें रिर्फ़ [यह केन्द्र शनि] पापी और नुप हो तो मछ रेखा होगी ।

असर दोनों का यक्षा लेते, शनि¹ नं. 1 प्रवत हो । शादी ननर जब 25 होवे, दौलत रहे न स्त्री घर । सात दूसे घर भंगत 12, शूरी सदी पूत पोता हो । शनि दुर्द मर्दे होये सारी, तीनों मर्दे सब मरता हो । तीन के छठे नुप हो जब भैरव, क्षेत्र रेखा सिर होता हो । शमार इश्क 2 स्त्री² पकड़ी, दम दिकी तब खासी हो । घर सातवां दस याली होते, मछ रेखा बन जाती हो ।

3. दो स्त्रियों में पूर्ण ही समय बच्चे बनाने पर।

हस्त रेखा :

शुक्र के वुर्ज पर अंगृहि दो जड़ में सूर्य का गिराव हो। शुक्र से शाखा सूर्य के बुर्ज को हो। शुक्र का पतंग पूर्ण हो।

शुक्र नं. 1 नेक हालत :

1. पर्महान हो जाय तो बेशक इश्क में मजहब का फर्क समझे या न समझे मगर उमका राजदरवार कर्मी भंडा न होगा। शुक्र अप्रभाव के लिए एक थोर चात या स्यांना होगा यानि जिहे पर कृपा दृष्टि उप के लिए प्राप्त तक न्यायावर कर दे। जिसे के विष्ट उमर्जी मिट्टी तक उड़ा बार रख दे। शुभ हो तो माझे रेखा यानि सब सुख औलाद काँद र्याद अगुप हो तो काँद रेखा यानि शुक्र रिंफ एक ही आव ऐ देखता या काना होगा। हर पर में शनि की हालत उच्चका। [शुक्र की] नजर होगी। फिर भी सराह का सुख और चोपाया का आएग साय होगा।

2. पर्म भी नेक तथा बद हालत का फेरहता दाना नं. 8 के गुहों और वृ. की हालत पर होगा।

3. दिमारी द्याना नं. 1 इश्कबारी और शनि से मुश्तरका इश्क जवानी 16 से 36 की आयु में उठती जवानी के समय स्त्री जाति का परस्ती। [कर्मी पर्म पत्नी से अर्थ नहीं] की सुन्दरता की रंग बिरंगी दिल को अच्छी तरफे धार्ता कहानी के ऊचे पल बांध दिये और खुदस्तरी जाति पनढ़ और कामदंव की आग में जलते हुए उकड़े गील चलते मध्य रोये हुए निकल गये। जिस की बजह से दिल और दिमाग पर कावू ही न रहा और आखिर पर स्त्रों की खातिर ईमान भी बिकने लगा।

कथाओं : शुक्र का पतंग सूर्य के बुर्ज पर केवल अनामिका की जड़ में।

4. स्त्री का प्रभाव [चंतान तथा काएगा] को धांडा हल्का सा खण्ड करे मध्य से घृणा नहीं। इस रेखा के प्रभाव से मनुष्य पर्महान, स्त्रियों के पांछे भूमने याता होना, शुक्र बाहर से आशिकाना मगर अन्दर से सूक्ष्मायना फूट देगा। स्वभाव फिर भी फटे पर दूने की तरह [कूटी] होगी, स्त्री या स्यास्यय भंडा होगा स्यंठक होगा अपने भाग्य के लंबंय में भाग्यान होगा अपनी तथा बच्चों की हालत जाहीरक शुभ होगी अपने कार्यों के लिए दूसरे से सलाह लेन्गे ठीक होगा।

1. स्त्री अपनी कम्हई शुल्ह होने से पहले घर जाएगी जो घर की शनि जन्म कुण्ठती में अपनी घर में उत्तम हो। यातिक और घर तरह से रज करेगी।

2. आयु पूरी 100 वर्ष पुत्र देखेगा।

प.न. 6-7-12

3. मह रेखा क्य उत्तम प्रभाव विष्णु भगवान की तरह दूसरे को पालने वाला चाहे घन के आने में भाष्य के पहाइ दम के दम में खड़े होते होने लेकिन जब तक घर में नौकरीनी न हो भाष्य के पहाइ पर चरने की जगह कम ही होगी। यानि घन की थेली चाहे दिन को भरती हो मध्य शाम को खाती ही देखी जाती होगी।

शनि उच्च का हो य सन्धि नं. 7-10 खाली हो इन घरों में हहु केतु वृश्च शनि हो तो 7-10 खाली ही समझा जायेगा अपर नं. 6 से 12 में न हो तो 7-10 खाली होते हुए काव रेखा होगी यानि हहु केतु हो 4-10 नं. में और वृश्च य शनि हो न. 7 मंडल भी 6 से 12 में हो। जब वृश्च 3-6 में उच्च हो।

4. सिर की श्रेष्ठ रेखा उत्तम दिमारी हालत मुकदमों का फेरहता टेव याते के हक में होगा, चन्द्र का प्रभव अमूमन बुरा न होगा।

शुक्र नं. 1 भन्दी हालत :

शनि शुक्र घर पहले बैठे, काग रेखा कहलाती है।

यातिक चाहे हो तज्ज्ञ हजारी मिट्टी कर दिखलती है।

1. जयनी इश्कबारी घर का नन्धरायी [मोहरीयन्, मुखियावन्, रस्ते दिखाने वाला] न सिर्फ अपनी चत्क उच्चरियों की भी तचाही का यहाना होगा।

2. शुक्र भंडा हो माता छोटी उम्र में चल दे, या मरने से भी अधिक दुखिया अब तक माता स्त्री से दूर रहे, दुखी न हो लेकिन जब दोनों इस्तेजी हो दोनों में से एक अन्धी ही लेरे मध्य सूर्य कभी बुरा न होगा।

७।

3. याग रेता खाए कर उस के 25वें शाल शार्दी के समय न धन
न स्त्री निवा रहे । जब खाना नं. 8-10 खाली न हो ।
4. स्त्री की पागलपन वाली हालत बीमार गृहस्थ जलतां निट्टी के
समान जननदारी की पर्णी हुई खेती में आग लगी हुई की तरह
गृहस्थी हालत स्त्री के टेंय में पुरुष की ओर से तत्ताक मिलते हैं
शर्दी सन्दर्भ द्वालत चांदी स्त्री वो सुन्हात ऐं मिलते हों खाना
खावादी । जब गृह नं. 7 हो ।
5. संतान मंदी हो । युध मंदा हो [शुक्र का पतंग हो सिर्फ कर्मिका की जड़ पर ।
6. गृहस्थ मंद ठांगा । सूर्य मंदा हो [शुक्र की पतंग अनामिका की जड़ तक] ।
7. साथी रिश्तेदार मदे संबंध देंगे शुक्र खाना नं. 10 का फल देखा
उसकी स्त्री ऐशोहसरत में सदाबहार फूल, स्त्री को आम तौर पर
मासिक धन के बाद स्वस्थ मिलते हैं लेकिन ऐसे ग्रह वाली स्त्री
मासिक धन के बिना संतान को शक्ति से भरपूर और ऐसे फूल
की तरह प्रिय होगी जोकि इत्यु के बिना हर समय अपनी बहार
दे रहा हो । उस में सुन्दरता प्यार की लगन और शोह माया
पूरे किनारे तक भय हो । स्वयं ऐशो पढ़ा होगा ।
8. हर और मोते ही मोते नजर आयेगी पूर्ण शुक्र का पतंग होगा
न सिर्फ दुद बरवाद बल्कि दूधरे सार्यों को भी बरवाद करने
के शास्य का मासिक होगा । शु., सू., श. रीत्विनो मदे
कथाप्प : शुक्र का पतंग युध के नुर्ज से चलकर के
शनि के नुर्ज तक पूर्ण हो ।
9. इश्क का परवाना या दमा तपेदिक या बुखार के समय स्त्री
भोग या किसी दूसरी स्त्री संबंध से विगड़ा बुखार हो योग्यता
जो की दुहक सहायक होती है । सररों बहुत मिलते हुए अन्न
कम से कम सात अनाज या चरी का दान शुभ । पुरुष कन्या-
दान स्त्री योदान करें तो शुभ होगा । 1-7 में शनु उह च., ई., सू. हो और दुप्ति
युध नं. 3। मंदा हो सूर्य नं. 7 ये शुक्र का साथ सही हो
10. पर्याई मनवा गले लगी रहे नहीं तो सात शाल बीमार या आपा
मुर्दा तो बवश्य होगा । स्वस्थ कोड़ी-कोड़ी करके हार देखा ।
मर्ज बदता गया ज्यों ज्यों दवा की । साथी ग्रह के संबंधित
रिश्तेदार के साथ से स्वयं शुक्र और संबंधित साथी दोनों तंत्र होते
रुपाय : दिल पर काढ़ इश्क पर काढ़ किस्सत की मंदी चाल बदत देती । दूचरे की स्त्रीह सहायक होती ।

शुक्र खाना नं. 2

। योह माया का उत्तम गृहस्थ सिर्फ मासिक से मांकना ही लेरी कर्ये पूरी कर देव ।

बने माया तेरी पशु जो मिट्टी ।

तू फिर मांकता च्छु सोने की छड़ी ।

ग़ुड घाट जब कुटिया उसकी, केतु गुरु युध उत्तम हो माया पन स्वयं मस्तक चतती, शहशाही पर आत्म हो ।

५२

शर दण्डना² हो पर उग या, बाद करें या शान का
आठ खाली 9-12 मंद, स्त्री घन अव मंदा हो
बरयाद स्त्री वाजाई करती, पाप गृह पर बेटा हो
8 छं ग्रह 2-10 जागे, अगुर श्वन 9 देता हो
टेपे शान हो 9 जव बेटा, अगुर शुक्र 2 देता हो

- वार्षा 5 बचनं याला मकान या ऐणा मकान जिसका अगला हिस्सा तंग थेर पिछ्ला चोड़ा हो।
- वार्षा तीन बचने याला मकान या ऐणा मकान जिसका अगला हिस्सा चोड़ा, पिछ्ला तंग हो।

हस्त रेखा :

अकेली शुक्र रेखा वृ. के बुर्ज पर स्थित हो। प्यार रेखा संतान रेखा, विवाह रेखा को काट। भाइयों की रेखा लम्बी और टेढ़ी वृ. को हो। दिल रेखा का सिर्फ उतना ही हिस्सा जो कि वृ. के बुर्ज के बन्दर हो प्यार रेखा के नाम से या होगा।

नेक हातत :

मिन्त कश गैर हर्पेज न हांग बुदा का ही अमूमन अहसान होगा

जूती साधु वह विल्कुल न हांग, गृहस्त्री न हो, चाहे गुरु जगत हो, कर्भी द्वार्ता घन व वह बच्चों चे हांग, कल आठ आठ जोर घन का होगा। अपना त्रिक पन थेर अमुमन की धर्म अमस्या सदा नेक होगे दुर्निवारी तथा बुद्धाई दोनों की प्यार व स्यामी।

क्याम्प : प्यार रेखा, वृ. के बुर्ज में शुक्र का लेटा हुआ खत

2. राशी नं. 2 में कोई भी ग्रह नीच नहीं होता वल्कि इस पर का मातिक शुक्र [निर्देशी या स्त्री ह] जो पहाड़ पर सफेद झड़े लटपाए हुए जो लड़ाई से नुक़ह करा लेते ह। हर एक बीज की रसा करता ह। शुक्र जी इस अच्छाई के लिए उसे लक्ष्य अवतार माना ह। इसी नीच पर शुक्र नं. 2 के समय अपनी गृहस्य स्त्री का संबंध नेक थेर उत्तम होगा।

3. दिमागी खाना नं. 2 वृ. से उत्तरका शादी की इच्छा मगर 37 से 70/72 साला बूढ़ी स्त्री की तरह उत्तरकृत [प्यार से पहले क समय] और प्यार के बाद का गुलबा या रिवाये प्यार वह कामदेव की शक्ति के बक्की देने सार्थे व्याप्तिक यानि शूष्क व बहुत अधिक हाजरा कम के करते करते थर ही भर दिया स्त्री रिवाये औलाद बनाने के बक्की सब से उत्तम होगी। जान जानदारों का उत्तम हात होगा। चाहे बामारी के झाझड़े का कोई हिसाब न हो म्सर त्रिक कभी खराब न होगा। वल्कि दिन दुगना रात चौमुना हिचाब होगा या ग्राम या शुक्र की देवी अब गुरु स्थान और अपने अस्त्री संचर में ग़ढ़ बाट में अप ठीक स्थान तथा आगम करने की जगह [ए. के बनावटी शुक्र की देवी] पर होगी। जिस से बत्त बच्चों की बरकत शादियों के नेक नीतें। गृहस्त्री सुख की दृष्टि और शुक्र का अरती नेक फल होगा। जाती कमर्द शुरू करने के दिन 2 कम से कम 60 साल तो पन [शनि] आयेगा। उसकी बाहर की चात सूफियों की सी [वृ. जैरी] मगर बन्दर की प्या [शुक्र] भरी होगी यानि सी चूहे खाकर बिल्ली हज को गई यानि बगुत्ता भक्त होगा। उसके लिए शुर्द्द करना अपने लिए हुए हुआ। चात चरन ग्र रंभासना हर नेक नीति यी नीच होगा। बहरहाल ग्रुषी तथा शुमु दरे रहें।

4. गृहस्य सदा भला ही होगा।

शनि अब टेवे में कही भी हो वह शुक्र के लिए शनि नं. 9 का दिया शुभ फल देवा चाहे शनि अपना बेट होने वाले पर का फल खराब ही नहीं न हो।

5. गृहस्यत केतु और शुप का उत्तम फल होगा और शनि का फल भी शुभ ही होगा। पन व उत्तम भाग्य अपने भाग्य प होगा। पर चार रुजाओं वी भ्रति होगा।



6. जब उसका पर गड़ पाट थगला हिस्सा तंग पिछला खुला हुआ गड़ वीं शक्ति का हाल तो बार्फी पाय बचने चाहे मकान
भाग्य याता होगा ।
7. अपने भाई तथा लड़के का भाग्य तथा दूसरे संघर्ष का हाल युक्त [वृ. 1] को हालत पर निम्न करेगा ।
8. भाई बन्दों की बरकत और संसारिक सहायता होगी ।
9. प्यार में दर्जा कमान और कामयाद प्यार [प्रेगी] करने याता होगा वृद्धस्पति नं. 2 मध्य नष्ट
10. शुक्र स्वयं जागता और शनि स्वयं अपना नं. 9 का प्रभाव देगा शनि खाना नं. 2-9
- तेकिन यदि शनि हो ही खाना नं. 9 में तो शुक्र का दो गुण नेक प्रभाव होगा । हर दो इश्क हक्की की ओर संजाहि में कामयाद स्वयं कमाई शुल्क करने के दिन से 60 साल कमाई का समय होगा । पशुओं तथा कच्ची मिट्टी के कामों से लिंग संतान बढ़ता होगा ।

मंदी हालत [शुक्र खाना नं. 2]

शेर दहाना हो घर उसका, काम करे या साने का ग्रहण बद्य जब हो कभी टेवा, निर्दी होवे फल किस्मत का ।

1. 3 बचने याता मकान अगला हिस्सा खुला पिछला तंग ।
2. टेवे में ग्रहण लगा हो : सूर्य-राहु सूर्य ग्रहण, चन्द्र-केतु चन्द्र ग्रहण ।

स्त्री के टेवे में शुक्र नं. 2 का वर्य उस का मर्द संतान पैदा न कर सके, मर्द के टेवे में शुक्र नं. 2 से वर्य उसकी बांझ स्त्री होनी यानि उस में कामदेव की शक्ति [बुध का गुण] तो होगी मगर संतान पैदा करने की शक्ति कम होगी कामदेव शुक्र वीर्य मल्ल है ।

चाहे अपनी संतान का तकाला । मगर किर भी दूसरे का लड़का बिना गोद लिये अपना लड़का बन बैठे ।

नं. 2 में पापी या तिर्क पाप का साय हो ।

क्षम्भ : शुक्र के नुर्ज पर भाईयों की रेखा की उड़ नुर्ज नं. 2 को देखते-देखते सम्बन्ध खत रेखायें ।

खाना नं. 9-12 में हो ।

जब वृ. के संखे 5-2-9-12 में यह केतु हो ।

3. स्त्री दुष्किया करें चाहे कमाई का योग कितना ही हो ।

4. पीतीहीन स्त्री की बतौर फर्ज निम्नेदारी और प्रेमिका आयाद या बाजारी स्त्री बरचादी का बहाना होगी । वीर्य का कतरा आवाह गिरता ही शुक्र की निर्दी के कप बना कर उड़ा देगा ।

खाना नं. 8 खाती

5. स्त्री पुरुष स्वयं बच्चा न बना सकें न उसके कानित होंगे मगर सुन्दर अच्छा साफ सूयरे रहने याते होंगे । घन घटे हर ओर मंदी हाल स्त्री बांझ ।

खाना नं. 8 खाती

6. संतान शादी में गड़बड़ । स्वयं कमाई करने के योग याती स्त्री संतान को जन्म देने और गृहस्थी योग में मंदा ही फल देगी । मगर नेक ठीक चले तो जीवन आहम से भय होगा ।

वृ. 8-9-10 में हो [चंतन रेखा विवाह रेखा को आ करें ।

उपाय : ऐसे प्राणी स्त्री चाहे पुरुष के खून या वीर्य में कभी उंतान की बीमारियां हो मगर ऐश्वर्य की नस्ती में पुरुष चाहे स्त्री शायद ही कभी कभी या स्त्री होगी इसलिए खून में संतान पैदा करने की दर्याईयां [शुरुक के ढोर पर] जिनमें मंत्र की दीने शामिल हो अगर आयश्यकता पड़े तो सुरायक होगी ।

94

शुक्र खाना नं. 3

वुग मूँ जो इन्जत तू औरत की करता ।
बंज पर है तेर जो स्यं भर्द बनता ॥



केतु¹ भले पर्तप्रता थोरत, चोरी भी न होती हो
युप मंदा पर ॥ भेट, शुक्र मंदा पर चलता हो
भिन्न मंगल 7 दूजे भेटा, आठ मंदा न चलता हो

गुरु जहर 9 भंदा स्यम्प्रथ, शनि रेखा 9 पितृ हो ।
महल चारी चाहे पर्यं ऊचे, नींद 34 न सुख्ख्या हो ।
लक्कार लेटी खुद शुक्र संता, पर छड़ भव सावर हो ।

1. शुक्र नं. 3 यासे पर स्त्री मरती है। होती है भगर स्यं यी स्त्री गाय की जगह नेत और शेर स्यमाय। शुक्रार तंग करने वाली होगी भगर हास्ते की कर्मा यासी होगी। उर्ध स्त्री भी लाभ देवेगी।

इत्त रेखा :

गृहस्य रेखा मंगल नेक से शुक्र के बुर्ज में अग्रे की जड़ में शुक्र जावे। घन रेखा शुक्र के बुर्ज से शुरू होकर मंगल नेक पर समाप्त हो।

नेक हालत :

1. चाहे वह मनुष्य हर एक स्त्री का प्याए होगा इशक का परवाना भगर उसके स्वयं के लिए अपनी स्त्री का मान करना शुक्र नेक की नीव होगी। अब शुक्र गाय की जगह बेल की हैसियत का होगा यानि अपनी स्वयं की स्त्री मामूली हैसियत होने की बजाय टेवे याते के साथ भाई की तरह का पुल्प हिम्मत सहायक होगी। ऐसी स्त्री चाहे दूर्घट के लिए भयानक पशु शेर जैसी। हो भगर अपने भर्द के लिए कायर या सुशाम्बद फसंद ही होगी जिससे बेठे मृत्यु का देवता और चोरी और सभी घटनाओं रो बचाय दोता रहेगा। दिमागी खाना नं. 3 मंगल से मुश्तरका प्यार या माता पिता के प्यार का स्वामी होगा। । । से 15 साल आगे का प्यार या माता पिता का प्यार अगर पफड़े ही गये तो प्यार से क्यूँ घृणा और सामने आती हुई याती पर इंकार न होगी, के स्यमाय का स्वामी होगा। पर्हई और नुरी स्त्री और नुरे पुल्प भी सभी फायदा दोर सहायता देते।

संक्षेप में : शुक्र नं. 3 यासे पर कोई न कोई स्त्री मोहित ही होती है उदाहरणतया ऐसे प्राणी सड़क के किनारे जा रहा था पीछे से आवाज आयी कि ए मुसाफिर भी भी तो तेरी साधन हूँ। कुछ दिन हुए विवाह क्या शुभ मुहूर्त मन्त्रया या आर म फिर भी आप को ढूंढ रह थी। भगर वह कांपती आवाज में उत्तर दे कि भैरी स्त्री तो हन्दे शर है। यातो यातो में वह स्त्री उसके भर्दे चिपट ही गयी जिस से वह शुक्र में ही रहा कि असल स्त्री कौन है, कहाँ है बड़ीर उच्चली हाँ में हाँ मिलाता सुमय मुजरदा आये चला गया। ऐसी मनदूरन गतियों के कारण टेवे याते को अपनी लंबी से दब कर ही रहना पड़ेगा।

2. स्त्रियों की अमूमन इस पर में कद्र होगी और स्त्री स्वयं पर्तिज्ञता केतु उत्तम हो।

होगी जिस के दम तक कभी चोरी न होगी।

3. उत्तम पितृ रेखा का लम्बा प्रभाव होगा अर्थात् मृता पिता का शनि नं. 9

4. मिट्टी की लक्की की तरह बहुत कम हालत की मिट्टी की बेजान चीजे भी चोती हुई सीता पर्तिज्ञता की तरह उत्तम फल देगी। शुक्र भव चन्द्र का भी उत्तम फल देगा। मुफ्त की रोटी या गुजार आजानी से होता होगा। 20 साल तीर्थ यात्रा का शुभ उत्तम फल होगा पितृ रेखा का फल उत्तम लम्बा समय तक फल होगा।

क्याका : गृहस्य रेखा बुर्ज नं. 3 से चलकर बुर्ज नं. 7 पर समाप्त हो या घन रेखा शुक्र के बुर्ज 7 से शुरू होकर मं. के बुर्ज नं. 3 में समाप्त हो।

मित्र ग्रह युप श., केतु का मंगल नं. 2-7 यदि युप नेक भी हो।

5. निर्दी पी छातत में भी ताताब का मिट्टी ऐरा निर्दी होगा जो पर्याप्तों के पेट की बीमारियां दूर करने के लिए उसके हाथ में ही हुई शुभ होगी। शुक्र अब वृ. और सूर्य से भी उत्तम फल देगा। वृ., के. अब चन्द्र का असर शुक्र में पदा होने पर शुक्र से शुभता न दोरेगा। खाना नं. 8 के बुरे ग्रह का बंदा प्रभाव भी नेक करके मोत का गुण तोड़ देगा।
6. शुक्र का अव खाना नं. 9-11 में उस के मित्र शुक्र पर बुध प्रभाव न होगा। अपने घानदानी मर्दी पर शुभ प्रभाव होगा। हर तरह से प्रसन्नता होगी उत्तरदायित्व पूर्ण करके निश्चिन्त हो।

मन्दी हस्तर :

1. खुद शुक्र का विषेश प्रभाव और बंदा स्वास्थ्य चर्त्तक साई कुल ही की मर्दी सेहत दौर दुर्खिया हर ओर बीमारी जहनत। वृ. नं. 9
2. शुक्र स्त्यं वरवाद होगा 34 साल आयु तक चाहे लाख कितने ही धन महस्त गाड़िया हो सुख की नीद नहीं न होगी। धन हर रोज घटता ही जायेगा। बुध नं. 11।
3. अव 9, 11 के ग्रह वरवाद न होमें चर्त्तक वहां शुक्र गहो के बक्त खुद शुक्र वरवाद होगा। खाना नं. 9-11 के ग्रह।
4. लाखोंपति होता हुआ भी अपने पेट के लिए अनाज की कीमत के बएवर मैहनत किये बगेर रोटी न पायेगा। शुक्र म. बद का संबंध [उंगलियों की पोरीयों पर तेटे खत]।
5. शुक्र नं. 3 का बंदा ब्सर सिर्फ धन पर होगा औरत का हात इसके टेवे बाले के बन्ने लिए बर्ताव के संबंध में उम्दा न होगा गुरु। 16 से। चन्द्र। 24। बुध। 34। साल उम्र तक के भाग्य का असर बंदा हो सझकियो। [बुध] स्त्रियो। [शुक्र] का बंदा हात और शाई बंपुओं के हाथों से धन हड्डी आम होगी। सझकियों के हाथों और संबंध में धन वरवाद होगा अपने बनाये मकानों का सुख ना होगा ना ही पिता। [वृ.] की जापदाद या उसका [पिता का] सोना ये जातक के लिए काम आयेगा। पिता की तरफ से बुध की चीजें। [तस्वीरि किताबों की लापड़ेरी।] संरीत के द्वामान जो बुलन्द आवाज से दूरहों के कान फाइ दे अमृतन बाकी नितेगे।

शुक्र खाना नं. 4

नुस्ख यार अपना इरक औरतों का चश्म पोशी करते भी लानत ही देय।



96

साय टेंये न ग्रह जाँदे थाके, सात दृढ़ भी छालते हो
नशा उगाड़े सात शाने ऐं चन्द्र फर्जीय रेखा हो
शान मदा बुप एड़ मंदा, भला शुक्र न चन्द्र हो
बुप स्वभाव साय शान का, लेप स्त्री गुल चरती हो

ओलाद कर्मी की अजव कहानी, निरासी दो बेटी हो ।
बेठा कोई ग्रह 2-7 टेंये, एक स्त्री ही जीवित हो ।
मुख केतु भी चलते उल्टा, लेव स्त्री शुक्र मंदा हो ।
पारी भेठे बुप मंगल एजा, ओलाद कल्पना हटती हो ।

1. पहरती ही स्त्री ऐं यदि मर्द पुरी तरह दो बार शारी कर ले तो शुक्र की दो स्त्री होने की शर्त न रहेगी । संतान जल्दी होगी
मार अब स्त्री की एहत खायपर गमांध बरवाद होती हो । ऐसे समय गंगत की चाँजे याम काहेवार रिश्तेदार जो मंगत ऐं
एर्पण्ट हो ऐं शुक्र की मदद मिलेगी पर की सबसे पुरानी ददर्ताज मंदे समय सहायक होगी ।

हस्त रेखा :

फकीरी रेखा, नशा रेखा शहफत रेखा संदां लकार लेटी हुई जो चन्द्र शुक्र को निलावे ।

नेक हालत :

जर्मान पर सफर एदा होता रहेगा जो नेक हालत और उत्तम परिणाम देगा । शारी के चार सात बाद खूब आएग मिले
चाम लगाने का भोका मिले उसके भाष्य की कलम व्. के हाय होगी, जप तक व्. से शान का संबंध न हो । जर्मान कुम्ह की जाति
स्वभाव के असूल पर बुप की हालत से फेलता होगा । फिर भी मर्द की लिए उस की स्त्री की भाष्य की सहायता सह्य न होगी
मगर वह स्वयं ऐश करेगी । दिनांक खाना नं. 4 चन्द्र से मुश्तरका [देत्ती] या मुलाकात की झंड्य, ऐव पर्दा खूबी पर नजर
ठालने की शक्ति, उत्तफल, प्यार और प्यार के बाद का गलवा प्यार के तीन हिस्तों का स्वामी जहां दिल और आँख मिलाते
जान्दा । एक चारपाई पर दो अंतिम या एक अंतिम के लिए दो चारपाईयां जर्मा होगी मगर आएग करने की जवह या निवाड़
सदा भीगी ही रहेगी या उब होते हुए माया बरवाद, संतान की कर्मी होगी । ऐसे समय चन्द्र का उपाय सहायता देखा घरना कुंए में
व्. की चीजों को गिराना सहायक होगा । चिक्की तालाब छत पर लगाए ।

स्त्रियां एक ही समय में दो जीवित होगी एक दूड़ी मां की तरह खाना नं. 2-7 खाती और शुक्र किंवदि दूसरे सा साथी ग्रह
बड़ी आपु की । दूसरी ऐसी आएग की मालिक हरफनमाला समय न ही रहा हो ।
की बेम होगी । मगर संतान की फिर भी कर्मी होगी या निःसंतान होगी ।

शुक्र चौथे जब पानी आया, स्त्री हुआ विहम

एक से दो भी हुए पर बुझी न उचकी आय ।

कर्मी हालत :

पत्थर¹ भी रेत² हो गये अगर तो रेत उड़ता होगा औरत की हो आजादी [बदनाश], बुप केतु मंदा होगा ।

1. श्वने

2. बुप

- इर धर में शुक्र से संबंध से यह साफ होग कि सुन्दरता जवानी के बाजार में बिकने लगी । जिसके तबादले में जबाब होग कि
चोटी कर लेने की जगह किंवदि को चोर न कहना ना सिर्फ उसके दिली खून को जोश देता चल्क जान लेने का हमला करने
के बहर देश ।
- बंद कुंओं या कुंए पर इत डाक्कर मकान बनाने पर पूरी लापलदी का सबूत होगा । प्यार मुहम्मल तुरे अर्द्धे में बरवादी के
तिए दीमक से कम न होगी । ऐसे पर पर्दा खूबी पर नजर डालना सहायक होगा । मकान की इत की अच्छी हालत स्त्री
की सेहत में सहायता देगी । शुक्र और चन्द्र जब दोनों ही मंदे हो तो आदू की गिट्टक में हुम्ह मरकर बाहर दबाना सहायक
होगा । 22-24-25-32-34-47-51-60 साल अपु में शारी वशुभ होगी ।
- नुस्खान [जब शुक्र अकेला हो और खाना नं. 2-7 खाती हो] अपना इसक औरतों का, चरमपोशी करने व लानत ही देगा ।

4. स्त्री का माय अच्छा या बुश वृ. दो हालत पर होगा चर्चात् श. शनि वृ. साय न हो वृ. साय न हो ।
5. नरों गुं बरवाद होगा । दूये वीं चाँपे और काम बहाना होंगे शनि का साय
[शुक्र और चन्द्र का नितान वाली नज़ा की फकीरी रखा]
6. फकीरी रखा बद्धत नियन्त हाय तंग मगर भगवान की मदर जल्ल चन्द्र का साय ।
होंगी त्वा उत्तम ।
7. प्यार तबाही का कारण होगा और उतान की कर्मी होगी । शनि मंदा ।
8. शुक्र और चन्द्र की लक्ष्य नूह सास का झगड़ा हर मामू वृ. नं. ।
बरवाद और सहन हालत की नींवं स्वयं चन्द्र पर होगी
9. शुक्र मंदा फल देगा लड़किया बरवादी का कारण होगी । उस वृप नं. 6 जब चन्द्र मंदा हो ।
की स्त्री वर खानदान के लिए मंदा यशुम होगी ।
10. उतान की कर्मी दूर होंगी शुक्र सामा नं. 5
भंगल वृप बल्कि पार्श्व शुहों के कोई भी अपने दूसरे दोष
के अनुग्रानं । मैं जावे या शुक्र का साथी हो जावे ।

शुक्र सामा नं. 5

[बच्चों से भय परिवार ।]

जमाना की माताएं भ्रत जो तेरी ।

नसल तेरे बच्चों की तुम्हें कोन देखी ।

आग जली न मिट्टी उड़े, उड़ेगी जिस दम वो जो उड़े¹ पहले ७वें अन्या काना हो ।
देत्त शुक्र ग्रह कायम होते, पार माया भव सागर हो शनु मगर ७ पहले बढ़े, पतंग फटा भर शुक्र हो ।
कायम ग्रह नर शुक्र देखे, माया दौतल सब बदला हो १२ बजे भर शुक्र मंद, बैठ भला चाहे ३-४ हो ।
दृष्टि शुक्र न जन कोई करता, चोर शुक्र स्वयं होता हो एक अकेला न कोई मंदा, छत भया ही आया हो ।
सेवा गठ और चन्द्र होते, उतान सोना घर भरता हो चलन मंदे बच्चे बाहर बनते, अब नली जौड़ी भरता हो ।

1. जो ग्रह खाना नं. । या ९ में हो उस ग्रह की संबंधित रिश्तेदार रिवाएं सूर्य नं. । और वृ. नं. 9

हस्त रेखा :

स्वास्थ्य रेखा या सूर्य की तरफकी रेखा शुक्र से चलकर वृप पर समाप्त होवे ।

नेक हालत :

बच्चों के परिवार से भरी हुई स्त्री जिस के बढ़े [या शुक्र की चाँपे कायम होते] लिंग कभी बंद नहीं ।

- दिनांगी खाना नं. ५ ऐस तथा परिवार के प्यार वाला और देश मर्जित का परवाना हो अमर सूफी तो भवत्तामर से पार यदि लालिक दुनिया हुआ तो वृक्ष में अड़ी कटी पतंग की तरह का भाग्य होगा चर्चक एक को क्या रहते रहां तो कनीता ही मंदा हो यद्य होगा । एक आदमी कुत्ता निल्ती पाली आदमी ने मकान बदला तो कुत्ते ने मालिक को न छोड़ा निल्ती पिछते मकान की तरफ भागी ।
- सूफी पर्मत्या होगा और भवत्तामर से पार करने वाले गज माला भिन्न ग्रह सूर्य, वृप इने के कायम हो ।
की तरह उत्तम लक्ष्मी और कुल को तरने वाली स्त्री होगी ।



3. माया धन बद्दता देश पर्वतार के प्यार या चाहने वाला तया शुभ होगा । नर ग्रह कायम या शाय सार्वी ।
 4. नं. १-९ ग्रह से संवर्यत रिश्तेदार शुक्र ये धन की वरकत पायेंगे या टेवे वाले यो उष्ण ग्रह के संवर्यित कारणार दोलत की वरकत देगे । बुध या शार्दी नं. १-७
 5. हर तरह की वरकत होगी सूर्य नं. १ मंगल नं. ३
 6. तेरे घास धनन है ही तेरे भाग्य या खम्भकर माली हालत का भेद शुल जायेगा मगर स्त्री और संतान पर फिर भी मंदा प्रभाव न होगा ।
- मन्त्री हालत :**
1. अपना मंदा चाल चलन शनि करवाता रहता रहे । मंदा भाग्य मंदे चाल चलन का सबूत देगा । शुक्र कम ही मंदा होगा । जब शुक्र मंदा हो या मंदा कर लिया जावे । अब संतान पर कभी बुध असर न होगा यानि संतान जल्द होगी अगर होगा तो खाना नं. १-९ के ग्रह नियाए नूर्य नं. १ या दृ. ९ का संवर्यित रिश्तेदार जैसे राहु {जनुहल} मंगल {चड़ा भाई ताज} आदि ग्रंथा या काना या उष्ण ग्रह से संवर्यत कारणार वरदादी का कारण होगे ।
 2. खाना नं. १२ जलता होगा । चाहे खाना नं. ४ अच्छा ही हो । टेवे वाले पर मंदा प्रभाव न होगा मगर सार्वियो पर शुक्र अब पृथक में फंसी हुई पतंग की तरह लिपटा हुआ भाग्य की हानि देखता रहा होगा । चन्द्र उसे ढोर का काम देगा । इश्क संसर्किक कामयाद होगा देश प्रेमी होगा । दुर्मन ग्रह सूर्य चन्द्र ग्रह नं. १-७
 3. शुक्र {स्त्री या शुक्र से संवर्यित कारणार खुद चोर हो, और चोरी में गम्य माल शायद ही वापस हो} और ऐसे टेवे वाले की स्त्री ही देती न होगी बल्कि वहां तो आवा ही जत गया । उब एक जैसे होगे जो भी न हो सकने वाली कही जत्य हो । दिन को ज्ञान धूत को इश्क स्नान । धर्म तिर्फ एक धोके का ही पर्दा बनाया गया है के विचार का आदमी होगा । शुक्र की दृष्टि में कोई भी ग्रह न हो ।
 4. आशिकी प्रेम के नतीने की हुई शादी या माता पिता के विद्रोह किया हुआ पियाह, सोन्दर्य की बजह से की शादी हो तो ऐसे प्राणी की औलाद उसे शाप न कहेगी या शाप न मानेगी । औलाद बाद के काम ना आएगी ।
 5. चन्द्र का मंद असर अब शुक्र पर हो चन्द्र जब शुक्र के पतंग की ढोर का काम देगा मगर अब उपाय भी चन्द्र का ही मददगार होगा । चन्द्र मंदा हो ।
 6. शम्भु ग्रहो का अब शुक्र पर या शुक्र के फत पर कोई मंदा असर न होगा । शाप नैठे हुए शम्भु ग्रह ।

7. मठ और माता की गया करने और साफ पर्यव्र दिल रहने से
पर बार दिन में धन दोलत भी वरकत होगी और चाल चलन
बरवाद में जेव बच्चे बाहर बनने थोर बनाने लगे तो मर्द औरत
की जांड़ी दुखां और जल कर बरवाद होगी ।

उच्चाय : ऐदृत के उच्चाय में शुक्र वीं जगह पर चाहे मर्द चाहे और दही से धोते रहना शुक्र को उड़ी हुई मिट्टी
[पुरुनयार्पा अफवाह] ये भवाय हांगा वर्लिक शुक्र की स्थान [लिंग, योनि] क्षम्भ साफ रखते हुए गृहस्त्री पर्वतार भाल समान से
माया के आने पान वीं नाली भी साफ गिरी जापी ।

शुक्र खण्ड नं. 6

| ज्ञान से रसी तो दोलत के महत वरला नीच दोलत (कुलस्मी) |

ज्ञानी तू न मर बच्चे भुलाता ।

बुद्धामा न दुनिया में तुझको स्ताता ।



ज्ञानहरदाई और मान उत्तम, असर गिना घर दो का हो
गुरु एवि कोई 6-2 भेठे, शुक्र रेखा मध्य होता है
एज संबंध वंशक नीचे, साय धन का होता हो
सात छेते पर शमु घेठे, केतु सायी गुरु 12 जो
बुध मंद हो येहत मंदी, शनि बुरे जर पटता हो
शुक्र शहरत पाप हो करता, मंगल नर्ताजा देता हो
शुक्र बुह ना खुद कभी होगा, असर बुह हम साया हो

आठ मंदा दो साय जो निलता, शुक्र देता फल 12 हो ।
साय शनि या मंजत होते, हीय लिंग जर चश्मा हो ।
लड़का गर उस पर कोई जन्म, जाल 12 न दूजा हो ।
एवि गुरु चाहे चन्द्र निलते अरर उपी का मंदा हो ।
केतु हुआ मंद दुर्जन देही, सांस स्त्री या खुरह हो ।
जन्म मंदा ग्रह तत्त्व पर आता जहर टेवा सब धोता हो ।
भला जन्म ग्रह जद कभी मंदा, जाह दृष्टि जर माया हो ।

शुक्र का पतंग कामदेव रेखा :

यह रेखा पतंग या [दिल रेखा जो बुध और शनि को निलाये] धन की रहनुमाई या भाई बंदो पर संयम या नम्बरदाई ज्ञाहिर करती है ऐसा व्यक्ति धर्महीन होने के अलावा स्त्री जाति की प्रशंसा के प्रति बनाने और जुनानी याद से समय मुजाले का आदि होगा । और दूर बढ़ी जबान की तरह इसके याद करता होगा । स्वत्स्य अच्छा जबान और बांधों की ज्ञक्ति सलामत हो । स्त्री जाति तथा अपनी स्त्री के आनदान के संबंध नेक होगा । भगव तूर्प की किरणे इस शुक्र के दरबार में भैदा सा रंग दिखाती है । यानि यह उत्तरकार के घर से पेसा कमाने वाला सीधा चंद्रं न रखता होगा भगव एजदरबार वाली की कमाई से अपना काहेवार लगाये बिना नहीं रह सकता इतना जल्द है कि वह अपने साय चलने वालों को कई बार खयब कर देता है [शुक्र नीच का फल होगा] और गृहस्त्री के कामों में बुह प्रभाव होता है व्यूक्ति शुक्र और तूर्प आपस में नित्र नहीं है । इस रेखा का उस के स्वयं पर कोई बुह अरर न होगा । टूट फूट से दिमारी कमजोरी; दीवानी और बुध के तुर्ज से शनि तक की पूरी लम्बाई की छालत में उसे के विचारे में पशुता और भैशानी हुआ करती है ऐसे प्राणी [शुक्र नं. 6] की स्त्री उदाचहार और खुद ऐसी पूर्व होगा । स्त्री के टेवे में शुक्र नं. 6 के टेवे यही यात उल्ट कहेंगे । उसकी स्त्री को जमीन पर नये पाय नहीं बलन् घाहिए अच्छा तो है कि जुहब आदि ढाते ताकि तलवा फर्श से ना चुए । गाय भैल धन दोलत की चोरी या गुम हो जाना निशानी होगी । वृ. संस्कृदमा आदि सूर्य शनि और गुस्सा नीच छालत की निशानी है । दिल रेखा के सही होते हुए यदि चन्द्र कामम होते हुए शुक्र का असर कभी बुह न होगा । भगव चन्द्रोदय बुह प्रभाव देये शुक्र जब कभी भी चाना नं. । में स्वयं नीच हो उससे मंगल वर का अकल गुम हुई तो भाग्य ने हार नहीं दी । लल्लू करे कौलियां रम्ब सद निंगा पावे यानि रेजी अकल के हिसान से होती तो नादान या बेयूफ से तंय ऐजी वाला और कोई न होता यदि शुक्र का नीच हो जाना अपने तिए मंदा नहीं होता यदि इस ग्रह का दुनिया से रुबंध रहेना, न होना यिशेष फर्क नहीं । दुनिया का आशिक न होगा तो दुनिया का त्यागी जल्द होगा । विहग से

100

नहीं चर्चक अकल की कर्मा गुण । यद्यपि रेखा में कृपा न करने की आदत, स्वभाव का बदल जाने वाला होगा :

नीच हस्त :

शुक्र नं.6 गर्हों की मदद थोर उनको उपया पेणा खिलायगा । शुक्र के उल्ट कर्द काम करेगा । दूसरे घर का फायदा न पायगा । स्त्री परस्ती या स्त्री मूर्य न होगा । यांखी आयु में आए होगा जिसके लिए चन्द्र का उपाय सहायक हो । जब यह रेखा शुक्र की पतंग मिर्क बुप के बुर्ज नं.7 दर्शनम्‌का की जड़ पर ही हो तो शुक्र नं.7 होगा और नूर के बुर्ज नं.1 पर अनामिया की जड़ ही में हो तो शुक्र द्याना नहीं । का होगा और जब शुक्र या पतंग मिर्क मध्यमा की जड़ में ही हो तो शुक्र द्याना नं.10 का फल देगा । जिसके लिए शुक्र नं.10 का हाल देखे ।

हस्त रेखा :

संहत रेखा या मूर्य की तरफी रेखा जब शुक्र से चलकर हथेती की बड़ा आपत खाना नं.6 में उभास्त होवे शुक्र पर यह का निशान हो ।

नेक हस्त :

तल्तु करे कौलियां रव लिर्यां पावे

तड़के उस घर से डो कुड़ाया पल्ले पावे ।

त्वयं अपना लिखा हुआ उत्तम तो संचारक शान उत्तम होगी अर्खिरी आयु में आएन के लिए चन्द्र का उपाय सहायक । दिमागी खाना नं.6 केतु से मुश्तरका दिलचस्पी या पक्का प्यार हर काम के लिए तेपार या लगा रहने वाला काम पूर्ण किये जिना न छोड़ने का आदी । मगर आपय का ऐसा चक्कर की इंतजार करते करते समय निकल गया और अंत क्वन की रात और आशा का फल निकल्या ही मिला । संतान के लिए नीच फल याकी बही फल जो शुक्र नं.2 का है ।

1. शुक्र नं.12 का उत्तम फल होगा उग्दरकार का संबंध चाहे नीचा ।

जब नं.8-2 का मंदा प्रभाव शान्ति होये या नं.2-8 में शुक्र के शुभ सू. चं., य. ग्रह उपस्थित हो या ये से ही नं.2-8 मंदे हो ।

2. शुक्र कभी दुष्क न होगा ।

जब तक चन्द्र कायम हो ।

3. उत्तम जीवन मगर शुक्र का जाती प्रभाव यह केतु की हालत पर होगा ।

मगत साथ चाही ।

4. मच्छ रेखा चाहे अपनी या अपने पिता की

सूर्य या नू. नं.2-6 या नं.12 में कोई ग्रह अवश्य हो ।

5. दूर धनयान होगा । शुक्र कीनती ही है मगर संतान नालायक ही होगी । भाई बच्चे और गृहस्ती साधियों की बरकत और सहायता चर्चिक भच्छ रेखा चाहे पिता की तरफ से यानि 7 भाई 3 बहने या भच्छ रेखा जाती तरफ से 7 तड़के 3 लझकियां

सूर्य या नू. या दोनों नं.6-2 साथ चाही ।

6. शुक्र नं.6 याते पुरुष/स्त्री को अच्छा होगा कि वह ऐसे पुरुष/स्त्री से शादी करवाये जो अकेली बहन/अकेला भाई न हो अर्थ है कि शुक्र नं.6 विर्क उस समय ही मंदा होगा जब मंगल [भाई बच्चे] की तरफ से वह अकेला ही हो ।

7. शुक्र के मित्र ग्रह [शनि, नूप, लक्ष्मी] पहले त्वयं मंदे अतर का सदूत देने या शुक्र के शुभ ग्रह [सूर्य, नू. चन्द्र ग्रह] अपनी मंदी या दुरी हालत जाहिर करें जिस के आने की पहली निशानी [मकान, मरीन] द्यने [बहन युजा लड़की] दुष संतान या शारीरिक जोड़ कान, रीढ़ की हड्डी आदि [केतु] से शुरू होगी जिसकी सहायता में टेढे बाते की जड़दी मकान की तह जमीन में नूप से संबंधित चीजें [गुमनाम दंद हालत भोज या तह खाना, तह जमीन के अन्दर दीकारों का अपनी बनावट के अन्दर ऐसे उपाये मगर खुद बनाए पोत या चुनून बड़े-बड़े बर्तन गोल शक्त के चाहे फिटी या घनू के दो] नूप की चीजें या झनी के

] ० ।

मामान हो। औद कर, कद ए बड़ बक्कु लोट का सुफ आई, तह जमान में दबे हुए। फिरला युप वी हालत तथा युप को शान दी भद्र दी गंगत पर हागा। यहू केनु शहरत की भवय पहले उबर देगे और मंगल आईरा परजाम बना देगा यानि शुभ का अग्र उग्र गुहायक सार्या साय वाले गहों से फेरला पर पहुंचें।

मन्त्र हालत :

१. शुभ और उग्रा यादों नानो बरबाद मंदे चांदी ठाई पर में रखनी युप। नं. ६-७ में कोई भी सार्या सिवाए मंगल वृहस्पति युप।
 २. शुभ थव मंदा अग्र दगा। थोलाद हर तरफ से मंदी पिता बचपन में चल दे थोल स्त्री का फल। [सतान आदि] २८ चाला यापु के याद उत्तन। नं. २ यादी या यूप नं. ६ और नं. २ खाती
 ३. स्त्री जिस तरह शान से रखी धन के महत बने बला नीच धन होगा कुलस्त्री होगी। युप नं. ५ मंदा
 ४. यादा नं. ३-४-७+९ के गहों का मंदा हाल होगा। युप नं. १ में आ जाने पर सब कुछ आ जायगा। नं. १० का ग्रह भद्र देगा। युप नं. ५ मंदा।
 ५. चब ही गहों का फल मंदा होगा चाहे सूर्य चन्द्र व्. सूर्य की सहायता हो जावे। केनु लंबा और व्. नं. १२
 ६. पहर्ती स्त्री मर जाये। यहू के समय तक शशुओं से कष्ट हवे। यहू नं. २
 ७. चंद्र मंदी होगी और हर्षिया दिये हुए सब ही खाना नंबरों का प्रभाय मंदा घल्क बरबाद कर देगा भगर ऐसी हालत में नं. १ का ग्रह सहायता देश या खुद युप नं. १ में आने के समय से चब कुछ किर से हो जायेगा। युप नं. ५ और व्. नं. ११ व्याय, बामदर्मी, नं. १२ एत का सुख।
 ८. शुक्र का फल मंदा होगा नर संतान की कमी होगी। युप नं. ४
 ९. धन दालत प्रतिदिन छटा जायेगा। शुने मंदा।
 १०. गंदी नाली औरत बांस या मर्द खुलग होगा नर संतान न होगी या दुखी रहेगा अगर होगी तो लझकियों के टोकरे भरे होवे भक्त की चाहे कमी हो भगर रिजक की कमी न होगी। त्याही होगा। पराई और मंदी स्त्रियां बरबादी का ऐसे ही गते पहने की तरह बहाने बनें। केनु मंदा या साय सारी नं. ६
 ११. शुक्र नं. ६ याते पुल्प या स्त्री से नर संतान पेदा करने के संक्षय कोई दीनाही ना होगी अगर होगा तो उसकी युन्न अंग की जिल्ड में नुस्ख होगा और वह भी फालतु कीड़े पेदा होवें। बालकर नर संतान पेदा करने के सवाल को भूले हुए स्वप्न में भी याद ना लाया जावे।
- उपाय : संतान की मंदी हालत - पेदा न होना या होकर मर जाना या उझकिया ही उझकिया पेदा हो, के समय ऐसे प्राणी मर्द चाहे स्त्री युन्न अंगों की सफाई के लिए मंगल की चीजें जिल्ड कीड़े मर जाते ही प्रयोग करे छान्दर की सलाह लेकर ऐसी धौने [साल दर्याई या ढाँक का उबला रस फिरी और दर्याईयों में मिलाकर] धौने के लिए बनाया पानी इस्तेमाल करे जिस का रंग मंगत का रंग हो, तो।

102

12. शरीरी नम्बरदारी ऐ सब का मृग्य ताताव ने भी देखा देगा याए कर जब स्त्री के लिए मुहुर् या प्रशंसा या इश्क में कर्जी पुल बनाते हों ।
13. नर सतान जब भी हो दृश्य बच्चा 12 साल बाद ही हो ।
14. पन बरबाद शुक्र का हर तरफ ऐ मंदा फल ही होगा मंद सुनय की शहरत पहले पार्सी ग्रहों द्वारा ही होंगी और नर्ताजा मंगल की हालत पर ही होगा । पार्सी ग्रहों के द्वारा का अर्थ है कि पार्सी ग्रहों की चीजें काहंवार संबंधी आदि ।
15. जन्म कुण्डली का मंदा ग्रह जब नं. 1 में आयेगा टेवे के सारे विष को घो देगा । शुक्र स्वयं भी दुष्ट न होगा । साय वाले ग्रह का दुष्ट प्रभाव होगा । स्त्री का नं. 1 पर फिरना पर के तलवे का घरती पर लक्षण संतान की कर्मी देगा शुक्र नं. 6 का फैसला वृष्य की हालत [दुय को शनि की उहायता या शक्ति] पर होगा स्त्री के सिर पर बालों में चांना रखना धन और लक्ष्मी की वृद्धि में सहायक होगा पेशाव ग्रह को दही से घोंटे रहना उत्तम होगा । शादी के समय अगर माता पिता होने वाले जवाई या बहू जिसका शुक्र नं. 6 में हो को खालिस जाने के दो टुकड़े संकल्प कर दे तो सारी आपु वह सतान के संबंध में रहायक होंगे ।
16. जो काम करें मंदा परिणाम । अपल खएव होंगी दृ. ग. च. तीनों ही का फल मंदा या तीनों ग्रह सुन्त होने या तीनों ही ग्रहों ऐ रुक्षित चीजों का चोई पायदा याद या सहाय न होगा
- खाना नं. 7 में शुक्र के साय शशु ग्रह या कोई भी बाह्य शशु लड़ रहे हो ।
कथाप्त : शुक्र का मुर्ज नीच हो ।

शुक्र खाना नं. 7

Free by AstroStudents

| जैसा यह ऐसी वह सत्यी का प्रभाव अकेला नेक ।

ऐवज पर घटेग्रता अपनी जो भूली,
जली माया भर की यह क्या नार (आग) ते ली ।

- सफर मुजर हो उचकी सम्बी, रिजक तिलक परदेही हो नक्स फौरन हो¹ रानी करती, उन्दा होता जब ग्रह कोई हो चत पहले 9-11। वैयी माया दौलत सब बढ़ती हो । शनि प्रवें पर ॥ १. रेत, सामान आएम कुल दुनिया हो 4 रवि और चन्द्र पहले, साय शनि भी रेठा हो भीलाद केतु और शनि गृहस्थी, हालत राहु मुप माती हो 4 दूले बुध नेकी करता, आठ रवि बुध मंदा हो । 1. नं. 1 या ग्रह या जब शुक्र खाना नं. 1 में या जो सारी ग्रह की तात्त्वी और शनि की आओ की चाल होंगी यदि शनि की एक आंख भी साचित हो जाये तो शुक्र उत्तम होगा ।
2. ऐसी तस्मी जो चाहे और ही चती जा कर रक्षा कर सके ।
- तग्न परई स्त्री मंदी, चंडाल मुस्से जड़ करती हो । नार्द हुआ या सूयह गिनते, सांड स्त्री जन खुरह हो । चन्द्र टेवे जब तज्ज हो पाता, जले शुक्र खुद रहता हो । नार्द हुआ या सूयह गिनते, सांड स्त्री जन खुरह हो । परिवार कर्नाता बुध की गिनती, चात शुक्र 4² तरक्की हो । चाय राहु या हो गुरु मंदा, असर शुक्र सब मंदा हो ।

राहु खुद माती हालत

शनि गृहस्थी हालत

शुक्र (सत्यी)

बुध परिवार

केतु रंतान

हस्त रेखा :

मुक्त रेखा कुपरे चलकर शुक्र के बुर्ज की जड़ में समान्तर होगा या शुक्र के बुर्ज पर कुपरे का चक्र

दृष्टि ।

नेक हालत :

दिवारी खाना नं. 7 | आयु जिन्दगी बढ़ने की इच्छा ॥ कुपरे में मुरतरक्का! जर्वी आयु मगर तरक्की से अर्थ नहीं । समय और गृहस्य ने चलते जब तक यक्षे हो । दिल की उक्ताहट के पाँच न जाएँ नगर दो दिल की दोरी का किसी दूसरे से एक रंग हालत में प्यार या नाता कर्मी भवना न जाएगा ।

2. अंकला शुक्र बहुत नेक होगा मगर जो सारी हो उर्धा का बजर और फल देगा मगर किन्तु घर में हो उर्धा का पर्व होगा और शर्ण की आंखों की रस्तार होगी । जिस के लिए खाना नं. 10 में शर्ण का हाल देखें, और टेवे अनुसार जहां शर्ण रेता हो उनकी आंखों में गिनती के अनुसार अगर शर्ण की एक आंख में सार्वत्र हो तो शुक्र शुभ फल देगा ।
3. उच्चर में ज्यादा समय गुणरणा और उत्तम होगा या पूर्ण करे कि जब तक स्वयं कमाये जन्म समय तक सफर और परदेश में होगा आयु का कर्मी पांचा न होगा जद्दी घर का आएग कम ही नितंगा और न ही नई नेठक पुरुषों के बढ़ने की जगह । बनेगी ।
4. जेता कि नं. 1 का ग्रह होगा या जन्म ही शुक्र नं. 1 में आये । 31 साल क्षुग् या टेवे में जब कोई ग्रह उत्तम होते तो शुक्र का फल और शुक्र खुद नं. 7 में साद घेठे सारी का फल देगा । शादी और गृहस्य और स्त्री द्यानदान की हालत शुक्र की उम्र 25 बात का समय उत्तम होगा और उत्तम होगा ।
5. स्त्री उत्तम नेक स्वभाव जब तक स्त्री रंग में इस से अधिक सफेद या कान दरजा रे व्यक्त सुन्दर न हो या सफेद याप का चंद्र न हो जाये वह शुभ ही होगी । यह फिरी लेन देन का इधर ऊपर झगड़े में दबत न देगी ।
6. आयु मर जोड़ी सत्तानन्त, सुखी अपना गृहस्य और माता पिता की हालत उत्तम होगी स्वभाव की नर्म, यिन्मती भाग जाने की निशानी और माया की बरकत की सीढ़ी होगी । आयु 80-90 बात के कर्तव्य होगी ।
7. उच्चर में जिंदा पर वापस आयेगा । मौत कर्मी परदेश में न होगो ।
8. माया दोलत उच्च बढ़ती और शुक्र का फल उत्तम होगा ।
9. शुक्र वही फल देगा जेंगा इन चारों में से कोई भी होदे ।
10. माम लोगों के आएग के सामान कारेबार बरकत देगे ।
11. शादी के दिन रे पुल्च के लिए शुक्र और कुपरे दोनों का उत्तम फल 37 साला समय तक उत्तम ।
12. विवाह शादी और शुक्र से संबंधित काम सदा नेक फल देगे
13. उत्तम की हालत केतु की हालत पर गृहस्य की हालत शर्ण की हालत पर माती पन की हालत एहु की हालत पर परिवार की हालत कुपरे की हालत पर फसला होगा ।
14. कान देव से दूर होगा ।

जब वृ. चेष्टा हुआ हो शुक्र के बुर्ज नं. 7 पर वृ. के खड़े खत मन छोटे-छोटे ।

नं. 1-7-9-11 में ग्रह सू. च., चन्द्र

1-9-7-11 में मिश्र श्वरे, कुपरे केतु ।

शर्ण नं. 9-11 में ।

कुपरे 4-6-2 में शुभ हो । शुक्र का पतंग कुपरे के बुर्ज नं. 7 पर केवल कनिष्ठा की जड़ पर ही हो ।

जब शुक्र नेक हो ।

फसला होगा ।

क्षणम् : स्वस्य रेखा शुक्र के बुर्ज नं. 7 पर समान्तर या शुक्र नं. 7 पर कुपरे का चक्र हो ।

शुक्र नं. 7 और अकेला चन्द्र नं. 4

मंदी हालत :

पन मंदी के बहुत याम में लग्ना कंक्ष परई मिट्टी की पुजना में भी लग्ना । इश्कवारी सुखुम घन जायदाद बरबाद । जिय या सबव अपनी खुदगरी हो व दिमांक नकल [राहू की शरण] होगी गुस्ता [गूर्ध की मरी] नाच होगी यापु 85/96 वर्ष तक की होगी । स्त्री खानदान के मंदी या टेव यात्र के साथ कारोबार में हिस्ता छात कर सार्या होना घन द्वार गृहस्थी खर्चादयों के बहाने होगी ।

2. समारी लेन-देन या कारोबार का छात मंदा हाला संतान के विष्णु शुक्र, दृ. मिल रहे हो ।
3. धोरी घन दर्जनी की पटनाये दीर्घा । 4-16-28-40-52-64- यर्ष फल में शुक्र के जापु नं. । में जाये और 3 भी मंदा हो 76-88-100-114 साला यापु में ।
4. शुक्र का फल मंदा और भाग्य बरबाद हो जाए । चन्द्र नं. ।
5. स्त्री चाहे पुन्त्र, खस्ती, खुन्हा, सांड, नज़ुक, नामर्द, बांझ होवे या जो सरार छाँड़कर नियशा से भर रहा हो । नूर नं. 4 चन्द्र नं. । ज्ञन नं. 7 में ।
6. शुक्र नं. 8 के साथ के ग्रह के समय हर दो का मंदा हाल स्त्री पर स्त्री नरें खासकर जब पर कि छन्न में आसमान की ओर से झेंचनी आवे । नं. 8 में सूर्य या दुध ।
7. स्त्री का मंदा हाल । स्त्री का कभी जाड़ तक नीला कपड़ा यशुम । एहु नं. 8
8. शुक्र हर तरफ से मंदा प्रभाव देगा खाल्कर जब कि वह विल्ती की ओर चमड़े के बढ़वे में होवे, श्वेत के काम मंदे । खाड़ मर्द उड़वे । मंदी हालत में त्वियों को लून ऐश कहये बुद बरबाद हो । एहु साय सार्या या मंदा हो ।
9. शुक्र सोया हुआ या मंदा न होगा बल्कि उत्तम प्रभाव देगा नं. । खाली । परई स्त्री की लग्न और गुत्था बरबादी की नीव होगी ।
10. शुक्र हर तरफ से मंदा होगा खुदगरी बरबादी की नीव होगी निस से जदौदी से जदौदी जायदाद का फादर्य न उठायेगा । नं. 4 मंदा या नं. 5 में शुक्र केरु शनु सूर्य चन्द्र रह ।
11. संतान न होगी या दुखिया होगा । दृ. नं. 2 मंगल नष्ट ।
12. शुक्र पक्के घर नं. 7 में उसका दूसरा दूसरी दुप मिट्टी में रेत मर्द स्त्री में विषय की शक्ति और साय वाते घर घाटों में दुप पेतु खेलत कामदेय की नाली और नं. 8 में मंगल और शनि [धैतान] सही या गलत किसी भी ढंग से बपना भतलन निकाल सेगा जाने गये है । जब नं. 8 खाली हो ।
13. नं. 7 में दुप शुक्र की घक्की को चलाने वाली लोह की कीली भी नं. 8 ही का ग्रह गिना गया है जो गृहस्थ की हालत में संसारिक शर्माहया 8 गुण शक्ति में गिनते है इच्छिए साना नं. 8 के खाली होते हुए शर्म और हया का हवाई पर्दा जठ

जान ए स्त्री में विषय [मन्दा जाती] में कामदेय का शून खुब
जार पर द्वागा नियक कारण बंहवाई तक हो सकती है।
पुरुष स्त्री में लिङ्गा आँख को या दोनों को तर्पदक या जिल्द
जल्द रहने वाले विषारणों हो सकती है।

14. शुक्र के दृग्भ वां वी खराचियों के कारण दिन की शनि नं. 6 में।
खराचियों के कारण दिन वी विषारणों हो जाने के समय शान्त
वी चाहे। पार्क की तरह बहने वाली नर्म जिल्द को बिना जल्द विषय
शुभ रखने वाली भी ज्ञान (अल्कोहल) आदि नियुक्ते तिए
फिरां वृद्धिमान डस्टर या हर्काम की सलाह के साथ तर्हका
प्रयोग का फैलाना करना आवश्यक है से भद्र छोगा।

शुक्र खाना नं. 8

| ज्यौ मिट्टी की चंद्रबत्त स्त्री |

कव दूरर की न जम कोई पढ़ा।
कसम पर जानत व्ये फिर तु भरता।



बने यही घर दो कोई बेठ, असर जाती 8-2 का हो खाती पढ़ा हो घर जब दूजा, पाप शुक्र सब मंदा हो।
स्मृत नाव जर भर कर हूँ, बरबाद खाना संतान की हो लक्ष्मी पत्थर जो स्त्री बोते, जनाही मंगल बद हो।
दान छोड़ सर भीर टेके, शुक्र कलम सर होता हो चन्द्र मंगल बुप कापम होते, झरर शुक्र न मंदा होगा।

इत्त रेखा :

Free by Astrostudents

शुक्र से मंगल वर को रेखा स्त्री का स्वास्थ्य जन मंदा हो चरी [न्वार] का दान देना या उसे जर्जन में दबाना उत्तम होगा।

नेक हालत :

1. भेहनत की रोटी कोई विष नहीं होती भगर भेहनती के आएम के लेना भी जुर्म नहीं।
2. स्त्री उच्च स्थान [मर्द ने कहा] दात पतली है और स्त्री ने हथ पर चिनटा आए मर्द ने फौरन कहा कि दात पतली है मर्द स्थाद है कहकर जीवन विताया। स्त्री की जवान का असर पत्थर की लक्ती होगा जो तुह कहे एकदम सच होगा नेक कही जात के तुह होने की झर्त न होगी इच्छिए स्त्री को तंग करना दानों के तिए अच्छा न होगा।
3. दान लेना छोड़ दे और भीर में सिर सुकाता रहे। शुक्र का सिर अपने आप कट जायेगा।
4. शुक्र नं. 8 वाला कहता है कि उसे सब कुछ पता है भगर उसे पूजता कोई नहीं इच्छिए वह बोल कर थक कर बैठे हुए मर्द की तरह अपनी खुदी के तंदूर में जल रहा होगा।
5. शुक्र भी नं. 2 के ग्रह का ही प्रभाव देगा। जब नं. 2 में कोई ग्रह न हो।

मन्दी हालत :

यह ग्रह सदा मंदा न होगा इसके लिए भद्र फल का आम उन्नय ॥ सात आयु तक जोर में होगा 12 साल आयु में शुक्र नं. 12 में जब कभी नं. 12 में आये नेक फल देगा। बदी के दरिया जी बढ़ । से ॥ सात आयु = ॥ सात आयु कम 27वां साल = । साल, 34वां साल = ।, 39 से 45 = 7 साल [कुल ॥ जना । जन्म । जना 7 = 20 साल ॥ 25 साल आयु तक शादी करनी अशुभ होगी। जब तक चन्द्र मंगल या जुप जो अमूर्मन ऐसे टेके में भद्र ही हुआ करते हैं कापम हो। शुक्र का तुह प्रभाव

106

टें वाले पर न होगा । इन ग्रहों की सुरक्षत चीजें काप्य करना या उंचाईत रिश्तदार चन्द्र [माता] मगर [माई] दूर [बहन] आर्थियाद सेतु रहना युक्तायक होगा ।

2. गन्द नात में तांब का पेणा या फूल छातत रहना शुभ होगा । गज़ खेला या गाय दान से बरकत होगी । धर्म स्थान में सुकाते रहना तेर शशुओं का चिर उड़ात रहगा अगर ऐसा न हो तो चाल चलन ज़रूरी होगा ।
3. चाहे लड़ाई में सहायता देगा मगर स्वयं वपने सिरहान चड़ाल जब नं.2 खाली हो ।
मंदी मिट्टी की तरह गृहस्थी की छातत होगी नड़ी का साया छातत या हर उपय खतर में होगा । स्त्री के स्वास्थ्य के मरे पन के लिए ज्यार का दान या जर्मान ने देना सहायक होगा बाहर खाचो कुएं में गिरने वाला उल्टा भर्द स्त्री होगा ।
सुनुएल की नाव को भर कर दुखने वाला और खाना नं.5 शादी के बाद का आने वाला उपय सुतान मी बरवाद होगी । वही गोवर में मिलावट से विच्छू पेड़ होने को तरह कम्प पर कम्प अपने लिए खड़ा करेगा ।
4. किंसी के लिए करम खाना जर्मान देना कर्मा उत्तम और नेक दुश्मन ग्रह सूर्य चन्द्र एवं का स्थान नं.8 में होगा ।
फल दायक न होगा । जनाही भर्द और झोत मंगल बद का असर खाउकर जब मरे मर्द या स्त्री का जाय हो जावे । जब चाल चलन या हल्का हुआ तो आवश्यक सुजाक आदि सब मंदी यिगारियों का शिकार होगा । गज़ दान सबसे उत्तम उपाय होगा और शुक्र नं.10 मंदी छातत में देखे ।

Free by Astrostudents

शुक्र खाना नं.9

। मिट्टी की काली आंधी मंसूत बद ।

निना सबसे बेहतर, चाहे मेहनत का खाना ।

मगर शेखी क्या, सूत हर दम बहाना ।



हाल बड़े लाख हो उम्दा, मर्द माया न इकट्ठा हो
मंदा चौथे या शशु नेठ, तज्ज्ञ चक्कर जब लाता हो
चीजे चन्द्र या मंगल सायी, असर शुक्र ९ चन्द्र हो

ओलाद बौत जर अपना मंदा, साय पापी दुप होता हो ।
गुरु चन्द्र कोई मंदा होता, गृहस्थ माया उब जलता हो ।
नीम वृक्ष दुकड़े चांदी, भला गृहस्थी भंदिर हो ।

1. 4-16-28-40-52-64-76-88-100-114 साला भयु में खाना नं.4 को मंदा करने वाले या शुक्र दुश्मन जो नं.4 में हो सूर्य या राहु या चन्द्र ।

एस्त्र रेखा :

पनु राशि से कोई रेखा आकर वियाह रेखा को काट देवे ।

नेक छातत :

चाहे बुजुर्गों का पन दोलत भड़ता होगा । ओलाद का हाल ऐसा भला न होगा और सुद उड़के झपने यहा मर्द और धन शायद ही इस्तेह होयें । मगर तीर्थ यात्रा जल्द उत्तम होगी । वह व्यक्ति अकलमंद बजीर तदबीर वाला होगा । लाखोंपति होता हुआ भी अपने पेट की रोटी की कीमत के बराबर मेहनत करके रोटी खायेगा । त्वयं मेहनती होया या होना पड़ेगा । आरम्भ

परन की जगह हद य धार्घक महत्व करने वाला या खून बढ़ाते रहना चांद शुभ फल न देगा । माती हालत के लिए नीम के वृक्ष ने चांदी के चोकार टुकड़े दमाना शुभ होगा ।

2. इसरे पी मुंगवत और मंदी सेहत स्वयं बुलाकर मात ते तां जिन खस्तत मुम्पते ये घर स्वयं अपनी बदमूरता से इरने सका के कोते का हाल होगा ।

3. मध्यन की नींव में या मकान में चन्द्र की चांजे {घोड़ा/कुआं/चन्द्र} या मगल का साय ।

चांदी के गाय या मगल {शहद} के कायम रखने से शुक्र

उइत्ती हुई मिट्टी की जगह 9 गुण उत्तम और चन्द्र {शर्णि भाय दोलत की महायता} का उत्तम फल देगा ।

मन्दी हालत :

1. आध्य के संबंध में कालां मिट्टी की आर्यी ।

2. शुक्र की 25 साला आयु में शुक्र के कारेवार {जादी} या चांजे {गाय, खेती} या रिस्तेवार शुक्र से संबंधित के साथ से घर की चांदी की बीं दोबार भी जली हुई मिट्टी की तरह मंदी हो जायेगी ।

3. माती हालत के लिए मंगल घट औलाद तथा घन मंदा वृष्ण और केतु का फल अनुभव मंदा और यह {जहरत और खहवी} का बहाना होता रहेगा । जिसके लिए नीम के वृक्ष में सूखे करके चांदी के चोकार टुकड़े डाल कर फिर सूखे को नीम की सकड़ी से ही भर देना शुभ होगा ।

4. 17 साल आयु से नशे और विमारियां आम तंग करेगी शुक्र और पापी या दुयि किंचि तरह भी आ मिले या साय सायी हो । भी मंदा होंगा । अस्पताल से बोमार मुर्दा उठाकर साये हुए को तरह शादी के दिन भी डोली में दुल्हन का खून बरबाद और उनकी मंदी सेहत के कारप खर्च पर खर्च । रक्षा वंपन सूखे चूड़ी नींवे चांदी ऊपर लात रंग जब शनि नं. । में आये या मकान बने रक्षा कुछ उत्तम हो जाये ।

5. घन माया बरबाद हो जब नं. 4 वाले ग्रह नं. । में आवे यानि 4-16-28-40-52-64-76-88-100-114 साला आयु में

खाना नं. 4 में मदे शुक्र के शमु ग्रह ।

क्याम्ब : शुक्र के दुर्ज नं. 7 में रेखा अमर ज्ञानफत रेखा दुर्ज नं. 4 से न हो ।

6. गृहस्त्य मंदा {सिर्फ चंतान और घन} के लिए

चन्द्र नं. 7 ये चन्द्र मंदा चाहे किसी जगह हो ।

क्याम्ब : करनिष्का की जड़ में चन्द्र का आधा आकार निशान हो ।

7. खून की कमी की विमारियां होगी, पहली निशानी, नाखून सफेद हो जायेंगी ।

नं. । खाती ।

8. चंतान के विघ्न होंगे । लोकों के सायी संसारिक लेन-देन औपार का मंदा हाल होगा ।

दृ. और शुक्र निल रहे या दृ. मंदा हो ।

क्याम्ब : उंगलियों के नाखून जर्द रंग शुक्र के दुर्ज नं. 7 और दृ. के दुर्ज नं. 9 को मिलाने वाला सेट हुआ खत मणिन्द हो ।

शुक्र खाना नं. 10

। स्वप्न हूँ खुद शनिश्चर शनि उत्तम दो पर्म मृत (पुस्त्र या स्त्री) ।

सदा फूल धोरत जयानी पर भरता ।

गया खारी ओलाद पांच तत्सता ।



4 दृष्टि खारी थोता, शुक्र शनि बन खेलता हो
दीपार पर्षिशमी जब तक कच्छी, पर्वरियार धन जर यदता हो
पाच पहले गृह चाई कोई बेठा, आहम उज्ज चाहि हांता हो
चन्द्र देठा 7-4 या दूने, सारी कोई न उड़ा का हो
शनि जन्म घर शुक्र आता, पापा तप्त या चातवा हो
11-9 वें शनि टेवे बेठा, सारी कोई न हांता हो
ओत मिट्टी की लड़ी बनती¹, चलन नारी न गन्दी जो

उत्तम शनि दो सुप हो उत्तम, हादरा न कर्मा देखता हो ।
नजर भरने न जब शनि अपनी, शुक्र यथा लेख रहता हो ।
साय मगर जब शनु साया, मंगल चंद्र कनू मंदा हो ।
पत्तर निंदी जब खाड हो बनते, लाहु घट्टर कुल उत्तम हो ।
काम शनि न जब करता, असर मुवारक हरजा हो ।
युध अहर रब उत्तम देगा, वाय बर्माव उम्दा हो ।
बदली स्तं कुल मिट्टी होती, दुर्खिया क्वर तक शक्ती हो ।

1. स्त्री जात को जेर नजर रखता और बन्दून उसके स्वप्न देखेगा और चन्द्र और मंगल का फल भी निकल्या ही होगा ।

हत्त रेखा :

शुक्र का पतंग या शुक्र रेखा शनि के बुर्ज पर मध्यना की जड़ ने स्थित हो ।

नेक हातत :

जयानी में सदावहार फूलों की तरह पर्हें स्त्री दे ताल्तुक का बहुत मोका निलेगा । ऐसा मर्द/स्त्री अमूमन मर्द/दीलत को अपनी नजर में रखता होगा । और अमूमन उचके ही छवाद देखता होन् जिससे चन्द्र मंगल का फल मंदा ही होगा । कपड़ा चमड़ा जब धोकर साफ हो सके तो वह दिन जर नर मादा की तर्मीज क्या लानत और नैदानी गर और पहाड़ों चट्टानों की ओर से क्यूं नफत हो, के कोल का व्याप्त होगा ।

2. पर्मी शनि का खानदान उत्तम प्रभाव खुद शनि का स्वप्नाव । शनि साय सारी या नं. 1 में ।

[शैतान, चालाक, हेशियार] हर ग्रह का नेक प्रभाव शनि के मर्द कामों से दूर रहे ।

3. शुक्र अब खुद शनिश्चर ही का उम्दा फल देगा मिर्जा [पति]
हल्का [स्त्री] सारंगी भाए । ऐसी जो किसी दूसरी स्त्री के मर्द
को निकाल कर ले जाये पूरी कामदेव रे भरी होगी और मदपर
आई हुई स्त्री ।

दाना नं. 4 खाली,

4. बुध भी उत्तम फल देगा । हादसा कभी न होगा यानि न्यौ के होते हुए कही जा रहे हो मोटर लारी में और कुदरत की ओर से कोई दुर्घटना आने को हो तो जब तक वह इस सबाई से उतर न जाएगी हादसा न होगा । इसी तरह उसके बेठे होने तक मकान न गिरेगा । बाग बगीचे मकान आदि उत्तम होंगे । स्त्री की सेहत उत्तम मर्द स्त्री दोनों पर्म मूर्ति होंगे जब तक परिचमी दीवार कच्ची रहे तो धन उत्तम दुःख में आहम ।

छने उत्तम या शनि 9-11 मध्य शनु का साय न हो ।

स्थान : शुक्र की पतंग सिर्फ शनि के बुर्ज और मध्यमा की जड़ में ।

5. सारी आपु आहम और खासकर जयानी में खुद ऐशो आहम हो
यानि शनि के इश्क वी हर और से सफलता होगी । दुःखा
शुभ होगा ।

नं. 1-5 में कोई न कोई ग्रह शनु या मित्र देठा होगा ।

६. पत्तरी मिट्टी की उम्दा छाँड़ का उत्तम फल देगे सबसे उत्तम अकली चन्द्र २-४-७ में हो ।
अनुर के ओर फलते फूलते होंगे ।

मंदी हालत :

1. घोलाद में विज्ञ या न ही होना या होकर मर जाये, या दोत की समान में हृदय संबंध और न्यौन के गुप्त अंग को दही से गाफ रखना तो नं. १० का शुक्र जो शनि बना जाता है वह शुक्र दो चांगों से दमन अर्हती हालत में ही है। फिर संतान की सहायता करेगा । ऐसे प्र्याप्ति के दून में रातान पी प्रदाद्वा के संबंध में दून में कोई कर्मा या विकारी न होगी । मगर होंगे तो पंशाब पी मंद/स्त्री की जिल्द में नुस्ख हो सकता है ।
2. वर्षपला गाय का दान शनि की मंदी जहर से बचाता होगा । मंदी संहत के समय गाय या ऐसा नहंज व्यक्ति गाय का दान करवाने के बाद एक दम एक तरफ हो जायेगा यानि यदि उत्तरी आयु में कोई इताल बाली न बचा होगा तत वर्षपला गतंगा संहगा नहीं । लेकिन यदि जायन बाली हो तो ठीक हो जायगा । बालाई हर हालत में जाती रहेगी । अमूमन नर्ताला शुभ ही हुआ करता है । जायनी इश्क का पर तो बदामे में संतान के संबंध में होता रहेगा । पर्वई स्त्री से कामदेवी संबंध १२ तक केतु [संतान] मंगल [माई] और चन्द्र [माता, दोलत] बरवाद होने । काली कर्पिला गाय ज्ञाने के प्रभाव से बचायेगी ।

स्वयं शुक्र नं. १ ॥१०-२२-३२-४७-५८-७०-७९-९६-१०८-२२०॥ साला आयु या नं. ७ ॥४-१६-३३
४४-५०-६६-७६-९४-९८-११॥ साला आयु या शनि जन्म कुण्डली के हिंसाब अपने बढ़ा होने के पर में बाने दिन से शुक्र हर तरफ से शुभ होगा यद्यकि ऐसे टेवे याता शनि के मदे काम न करे ।

३. मर्द का १२ साला समय मंदा होगा । शमु सूर्य, चन्द्र, रहु का साथ ।

४. शुक्र भी मंदा फल देगा स्त्री अक्स या आंखों से अंपी होगी । शनि मंदा ।
और हर तरफ से दुखिया होगी ।

५. प्रायः खाना नं. १० और ५ में गह बाहम शत्रु हो जाते हैं इच्छा शनि नं. ५
लिए गाय का सांप की जहर से विज्ञ या स्त्री को आंखों की
तकलीफ़ शनि से हो सकती है । अगर किसी बजह से १०
गज़रं बरवाद हो ही जावे तो कोई बहम नहीं । ग्रहचाली जहर
हो । बकरी का पालन गाय और स्त्री के लिए शुभ होगा ।

शुक्र खाना नं. ॥

॥ सुन्दर स्त्री/पुरुष माय के संबंध में शूलत लट्टू ॥

इश्क लहर औरत न ही इतनी दड़ती
चिमट बाद जिसके हो जाती नामरदी ।

जैन माई खुर स्त्री होते, भंडारी जगत कुल बनता हो गाय माता न देशक देव, कल्या स्त्री धन बदता हो ।
सम दृष्टि चुप जो मिलता, घटती मर्द कुल अपनी हो रिजिक दोलत न देशक घटता, मंदा असर चुप पापी हो ।
जैन खाली २० शुक्र¹ मंदा, संतान भर मरती हो नादशाही ३ दोलत घटता, चुप निता नामरदी हो ।

१. शुक्र की महा दशा २० साल मंदा समय ।

हस्त रेखा :

शुक्र से रेखा हथेली पर खाना नं. ॥ बचत में समाप्त हो ।



नेक हालत :

1. बप्पन दी गोद गाया में लगे रहना अमून स्वभाव होगा ।
2. मुन्द्र स्त्री/मर्द घन का/दी भड़ारी थमाएं माल चाला या फिर हिजड़, शुक्र या जिल्द की दोस्तारयाँ ।
3. संगरिक कामों में लगे हुए अपने कामदय की शक्ति ही पूल बेट । भिट्ठी की ननूम स्त्री इच्छाएं नहीं कि उनका त्वादर्ता है भगर इराताएं कि उम्रका कोई दूसरा ग्रहक नहीं । क्यों कि अपनी ही नजाकत यह सब से बढ़ रही है । कुऐं भी हालत है कि योद्ध दृग्य उमरी कुछ नना नहीं सकता या यूं कहो कि वह कुएं में गिरी बंशरी के ताम हंर रह होगी या हंथरी नजर आती होगी । भगर उम्रका दिल चन्द्र का पानी शादी [शुक्र] के दिन से ही जल चुका होगा या जल रहा होगा ।
4. उपे [खुफ्या] काम करने का आदी होगा । हर दम स्वभाव बदल लेने चाला होगा भगर घन से खाली न होगा । मोत सर कटने से होगी और 12 चाल खूब घन आवे नहीं तो हिजड़ ही होगा । 5 लड़कियों की शादी के बाहर घन कायम होगा चाहे शादी कोई भी न दी जाए या की हो ।
5. लड़कियों के साय से ही घन की ज्यादता होगी ।

एहू नं. 12

मर्दी हालत :

हर काम पर्द में करने चाला दिखावे को भोला भाला अन्दर से हजरत हर दम स्वभाव बदलने की आदत को कोई अच्छी बात न होगी । चाहे दिमाग की कमजोरी कहो, चाहे शनि की चाताकी । अमून मोत सर कटने से होगी । स्त्री अब घर की बजानी अशुभ होगी । कफिला गाय शनि के दुरे प्रभाव से बचायेगी ।

2. चाहे घन दौलत मंदा न होगा भगर मर्द की अपनी कुत खान-दान घटती ही जायेगी । लड़कियां घर का घन बरबाद करेगी दुप और पारी गुहों का मंदा फल होगा । और शुक्र का कोई एतचार न होगा ।

त्रुप 3 या सद सायी

क्षाप्य : हथेली पर चाना नं. 6 खाली आयत जो दिल रेखा तथा चिर रेखा दे बनती है इस से सूर्य के बुर्ज नं.

[जनमिका] और शनि के बुर्ज नं. [भव्यमा] की हर बन्दी

पर क्रास की निज्जन हो या चिर रेखा के नीचे एक और

। — | लकीर छोटी सी हो ।



नं. 3 खाली ।

3. मंस्त की सहायता : दृष्टि से साय सायी या किसी तरह भी या खुद मंगल का उपाय या स्त्री के भाईयों की सहायता शुक्र को मंदी जहर से बचायेगी । यानि घन भी होगा और घरियार भी । शादी के तीन साल बाद बरबादी होने लगेगी और नामदी तक हो सकती है । हाय से वीर्यपात, एतलाम की अधिकता या गुन्त अंग विल्कुल व्यर्य । वीर्यपात या पेशाव की दोस्तारयों आदि से गिरावट के रूप शनि [तोहे फौलाद का कुशता] या किसी और तरह या महती का तेल [या चन्द्र] [चांदी का कुशता] या किसी और तरह दूप की चीजें। इस मर्ज की दर्याईयों

111

दे याय मित्राकर 40/43 दिन तक ऐं ढंग पर प्रयोग करें दी
फारन खून जाग भड़क उठना ना हो जाये ।

याना दर्शाइयों में मित्रा दी सहायता कर सकता है जब केन्तु
टेंगे भै निकम्मा न हो बरना शनि और चन्द्र की धीरे ही
दर्शाइयों में सहायता देगी । दूसरी ओर नर सतान मर्त्ता जाये
या प्राप्त हो न हो एके । 20 साला शुक्र दी महादशा का
मंदी समय होगा युवा दी पालना सहायक होगी । स्त्री चाहे
भाग्य आय की स्थानी मालूम होती हो भगर यह स्वयं ही
तयाही का कारण होगी । मंद समय में तेल दान कल्याण
करेगा ।

शुक्र खना नं. 12

[बाढ़े समय हर जरह सहायता की देवी और बन सार से पार करने वाली याय]

लहर माया चलती फिरु कुल जनना
गया भूल क्यों फिर तू जिस घर को जाना ।



जन्म समय चाहे मिट्टी उड़ती, शादी समय पर 12 हो ।
एन एंबें हर दम ऊचा, 37 याला सुधी स्त्री हो
गुरु धनि भव्य रेखा गातवें, सुखिया औरत न होता हो
खाली मंदा सात दृग होते, शुक्र होता सब मिट्टी हो
जवान और बुप टेवा मंद, यह धुएं से दुखिया हो
नाम स्त्री पर दान जो देता, सेहत स्त्री जर दीलत हो

1. बहुत ही अच्छा उत्तम फल ।

तीन गुणा नर चन्द्र उन्नति, भर भला दी मिलता हो ।
नाश नीरी कुस एक दम होता, यह भली जर दीलत हो ।
बुप देवा जब कामन हैं, परिवार सुखी अंताद का हो ।
तीन छठे जब उत्तन टेवे, कामदेनु याय होती हो ।
यह भगर जब साय हो नैठा, गृहस्य 25 तक मंदा हो ।
मंद भद्र न जब कर्दि करता, तेव सहायक खुद स्त्री हो ।

हस्त रेखा :

शुक्र से रेखा हयेती पर खाना नं. 12 खर्च में समाप्त होवे या हाय में मच्छ रेखा हो ।

नेक हालत :

1. जवानी की यत और भिले हुए आएम में चारपाई से नफरत क्यूं जबकि तांचे को शिक्षा देने के लिए बुद्धाण्य बहुत बड़ा है । यानु सरिहिना की मंजे चारपाई की कहानी स्त्री की रीमारी और स्वभाव की नक्काजी कभी समाप्त न होती । स्त्री स्वयं परिव्रता और सुख बनती होती ।
2. स्त्री यी पूना और प्यार यी सहर गृहस्थी गुण फेदा करेगी ।
3. भयसार से पार फर्ने वाली ग़ुरु माता की तरह स्त्री भाग्य की मातिक होती है जन्म सन्य चाहे मिट्टी उड़ती हो शादी के समय से पी बारह उत्तम हालत होते । चन्द्र और नर गुहों का तीन गुण उत्तम प्रभाव और नं. 2 का प्रभाव भी उत्तम होया या शुक्र 2 का उत्तम फल प्राप्त होगा एजदरमार हर दम ऊचा स्त्री का कम से कम 37 साला सुख होता होगा और पन का सुख होगा ।
4. मच्छ रेखा स्त्री स्वयं दुखिया ही होती । परिवार और सतान मृद्दि नं. 7 या आप्तु में सद्य रहती ।

क्षाप्त : हाय पर मच्छ रेखा का निशान या हयेती के खाना नं. 12 में शुक्र के तेटे यत ।

112

5. एगी वर्षी और मण्डारी या मालिक होगा । उम्र तु. नं. 2-6 और काष्ठ ।
मनुत तम्ही 96 वर्ष तक मर्द/पांड संग ।

मन्दी हालत :

हर मुमायत के समय पहले उसमें स्त्री दुख को मार्गी । फिर उसके मर्द को कोई कष्ट होगा । इन्हें स्त्री का स्वास्थ्य मन्द ही होगा यानि मर्द यी जान यो स्त्री और स्वयं स्त्री की जान दो उसके हाथ । आत यी आरे । चै दान करना करना या यें ही स्त्री के नाम पर गज दान या योई भी चाँच दान स्पष्ट से देते हठना स्त्री के स्वास्थ्य और अपने धन की बदकत देता । जहाँ पोई सहायता ना करे और मन्दे और याड़े समय की स्त्री या भाग्य एकदम सहायता देकर उधे पार करेगा । जब तक ऐसा प्यास नास्तिक न हो या जब तक वह मालिक को याद रखे स्त्री के अपने हाथ से शाम के समय नैस्त्री फूल । राहु की चीजें। बाहर याएने में दवाने से सब दुख दूर होगे ।

2. शुक्र मंदी मिट्टी की तरह बुध फल देता । नं. 2-7 खाती हो ।
3. स्त्री स्वयं और उसकी जयान और स्त्री का आएम बुध मंदा हो ।
सबके सब नन्दे प्रभाव के होंगे ।
4. गृहस्थ 25 साल आयु तक बरवाद नीती याय शुभ न होगी । राहु की चाँचों का साय और संदय भी मंदा ही होगा । राहु नं. 2-7-6-12
5. शुक्र याय का साय हरदम शुभ होगा क्योंकि शुक्र अब एक ऐसे कामधेनु याय होनी जो बिना बच्चा पैदा किए साही आयु अपने स्यामी के प्यार में दूप देती रहेगी ।

Free by Astrostudy मन्त्र : ऋत्र घाटी

दोरंगी अच्छी न यक रंग होगा

राहुर तू हो मांड या सग होजा (पत्तर)

दान भर्ताई दुनिया जितनी, नेक मंगल खुद होता हो तुम्ह (बैल) बदी का बदत्ता लूनी, हित्ता मंसूत्त नद लेता हो ।

मौत न मानी (शूरख) एस्ता तीजे, नेक मंगल जा येकता हो भाक घर 6 दुनेयां लेते, जिन्हें मंगल बद बैत्ता हो ।

चन्द्र रवि की भदद जो पाता, मंगल बदी ना होता हो भात चन्द्र दे देशक ढट्ट, मंतरीक वही भर भूत्ता हो ।

पाणी¹ कोई दो शनु सापी, मंगल मंदा ना होता हो नेक कुलों की दूर लावल्दी, बेशा गर्क बद करत्ता हो ।

1. कोई पाणी¹ राहु केतु² या कोई दो आपसी शनु³ नृप केतु² ग्रहों के साय से मंसूत्त मंदा ना होय ।

आम हालत 12 घर :

तेव अदल पर पहले जंगी, मालिक तंगर लोह दूने हो

शेर होता गर तीने कैदी, आर सुन्द्र चौथी यो ।

पांच रुद्धी भाप हो दादा, केतु कमी पर 6 की हो

विष्णु पातन घर 7वें करत्त, देशी शर्क 8 भाई हो ।

तच्छ भना पर 9वें शाही, राजा होता पर 10 का हो

11लेते जो भेर फकीरी, नस्त राहु घर 12 हो ।

नृप मंदे से असर दे भेद, शेर पले घर बकरी जो

घर घोरे² ग्रह फैसला करते, बदी मंगल या नेकी चो ।

2. तमाम शरीर के बीच का मात्र नाभि³ मंगल की किरणे माना जिनसे मंगल का रंग पता लग जायेगा ।

मंगल से झनी का संबंध :

1. झनी नेकी और बदी के फरिरते केतु और राहु दोनों ही झनी के ऐलेन्ट हैं भत्त: झनी के नेक और बद दोनों ओर जाने का स्वभाव है या आंखों की शक्ति स्यामी है । निष्कर्ष में सामने आये को पहचान लेना या तिथे हुए क्षेदेख कर पढ़ लेना

शन वां शन्त है। शन तो शुभता नहीं करता मगर मंगल शुद्ध ही शन से शुभता करता है। मंगल के घर दाना नं.3 में शन नियम कथाल होगा।

- मंगल ऐसा नक्षत्र थोर गंधा चलने वाला है कि जब कभी हमें बुराई की तरफ जाने वां उकड़ाहट हुई तो फिर ये पांच न हट सकता और दूसरी सारी शान्त बुराई की तरफ उकड़ाने वाले को ही दें दग्ध यह नजर का स्वामी तो नहीं मंगल नजर के प्रभाव या पर्याप्त इनका भाग है किसी को नजर लग गया या नजर से ही किसी जगह देट हुए सेकड़ों मंगल की चाँच या छवाव या तरह देख दाना दृश्य वां शक्ति है। शन के घर नं.10 में मंगल एमा होगा जब अकेला मंगल या मंगल शन 10 में हो।

दोनों की आपसी दृष्टि के समय :

चुलहे में जला भाग [हाय पर चुलहे का निशान] एक चार फरवरी कों तरह का बना देगा और शनि नं.1 और मंगल नं.4 का दिया मंदा फल साय होगा।

मंगल देखे शनि को :

अब मंगल को चाँचे काम संबंधी या मंगल स्वयं सिफर चंतान से हानि होगा मगर शनि की चाँचे काम संबंधित दुर्भागा ने और अच्छा होगा।

शनि देखे मंगल को :

दोनों ढाकू एक ही अकूल के मिले हुओं की मार्गे दोनों ही ग्रहों का नक्ष और अच्छा फल होगा।

मंगल से राहु का संबंध :

मंगल देखे राहु को - राहु का नुग असर न होगा बाजुओं पेट या खून की खण्डियों से जिसके दायें भाग में बड़ा कष्ट हो। चन्द्र का उपाय भद्रद दें।

मंगल से केतु का संबंध :

जब रिक्ष दानों ही आपसी दृष्टि या मुकाबले पर आ जाये तो भाग्य के भेदान में मंगल [शेरा] केतु [कुत्ता] की लड़ाई की तरह भाग्य का हात होगा यानि दोनों मंदे होंगे ऐसे कहते में वही उपाय सहायक होगा जो मंगल केतु के मुशर्रका में लिया है।

ब्रह्म हालत :

अब टेवे में तूप तूप इक्कठे हो तो मंगल नेक होगा अगर सुर्य शनि इक्कठे हो तो मंगल बद होगा। खाना पीना भाई बन्धुओं की सेवा लड़ाई झगड़ा शारीरिक दुख बीमारियां 28 साल बापु का उत्तम मंगल है। सारे शहीर का बीच का भाग नामि मंगल की रुचयानी और सूर्य की सीधी किरणों की जगह मानी है। कुण्डली की नामि खाना नं.4 के ग्रह मंगल की नेक और उर्ध्व हालत का पत्ता चतायें यानि जैसे नं.4 में होने वाले का अन्दर होगा, वही हालत मंगल के खून की होगी न रिक्ष दान इरका जरूरी पहरू और कुत्ता दुनिया के भलाई का काम और मंदों खोलने की हिल्लत उठकी नेकी का पत्ता चतायें। शर्तिक कुत्ता खानादान की लावल्दी दूर करेगा। अकेला बेठा मंगल जंगल के बेर चनान होगा। मंगल नेक अपने असर की निशानी सदा जब ग्रह की चीजों के जरूरे देगा जोकि टेवे में उत्तम हों और उस ग्रह के अपना असर देने का समय हो और मंगल बद टेवे से मंदे ग्रह पी चीजों के जरूरे उसके मंदा असर देने के बजाय शुरे असर की हशा का अपना पीहते बना देगा इर हालत में मंगल के असर में एक साल लचातार और बीच में ढंग की रफ्तार न होगी चाहे मंगल नेक बेर बहादुर के हमले की शक्ति का हो या मंगल बद डरायीक हिरन की तरह कोरों ही दूर भागता हो।

मंगली हालत :

बढ़ी का तुज्ज्ञ खून का बदला सून से लेना हरदम जल्ही और जब भी [शुकू] और शहद [मंगल नेक] बरबर के हो तो नहर मंगल बद होगा जैसे टेवे में सबसे पहले शुकू और उसके बाद सूरज का फूत एक के बाद दूसरे के मंदा होगा लेकिन अगर सूरज या चन्द्र की नदद नित जाये तो मंगल बद न होगा [खाना नं.4 में देखे] कोई दो पारी [शनि राहु शनि केतु या कोई दो

शु आपु में कुप, केतु गुरज, शुग। मंगल के गार्थी हो तो मंगल बद ना होगा। जब अपनी मार पर दायगा तो एक वा बुग न करता चलक अगर हो एके तो कुल खानदान का ही बड़ा गर्क दरणा। जब बुग मंदा हो तो मंगल बद और मी मंदा होगा थीर घूमा शर बहादुर दी बजाय बहरायी में रहने वाले पातनु शर की तरह अपनी अर्द्धनरस में बच्चवर होगा।

क्षाप्यम : दो रेखा त्रिकोण या ट्रांप की तरह मंगल बद या मंगल के कुप प्रभाव की निशानी होंगी। सिर रेखा को अपनी कुदरती छातत थगर आंखिर तक बढ़ाये तो मंगल मंद के घर या घाना नं. 8 की दृद्धवंदी घाना नं. 6 में जुदा ही हो जायेगा शुग के बुर्ज नं. 7 के उत्तरी दृद्धवंदी की लंबांग गर थोर आगे बढ़ाये तो नं. 8 का दांक्षष मित्ति का यु कहं कि स्वास्थ्य रेखा भगल बद घाना नं. 8 का पूर्व होगा।

मंगल के बफ्फे भाई बन्धु :

मंगल बेड़ी मंगल की बाम हैरियर
हो नं.

टेवे वस्ते के भाईयों की तादूद क्या होर्गी

- | | |
|---|---|
| 1 इसाफ की तलवार | उटे भाईयों की शर्त नहीं मगर अकेला भाई न होगा। |
| 2 दूधरे के लिए पालन योग | पैदाई चे वह खुद ही बड़ा भाई होगा। |
| 3 चिंडिया घर का फैदा शेर जिसे
अपनी ताकत का पता न हो। | बहन भाई जल्लर होने मंगल की ऊँ और दुय बड़ा होने वाले की खाने की
गिनती के बहवर 7 या 14 साल जापु के बाद तीन भाई। |
| 4 भाई की स्त्री पनी अपनी मां नानी
साओ सब पर मोत तक भारी | आप बेङ्गल जन्म चे छांटा हो नगर यो टेवे वाला 28 चात आयु तक खुद
ही बड़ा भाई हो जायेगा। बरना उरका बड़ा भाई बेचुनियद लावल्द या मंदी
सेहत का स्थामी होगा। |
| 5 रईगो या चाप दादा जब तक
मंगल नेक लेफिन जब मंगल बद | घाना नं. 3 में अगर नर ग्रह = 4 भाई, स्त्री ग्रह = 3 भाई, पारी ग्रह = 5
भाई बुप अकेला = 2 भाई। |
| तो आंख से ही तथाही करता जाये। | |
| 6 सापू रन्धासी के स्वाभाव का स्थामी
जो खुद अपनी आय ही मारे। | एक अकेला ही घन्दवार होगा। |
| 7 विष्णु जी, भाई की औलाद की पालना
सहायक होगी। | मच्छ रेखा या लावल्दी जब मंगल को बुप का साथ मिले। |
| 8 मोत का फंदा | 4-8-13 बल्क 15 चाला आयु के खाद दूरह भाई बल्क कई बार तो एक
अकेला ही रह जाये। |
| 9 तख्त शाही खजाना भाई की स्त्री
की सेवा और तामेदारी मंगल की
बुलंदी की नीव होगी। | जितने चाहे जतने ही स्वयं भाई बरना मच्छ रेखा। |
| 10 अगर शनि उत्तम तो राजा की भाँति
जो भाई के लिए जीवन भर सहायक
होगा। | जितने तापे चाहे जतने ही स्वयं भाई बरना मच्छ रेखा। |
| 11 फकीरी में जो बुप और शनि की
नक्फ़ करेगा यानि जैसे बुप शनि टेवे
में हो। | फसला वृ. पर होगा यानि निष पर में वृ. बेड़ी हो उसी शर का मंगल का
असर लिया हुआ भरर सेंगे और अमूमन जब वृ. 1 से 10 में हो तो 9
भाई तक हो सके जब वृ. 11 में हो तो 2 भाई हो सके जब वृ. 12 में हो
अकेला ही भाई या डिर्फ़ एक और वह भी कम सुखी। |

115

12 गुरु चरणों का प्र्यान रखने वाला
गिर जाये गगर पर्यं न जाये ।

बड़ा भाई निंदा न रहने देगा मगर टेय याते के जन्म लेने से पहले उसका
बड़ा भाई जल्द ही निंदा थीर कामन होगा । मगर स्त्री के टेये में अपने
बड़े भाई को तवाह करने की कोई शक्ति नहीं ।

गंगत स्थाना नं. ।

[ऐदान जंग और इंसाफ की तलवार अवर मं. बद तो दुमदार रिताय]

बदी से दूर तो आर्णी जड़ मजबूत
यरना उसका खून भी पाखाना से कम कमत देगा ।

धर्मे करती तलवार, शह जोर हो कितना
एज त्वल्लुक गिस्से¹ हो उम्मा, काम शनि² लाभ देता हो
सनुहल भाई पर अपने तोर, पत्थर पानी में तैरता हो
बुध तीर्ते⁴ दो भर्दर खाली, बहन नरीवे बढ़ती हो
चन्द्र रुध बुध पारी सर्वी, सात चक्कर से बेठता हो
मंगत बदी पर जिस दम आता, दुमदार रिताय चढ़ता हो ।

लंके दांत 32, न खुद बोल करना ।
बक्त गुजरते पाप छनि का, बजार जंगी³ रुज होता हो ।
खून कमत ना पाखाना देये, पुतला बदी का बनता जो ।
चन्द्र रुध 2-12 सार्वी, ऊर्जा पिता पर भारी हो ।
नेंका कर वो लंगर इतने, मोत फर्हइ लेता हो ।
मर्द बायु ना बेंधक घटाता, घन बुह ही होता हो ।

1. सनुहल के कुत्ते और आम सायू का साथ भाई की सेहत के लिए जहर होने ।
2. सोहा लकड़ी मर्यानहीं या मकान के साथान आदि ।
3. शशुद्धी से भगवान यी भोर से बचाय रहेगा ।
4. जब मं.नं. 1 और बुध नं. 3 दोनों सोये हुए तो अपनी ओर भाई दोनों की किल्लत सोयी हुई ।
5. मंगत की ऊर्जा 13-15 या कुल 28 साल आयु ।

हस्त रेखा :

सूर्य के बुर्ज पर चौकोर □ हो, मंगत नेक से रेखा सूर्य के बुर्ज में चली जाये ।



नेक हातवर :

1. अकेला भाई न होना खुद चाहे वह छोटा चाहे बड़ा । दांत ब्लून 32 होने [3]। दांत भी मंगत नेक ही होता है [28 साल आयु से धनवन अवश्य ही होगा । किसी की नेकी और अपनी सच्चाई को कभी नहीं मूलता । दिमारी स्थाना नं. 8 सूर्य से मुश्तरका हनला येकने की हिल्लत और जंगी भाग्य का स्थानी जब खुद बद्द भाई हो ।]
2. लड़ाई के ऐदान की तलवार का स्थानी होगा । एजदारार अपनी शरीर रुदा उत्तम और शनि के काम और रितेवार शनि से संबंधित [एगा व्यक्ति जो ऊर्जा में तो टेवे याते के बहवर का मगर रितेवारी में बड़ा या छोटा हो खलन कोई बहवर का भरीजा दोहता, पोता ताया चाचा आदि] नफा देगे ।
3. कम से कम 28 साल अपनी कमाई या नीकरी का समय या ज्ञान अच्छे दर्जे की होगी ।
4. शशुद्धी से बचाय होता रहेगा और शनि या पाप [यहू केतु] की स्थाद गुजरते ही एजा का लड़ाकु वजीर या अच्छी हालत का स्थानी होगा ।
5. अपने भाईया और सनुहल को तारने वाला भर्तक पानी में तैरने वाला पत्थर होना, खातकर जब रंग काला हो ।
6. खुद नेक सच्चा और नेकी और सच्चाई पसंद होगा उसकी अपनी जगान का दोढा सा भी मंदा शब्द खाली न जाएगा ऊर्जा कभी पोटी न होगी ।

7. इहन शायद ही होंगी अगर होंगी तो रात्रि गमान चुत्तद भाग्य
होंगी मगर अपना भाई कर्मी शाह कर्मी फर्कार होगा । दुय नं.6 और मंगल 2 खाती ।

मंदी दृश्यत :

1. दुय जन्मे चन्द्र भान चूलहे आग ना मंजवान ।

2. नियुक्त फरद वटी से दूर उर्धा कदर अपनी जड़ मजबूत होंगी यरना बपने दूत की कांसत पायाना से भी कम होगी । मुफ्त मात

3. आदान के लिए दुमदार बिताए होगा और निकलते ही 40-43 दिन के अन्दर-अन्दर अपना राजा या प्रजा पर नुए प्रभाव दिखा देगा यानि मंगल बद की आग ऐ पर्हि हवा चलने लगेंगी घर बरवाद भाई बंपु संसारी फुजते [पायाना] की भी कांसत न देंगे शनि की आयु में माता पिता की उम्र तक भाई, ऐसा आदर्मी नेकी और अहमान का बदला कर्मी वापस न देगा । जब वटी करने का आदी होगा तो सुखेल भाई और खुद बपने लावल्दी तक नोवत होगा । अपनी और भाई की किस्त सोई हुई होंगी चाहे लाख हिम्मत करने वाला हो ।

4. घर 9-11 के लिए गुरु का उपाय, वृ. की चांजों का कायम करना और नं.7 के लिए शुक्र की पालना शुक्र की चांजों या कामों का फल मुहारक देंगे । सुखेल का कुत्ता भाई की बाल्दी का बहाना होगा और फर्कार साथू का साय शुभ न होगा अस्त्रीक वह गृहस्थी आरम याता नहीं होगा । 31 चाला आयु के बाद यह शर्त नहीं । दुय नं.3 और नं.7-9-11 सब खाती ।

5. पर्हई मौत खुद खरीद कर बरवाद होये । खुद तलवार का दृष्टि और नीचे का मालिक मगर 13-15 हद 28 साला तक नाता पिता दोनों ही की सब हालत बर्लिक आयु तक मंदी बरवाद ही लेंगे । नं.7 में सूर्य या चन्द्र या नू. के साथ दूय पापी ।

6. कुत्त के मात या खेत के मात पर गुजाय दूप में जहर होगी खुद की किस्त जली होगी और जिस्म में दूत की जगह जली होगा आलसी निर्धन दुखी होगा बरना माता पिता के लिए ननहूस भंद भाग होगा । टेवे याते की छोटी उम्र में ही माता पिता चल दसेंगे । सूर्य नं.12, चं.नं.2 या सूर्य नं.2, चन्द्र नं.12

मंगल खाना नं.2

| पर्म मूर्ति भाईयों की पालना करता हुआ, लीह लंबर का मालिक अबर बद मं. तो आस्तीन का सांप ।

पिरे नजर से भाई अपने जो तेरे
पहाड़ा दो ॥ दूनी का दो तुङ्ग को धेरे ।

बड़ा भाई खुद आप ही होगा, यरना बड़ा खुद बना हो
दहेज स्त्री से हर दम फलता, दोलत राहु से पाता हो
साय हकुमत लाखों पाते, गांठ ना अपनी नांधता हो
गुरु उपि नुप शनि हो मिशता, 6, 9वें 10-12 जो

रिजक दोलत हो² साथी उभी का, अपनी शर्त ना करता हो ।
शत्रु जहर बद मंगल भरता, लड़ाई में ज्य मरता हो ।
लावल्द कभी न दो पर³होगे, शर्त कबीला पालता हो ।
सारी उम्र गुजान हो उत्तम, शत्रु अरर ना मिलता हो ।

117

1. दो दूरी, 2×2 का जशव 2 ही होगा कभी 3 न होगा याने तरक्की की उम्मीद ना हो ।
2. दूरी को पाले तो बढ़ता जाये यरना पटता जावे ।
3. खुद अपना और सनुहल का घर ।

इस्त रेखा :

मृहस्य रेखा वृहस्पत के नुज में जा निकले ।

**नेक हालत :**

1. जन्म ऐ युद बड़ा भाई होगा यरना खुद बड़ा बनता होगा । भाईयों से उसका भाईपन न रहेगा । सौह संबर का स्थानी ज खुद बड़ा भाई हो अपने जाती खून भाई बन्धुओं को पालत हुआ, खुद कभी तंग दुर्बा भूखा ना मरेगा बल्कि तोह तंबर ह वक्त चढ़ता ही होगा यरना उसकी दो दूनी की चार की बचत दो ही रहेगी कभी चार ना होगी ।
2. खातकर मंगल, मंगल बद की उभित का हो या युं कहें कि सायियों की जलत के निष कदर भी नाय दीलत की जलरत अउत्ती हो हर समय मिलेनी मनर खुद अपनी शर्त न होगी । दूसरों को चाहे करेंगे में पाले मगर अपनी नांठ में कुछ ना होगा ।
3. सनुहल एहु की चीजें या संबंधियों से धन पायेगा । इहां का पक्का हुक्कन का इच्छुक, स्त्री का लाला दहेज फले पर कभी लायलदी ना होगी । सनुहल पर सदा वरकत होगी और वो हर तरह से सुखदायी होगे जब तक सनुहल में चन्द्र की चीजें कार्य तंबीया या कुंआ आदि कायम हो ।
4. खुद बना अमीर होगा । धन अपने आप जमा होता जायेगा । सारी आयु हर तरह से सुखी । अच्छ खाने-पहनने याला, शक्तिशाली शरीर, जलरत के नय पेटा हर वक्त हरिनंद, आय चाहे हो या ना हो, गरीबी तंगदस्ती कोहो दूर भागे ।
5. ऐसी ग्रह चाल के कक्षत अगर नुप के काम युवंदी या चीजें जो नं. 8-9-10-12 से उभित हो तो उनकी जहर से खून मंदा और इहां कच्चा होना ।
6. सुशनर्गाय दायिम निस्को फल की फिझ नहीं । केतु ला साय होगा ।

मंदी हालत :

दूसरे के तिए जाती का साम और स्वयं अपनी मौत लड़ाई-झगड़े में जंग में अवानक हो । जब नंगल बद हो ।

मंगल द्याना नं. 3

| सोगों के तिए फलों का जंगल मनर अपने आप की माया द्वार आएम में सहज कदम् मंगल बद चिदियापर का झेर् |

झुली सर कतम कट्टी तलवार तिरथी
पड़ा यम ना जालिम पकड़ तेग निस्की

एतचार मंगल न तीने गिनते, नेक मिला¹ बद नगल हो
चन्द्र रथि १०.॥ साथ में, नेक मंगल खुद होता हो
अबर मंदा ता यहू टेये, सुखी गृहत्वा होता हो
शनि टेये मै ७ जन होये, मोत चंनाए बचत हो
नरम तर्वायत एकदम बढ़ता, मोत आई तक रोकता हो

1. यजा परना फोरी ठनठन।
2. बाकी तीन बचने वाले मकान का भाग्य होना।
3. अब नुष नं. ३ और नुष नं. १। को नेक हो होकर रहना पड़ेगा।

हस्त रेखा :

मंगल नेक पर चौकोर या गृहस्य रेखा मंगल नेक के अन्दर अन्दर स्थित हो।

नेक हालत :

1. भाई-बहन जन्मर होंगे चाहे छोटे चाहे वे उनसे बढ़े हों। असल में मंगल का असर झल्की होगा। लोगों के लिए तो वह फलों का यंगल मगर अपने लिए चिड़ियाघर का पिंजर में पकड़ा केदी झेर होगा जिसे अपने बहादुरों का पता ना होगा तोकेन जब उसके युह खून लग जायेगा तो वह फिर गर खून बढ़ने से न ढेरगा खासकर जब वह खुद बड़ भाई हो। अबर मंगल नेक हो आरजुओं को तारने वाला शिव जी की तरह भोला भण्डारी। अबर उसकी बेठक का मकान झेर दहाना हो तो वह व्यक्ति लड़ाई की तदर्दार का बुद्धिमान पुल्प होगा। नरम तर्वायत हो तो तरक्की दिन प्रति दिन हाँचे जाएगी अपु ९० साल होसला और नजर उत्तम और तीन बचने वाले मकान के भाग्य का स्थानी होगा। झेर समान हाँच और नुर लंगों के जारने वाला होगा मगर सांसारिक व्यवहार में नित्र और सहायक होगा। सुखल अभीर होगे या उनसे अनांत हो जाएंगे। उसको धन का हिस्सा देंगे इसका अर्थ यह नहीं कि उनका लड़का नहीं होगा तो धन देंगे ही धनों इने पर धन देंगे। वह किसी पर ज्यादती होते नहीं देंगे उकेगा। [दिनांग खाना नं. १७ व्. से मुश्तरक अदला व मुचिक निकाज़]

2. यह का टेवे मैं युह अबर ना होंगा सुखी गृहस्य होगा।
3. सुखल अभीर होगे और दीलत देंगे।
4. मोत बीमारी से बचाव, अच्छा त्वात्स्य, मकान धन में हर तरफ सुखी और शनि का उत्तम फल होगा।

बृहस्पत १०, सूरज चन्द्र नं. ७-६-१। हो।

बृहस्पत नं. ९।

शनि नं. ९

मन्दी हालत :

1. चालाक धोखेबाज होगा। खाना-पीना लाभकारी चीजें हैं इस दम का स्था प्रधेश की कोल का ग्रादमी होगा। फौंकी ठनठन ऐपाश गरीब शाह होगा। उन्ह ९० साल उन्न कदमा [मनहूस हालत] अगर अकड़ खा गए तो मृत्यु बीमारी से तंग और कर्ज के बोझ के तर्से रोता हुआ। निर छोटा, फेट चोटा, साना-खरब होगा। नर संतान की नंदी हालत होनी निसका नर्ताजा भी भला ना होगा।

2. संचयियों की मोत से दुखी मगर ब्रह्मन लिए उत्तम होंगा।

जब मंगल बद हो या बद हो रहा हो।

क्षाप्त : मंगल नं. ३ का बुर्ज चर्चे से भरकर इतना माटा हो जाए कि मंगल शुक्र व्. के बुर्ज जुदा-जुदा न दिखें।

व्. नं. १।



119

3. जरे मंगल नर गा गंगा नो तो गा ऐसे गुड़े गार के मन्दे
पर्याम भगर आही स्वी ने यानदान को मदद मिलती रहे।
इर तरफ गन्दा छात ।

गृ. गा गुड़ या चन्द्र नं. 7-9-11

4. पर वार में माती घरायियां भगर कुण्डली वाले के खानदान को
गदद मिलती रहे गा देता रहे जब शनि नं. 11 ऐ तो गुनरत
गी तरफ से धोत आदि ना होशी ।

बुध वा शनि नं. 3-9-11 या बुध शनि दोनों नं. 3-7

उपाय : हाथी दांत यायम फरना सहायक होगा ।

मंगल खाना नं. 4

|जलती आश, बदी का सरदार जलाने पर आए तो मर्द माया के सुमन्दर भी जला दे।

एकड़ होत्ता सब मुंगवत गो करतं
भगर लेव उटे हो हिन्मत ना हो बनतो ।

चन्द्र मुद्दी यंद वाहर नप्टी, एवि छठे खुद बेठा हो
बुध केतु 8-4-3, मदद एवि ना चन्द्र हो
गुग्गागर भरा जो गर्वाता अपना, 28 भस्त्र जो बरता हो
6वें चन्द्र बुध गाता गन्दी, पर्यावर पापी 9 गन्दा हो
पिंगी जगह 8-4 या 3 गंगत देवे गुरु भेटा हो
लपकड़ी गुश्य ये आग बनाना, यास शनि को होता हो
देवा सामने शने के जास्ता, कोनो मंगल पद फूलता हो
पढ़ना तित्ते को शक्ति दृष्टि, मालिक नजर शनि होता हो
पहाड़ फटे जब नजर से उत्तरी, अतर नजर बद करता हो
राहू होगा दुनयाद दोनों की, बुध भला हो जब कोई दो
गुरु एवि 8 चन्द्र बेठा 4-9-3-11 जो

मदद ग्रह नर चन्द्र निलती, बदी मंगल ना होता हो ।
मंगल बदी मंगलांक हो जलते, आम सुमन्दर भन्दे हो ।
माता नानो ओर साह जनानी, भोत चारों दी गंगता हो ।
अप्स 12 बुध टेषे भाई, ऐट जला खुद दुखिया हो ।
बाली भरो ! बुध केतु आये, जहाँ मंगल बद बनता हो ।
मर्द सुवाकर चूल्हे जलाना, राष्ट्र मंगल बद करता हो ।
नजर जैवी दो मालिक होता, आकाश पाताल में देखता हो ।
राहू उचारं नेक मंगल को, मीत ताद्यों से देखता जो ।
बेठे वित्तं अकल जो करता, मंगल देखने की शक्ति देता हो ।
नेक हात्त भै मदद दें शिवजी, विष्णु पातन खुद करता हो ।
उत्तम असर दूय चार देगा, दांत तुवह पानी धोता जो ।

1. 3-4-8 रे मंगल होने वाला पर छोड़कर बाकी किनों दो घरों में ।

हस्त रेखा :

ऐज धन रेला या पितृ रेला चन्द्र से शुरू होकर मंगल नेक पर समाप्त हो ।

नेक हात्त :

1. मंगल यर ना होगा चिल्क जहर के बदले दूध का उत्तम असर
देगा । जगहत या गान्धूल जवाच देने जी दिमात या मालिक
कर्वाता भगर होगा दिल या साफ और युच्चा होगा ।

- 
1. कोई दो पानी इकड़ठे हो । मंगल भनि राहू या शनि
केतु । या दो चाहग मुश्तरगम ग्रह । मंगल बुध केतु ।
 2. चन्द्र या शुक्र अफेते या मंगल के साथ मुश्तरका द्याना
नं. 3-4-8 में हो तो खुद अपना-अपना असर देखक
युछ ही और देखा ही हो गर मंगल को मंगलांक
या मंगल बद ना होने देंगे ।
 3. जब चन्द्र द्याना नं. 1-4-7-10 से बाहर किसी जगह
नप्ट दो रहा हो या गूरज नं. 6 में हो या दोस्त ग्रह
गृह चन्द्र वृहस्पति नं. 3-4-8 में ना हो यानि

मिन ग्रह |गुरु, चन्द्र, वृ.। मंगल को मदद दे रहे हों
तो मंगल बद ना होगा । नीचे तिर्या हालत में मंगल को
सूरज की मदद ना होगी ।

1. जब साना नं. 1-8 के मंगल के साथ सूरज ना हो ।
2. जब खाना नं. 7-10-12 में सूरज अकेला हो या गुरु नं. 5-9 के साथ केतु हो या गुरु नं. 6-12 के यह हो या सूरज नं. 7 के छय शुक्र हो या सूरज नं. 10 के साथ शनि हो या सूरज नं. 12 के छय शुक्र हो ।
जब मंगल नेक हो ।

2. भाई की स्त्री, दवी दीलत शुभ होगी । वडे भाई की ओर य
उनकी ओलाद पर कोई बुध असर ना हो ।

मन्दी हालत :

1. मंगल भरे समुन्दर ना लेख पर क्य जलता
मात्र शिकम के अन्दर जो पांव तू न घरता ।
2. 32 दात याता तो उप वचन कह कर किन्हों का उप करता । मधर मंगल बद या मंगलीक तो न्यर से ही तबाह करता
होगा । उजडे जंगल में उखड़े हुए या कटे हुए सूखे वृक्ष की लकड़ियों से चूल्हा यरम करन जाने क्य काम होना मधर बरे
घणने से मूल्यान और आवश्यकता याते पुरुष को काटकर उसकी सूख्याई नई लाग्ये से भट्टी जलाना मंज्जल बद का नाम होता ।
3. मंगल बद या मालिक ऐसे पर में जन्म लेना जहां कि एक दो पुरत पहले कोई मुरुरी पूण वृहत्त्व |वृस्म मुन्| छलत
सोना या शाहाना हो चुका हो और हर तरफ पूण हण का लायरत और हर तरह से भृतिक को न्यर इनायत हो, जिसे
ऐसा बदनसीन बरवाद कर सके । उजडे बानदानों और धीरुन घणे में कभी मंगल बद या मंगलीक पैदा ना होगा । देता व्यक्त
अमूमन सख्त कद्या स्वभाव, झकड़ खां, ऐपाँ त्वभाव, कन अस्त हुआ करता है । कोताह अन्देश और तकरीबन ज्ञारी जाय
मुत्तमी में गुजार देगा । खुद निया फजीहत जारी को नज़ारह करने वाला होगा । मुंह प्राङ्कर हरेक को उसके विताफ पा
ऐ की बाते सुना देगा ।
4. बेंगार ऊंट की तरह गर्दिया का घूमने वाले बुधे नजर वाले, कात्ता काना लायल्ड आंख का नुस्ख चंचल चन्द्र । हर तरह
से मंदा हर समय जलती आग और बढ़ी का उत्तरार होगा । समुन्द्र को आप से जला देने वाला या रेती आग जैं पाने से
तुमने की बजाए सारे ही सारे चुन्न्द्र की तह तक को जला दे । खुद मां सास नानी रेती की आयु उक्क भारी होता । भाई
|वडे| की स्त्री दीलत और युपे पन पर अपनी 28 साल झनु तक हर तरह से मंदा असर देगा । बन्द किसी कारप से वडे
भाई जीवित हो तो यह लायल्ड या मुर्द के बहवर तंग होने ज मंद सेहत के स्वामी होंगे ।
5. मंगल बद के प्रभाव को नीचे तिर्या हालते और भी मंदा कर देंगी :

 - [1] जब मकान की तह जमीन के 8-18-13-3 कोने हो या मकान के अन्दर तहखाना बंद किया हुआ या तहखाना फाड़-
कर बुएं के साथ मिलाया हो ।
 - [2] दयरजा दक्षिण में हो या वर से याहर निकलते बक्त ऋष दायें और पानी बायें या मकान रिहायज के ऊपर वृक्ष का
साथ या कीकर या देरी का वृक्ष चेहन में या पिछली दंवार के साथ लम्बा पीपल का कटा हुआ नंद मुंद वृक्ष जारी या
सामने साथ ही लगता हो ।
 - [3] पर के दायें बायें भद्रमूने दी भट्टी, इलगार की उकान की चिर्क भट्टी या आप के काम या नक्कल के अन्दर कहु या
साथ लगता कमिलतान हो ।
 - [4] संतान रहित की जगह लेकर बनाया गया नक्कल या कुएँ चाहं पानी वाला या सुशक, पर उत डालकर बनाया नक्कल जारी

121

या एतते वो छतकर बनाया गया मकान हो या ऐसा गकान जितने जन रहते से आकर हवा रीधी टकराने वाली हो या पर ये निकलने या बड़ा रात्ता दर्दिश को हो ।

6. जब भी ऐसाग स्वभाव हो कम अकल होगा, उम्र भर गुलामी में गुजर क्षमेकि वह कांताह अंदेश होता हो ।
7. नं.४-४-३ मूर्य चन्द्र वृ. ना हो या सूर्य या चन्द्र या वृ. की मदद ना हो और मूर्य वृ. चन्द्र भी हो सेकिन अगर शनि ये केतु [गंदी दालत] या हाय हो जाये तो भी मंगल वद ही होगा और मंगल वद मंगलीक की आप और पर होमी निससे शर्मार पर्न और पानी के समुन्द्र की तरह माया दोलत के सब छजाने जलते जाये तुप पापी उहों की धीरे, संवंधी या काम । तुप से संविष्ट थोर पापी ग्रह बरचाद हो या करे । जब अकेला नंगल हो और नं.४-४-३ में से किसी एक घर में मंगल हो और वाकी दो में से तुप केतु हो तो मंगल वद होगा निचके समय घोरहीन ओरते बार अपना ही कपीला बरचाद करे ।
8. हर खाना नं. के लिए मंगल वद की हाय की शक्ति

किस्म मंगल वद खाना नं.

प्रश्नाव

मंगल वद

1-8

अपनी जान और खून संबंधियों पर तुर्ह होगा या चिर्फ धन दौलत पर मंदा हो । केतु मंदा हो खाना नं.४ का गंगल वद चिर्फ धन दौलत के मैद स्वन्द दिल्लायेष दोनों दूरों पर मंदा ही अपने और दोस्तों संबंधियों पर एक ही समय मंदा होगा [सिंहत रेखा मंगल वद को]

मंगल वद

2

अपनी जान और खून के संबंधियों को व्यक्तों की जानों पर मंगल वद, जब शनि मंदा हो ।

मंगल वद

5-9-12

अपने और सून के संबंधियों की जानों पर नंदा हो ।

मंगल वद

5-9-12

दूसरों पर मंदा हो जब तुप नंदा हो ।

--

6-10-11

दूसरों पर मंदा हो चिर्फ धन दौलत के लिए ।

मंगलीक

7

दूसरों की स्त्रियों की जानों पर मंदा, जब शनि मंदा हो ।

मंगलीक

4

अपनी ही स्त्रियों [मां, बास, जनानी] पर नंदा जब शनि मंदा हो ।

9. मंगल नं.४ का मंगलीक माल व जान व धन पारेवार दोनों तरफ से नंदा जहर होगा मगर चिर्फ एक ही घर के लिए या जाहेर मर्द चाहे स्त्री का घर उजड़े मगर एक ही घर बरचाद हो । नंगलीक के बज्जे रड़वा रड़वी की जोड़ी होगी । मंगल वद या मंगलीक [सिवाय ४-१२] या अपनी 28 साल आयु तक मंगल नं.४ यत्ता 20 जाला आयु तक अपने छोटे भाई और मंगल 12 वाला 28 साल उम्र तक अपने बड़े पर मंदा होगा ।

10. 70 साला उम्र तक अपने वंश [जिल्ले जन्मे] पर नंदा उरके यद 70 जाला जायु के आने के दूसरे वंश [वाप दादा के संवंधी] पर मंदा हो आखरी उम्र में अंधा और सेहत से दुखों होकर मरे ।

11. तुप तापी चाची होगी । अपने घर की जहर बरचाद करती होगी जो प्रायः कोई तुप नंतु ४ [हाय पर मंगल के पर्वत ४ पर सेते खत] होगी जो ये तुप होगी ।

12. बरचादी के लिए अपने ही घर की जहर होगी जो प्रायः कोई तापा चाचा होगा । शुक्र व नंगल से कोई ४-४ में हो ।

इन दो हालतों में देवा चाची ताई या चाचा तापा की आर्शिवाद लेते रहना नदद दे ।

13. मंगल वद के वस्त एक तरफ मंगल और दूसरी और मंगल की इन्विट में नह ग्रह हो तो एकोकी घर मंदा हो यदि स्त्री मंगल हो तो स्त्रियों को बरचाद करे या खुद टेये वाले पर मंदा यदि उन्होंने हालत में दूसरे या पापी तुप पापी चाजों का फल बरचाद हो या बरचाद करे ।

122

14. अपने लेह में गूर्ही उड़ी तग हात भाँझो ने जलग दुखी, जिस वृथ के नीचे रेठे यह जड़ से उखड़ जाये या जहरीले साप की तरह ओरे को बताद करे। आवाज ढांस को तरह बुलन्द होनी।

शु ग्रहो का साय | हाय पर नंजत का चिन्ह हो

15. ऐटी उम्र में माता की उम्र तक मंदा सर्वत हो जबान की बामाई और चोरों का शमु होना।

युप या चन्द्र नं. 6 शनि के साय नंजत बद हो
| उम्र रेखा चन्द्र के बुर्ज पर झाँख्तर में विकोष बनावे।

16. अपने पर्वगार के लिए मंदा धार्षित हो।

पापी नं. 9

17. दुखों से मर्यादा देवकूफ तग, अंदर के दून से तड़पता फिरे।

युप 12 में

18. कापर, दरिद्र हो

दृ. नं. 8

19. चोर, फरेवी, चूल्हे की भाति मंदा हात

शनि नं. 1

उपाय : हर रेज पानी से दांत साफ करना चन्द्र का उपाय या बड़ के वृक्ष के दूध में मीठा छर भीती को टुर्ड मिट्टी का तिलक पेट की बुखारियों को दूर करेगा। आग की घटनाज्ञ पर छत पर छाँड़ की बोरियां पोड़े के मुंह में देसों छाँड़ शहद ऐ निट्टी का बर्तन भरकर शमशान में | लावल्दी के उन्न या बोत्त संतान की बरबादी। मृगछाला लंबी बीमाई से पुटेकाह चांदी व ज्वेलर गहर्द | कुंआ घोड़ा चांदी। व. | शोना बुलुर्न सावूर्न को कादन करे। चिंडे चिड़िया को मीठा डाले। हस्ती दांत घर रखना मुख्यक होना।

मंसर खाना नं. 5

| रथ्यो का नाम दाद, यदि बद हो तो शरहती जद्दी धर ऐ बाहर लगायार रहन्त, लावल्दी ही देग।

Free by AstroStreet docto
मंह सुख्य से सागर जहाजों का बेड़ा

खुरक दम में करदे, न गहवूर तेग।

वाप दाद¹ यो रईस होगा, नीद पूरी² न चाता हो

योग दृष्टि से ऐसा बदला, नजर तबाही बद का हो।

नेकी बड़ी 5 ताकत मिनते, चन्द्र भला नेक शुक्र हो

3-9 चाहे दुश्मन रेठे, बाहमी भद्र ही कत्ता हो।

तकलीफ पीछे आएग हो मिलत्य, जन्म³ रे बढ़ता हो

हर रिरहाने पानी रखता, यह मंदा नहीं होता हो।

1. जब नं. 10 खाती हो

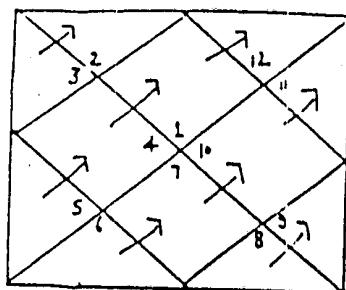
2. जब नं. 9 और 10 में दुश्मन हो।

3. जब मंसल जागता हो या मंदा न हो और नं. 10 खाती हो।

मंसल के शेर की दृष्टि शेर से ढंग दुर जनवारों की तरह सब ग्रह बुर्दी या मंदा असर करने के बजाए अपनी दृष्टि बदल लेंगे मगर बाहमी दोस्ती दुश्मनी बहाने होंगी और चन्द्र शुक्र सदा नेक हो फल के रहेंगे। अपनी दोस्ती दुश्मनी सब की बादल्लूर होगी।

हस्त रेखा :

मंसल नेक से शाय जब संहत रेखा को काटे।



* वाहगी देस्ती दुर्गनी सरा
नेक हालत : की बादसुर दोगी।

याना नं. 3 के ग्रह अब मंगल के आधीन और खुद मंगल नं. 9 के ग्रहों चाहे मिश्र चाहे शुक्र पर भेहरवान होगा 3-5-9 रव के ग्रह अब आपस में सहायक होंगे और शुक्र व चन्द्र चाहे टेये में कैसे ही हो नेक फल देने। मंगल की ओर दर्दी हर दो कामों के लिए पांच गुणा शक्ति होगी। नीन का वृक्ष निर कदर दूदा होवे उससे ऐसा कीमती पाना निकले हजार दर्वाइयों के काम आये इसी तरह ऐसा व्यक्ति जितना बूदा जला अमीर होता जावे।

2. स्ट्रेटिक कारंगार में न्याय प्रिय होगा जिसका फैलता खाना नं. 3 से होगा दुर या खानदानी खून हकीमी या छक्कर का जल्दीकर होगा।
3. ट्रैट बदली हुई होगी रिफ उस वक्त जब कोई भी ग्रह मंदा होने या बुध करने की हालत पर हो रहा हो, मस्तन चन्द्र अपने पानी से तुफान लाये या कुंआ झर्क होने लगे तो 8 का चन्द्र नं. 5 मंगल के समय अपने बुध असर खाना नं. 9 अपने माता पिता पर करेगा उस वक्त जबकि यह खुद अपने बड़ों के नाम पर [श्राद्ध] दूध की खेण्ठि बंद करे तो उर मातृ पिता को दमा मिरगी सतानरहिता मिलेगी।
4. यह विद्यायान तथा एतान वाला होगा। स्त्री और रंतान युज छाना। उच्चे चुनुर्ख चाहे कैसे हो मगर यो और उच्ची संक के लिए हर गुजरी हुई पिछली पड़ी शुभ और कम्प के बाद आहम देने वाली होगी। रंतान नेक और सुख देने वाली होगर व्यात रहे कि सुख की नदी खूबसूती पर ही ना चर्च होती जावे। रंडों का बाप और दादा होगा। [बच्चे पोते रहे।]
5. रंतान के जन्म दिन से बढ़ेगा जब मंगल जागता हो या मंदा न हो यानि खाना नं. 9 में कोई न कोई ग्रह जल्द हो या बाई जल्द हो या नं. 10 खाली हो।

मन्दी हालत :

1. मंदे असर का वक्त जब कभी होगा रात होगी जिसकी निशानों केतु से चक्षेष्ठ चीजों से/पर होगी। शहरती नजर से तनाही करता होगा।
 2. जाग का डर खत्था तथा नजर का डर होगा। संतान का मुत्त कम होगा। सफर वले तगा रहेगा। औलाद को झटाया रखना। माता पिता के भाई भन्यु पुल्यों की भौते अपने भाई की संतान की जीते मंगर स्त्री लड़की भाभी या किसी भी हु जाते की भौत ना होगी। करीब संघियों पर बुध असर हो। अपने जद्दों घर घाट से बाहर लगातार रहना लावल्दी देगा।
 3. तेह नहूम ही तेरे जहाजों के देह की तबाही का कारण होगा।
 4. एत की पूरी नीद नर्सीव न होगी जिसके लिए एत को रिरहाने नं. 9-10 के शुक्र [बुध केतु] पर्ना रखकर सोने से मैं बद और राह की मंदी शहरतों से बचाव होता रहेगा।
-
1. अठाय : एतान का हर आठ अंक या अठाय पर गुजर जाना यानि 8 दिन 8 साल और आखरी हृद 18 यात की आयु पर गुजर जाना।

124

मंगल खाना नं.6

| तरहेमे की बोलाद सन्धिया साथू अबर मंगल बद हो तो फ्लाई।

बजे नान तड़के पे जाना जो शारी।
मुन देर बत्ती ना उस जगह पे आती।

न कभी! बोलाद माया, ना ही दुखिया गाय हो
यही हो शिव शम्भु यत्ना गिर्हि कोठे लगा तम्भु
यवि बुधा चाहे टेये रद्दी, असर भला यो देता हो
खुशी संतान ना हरणीज फलता, ना ही दिखावा उत्तम द्वाँ

भाई बन्धु होये युधिष्ठिर, बढ़ता जिस दम जान हो।
केतु शुक्र नुप चन्द्र जाती, मंदा जानो पर होता हो।
शुक्र भला हो ? हो उम्दा, फलती नस्त तंतु पुर्णी हो।
जित्म में उसके सोना आता, दुखड़े बड़े और मातम हो।

1. जब जागता तथा कायम हो।
2. शनि [जाती गृहस्थ] नुप [भाई की मदद] नुप चन्द्र द्वाय संतान [केतु शुक्र] चाल चलन का उपाय नदद देगा।
3. जब केतु मंदा हो तो 34 साल उम तक
4. मकान गिरा कर तम्भु लगा दे।

हस्त रेखा :

मंगल नेक से रेखा आयत खाना नं.6 में उमाज्ज हो।



नेक हालत :

1. हिम्मत से भय हुआ पाताल और पानी में भी आर जला देने की शक्ति का स्थानी, कबीले का रस्क सुद हांच तथा चंगाई न्यार्थप्रिय हो याथू इन्याई पी तरह अपने आप माने आत्म अफेला ही घर्मवीर होगा।
2. सूर्य हो अब टेक में कही भी केला भी बेट हो उत्तम फल देगा। नुप के कारंबार दोत्ती तथा तिल्याई की विद्या, उन विद्या, व्याख्यान आदि का शौकीन व नस्ताना होना। कर्जन में तरबार से अधिक शक्ति होगी जो लिख देगा वह निटने पर भी न मिटेगा अपने चाल चलन पर पूरा कानू हांच। एक का अब नं. 12 में कोई मंदा असर न होगा नगर केतु शुक्रों ही होना।
3. जिस दम खुद बढ़ेगा बड़े भाई और दूसरे उम्भों बढ़ेगे। उचून में घर में दाने अनाज भरने की कच्ची निझटी को क्षेत्रों 14 साला आयु तक कायम होगी। यत्ना वहां निरु कंव्र लगा तथा तम्भु जाती गृहस्थ के वास्ते लड़कियों की पूजना भाईयों द्वाँ नदद माता द्वाय नुप की पूजना याने लड़कियों और केतु बोर जनू से बचाव का उपाय सहायक होगा।
4. पोते पहलोते देख कर मेरे तीन पुश्त तक बोलाद को बरकत भी परियार बढ़े। शुक्र भला या नं. 7 उम्दा या नं. 7 में शनि नुप केतु हो | गृहस्थ रेखा अंगूठे की तरफ शुक्र जावे।
5. संतान की कोई कमी न होंगी यद्यक संतान उत्तम ही होनी 24 साल संतान होती रहे।
6. संतान के लिए मेरे मगर गुरु तूर्प नुप उत्तम होने पर उत्तम का परिणाम नेक होगा। येशक केतु नं. 8 शनि नं. 5

मन्त्री हालत :

1. खुशी के बाजे से मातम की भावाज क्यू अन लर्ग निस जगह बेठ कर संतान के नाम पर खुशी औं महफिल उत्तम द्वाना वर्दी, चन्द्र दिन के अन्दर-अन्दर जातम के अनू बहाता होगा। उसके भाई उसकी मार्ता हालत में उन होवे अबर किसी तरह से

125

अच्छी हालत के हो गए हो तो भारी हानि देखे अतः उसके भाईयों को चर्चाएं कि यद मंगल नं. 6 याले भाई को कुछ कुछ देते हैं जिसके बाइ उनका बचाव होता रहे। अगर वो भाई ना लेंगे तो चलते पानी में ऐसी चीजें जो कि ये जरे चाहे बहा दें।

2. केतु [मामो रंतान] शुक्र [स्त्री भाग मगर स्त्री नहीं] बुध [लड़कों बहन बुजा] चन्द्र [दूध याले पशु याता] केतु बुध शुक्र चन्द्र चारों द्वारा गुणों गुण संबंधित रियतेदारों की जानों पर मंदा होगा। त्वयं मागङ्गातु नर संतान की कमी करने याता। मामो दुखी य बरवाद तरसने की ओराद।
3. नर उंतान रिक्फ एक। लड़का हो मगर लावल्द न होगा। गुरु सूर्य वा बुध मंदा हो।
4. 34 चाला आपु तक उंतान जरूर कायम होगी उंतान की खुशी ननाना उंतान की मंदी हालत की निशानी होगी। [पहला लड़का शापद ही कायम रहे] अतः मिठाई की जगह नमक की चीजें बांतना शुभ होगा। उंतान के शरीर पर सोना डालना भी उसके लिए जहमत डालना होगा। यज तक शरीर पर सोना न डालें, वह सोना कमायें। सोना डालने पर सोने को खाक में उड़ायें। केतु मंदा हो।
5. बहन भाई कम होगे, दुख का बढ़ना हो। बुध नं. 12
6. माता छोटी उम्र में चली जाये बुध नं. 8, नूर्य चन्द्र की मदद न हो।
7. पहले नूर छोटी उम्र में गुजर जाये याद में गाता पिता श्री गुजर जाये। बुध नं. 4

उपाय :

- [1] बुद अपना गृहस्थ मंदी हालत में होने के समय शानि का उपाय।
- [2] भाईयों की मदद के लिए लड़कियों की पूजा तथा आश्चर्याद।
- [3] उंतान के लिए चन्द्र [माता दूध चांदी] बुध [बुजा लड़की बहन फूफी झाँची] का उपाय।
- [4] चाल उंतान की नज़रबूनी [लंगोट का यतीपन] से निर्घन, केतु दरवेश, निर्दटी उड़ती और तूफानी हालत के घर जन्म का होते हुए भी उम्मय का शंकर बहादुर और शशुओं को पांव तत्त्व देयाने की हिम्मत का प्राप्ति होगा।

मंगल खाना नं. 7

[मीठा हलवा, विष्णु पालना बगर बद त्ये भन्हस्।]

मिलेगा उभी कुछ, जो दरकार पर में
शर्त रिक्फ इतनी दुराय न तत्त्व।



- शान मकान नुब कुछ उत्तम, पन दौलत परिवार ही उन सब का सब ही रद्दी होगा, तुष्टि² मिले मंगल से जब।
बुध शानि 6-7 वेठे, मीठे पराई लेता हो युग्मकद भत्तोजा³ बहनों फिनते, तुल्म सोहनत ना उपाता हो।
शुक्र गुरु काँई हो पहले, एज हक्कमत बढ़ता हो गप्ति विद्या प्रवीष निन्ते, खून बजाई होता हो।
1. मंदा।
 2. शान का मकान बनाकर गिराते जाना याला उपाय सहायक होता जब बुध 1-7-8 या किसी और जगह मंदा हो व्यापार विद्या बहन भाई का आपती संबंध।
 3. नेफ अर्ध्य में।

126

इस्तरे रेखा :

मंगल नेक ये गृहस्य रेखा जब शुक्र में बल हो मंगल नेक रेखा मुख में जा निकते ।

नेक हालत :

1. भाग्य की तरह तोनने वाला मुख देवता धन में अगर देगा तो बेगुमार धन दोलत वरना याक ही उड़ना । अर्थ यह है कि अप्यम दर्जे का जीवन नहीं होना ।
2. मंदा हस्ता भीठी ऐटी पकवान से अधिक उत्तम जीवन होगा । अगर उत्तम हुआ तो मच्छ रेखा, नहीं तो संतन रहत ही होगी । भाई के भोल्हद की पातना मुवारक होना । इसी सुख पूर्ण छोटा बर्जीर धर्मात्मा नेक नाम दुब उम्म देवे को दाढ़व बयाकर साहस और मदद देकर हसने वाला हो ।
3. विष्णु जी की तरह पालना करने वाला, सर्वज्ञ न्यायप्रिय होगा मगर सोहबत का अवर कभी जाती न होगा उन हक्कत बढ़ता होगा गणेश में प्रवीष्ट होना और बजौरी दून का संबंध होगा । जागीर और दोलत की दरकत होगी ।
4. जिस भी किसी चीज की इच्छा हो वह एक बर तो जर्व गुरु या शुक्र कोई नहीं । मिलेगा मगर दूसरी बार या बारावर मिलने की कोई झर्त न होगी ।
5. मुरु शुक्र कोई घर जब पहले, गठ लम्बी जानेहे का योग पूर्ण द्युद मंगल करना, दून शादी या बजाहे का ।

मन्दी हालत :

1. मं. ग्रंथे मुख कुछ उत्तम, धन दोलत परिवार ही रव

रव का उन ही रुदी होगा, मुख निते मंगल रे जब ।

जब म. बद हो या मुख नं. 1-7-8 या किंचो और जगह मंदा हो ।

स्थापा : मंगल के मुर्ज नं. 3 से रेखा मुख के मुर्ज नं. 7 पर जा निकते या तिर रेखा आंदर में दो छाँड़ाओं में हो जाये ।

2. मनहूस मंदी हालत कोइ से कन न होगी बाल्हकर जब शुक्र खाली कूए का साय हो या मुख की चीजों का व्यापार और मुख उपयोगी द्वारा या साय होने लगे । वहन जर्द देवा हो और उपर्युक्त वहन का साय ही रहना टेवे वाले को उत्तन रहत है उपर्युक्त वहन का साय नदे प्रभाव का दर देगा । और मुख की मंदी चीजों का साय नदे प्रभाव का उत्तर होगा । मसलन विषया वहन या खाली या भतोगी भाषी उज्ज्वल, दोहती, पोती का साय हो रहना । कलन या उचकी मुस्त नितो निब मकान में चमगाड़ या चोड़े पत्तों के वृक्ष, घोहर, तांता या भेना, खुरक फूस कलंग गिरी का कान, उर्फ़दी का काम दूसरी चीजों का ठप्पा, भोड़ी जाय या बकरी, खाली बांध पा शुश्रक पाय के अन्नार, शरब कमाब या भूत की द्युराक सीढ़ीया बार बार बनाकर गिरना, दोलक या तबले का हर उम्म वजना उत्तर अपने शोक में, एवं मंदे फ़रेणाम देने ननर द्यने का उपाय द्वारा छोटी सी दीयार बनाते रहना सहायक होगा ।
3. दून मंदाया जिसका सीधापन ग्रागर डाक्टर या हक्कान हुय दे तो तन्दूर [जली हुई ईट रखने की चीज] और दहो की तस्जी [शुगा] ठीक ढग से प्रशोष करना सहायक होगा । ग्रापन में इफ्फ़े रहने के उम्म विद्या वहन को नुवह मीठा देकर कान गुरु जब कभी वहन आये मीठे में जाती ना जाय । ग्रापन में इफ्फ़े रहने के उम्म विद्या वहन को नुवह मीठा देकर कान गुरु करना सहायक होगा । पर में दून शादी कामन ल्यने में परदार की दरकत होगी ।
4. जोत पराई अपने हिर पर लेगा । पूरा मंगल घर लगर कर्माला दूध रखने 6-7 में पत्तर [पासने वाला] होगा । भजने अपनी भजन की नदद की कीव होगी ।

127

मंगल खाना नं. 8

| मंगल का फंदा, बत्ते की जपह |

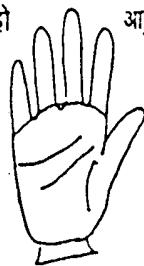
वचन देया देती जो नेहों का तुम्ह को ।
बुझे आग युद ही जला देती घर को ।

शात्रा मंगल ¹ हे मंगल उत्तम, अरार शुभ देता हो	तीन चौथे 9 पहले चन्द्र, जहर मंगल ना रहता हो ।
शुभ मंगल ना इस घर भंडा, कायम अंधेरी कोठरी जो	तंदूर मट्टी हो जब घर जलता, बचता बाकी ना कोई हो ।
चीज मंगल ना मंदी कोई, मंद मुसीबत मुप से हो	मुप लेगा जितनी जल्दी, उतना बुह बद मंगल हो ।
इस्तकलातं मंट हो पन्ना, जिस्म भेहनत पूरी करता हो	शक्ति शुभ आक्रमन थेके, बेता चन्द्र चाहे कैसा हो ।
मालिक टेवे ना मंगल भंदा, भंद करीबी खून पें हो	आयु दोलत खुद जपनो लम्बी, जलता जलाता औरो को हो ।

1. खाना नं. 2

हस्त रेखा :

नंगल नेक से शाष्व मंगल बद को ।



नेक हालत :

1. दिनांक खाना नं. 8 शनि से मुश्तरका पक्के इस्तकलातं [जो कह दिया जो करे] का पुल्प होगा । परिणाम चाहे जय हो या पापन्य उसका जिस्म पूरी भेहनत करने का आदी होगा । उसका शशु चाहे कितना ही आप से भय हो, शशु का हमला ऐसने जी पूरी शक्ति का स्थानी होगा । स्वयं न्यायप्रिय स्वभाव का होगा ।
2. मंगल का फल नेक तथा उत्तम होगा । मंगल दोजा हुआ या खाना नं. 2 खाती हो या नं. 2 में मंगल के निचे ग्रह चन्द्र बृ. हो ।
3. मंगल बद ना होगा । नं. 1-3-4-8-9 में चन्द्र हो ।
4. अब दुय मंगल दोनों ही स्वरे नेक फल देंगे जब तक जद्दी जब दुय नं. 8 हो । मकान के आखिर पर अंधेरी कोठरी कायम हो ।

मन्दी हालत :

मंगल 8वें झड बरस तक, फर्क छोटा भाई गिनते हैं लाख दुर्जन्मत दर्ढ़ा है करता, अंत बुह नहीं गिनते हैं ।

1. टेवे जल और उचके छोटे भाई की आयु में अमूमन 8 या चार नस्त का फर्क होगा । कई बार 13-15 साल तक भी छोटा भाई नहीं हांता । कई बार तो छोटा भाई होता हो नहीं । छोटे भाईदों को देखी हो गरक करने वाला संभित हो । आने वाले जड़दों को रोके और वापिर भेजें । अगर उचको अपनी 8 वर्ष की आयु से पहले या अपने से छोटे की 8 वर्ष की उम्र के बाद कोई और भाई जंयित हो तो सब के लिए दुख या मातन की निशानों होने ।
2. मंगल या दुय असर टेवे वाले पर न होगा । जब तक मंगल जो चन्द्र द्वय दृहस्त की सहायता ना मिले या जब मंगल बद हो तो नंगल से संक्षिप्त [बड़ा भाई तापा, मामा जो नाता का दड़ा भाई हो] कंचन संक्षिप्तों पर माता के घेट में आने के बज्जे या जन्म उमय से ही हुए असर होना शुरू होगा । मगर अपनी नाता पर लिंजों तरह भी भंदा प्रभाव न देगा । ये अच्छी रहत न्यन्त्रण और कल की फिल्म न करने वाली होगी । उच्ची अपनी झुजु और घन भी लम्बे होमे चाहे आयु का न्यायी चन्द्र दर्जा भी केवा ही पेटा हो । जलता जलाता दूरारों को देंगा । दियवा का बुह वचन या बद दुआ तेरे भाग्य और किल्लत जी उम्दा जान को जला देगा । उसकी ओशिर्वाद लेजा तारें कि बार न्यारे कर देगा । मन्दी हालत में लगाई दुई रोटी मगर गिसको लोहा न लगे कुत्ते कुत्ते को देना न्यायक होगा । और हर रोज रोटी बनाने का तया जब गर्म हो जाए और उस पर ठंडे पानी की धूंपें डालकर फिर रोटी पकाने से पर यह खंडारियां दूर होंगी ।

128

3. अगर फिरी करण रे छोटा भाई जीयित हो तो उसका यून या मुना गंदे या निकम्मे होगे ।

मुप केतु नं. 2

4. अफेला बेटा मंगल वद 28 साला आयु तक जीत या फंदा होगा घारी कब्र होगी जिसमें जो भी बदनाम हो जा सेटे । मंगल अब मंगल वद होगा जिसमें पन दोतत के नंद स्वप्न आने देंगे मगर जाते पर फिर भी मदा न होगा । गले में हर वक्त चाँदी का काषम रहना शुभफल देगा । दर्जन द्वार या धेर में जरीन के नीचे भट्टी [एदा के लिए काषम सीमेंट] रे बना कर जो हर विवाह शादी पर खोले और फिर बन्द करे या जरीन के नीचे तंदूर मंदा होगा, इनमे मातम हो कि कदाला तक भस्म हो जाये । ऐसी भट्टी पर जिस किंजी भाँ पुत्र या लड़की की शादी के लिए साधारण बनाया जाये वह ज्ञान रहित होने वाली हालत की निशानी और वहाना मुप की चाँदे होगी । मंगल की कोई चीज भी दुख का कारण न होगी । तंदूर में लगाई गिरी रेटी कुत्ते को 40-43 दिन तक देते रहना सुहायक होगा ।

5. माता वाल्यकाल में गुजर जाये ।

मुप नं. 6

6. दुर्ली तथा गिरने हो ।

मंगल वद हो यानि च. या सू. या यू. खाना नं. 1-3-4-8 में ना मिलते हो ।

7. जिस कदर मुप उत्तम होगा उसी कदर मंगल मंदा होगा ।

सिवाय खाना नं. 8 या 6 के मुप टेब में कही भी हो ।

उपाय : नं. 8 के मंगल वद का वही उपाय हो जो मंगल 4 में लिखा है ।

मंगल खाना नं. 9

[बड़े से चक्रव वाय सिंहासन यदि वद तो नास्तिक बदनाम]

बड़े भाई की तावेदारी जो रहता ।

जमाना गुलामी ना तुझे कोई कहता ।

सामान हथुमत परहते बनते, यदि पीछे जगत में आता हो
शुक्र चंद्र का नेक हो मंगल, उसर उत्तम मच्छ रेखा हो
मुप मंदा शुद मंगल मंदा, भला पिता ना माता हो
शेर भेदानी किस्मत उसकी, हाथ फैलाए न होता हो
सेवा भाई न गुलामी गिनते, विजय जगत दो मिलता हो

उम्र 13 पर पन गिनते, 28 राजा शुद बनता हो ।

एज रुदि हरदम प्रबल, बेठे टेबे चाहे केसा हो ।

बड़ा भाई भव साथी उषका, गुजर बुध ना होता हो ।

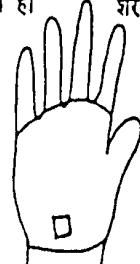
माता पिता की हालत अपनी, चन्द्र गुल पर चक्रव हो ।

शेर राजा यो जंगल कटते, लंका जते भाई लड़ता हो ।

1. गब शुक्र चंद्र की दृष्टि या साय हो जावे ।

हस्त रेखा :

फिस्त रेखा की जड़ में चोकार हो ।



129

नेक हालत :

दम दन में दन ना हो चाहे*, येर हो 3-5 वी ।

युव अकेला जोड़ के बृंज उत्तम हो उह चाल ही ।

* किस्त के भैदान का शेर भागते हुए गोदड़ से मांग कर खाए ।

1. एक जन्म में दो शेर या एक जगह दो यानदानी बहादुर राजा इस्टठे गुजार नहीं कर सकते भगर ऐसे टेवे में भाईयों की बदलावनों से लंका जलने की तरह उनकी हालत होगी यानि इस्टठे रहने से दो भाई भाग्य के भैदान में दो शेरों का जोड़ होगे । अकेला ही भैदान हो तो बढ़ो से चलता आया शादी तब्दि जन्म से ही तेपार हो जाये । स्यमं संसारी न्यायप्रिय हो । भाई की स्त्री किस्त का आधार होगी । जितने बाबे उतने ही स्वयं भाई होगे ।
2. शुक्र चन्द्र का फल नेक [जब शुक्र या चन्द्र का साय या दृष्टि रुचय हो जावे और स्वयं अपना सूर्य टेवे में चाहे केसा ही बैठा हो प्रबल होगा] नेक बल्कि उच्च फल देगा । और जद्यों मकान यानि उसके नुजुजों के संबंध में सूर्य नं. 2 का दिया फल पैदा होगा और खाना 3-5 अवश्य ही शुभ होगे ।
3. अकेला नंगल धन की मच्छ रेखा का फल देगा जब बड़े भाई नंगल की चीजे या संबंधी का स्थल हो । गुजार सदा उत्तम होगा । चंगार में बहादुर शेर की तरह उजले भाग्य का स्वामी होगा और उसी से तंग आकर किसी के बाये हाथ न फ़िलाने वाला होगा ।
4. भाता पिता की हालत का फैसला चन्द्र [भाता] वृ. [पिता] की हालत पर होम्ब । जंगी धून और शाही जंगी धन से रुजाओं जेझा पालन और स्वयं उसी काम से उजाओं जेझी हालत का स्वामी होगा । किंतु संसार में उन्ह्य तथा धन एकत्रित करने का सामान बहुत मिलेगा । जंगी धून और काम और जंगी शाही धन दोनों भद्र करेगा । कर्म धर्म और आयु सब उत्तम होगे ।
5. 13 याता तरु याता पिता भी हालत उत्तम करे और 28 साला आयु में खुद एव्व की किनती का मनुष्य है । जिसका निर्याह बहुत उत्तम हो ।

मन्त्री हालत :

Free by Astrostudents

1. यदि नंगल बद तो नास्तिक बदनाम भाग्य के भैदान के शेर को अब जोड़ से ही मांग कर खाना पड़ेगा । भाता पिता दुखी और जंगल [जंग] लगे होगे ।
2. युध मंदा हो भाग्य रेखा की जड़ में मंगल बद का निशान गिके घर से छोना तो हाँ दृश्य जलता ।
3. रहा जब ना चन्द्र तो पर्वतार पटता ।

मंगल खाना नं. 10

[चीटी के घर भ्रवन रुच्य]

गिके घर से छोना तो हाँ दृश्य जलता ।

रहा जब ना चन्द्र तो पर्वतार पटता ।

याती दृष्टि नंगल रुजा, नजर शनि पे चलता हो
 शुक्र चन्द्र और पार्सी दूजे, औताद¹ देवी से पाता हो
 चन्द्र एवं गुरु 6, 3 यैठे, जलता जंगल² जर³ पटता हो
 4 एवं 6 चन्द्र जेझा, मण्डितक⁴ टेवा खुद काना हो

मदद रुने से चीता लन्त्य, हमला भर्द न करता हो ।

एज दुर्लभ चन्द्र चीये, परेवार शनि 3 देता हो ।

लड़के जंते हो अस्तर मर्ते, सुखिया पिता न भाता हो ।

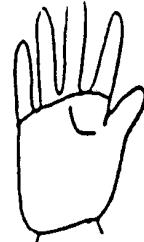
शनि नर जर चीये आय, कैद रुजा की पाता हो ।

1. हिरण का चर्च या पालना शुभ होगा ।
2. युध
3. गुरु
4. नर भाता घर का कुत्ता बने ।

130

इस्त रेखा :

शृंहस्य रेखा शनि पर कायम हो ।



नेक हालत :

1. चीटी के पर मण्यान आये वी तरह परियार के तारने वाला होगा द्यांत गिर पर में जन्म लेगा वह घर पहले तो चाहे शरीर पराना ही दो या होगा । मगर बद में जन्म घनाढ़ का घर बन जाएगा । और धन स्वयं स्वयं पैदा करेगा । यह कर्म संतान रहित ना होगा । दुनियावी शनि का स्थान हो जन बड़ा भाई भौजूर होये । अगले में मंगल नं. 10 के शेर की आंखों की दृष्टि का स्वामी ही होगा या माय के झंजते के लिए शनि जेषा भी टेवे में हो उसका उत्ता दिखाने वाला होगा । यदि मंगल नेक और बद का फँसला शनि की हालत पर होगा अगर मंगल का प्रभाव शेर की हसियत का ना हो तो [अकेला मंगल हिरण की तरह नेक और उत्तम होगा] चंज़ा तो जहर होगा जो पुल्यों पर हमला न करेगा मगर बाकी सब तिफ्लों में किस्त के भैदान में चीता ही होगा ।
2. भाई का जीवन भाग में माया की आय का आधार होगा । जितने तापे चाचे उतने खुद भाई नहीं तो मच्छ रेखा । अब 96 वर्ष, धनी, अच्छी सेहत गृहस्थी आएगा, लड़ाई की शक्ति साहस का पक्का होगा ।
3. एज दरवार उत्तम फल देवे दूष में शहद को तरह सुखी जीवन चन्द्र नं. 4 हो परिवार दिन घंटे और बरकत हो ।
4. शेर से ज्यादा शहरती चीता होगा । शनि का साय सायी या भद्र ।
5. जायदाद मकान चाहे कितने मंगर नकद माला कम शनि नं. 3
6. सब अपर उत्तम । नं. 5 खाती
7. एज समान हर तरफ से उत्तम फल । दृष्टि अदि हर ओर से खाती और मंगल अकेला ही नहीं

स्त्री हालत :

घर से सोना बेचते ही दूष जलेगा और चब दूष गया तो संतान और कर्मीता बरबाद होगा ।

1. एक स्थान में दो तत्त्वार्थे एक जंगल में दो झेर या एक सुमय ये दुश्मन उन्होंका साय । उन्होंका राज की भाँति मंदा असर हो या बरबाद करने वाला काला जादू हो ।

जुक या चन्द्र या पापी नं. 2 में हो ।

2. संतान बहुत देरी से होगी [हिरण का साय या पालना करना] या मंगल बद काला काना संतान रहित की उच्चा सुहायक होगी । नं. 3-6 में चन्द्र गुरु या सूर्य मंगल बद हो । स्थापन : अब रेखा शुरू से अंत तक दो रेखा पाती हो ।
3. दूष मंदा होगा, जंगल उजाड़ की तरह हालत का स्वामी होगा । वृ. नप्ट, एर्य बरबाद, मंदा सोना मंदी हवा जो जलाती फिरे । अपर्णी यमराई बरबाद । लड़के पोते भरते हो और माता पिता सुखी ना हो ।
4. टेवे वाला एक आंख से काना होगा जब मातृ घर का कुत्ता बने सूर्य नं. 4 या चन्द्र नं. 6 [नानके पर दोहता रहने लगे] ।
5. ना चोर ना डाकू बिना कसूर बदनाम चोरी के जुनाह से राजा की शनि नं. 4 कैद में बरबाद ।
6. दूषरे के लिए मं. अब मंगल बद ही होगा नगर खुद आवाद नं. 5 में कोई भी गह हो । होगा ।

131

7. लड़के पे लड़का मरे ।

सूर्य नं. 6 ।

मंगल खाना नं. ॥

मिले कुत्ता दुनिया¹ , कि हर दम जां होते ।
असर शेर देंगे चाहे कितने ही सोते ।

चीता मंगल दरबार गुरु के पकड़ा गुरु जंजीर में हो मंगल 9वें या असर दे 13, गुरु हालत चाहे कैरी हो उल्ट हालत बद मंगल होना, केतु भला ना लड़का हो

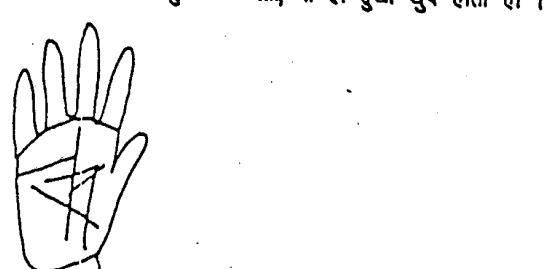
1. संसारी तीन कुत्ते ।
2. राहु 42, केतु 48 दोनों एक याय 45 साल आयु ।

हस्त रेखा :

मंगल नेक से रेखा खाना नं. ॥ वयस्त में हो ।

नेक हालत :

धर में अपने रखना मंगल, शहद के बर्तन मरे¹
फूल छोड़ मर्दी³ ही, नेक और उत्तम मिले



शहद उत्तम उसका होना, फूल² हो जिसके ख्वरे ।
दम के दम से आयनों सब, शहद के बर्तन भरे ।

1. मीठा जीवन
2. शुग
3. शनि

1. गुरु चरणों के चरणावृत्त का आदी धूती भोजन कर लेगा । ऐसा प्राणी दूष से पला पालतू शेर फकीरी हालत अच्छ अर्थों में मगर भेष में राजा उन्नास्त होगा, जिसे संसार के तीन कुत्ते और केतु की चाँचे काम उन्हें शुभ फल देंगे । 13 साल आयु से उसके नाता पिता के पात्र घन जमा होगा । राज्य का साय और शुग कायन हो और 28 साल की आयु में माता पिता की वही हालत होंगी जो उसके जन्म लेते समय चमकती शान वाली थी ।
2. सोने की जंजीर में गुरु के हाथों पकड़ा चीता होगा । यानि जेठी वृ. की हालत वही मंगल की हालत जो शुग और शनि की नकल करेगा ।
3. जिस धर वृ. हो उस पर में लिखे हुए भाईयों की गितनी का त्वानो या वृ. से 10 हो तो 9 भाई, 11 हो तो 2 और 12 हो तो प्राप्त: अफेला भाई ।
4. 13 साल आयु से मंगल का 9 का दिया हुआ उत्तम फल देगा चाहे वृ. कैसा भी हो ।
5. 24 से 28 साल आयु तक माया खुब जमा होगी ।

शुग शनि उत्तम ।

मर्दी हालत :

[काग रेखा]

1. मंगल के युर्ज नं. 3 पर वृ. का सीधा दाढ़ा खत [काग रेखा हो] नं. 3 खाती या मंदा हो ।
चन्द्र भान मनहुस अच्छी छासी आमदन होते हुए भी कर्जाई ।
माता पिता का फल व्यर्य जब तक वृ. [वाप दादा] की जायदाद को योड़ी योड़ी करके ना देच दे तभी उसका घन ठीक होने लगेगा ।

132.

2. मंगल यद की हालत में न हिर्फ केतु | एंतान 42/48/45 साला की आयु तक मामू बराद। भाई कन्यु और मंगल की जनदार चीजे दुख का कारण होती लंकिन वे दुर भी सुखी ना होने लड़के जन्मदिन या केतु की पालना | 3 कुर्त्त आदि। मंगल के नेक समय के आने की निश्चनी होती।

मंगल खाना नं. 12

दिया मीठा लोग, चाहे गीठ खिलाया।

कर्मा जर ना दोलत उपी कुह हो पाया।

एजा होगा सुख का मंगल, घर गुरु प्रवेश जो
साय गुरु या दूजे बैठे, पाया केतु घर तेह हो
8 तीजा ना मंदा होगा, नाही मुरा खुद एजा हो | खाना नं. 1।
गुरु शुक्र और केतु टेवे, आठ पहले 3-11 हो
8-3-9-12 बैठा, नुय असर खुद अपना हो
रवि भैद में असर मंगल का, तीन पहले फिर ॥ हो
नुय टेवे 8-4 जो आत्, मंगल 6वें चाहे 12 हो

जन्म कुटिया या कि मंगल, चाहे वह दरबज्ज हो ।
मच्छ उमावन हर दो तारे नुय पापी नही बेलत्ता हो ।
साल 24, 28 में उत्तम होगा, या जर लड़का पहला या दुरुप भाई हो।
मदद मंगल की हर दम करते, बैठ चाहे कोई केसा हो ।
रवि बैठा 3-11 उत्तम, मोत बीमारी रोकत्ता हो ।
अर्जुन गहू ना टेवे होगा, चुप हुआ जो बेलत्ता हो ।
जब छोटी स्वयं पहले मरता, बाद उड़वे मरता क्यो ।

1. नुय का अपना अपना ही 3-8-9-12 में दिया हुआ मंदा प्रभाव होगा।

इस्तरेखा :

मंगल नेक से रेखा खाना नं. 12 बर्व में हो।



नेक इतरत्व :

1. अब नुय का नं. 1 का कभी बुह असर ना होगा। चाहे नं. 1 वाला नुय केसा ही देख हो और केतु नं. 1 का फल नेक होगा। ऐसा व्यक्ति यरम स्वभाव वाला, स्वतंत्रता का स्थानी होगा और गहू का सारे टेवे में मंद असर ना होगा। बल्कि गहू अब चुपचाप ही होगा।
2. गरजता हुआ शेर, दमकता परियार, फळकते शमु और कड़कती तलवार का स्थानी होगा। सापु गुरु नृहस्त की पालना सेवा करने वाला या मुरु चरणों का प्र्यान रखने वाला होगा। धन खाना चाहे हाथ में हो या ना हो मरर एत की नींद का देजाराम ना होगा।
3. वह सुख का एजा होगा चाहे जन्म किसी निर्धन की कुटिया या उजड़े जंगल की हालत में घर क्य ही हो। हाथी के लिए महायत, सापु के लिए समापि। शेर के साय नाय, कुर्त्त और बकरी के सब की तरह दूसरों से भिज्जने के लिए उच्चे अपने स्वभाव या गिराव नहोगा। अब नुय और पापी गहू की कर्मी आयाज न होगी। गंगर नुय नं. 3-8-9-12 फिर भी शक्ती ही होगा। सारे टेवे में सब गहू नेक होकर चलेंगे बोर नं. 11-8-3-1 के ब्रह अब कभी मंदा असर ना देंगे मरर केतु | कुर्त्ता| मौ-मौ| और नुय | बकरी दूध में भेगने। अपनी नस्त की अदत नहीं छोड़ सकते सियाए खाना नं. 1-3-8-11 में जहां कि उनको | नुय केतु को| भी चुप होना पड़ेगा।
4. 24/28 साला आयु या जर लड़का पहला, भाई दूसरा देवा हो उत्तम होगा।
5. मच्छ रेखा निर्धन को धन और अमीर को सिंहासन हरदम नड़ केतु नं. 3 या नृ. क्य साय या नृ. नं. 2 या नृ. शुक्र और परियार लीह लंगर सवाया। ठीक आपु रेखा। कब्र नं गिन्ता केतु 8-1-3-11
6. यापस आए या फासी लटकने, पांच तसे तब्त देना हो। पृथ्वी और आसमान के बीच सब शमु उपकर मारे में गुजारा करेंगे, मंगल की मदद पर होगे।
- 6! मोत बीमारी का सदा बचाव होता रहेगा जर तक नं. 11 का गहू नं. 8 का शमु ना हो। सूल नं. 3-11

133

मन्दी हालत :

1. युप अपना मंदा असर बहात रखेगा और मंगल का उत्त पर कोई जार न चले रहेगा । युप नं. 3-8-9-12
2. मंगल का युह असर सूर्य का मंदा असर नं. 3 बाद में न. । और यूर्ष मंदा हो । फिर न. ॥ पर होगा ।
3. मंगल चाहे 12 चाहे 6 हो पहले खुद छोटी आयु में मरेगा बाद युप नं. 4-8 या चन्द्र सूर्य का संबंध ना हो । मैं माता भी जल्दी ही गुनर जायेगी ।

मंगल बद के समय निम्न हालतें आय होती :

1. गांस की मंदी हालत [वृ. से संबंधित] स्त्री दुख या माया की कल्पना [शुक्र से संबंधित] संतान की कमी दुख [केतु से संबंधित] शत्रुओं को गुमनाम शहरते फिजूल खर्चा जहमत तीयारी [एह से संबंधित] अकर की बारीकी व्यापार संचार व्यापार व्यवहार [वृष्टि से संबंधित] मकान अपना या दूरहों का साजे सामान [शनि से संबंधित] ।

मंगल [तलवार] को दुख [दलील] से प्यार नहीं बेयकूफी का ठेकेदार, बेवकूफी के कामों में धन बरगद स्त्री सुख का नष्ट व्यापार मंदा वर्णिक टूटि की शक्ति का भी युह असर गिनते हैं यदि अंघा नहीं तो कान्य जल्द होगा जो भरते समय अंघा होकर ही मरेगा जब मंदा हो जन्म पर बड़ा भाई जल्द होगा [ज्यादा से ज्यादा दो बड़े भाई] मगर उसकी 28 द्यात्रा आयु तक यह युह ई बड़ा दोगा या अमूगन उहके बड़े भाई नहीं होगे अगर हो तो दुखी और संतानहीन हो, सड़की के टेपे में यह शर्त नहीं । उनकी [टेवे वाले लड़की/लड़का के बड़े भाई] की मटद के लिए ऐरे टेपे वाले के सिर पर मंगल के रंग की पोशाक या चीजें [लड़ाई का घासान] बड़े भाईयों के लिए अशुभ होती । लेकिन सूर्य या वृ. के रंग या चीजें [वृ. छोटी, सूर्य खाकी रंग की पण्डि] सहायक होते । उहके बड़े भाईयों को चाहिये कि मंगल 12 वाले को पानी की जमह दूध पिलाये और अपने पास चन्द्र की चाँचे चावत, चांदी रखे । मीठा खाना और मीठा खिलाना धन और आयु के लिए सहायक होगा । सूर्य को पानी देना मीठा जल ढालकर शुभ होगा । कुत्ते को मीठी रेटी देना सहायक होगा ।

2. अपनी 28 द्यात्रा आयु तक बड़े भाईयों की आयु तक भारी होता है चिवाये उनके बड़े भाई के जिसके टेवे में नं. 10 में मंगल हो नं. 3 द्यात्रों या नं. 3 में कोई भी दो या दो से अधिक युह हो । ऐसी हालत भैं जब कसी नं. 12 वाले का बुह असर बड़े भाई पर होता मातृन हो वह युह असर उस स्थाद पर खुद नं. 12 वाले पर ही हो जायेगा ।
3. मंदी हालत के उमय अपने घर्म स्थान से सहायता सहायक होती और चन्द्र नंतर [दूध में शहद या खांड मिला] कर दूसरे सायियों को देना या जौठी रेटी का खुद प्रयोग करना और फकीर कुत्ते अदि को भी जौठी रेटी का हिस्ता देना और अंत में यूर्ष यों पानी देना या रंडा मिलाकर पानी देना सदा नेक फल दायक होगा ।
4. मंगल का असर मंदा होता । भुजा निकम्मा दुखिया होते । शनि नं. 2 घर्म स्थान में बताये देना [युप] मंगल शनि का फल नेक कर देगा । बेगक मंगल युध तीनों ही कुण्डली के बाकी घरों में कितने ही मरे क्यों न हो ।

नुप शक्तिमान | वनस्पतियों का रुचा।

सुला करते नुगुच भेदान बदता ।
बद्धी अक्स इर्पी घर्ष सुद जो करता ।

उल्ट पांव चमगादङ लटका, गुर्पी शहरत¹ करता है
गाय मुरे उह एवरे मंदा, भला भले हे होता है
उप नजर जब रुदि को करता, दर्जा द्रृष्टि कोई हो
पुप थन्द से हो जब पहले³, सेहत माया या दिमारी हो
शुक्र भेद जब शुक्र से पहले, असर एहु का मंदा हो
नुप शुक्र ना इक्टेठे मिलते, उम्र जाया यों करता हो

घर भक्ता जिस ग्रह का होगा, वहां वही बन बेठता हो ।
चन्द्र एहु का हो जब भमडा, नुप² माय द्युद जाता है ।
असर भला सद दो का होगा, रेत जहर पानी भरता हो ।
तीन चोये 7-9 ग्रह रेठे, राख हुए कुल जलता हो ।
नुप पहले से शुक्र मिलते, केतु भला द्युद होता हो ।
शनु⁴ दोनों का साय जो रेठे, अदर दोनों न मिलता है ।

1. बुध वेठा होने वाले घर का मातिक ग्रह नं. 9 में बेठ जावे तो बुध की तरह वह खाती चक्कर या बेकार निष्फल होगा ।
2. बुध भदे वाले को नाक छेदन करता लेना और दांत साफ रखना लड़कियों की सेवा उहायक हो ।
3. सालकर गुरु और चन्द्र ही भदे ।
4. शुक्र का शत्रु गुर्प चन्द्र एहु, नुप का शत्रु चन्द्र वारह ।

खाना इलत 12 घर :

घर 2-4¹ या 6वें ऐट, एजा योरी नुप होता हो 7वें घर में पारस होता, उह सायी के तारता हो ।
9-12-8 तीसरे 11, यूके कोदी नुप होता हो घर पहले 10 घूमत एजा, परिवार² घन 5 देता हो ।

1. रिप खाना नं. 4 के बुध में एहु येतु का प्रमाण नहीं इस तिए एज योग है जानी एर जमह पाप नुप के दायरों में होना ।
2. जहर से भय नुप जब भेद हो खाना नं. [9, 8, 12, 11, 3] ।

खाना नं. 3 में कबीता पर भारी खानदान पर मंदा ।

खाना नं. 8 में जानदार चीजों और जानों पर मंदा ।

खाना नं. 9 टेवे वाले की अपनी ही हर हालत घन दोलत मालांजान पर मंदा

खाना नं. 11 में आमदान की नाती में ऐड़ा अटका देवे आयु के 34वें साल तक ।

खाना नं. 12 कारेवार और रात की नीद बरबाद करे ।

जहर से भय नुप स्वयं माय जाये तो बेशक भगर । से 4 लिंगाए खाना नं. 3 जहां कि दूसरों के लिए धूकत्त कोडी मंदा होगा । पर मंदां न होगा । 5 से 10 में डर तो जल्ल देया । 11-12 में हड़काये कुत्ते की तरह जिसे कटे बह आमे हड़काफर भागे । नुप अमूमन खाना नं. 1-2-9 से 12 में ज्ञाने की सहायता करेगा यानि विषेता लोहा मार देने वाली विद् निर्धन करने याता होगा । 3 से 8 में गुर्प की राहायता, पन के उत्तम चाहे 3-8 में हजारे दुख खड़े करेगा ।

एहु का संरघ्य :

जब नुप और एहु दोनों इक्टेठे या दोनों में से हर एक जुदा जुदा भदे भरे में [नुप अमूमन 3-8-9-12 में, एहु अमूमन 1-5-7-8-11 में] हो तो अगर जेत खाना नहीं तो अस्पताल या पामल खाना या क्रियतान या वीएना तो अवश्य मिलेगा, कसूर या गौमारी चाहे न हो । फजूल दुष्ट भदे खर्च आम होते । फोलाद का बेजाड उल्ता जिस्म पर सहायक होगा और दोनों उहों की चीजे या काम करने से नुप एहु इक्टेठे गिने जायें ।

नुप का अर्य - बहन, बुजा, फूफी, मार्गी, साली व्यापार तथा दूररे के काम होगा ।

एहु का अर्य - समुहत नाना, नानी, बिजली, जेलखाना आदि एहु के काम है ।

मुख ऐ केतु का संक्षय :

जब दोनों दृष्टि युग्म मिल रहे हो, बुध का आम ग्राहारण गेगा कि टेंये में बेठा होने के हिचापे होये, मगर केतु या फल नीच केतु या मंदा ही होगा। बुध के बिना सब ग्रहों में शुक्ने शुकाने की शक्ति कमज़म ना होगी।

1. शुरुद के वाय, व्यापार, हुनरमंदी, दस्तकारी, दिमारी शुद्धिमता से धन कमाने का 34 साल अपु का समय। बुध की हँड़मत हास्त किसी भी चीज के न होने की हालत बुध का होना या उसकी हस्ती कहलाती है।

2. प्रादृ ऐ भरा बुध खाना नै। से 4 में [सिथाये खाना नं. 3 जहां कि दूसरे के लिए पूकत्ता हुआ कोई मंदा होगा] साप भेठे ग्रह पर भी मंदा असर न देगा। स्वयं चाहे अपने गुरे असर देये मगर कोई मंदा घटना न करेगा। 11 से 12 तक ग्रह के कांड वह हड़काए कुत्ते की तरह दूसरे को भी आगे हड़काता चला जावे।

3. चन्द्र ग्रह के झाड़े में सुध बरबाद होगा।

4. शुरु ग्रह के साय भेठा उस ग्रह का प्रभाव और भी मंदा कर देगा और भले ग्रह के साय भेठने से न रिक्फ उस भले ग्रह की भी और भी भला कर देगा चर्लिक स्वयं भी भला हो जायेगा यानि निससे भित्तेन्ह उसकी ही शक्ति का प्रभाव देगा। यह ग्रह वृहत् पर उल्टे पांव लकड़े हुए चमगादड़ की तरह अंधेरे में जाकर उपी तुई शरात करता होगा। मक्कन में भद्र बुध की पहली निशानी होगी कि नये बने बनाये मक्कन में किसी न किसी कारप रे रिक्फ सीढ़ीया घिरकर दोबाह बनने का बहाना होगा। चार दीवारी और ऊँट नहीं बदली जायेगी।

5. भद्र बुध वाले को नाक छेदन करवाना और फटकारी आदि से दांतों को साफ करना, लड़ाक्यों की पूजा करना सहायक होगा अगर घर के बहुत से उद्दर्थों या बुध द्वारा हो या स्वयं अपना बुध टेंये में भद्र घरे में जाता रहे तो उसकी की सेवा या बकरी दान करना उत्तम फल देगा। अगर जवान में यथलापन हो तो वह यथलापन के अतावा और कोई मंदा फल न देगा। चाहे टेंये में मंदा होये। घर में एक के बाद एक बीमार पड़ जाने की लानत चढ़ी हो जाने के समय बुध रे बचाव के लिए हल्ला कहूँ [जो परका रंग पीला और अंदर से खोखला हो चुका हो] सातम का सातम पर्म स्पान पर देना सहायक होगा।

6. पाद ग्रह केतु बुध के दापरे में चलता है सिद्धाये खाना नं. 4 के जहां कि बुध एज पोन होगा क्योंकि वहां ग्रह केतु पाप न करने की करम खाते हैं।

7. शुक्र भद्र को अवश्य भद्र देगा मगर पाप भद्र के समय बुध स्वयं भी मंदा ही होगा और भीत गूंजती होगी चर्लिक ऐसी हालत में अगर शुक्र भी ऐसे घरे में हो जहां कि बुध भंडा गिना गया है शुक्र भी बरबाद करेगा।

8. अद्वेता बेठा हुआ बुध निकला तया बिना शक्ति का होगा और उस ग्रह का फल देगा किन्तु कि वह पक्का घर है जहां कि बुध बेठा है। बात को धोना से बचाने के लिए यह बात साफ हांसी चाहिये कि घर की भलकीयत दो तरह की होती है एक तो बातों पर का स्थानी और दूसरी हालत में पर किसी न किसी ग्रह का पक्का घर तुकरर हो चुका है।

उद्दरप्रथा : खाना नं. 1 में भंगल बतार राशि का स्थानी ग्रह या बतार घर की भलकीयत देव होगा मगर पक्का घर खाना नं. 1 का स्थानी गूर्ध होगा।

बुध को खाना नं. 1 में और गूर्ध को खाना नं. 12 में अब खाना नं. 1 हे पक्का पर सूर्य का इच्छिए बुध खाना नं. 1 में बेठा शुरु का फल देगा जोकि उस सूर्य के लिए खाना नं. 12 में त्रितीय ५ क्ष्योंकि बुध नं. 1 के समय सूर्य नं. 12 में बेठ ५ त्वेक्षिण यद्य सूर्य बेठा हो नं. 4 में तो नं. 1 में बेठा हुआ बुध वही प्रभाव देगा जो सूर्य नं. 1 का तुकरर है।

बुध बेठा हो वही ऊपर कहे गये नं. 1 में तो बुध का बुध अगर अगर कोई हो तो भेत्ता पर हो उकंगा क्योंकि घर की भलकीयत या गृहिणी का मालिक भेत्ता है अगर उस राशि का मालिक ग्रह बने वह ग्रह जो घर की भलकीयत या राशि का हो जहां कि बुध बेठा है उस समय [जब बुध नं. 1] में हो जाना नं. 9 में बेठ रहा हो तो वह ग्रह नं. 9 वाला और मंदा होगा। ऐसी हालत में दें तुए बुध का मंदा अगर जाये की नूरी उं पूर्ण पूर्ण जाहिर हो जायेगा।

136

नुप खाना नं. में किय ग्रह का फल देगा जिसे ग्रह को बरबाद करेगा पिरोषकर किय ग्रह को मंदा करेगा जो कि उस उमय खाना नं. 9 में भेड़ रहा हो।

1	सूर्य	मंगल
2	वृहस्पति	शुक्र
3	गंगत	शुक्र
4	चन्द्र	चन्द्र
5	वृहस्पति	सूर्य
6	केतु	केतु चुम्ब
7	शुक्र वुप	शुक्र
8	मंगल, शनि	मंगल
9	वृहस्पति	वृहस्पति
10	शनि	शनि
11	वृहस्पति	शनि
12	ग्रह	ग्रह वृहस्पति

खाना नं. 3-8-9-11-12 का मंदा वुप चेयकूफ, बंडी मल्ताह जो खतरे के समय अपनी बंडी को खुद ही गोता देने से और थामदान की नाली में ऐड़ा अटकाने वाला हो भेड़।

दूसरे ग्रहों की सहायता :

वुप भेड़ हो खाना नं. 1 से 2 तो शनि ग्रह को मदद देगा।

वुप भेड़ हो खाना नं. 3 से 8 तो सूर्य ग्रह को मदद देगा।

वुप भेड़ हो खाना नं. 9 से 12 तो शनि ग्रह को मदद देगा।

दूसरे ग्रहों से सम्य संक्षय :

किस ग्रह के साथ	वृ.	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल	वुप	1. शनि	ग्रह	केतु
वुप का संक्षय कैसा होगा	एवं	पाप	मनिन्द	दही	शेर के	कलं	हाथी की	कुत्ते की	तुम
			मीन		दात				

वुप और शनि कुण्डली के मुश्तक का दीवार याले छठे में होने के समय शाहीर या शार्ड बड़े करके उन पर रेहन मनाने पर वुप बरबाद होगा। पागलपन् सिर की सर्पिणी, बहन, बुजा, फूफी बरबाद होने।

वुप का अंडा अक्षर का चीज नहीं मगर अक्षर की नक्कल ही वुप का अंडा है जो कुण्डली के खाना नं. 9 में खेड़ा होता है। ग्रह कुण्डली में खड़ा अंडा [मैना आम बकरी] वुप कुण्डली के खाना नं. 2-4-6 में होगा। लेट्य हुआ बंदा [तिया भंडा] वुप कुण्डली के खाना नं. 8-10 में होगा। गंदा अंडा वुप कुण्डली के खाना नं. 12 में होगा। आम हालत मां थी वुप कुण्डली के खाना नं. 1-7 में होगी। चमगारड़ किसी चीज का साया द अक्षर असल चीज जिसकी साया है जो पता न लाने वह कहाँ है वुप कुण्डली के खाना नं. 3-9 में होगा। दूप वाला बकरा मगर बकरी दाढ़ी वाली वुप कुण्डली के खाना नं. 5 में होगा। चीड़ पत्तों वाला वृक्ष, मैना का उपदेश, लाल कंठी वाला तोत वृ. की नक्कल वुप कुण्डली खाना नं. 11 में होगा।

वुप की खाली नाली :

1. हर तीरे पर के ग्रह याने 1-3 कर्मा आपस में नहीं गिर सकते इर्षितिए बाहम असर भी नहीं मिला सकते। लेकिन

यदि युध की नाली गिर जावे तो चाहन् बुध प्रभाव न देंगे, अगर शुग हो जाये तो वेशक हो जाये ।

2. शुद्ध युध दोनों इयट्टे ही शुभ है और खाना नं. 7 दोनों का पक्का घर है लेकिन जब युद्ध युद्ध हो जाये और अपने से सातवें पर छोड़े तो दोनों या फल रह दी । लेकिन जब उह गातवें की शर्त ये दूर हो भगर हो दोनों युद्ध युद्ध हो जाये तो युध निःशर्म में बेठा हो यह युध उस पर के सब ग्रहों का ओर उत्तर घर में उन के बेठे होने का अपना असर शुक्र के बेठा होने वाले घर में नाली लगाकर मिला देगा यानि दोनों ग्रहों का असर मिला मिलाया हुआ इयट्टा गिना जायेगा फर्क ऐसा यह होगा कि शुक्र वपने घर या अतर उठा कर युध बेठा होने वाले घर में नहीं ले जाता भगर युध अपने बेठा होने वाले घर का असर उठाकर शुक्र बेठा होने वाले पर में जा मिलाता है । संक्षेप में जब कभी शुक्र का गम्य हो तो शुक्र बेठा होने वाले घर में युध बेठा होने वाले घर का असर साय मिला गिना जायेगा । भगर युध की तख्त की मलकायत के समय अकेले ही उन ग्रहों का होगा जिन में युध बेठा हो । शुक्र बेठा होने वाले घर के ग्रहों का अतर युध वाले घर में मिला हुआ ना मिना जायेगा । युध शुक्र के इस तरह असर निलाने के उन्य यदि कुण्डली में शुक्र के बाद के घरों में बेठा हो तो युध का अपना स्वयं का प्रभाव बुध होगा और अगर कुण्डली में शुक्र से पहले घरों में बेठा हो और उठा कर अपने बेठा होने वाले घर का असर तो जावे ।

शुक्र बेठा होने वाले घर में तो अब युध का लाया हुआ असर में जाती अपना असर बुध न होगा बल्कि भल्ता ही निना जायेगा । इस मिलायट के समय अगर युध वाले घर में शुक्र के शनु ग्रह भी शामिल हो तो शुक्र इजाजत न देगा कि युध अपना देठा होने वाले घर का अपना अतर शुक्र के घर में मिला देवे यानि ऐसी हालत में युध की नाली बंद होगी और शुक्र की जब युध की सहायता न मिले तो अब शुक्र युध के बिना पागल होगा । लेकिन यदि युध के साय वहा शुक्र के मित्र यह हो तो शुक्र कोई स्कायट न देगा । बल्कि युध को जल्द अपना असर शुक्र बेठा होने वाले घर में ले जाना पड़ेगा । हो सकता है कि ऐसा मिलायट में नं. 1 में हो केतु दोनों में ही शामिल हो [यह हालत रिफ उर समय होनी जब यह केतु अपने से सातवें घर में होने के कारण से युध और शुक्र भी आपस में सातवें घर पर होंगे] तो भद्र परिषाम होने । खासकर उत्तर समय जब युध होय शुक्र से बाद के घरों में और याय ही यह केतु कम दोषी भी आ जावे, यानि उनमें से कोई एक तख्त की मलकायत के दोर के हिचाब से आ जावे उस उन्य [जब कि इस मिलायट में राहू केतु शुक्र युध के साय निल रहे हैं और यह केतु का अपना ऊपर यज पर एक गाय होने का भी समय है] कुण्डली वाले के लिए नाजुक स्थान का भयानक समय होगा भगर यदि यह शर्त पूरी न हो या युध होय शुक्र से पहले घरों में तो यह भंदा समय न होना । भंदा उन्य रिफ यह केतु के दोष के समय का होगा । शुक्र या युध के दोष [यह के दोर से अर्थ ग्रह संवयित खाना नं.] में आने का समय होगा [के समय लानत न होगी] । इस युध की नाली का खास लाभ भंगल से उत्तर संवयित है कई बार भंगल को सूर्य की रहायता मिलती हुई भलूम नहीं होती या चन्द्र का साय होता हुआ भलूम नहीं होता इस नाली के कारण से भंगल के सहायता मिल जाती है और भंगल जो सूर्य चन्द्र के बिना भंगल बद होता है, भंगल नेक बन जाता है । इसी तरह ही भंगल युध बाहम शनु है, भंगल के बिना शुक्र की संतान कायम नहीं रहती । युध जब भंगल के साय होये तो वह लाल कंठी बाला तोता होगा और स्वयं उठाकर और भंगल के साय उठाकर शुक्र से मिला देगा या शुक्र की ओलाद बचा देगा जिससे कुण्डली वाला निःसंतान न होगा ऐसी हालत में युध या शुक्र के बाहम पहले या बाद के घरों में होने पर युध के जाती अगर की बुराई की शर्त न होगी भल्लाई का प्रभाव भगर होगा क्योंकि भंगल ने शुक्र के दोष के पहले साल में अपना असर अवश्य मिलाना है यानि युध की नाली 100%, 50%, 25% और अपने से गातवे होने की दृष्टि से बाहर एक और ही शुक्र और युध की बाहम दृष्टि है और यह है इसलिए कि शुक्र में युध या फल गिना हुआ गाना जाता है । मिलायट में यह के साय हो जाने के समय जब शुक्र ने युध को बाहर ही रोक दिया तो शुक्र में युध का फल ना मिला तो युध के बिना शुक्र पागल होगा या शुक्र खाना नं. 8 के प्रभाव वाला होगा । इसी तरह पर शुक्र के बिना युध का अतर रिफ फूल होगा फल ना होगा वर्यात विषय की छेत्र तो होगी भंगल की बच्चा पैदा करने की ताकत का शुक्र को फायदा न निलेगा ।

युध के दांत :

दांत यायम हो तो आयाज अपनी मर्जी पर कायू में होगी यानि चृ. की हवाई शफेत पर [चंतान के जन्म] कायू होगा । भंगल भी साय देगा यानि जब तक दांत [युध] ना हो चन्द्र भद्र देगा, जब दांत ना थे तो दूध दिया जब दांत दिये तो या [बन्न]

|शुरू| न होगा । यानि नुप होये तो शुरू की अपने आप आने की आशा होगी । लेकिन जब दांत आ कर चले भये |और मुंह के ऊपर के जबड़े के सामने के| तो अब मंगल नुप का साय न होगा । न ही वृ. पर काढ़ होना या उन व्यक्ति या स्त्री की अवस्था का सम्पर्क रुपान्तर हो पुनः होना जब यह दांत आ कर चले गये या खत्म हो गये । दांत ये दांत-कथा गई बृहस्पत खत्म तो तापलद हुआ ।

नुप का भेद :

जब कुण्डली हर प्रकार हो मुम्मलत |पूरी| हो और खाना न. । का अक्षर देकर हर तरह से चतुर समाप्त हो चुकी हो, तो नुप का खाए भेद या नुप का स्वभाव देखने के लिए नीचे का अखूत काम में आयेगा ।

गह कुण्डली के किसी भर में चाहे अकेले अकेले भरो में चाहे एक ही भर में कई एक या आठ इक्टें हो |यह या केतु अपने से सातवें के असूल पर होने के कारण से दो में से एक जल्लर रह जायेगा| तो हर एक की झपनी शक्ति के भाग को खाना न. के अक्षर से निर में कि वो गह बेठा होवे युपा देकर नी ही गहों के जब्बत का कुल योग लेकर ७ पर भाग करें । अमर

1. वाकी कुछ न बचे तो नुप का स्वभाव उस कुण्डली के खाना न.५ में बैठे हुए गह का होना । यद्दे नुप के खाली दांचे में यह केतु पकड़े गये । यद्दे जब नुप की शक्ति सिफर |शून्य| हो उस कुण्डली में यह केतु का किसी भी दूसरे गह पर प्रभाव न होगा या ऐसी हालत में यह केतु की दृष्टि नुप के दायरे में बंद हो कर बिकर |शून्य| हो उस कुण्डली में यह केतु का किसी भी दूसरे गह पर प्रभाव न होगा या ऐसी हालत में यह केतु की दृष्टि नुप के दायरे में बंद हो कर सिफर पर होगा । मगर यह केतु का जाती असर जल्लर कायम होगा क्योंकि नुप में हमेशा ही यह केतु का असर शामिल रिना जाता है सियाए खाना न.४ में जहां कि यह केतु का अपना प्रभाव सिफर होगा । यह बड़ी की चाबी तो केतु बड़ी का कुत्ता है तानों नी यद्दाने यात्य वृ. है मगर यह पूर्णते नुप के दायरे में ही है । अमर खाना न.५ खाली हो तो जिस पर में सूर्य ही और जैवा भी हो जेया ही नुप होगा ।

2. यदि कोई अक्षर पूर्ण भाग न दिया जा सके कुछ वाकी योड़ा बहुत दशमलव भिन्न बच जाए तो उन दशमलव भिन्न की निकादर के लिए जो कि स्वापित है वह गह कुण्डली में जहां बैठे हो उन गह की छन्न तथा स्वभाव का नुप होना । यह स्वभाव नुप का अपना स्वभाव होगा जैसा कि शनि का स्वयं का स्वभाव गह केतु शनि के पहले या बाद के घरों में होने पर निरचत है ।

उदाहरण कुण्डली में :

नाम गह	कुण्डली में किस भर का है ।	गह की शक्ति	खाना न. के अक्षर को गह की निकादर से नुपा किया
बृहस्पत	4	6/9	24/9
सूर्य	3	9/9	27/9
चन्द्र	6	8/9	48/9
शुरू	5	7/9	35/9
मंगल	5	5/9	25/9
नुप	3	4/9	12/9
शनि	12	3/9	36/9
गह	2	2/9	4/9
केतु	8	1/9	8/9
कुल		45/9 = 5	219/9 = 24 $\frac{3}{9}$

139

कुल में गं पूरे हिस्ता छोड़ दे तो 3/9 बाकी रहा यानि शनि की शक्ति है जो खाना नं. 12 में रेठा है या हुआ चुप का स्वभाव, यानि चुप जो खाना नं. 3 में अफेला रेठा है वह खाना नं. 12 में रेठे हुए शनि के स्वभाव का है। दी हुई कुण्डली अपना स्वभाव घटाव फल का है इस लिए जब चुप का समय होगा शनि दो गुण मंदा फल देगा स्थौरि का चुप शनि दोनों ही खरान स्वभाव के हैं।

|३| चुप या स्वभाव नियु ग्रह ऐ मिलता हो उपाय उर ग्रह दोनों का मिलाकर करना होगा ।

|४| खाना नं. 3 या 9 के दुय लिए लाल गोली की मदद लें। मगर प्यान रहे कि यदि चुप नेक स्वभाव साक्षत हो तो लोहे की बजाए शांश की गोली लेये जिस पर या जिस में वह रंग करे या शामिल होये, जो रंग कि उस ग्रह का होये जिस ग्रह के स्वभाव का चुप ऊपर के ढंग का साक्षत हुआ होये।

|५| खाना नं. 12 के चुप के लिए नष्ट ग्रह वाले की मदद का इताज या केतु |कुल्ता, रंग तिरंगा काला सफेद मगर लाल न हो| का कायम करना शुभ होगा। असल चुप खाती खताव, सफेद कालज, शांश और फिटकरी होगा। जब उस पर जय भी भेत्ता कि फिट्टी भी और ग्रह का ताल्लुक हुआ तो उसकी गोलाई का ठिकाना मालूम करना बैसा ही मुश्किल होगा जैसा कि जमीन का पूरी मान लेना। इच्छिए उसकी जांच पूरी कर लेना जरूरी होगा बहरहाल चुप नं. 9 या 3 या किसी और दर का मंदा प्रभाव उर सात या उर समय ही नेक होगा जिस में कि वे अपने स्वयं के स्वभाव के असूल पर नेक हो जावे मगर जन्म के पहले सात या पहले मास में उसका हीय जहर से खाली न होगा। अगर होगा तो जन्म मरण का झयझड़ी ही सनात्त होगा। सूर्य और मंगल के मुकाबले में चुप का फल गायब या सूर्य मंगल नेक के साथ अपना 1/2 समय चुप होगा, मगर उर्णा गरित जम्हर बरता ही होगा मंगल नेक है ही वही जिस में सूर्य हो भूरे यह सूर्य के साथ चुप होगा। सूर्य रेखा और चन्द्र रेखा दिल रेखा को मिलाने वाली त्रिकोण मंगल बद को अतर देगी जिस का प्रभाव दिल की शक्ति पर होगा चाहे चुप तरफ ही हो। यहरहाल दिल की शक्ति अधिक होगी।

चुप खाना नं. ।

| उजा या हाँकिम, मगर खुदकर्म शुद्धरती बदनाम |

मिले तख्त औरत को कितना ही जंचा ।

जवानी में तोहमत का सतय ही होगा ।



फिरु दुनिया छोड़ो, यादा वक्त बुलाने को है
तबता चाहे न अपना उत्तम, एग सब का दिल हरे
चुप पर पहले पांचवें, सूर्य का¹ परिवार
शनि चलेगा चुप इशारे, पाप² पड़ा खुद रहता हो
चुप चीजों पर चुप चाहे मंदा³, होता चश्मद्या होता हो

लड़के जैसी लड़की हजा, लेख जग जाने को है ।
रंग काला गर हो उचका, पानी में पत्थर तरे ।
बारिश धन की हो रही, दिन न² गुजरं चार ।
पर्म पक्का न बेशक कदरे, राज सेहत जर उम्दा हो ।
शराब कचारी बेशक कितना, रिजक मंदा न अपना हो ।

1. जब खाना नं. 7 में कोई ग्रह हो खासकर शनि या शुक्र ।

2. जिस पर में सूर्य हो उस पर के संबंधित रिश्तेदार ।

3. राहु |समुहत| केतु |ओलाद| हर दो उसकी जान को रहते होगे या मंदा असर देने वाले होगे ।

4. मंगल जब नं. 12 हो तो चुप का नं. । पर मंदा प्रभाव होगा ।

हस्त रेखा :

सूर्य के दुर्ज से चुप के दुर्ज को रेखा ।

140

नेक हातत :

1. आकाश में किसी भी चीज का न होगा युध या होना कहलाता है या खाली दृश्य का दायरे फर्जी खाली चक्र इस ब्रह्म की हस्ती होगी ।
 2. मंगल का फल चाहे निकम्मा कर देव मन्त्र सूर्य का असर कभी मंदा न होगा बल्कि ऐसे आदर्मी का सूत ऐसा होना जो पारे भी तरह गर्नी हो ऊपर नीचे चलता हो ।
 3. अपने स्वभाव ऐ पूनता हुआ राना होगा ।
 4. सूर्य की हैरियत पहले पुराने जमाने की जाता दौलत की करी या फिर छोड़ी अच्छे समय की निशानियां होने समे अब तड़कियां भी एज भोगेंगी और स्वयं भी सुन्दर का सारं लेंगा ।
 5. जिर शर में सूर्य हो उस पर के संवर्धित रित्तंदार थोड़े दिन में घनी हो जायेंगे ।
 6. एज दरबार से लाभ होगा ।
 7. घर्म रे किसी कदर दूर रहने वाला होगा, मन्त्र रिजिक आमदान कभी मंदा न होगा ।
 8. न तिर्क शनि बल्कि अब राय ही पांच ग्रह युध के इशारे पर चलेंगे ।
 9. पार्ना में पत्थर तेह देने की शक्ति वाला बाल्कर जब रंग खाना नं. 7 में कोई ग्रह हो व्यापकर श्वेत या युध कमता हो ।
 10. स्त्री, अर्णार नेग, एगने हो नेन तथा उत्तम होगी ।
- सूर्य का संलग्न हो ।

न्यायम : सूर्य के बुर्ज से युध के बुर्ज को रेखा ।

मन्त्री हातत :

1. जब युध सोया हो या मंदा कर लिया जाये तो ।
 2. स्त्री का एज बेशक उम्मा या त्वी के टेवे में चाहे राजसोम मन्त्र उससे या उर की जयानी में फिर भी बदनामी या तोहनत का डर ही होगा ।
 3. मंगल का असर कदरे मंदा या बरबाद हो तो बेशक मगर सूर्य का कभी मंदा न होगा ।
 4. शहरती बदनाम ।
 5. जब मंगल नं. 12 हो तो युध का खाना नं. 1 पर कभी मंदा असर न होगा । चाहे वह टेवे में केसा भी मंदा हो ।
 6. मंदी हातत में युध की चीजों पर मंदा होगा । अंडे खाने से स्वास्थ्य बिगड़ेगा लेकिन 1/2 जाय पर धन के लिए उत्तम होगा ।
 7. स्वयं युध का अपना प्रभाव हस्ति रंग चीजें व्यापार हिकमत मदे ही होते ।
 8. यहू [स्मुरण] केतु [उत्तरान] का हात मंदा ही होगा जिस की निशानी वह शहर और मांसप्रयोग करने वाला होगा ।
 9. परदेष में रहने वाला राणी मगर लातयी होना जयानी का समय उत्तम होगा ।
 10. दांत 30 से कम या 32 से अधिक मंद भग्य और युध खाना नं. 12 का असर साय होगा जब 32 हो तब युध सुखन [मनहूम] बद दुभाएं, युठी आयाज का मंदा ज्वर जल्द होगा । खाना नं. 2 का असर साय लेने ।
 11. गंदे युध याते हो एक जगह पर टिक यार बेठना आयाय चप्पे से अच्छा होगा ।
 12. युध का अपना असर मंदा । तबला मंदा । मगर राजयोग अकेला युध और खाना 7 खाली ।
 13. दूसरे का दिल अपने कामू करेगा । या वह दूसरे के लिए लाभकारी ।
- पन्द्र खाना नं. 7

141

नृप खाना नं. 2

। योगी, यजा, मतलब परस्त, ब्रह्म-जानी ।

पता उत्तर के पिता¹ अगर मौत चलता ।
दुआएं पैदाइश न लड़के की करता ।

अकेला भेठा एवं यों तोरे, यजा योगी जनता हो

आठ 6 पर खाली होते, श्रेष्ठ² रेखा सिर पाता हो ।

यज नहावा दुश्मन मारे, शुक्र मंगल न मंदा हो

कलम जुगान से मोर्ती गिरते, सुखुमत पराना तारत हो ।

आठ 6वें श्रव भेठा कोई, भरता तबेला कन्या हो

आयु 16 से 19 उसकी, पिता³ न उसका भेठा हो ।

साय चन्द्र का जब कभी मिलता, आयु पिता न शक्की हो

इन्नत गुरु 9-12 देता, आयु माता की लम्ही हो ।

शनि निले तो सांप हो उड़ता⁴, साय भला न गली हो

भेड़ तोता हो जब कभी रखता, मद कहानी होता हो ।

1. लाखोंपति पिता भेटे के लिए |टेवे वाते के लिए| विफर होगा ।

2. दिमागी धरायियों का कभी शिकार न होगा । चाहे पिता का सुख न होगा, पक्षका इरादा, यजयोग होगा । माई संतान से दुखी मगर संतान रहित न होगा ।

3. नाक छेदन करवा कर लिए 4-5 दिन सुखख कायम रखा जावे ।

4. उत्तम शुभ अर्थों में हर और उत्तम मगर सुखुमत मंदे ही हाल में होते जायेंगे ।

हस्त रेखा :

सिर रेखा जब जुदी हो कर वृ. के मुर्ज की ओर जाये ।



नेक हालत :

1. लम्ही गहरी |कुशादा| याहर को उभरी हुई पेशानी का प्राप्तिक होमा जिसमें बुद्धिमता और साय लाई हुई स्वयं के भाग्य का नेक प्रभाव शामिल होगा । मगर वह अपनी ही तान पर मत्त योगी, यजा और मतलब पत्तत होगा । अपने लिए स्वयं वृ. के लिए सोने का स्वामी, मगर शुक्र का फल मंदा होगा ।
 2. काफिर को मारने वाला, शत्रुओं को बरचाद करेगा मगर यजाओं के परिवार की नरकत देगा ।
 3. अपनी स्वयं वृ. सोने की हेचियत मगर पिता के लिए सोने का कोढ़ या कली का टाका |मंदे अर्थों में|। चाहे पिता का सुख न होगा मगर स्वयं अमीर होगा उसकी अपनी आयु भी लम्ही होगी माता पिता पर कोई बुरा असर न होगा । नाता की आयु लम्ही |लगभग 80 साल| उसे अपने आप पर भरोसा होगा, बकीलों का भारी नोश उठाएगा । प्रपत्न से उत्तम जीवन का स्वामी होगा ।
 4. मण्डगत घर यों तारने वाला राजा वी गिनती का आदमी ।
 5. शत्रुओं पर विजय शुक्र मंगल की चीजों का नेक असर होगा ।
 6. हालिर जयाव होगा - राहु नं. 8 |कनिष्ठा का रिहा चोड़ा हो|
 7. उत्तम भाषण दे सकेगा - राहु नं. 9 |कनिष्ठा बहुत लम्ही|
 8. जबान और कलम में शक्ति हो - मंगल नं. 8 |कनिष्ठा का रिहा चोकोर हो|
 9. पक्षकी यह शक्ति का स्वामी जुगान से इतनी शक्ति कि उब नुकर हिपा ले - मंगल नं. 9 |कनिष्ठा बहुत ही लम्ही|
 10. सब को तारने वाला योगी राजा होगा - सुध अकेला खाना नं. 2
 11. तिर की श्रेष्ठ रेखा दिमागी धरायियों का कभी शिकार न होगा खाना नं. 6-8 खाली ।
 12. पिता वी आयु कभी शक्की न होगी अगर स्वयं चन्द्र बुरा न हो चन्द्र नं. 12, 8 से मदद, सिर रेखा से शाद्या उठकर रहा हो तो न ही पिता की उम्र और न ही खजाना बरचाद होगा ऊपर दित रेखा में जा निले ।
- , दित की पूरी शक्ति होगी हो सकता है कि सूरी भी हो ।

142

13. एस्टा दियाने वाला होगा
 14. उत्तम बोलने की शक्ति वाला होगा ।
 15. स्वयं भी अपनी इच्छा मान और माता की आपु लम्हा ।
 16. अब जुप नं.2 में रेता हुआ वृ. [पिता] पर कोई नुह अरार न
देगा अबर करे तो मंगल पर रेशक झगड़त वर सकता है, जो
जहाँ नहीं कि मंगल का नुह करे ।
 17. दस्ती काम करने वाला व्यापारी मगर फेरे का पुत्र
 18. उड़ता सांप [नेक छालता] हद से ज्यादा तेज होगा ।
- केतु नं.8 [रुनिष्का का चिह्न नाक दार]
 केतु नं.9 [रुनिष्क लम्हा]
 नं.9-12 में वृ. हो ।
 घाना नं.6 में मंगल अकेला या मं., वृ. दोनों में 6 में
- सूर्य नं.8
 ज्याप्त : अनामिका रुनिष्का की ओर मुक जाये ।
 शनि नं.6

मन्दी हालत :

1. जुप एक ऐसी घब होगा जो हर एक का मुंह मिट्टी से खण्ड कर देगा ।
 2. अब केतु का भी असर मंदा होगा यानि नर संतान की कमी, देरी या संतान से दुखी । चर्टक चंचल के सुख से गैरित परन्तु
निरंतरन न होगा ।
 3. हीय कट्टी से कटता और यन रख होता होगा । व्यापार सट्टा, जुआ फर्जी मालिक व्यापार का प्रभाव मंदा ही होगा । वाप
लायोपति होता हुआ भी टेवे याते के लिए सिफर ही होगा या पिता का सुख न होगा । चर्टक 16 से-21 और अखिली हद
34 से 36 के कर्तव्य पिता की गृह्ण होंगे । अगर वह जीवित हो तो मरे से भी नुहीं हालत कम । पिता का धन दरबाद यानि
पिता जब तक जिंद रहेगा या जब तक बाप की कीमत देता जाएगा बाप लिंदा रहेगा यद्यने बाप की छाल भर की कमाई के
बएवर एक बार ही पाटा या हानि होता रहेगा और बाप जीवित चलता रहेगा ।
 ब्याप्त : शिर रेखा जब शुरू हो जाये तो आपु रेखा से न मिले ।
4. जुप की चीजें यहन लड़की बुआ सभी विष का प्रभाव देगी । नाक छेदन 4-5 दिन तक कन दे कम 96 घण्टे सुखव कायम
रहे सहायता मिलेगी । 16 से 21 साला रे पहले पहल अधिक फ्लायदा मंद नगर बाद में भी नाक छेदन सहायता ही करेगा ।
 5. गोर खोल ध्यान में रहने का त्वारी जपने दिशाग पर पूर्ण भरोसा सूर्य नं.8
 मंगल, शरीर उत्तम, मगर धन का हल्का होगा ।
6. साली का साथ अशुष्म जेरे शुक्र नं.12 और जुप नं.2 ऐसी हालत
में यदि साली आकर टेवे याते के पास या राय रहने लग जाये
तो पहले शुक्र [ल्ट्वों] को जुप नं.12 में जाकर बएवर करेगा
और फिर स्वयं जुप नं.12 के नदे परिपान होंगे यानि दोनों ही
ग्रहों वा नं.12 का मंदा फल होगा मगर हर दो का मंदा या
दोनों ही ग्रह दरबाद इस तरह ही बाकी पर शुक्र नं.3-8-9
वा मंदा दाल होगा यदी दाल भेड़ तोता यदि पालने पर नी
पहली निशानी होंगी ।
7. जुप क्लाक टावर की पूमती चिंड़या होगा यद्यने उस के असर का
एत्तर न होगा ।
8. अब बाप की जगह याये पर नुह प्रभाव होना तथा वृ. की चीजों
और रिश्तेदारों का भी ऐसा नुह हाल होगा ।
- शनि और सूर्य जब प्रवत हो ।
- न. नं.8

143

9. शुप की मियाद | 17 वर्षा आयु | से शुन्ह हो कर शनि का समय चन्द्र शनि नं. 12
आने तक यानि 33 से 36 वर्षा आयु से पहले यानि 32 या 35
वर्षा आयु पिता की कर्मद धन टेये वाले को जद्दी मकान से
पूर्णचर्चा पूर्वी | यानि नं. 12 | के कुए में जाती होगी । चन्द्र की
चाने धर्म स्थान में देना शुभ होगा ।

जुरा साना नं. 3

| धूकने वाला कोड़ी मंद्य |

चरण पर में रखते, लगी कुछ न देरी ।
चले सब गए आयु बाकी है तेरी ॥

- | | |
|---|--|
| पहले मंगल शुप हर दम उच्च, दौलत कर्मला बदता हो | असर चाले शुप उत्तम देगा, मर्दे केतु जा मरता है । |
| 4 शुक्र संतान में देरी, आयु सम्भी रघि । जो | मामा शुप धन होगा, वेद दम का उत्तम हो । |
| आठ चन्द्र से शुक्र मंदा, शनि राह भी जलता हो | साथ छठे हो पापी देव, खातू फूफू पिता मामा मरता है । |
| अंधेरे जंगल में मुसाफिर ¹ लुटते, आग चक्र शुप जलता हो | 9 मरते हो ॥ उनझे, चार पाँच 3 गरकता हो ² । |
1. अंधेरे जंगल = गंदा शुप, मुसाफिर = केतु चक्र आग = मंगल चद ।
2. 9+11+4+5+3 = 32 दांत जब तक कायम उन धरों के ग्रहों पर शुप मंदा अरर देता होगा । मगर स्वयं शुप का अपना अग्र ग्रन्थ ही होगा । जब मंगल नं. 1 हो तो अपनी ओर भाई की फिस्त यी सहायता के लिए वृ. 9-11 और शुक्र नं. 7 की उपयित चीजों तथा वारेनार सहायक होगे ।

हस्त रेखा : Free by Astrostudents

सिर रेखा मंगल नेक में समाप्त होवे



नेक हालत :

- अपने भाई चन्द्र तथा चिह्नदारी वाले उसके अपने लिए जल्ल सहायता तथा नेक प्रभाव होने ।
- दूसरे के लिए जद्दी कोड़ी | बहुत मंदा | अपनी सहायता के लिए शेर के तेज दांतों का भालेक । मगर धन दौलत के लिए अपने लिए कपी मंदा न होगा ।
- आयु 80 वर्ष से कम न होंगी ।
- शुप हर दम उत्तम प्रभाव देगा दौलत कर्मला बदता होगा । मंगल नं. ।
शुप की चीजों का उत्तम फल होगा । अगर मंदा अरर हो भी तो केतु बरबाद होगा । अपनी तथा भाई के भाग्य की सहायता के लिए वृ. नं. 9-11 और शुक्र की सम्यित चीजों के कारोबार सहायक होगे ।
- केतु | औलाद मामा | का उत्तम फल और दम के मर्दन का उत्तम सूर्य नं. ।।
हकीम होगा त्वयं सूर्य और शुप दोनों ही की चमक या शान न होगी । मगर आयु जल्ल तम्भी होगी ।
- अब शुप का हर तरह से उत्तम फल होगा । नं. 3 का लंगा शुप यानि 9-11 खाली हो ।

| 42 |

13. एस्ता दियाने वाला होगा
14. उत्तम बेतने की शक्ति वाला होगा ।
15. स्वयं की अपनी इन्जिन मान और माता की आपु लम्हा ।
16. अब युप नं. 2 में ऐसा हुआ था कि पिता पर कोई युध अतः न देगा अब करे तो मंगल पर बेशक फरहत कर सकता है, जो जर्ही नहीं कि मंगल का युध करे ।
17. दस्ती बाप करने वाला व्यापारी भगव ऐसे का पुत्र
18. उद्धता औप्यं [नेक हालत] हृद से ज्यादा तेज होगा ।

मन्त्री हालत :

1. युध एक ऐसी घब्ब होगा जो हर एक का मुंह मिट्टी से खटक कर देगा ।
2. अब केतु का भी असर मंदा होगा यानि नर संतान की कमी, देरी या संतान से दुखी । चल्क लंबन के सुख से रीत परन्तु निरंतर न होगा ।
3. हीय कल्पी से कल्पा और घन रथ्य होता होगा । व्यापार सट्टा, जुआ कर्जी मालिक व्यापार का प्रभाव मंदा ही होगा । बाप लाधांपति होता हुआ भी टेवे याते के लिए सिफर ही होगा या पिता का सुख न होगा । चल्क 16 से 21 और अद्वितीय हृद 34 से 36 के कर्त्तव्य पिता की गृह्यता होती है । अगर वह जीवित हो तो मरे से भी युही हालत का । पिता का घन रवाद यानि पिता जब तक निंद रहेगा या जब तक बाप की कीपत देता जाएगा बाप जिंदा रहेगा यद्यने बाप की सात भर की कर्माई के बहार एक बार ही घाटा या हानि होता रहेगा और बाप जीवित चलता रहेगा ।
- क्याप्स : सिर रेखा जब शुरू में आपु रेखा से न मिले ।
4. युध की चीजें बहन लड़की बुआ सभी विष का प्रभाव देगी । नाक छेदन 4-5 दिन तक कन से कम 96 घंटे सुखबद कायम रहे सहायता मिलेगी । 16 से 21 साल ते पहले पहल अधिक फायदा मंद नगर याद में भी नाक छेदन सहायता ही करेगा ।
5. गोर खोन घ्यान में रहने का त्वारी जपने दिमाग पर पूर्ण भरोसा सूर्य नं. 8
मगर्लू, श्रीर उत्तम, भगव घन का हल्का होगा ।
6. साती का साथ अशुम जेहे शुक्र नं. 12 और युप नं. 2 ऐसी हालत में यदि साती आकर टेवे याते के पास या रथ्य रहने लग जाये तो पहले शुक्र [स्त्री] को दूष नं. 12 में जाकर बराबद करेगा और फिर स्वयं युप नं. 12 के मंदे परिजान होंगे यानि दोनों ही शुक्र नं. 12-3-8-9 या शुक्र ऐसे घरों में जहां युध मंदा हो ।
7. युध कलाक टावर की पूर्मता चिर्डिया होगा यानि उस के असर का एतशार न होगा । शनि और सूर्य जब प्रबल हो ।
8. अब बाप की जगह बाये पर युध प्रभाव होना तथा वृ. की चीजों और रिश्तेदारों का भी ऐसा युध हाल होगा । वृ. नं. 8

केतु नं. 8 [कनिष्ठा का रिय नंक दार]

केतु नं. 9 [कनिष्ठ तत्त्वा]

नं. 9-12 में वृ. हो ।

घाना नं. 6 में मंगल अकेला या म., वृ. दोनों त्रिं 6 में

सूर्य नं. 8

क्याप्स : अनामिका कनिष्ठा की ओर युध जाये ।

शनि नं. 6

मन्दी हालत :

1. अगर ज्यान में ध्यतापन हो तो बुध का अगर वेशक ऐसा मंदा न होगा । वरना नं.3 का बुध जट्टी कोर्डी जो किरी की जड़ काटने के लिए शेर के तंज दांतों या तलवार से अधिक बुध करने की शक्ति का भृत्यक होगा और अपने ही कर्णाता पर भाई [जाती खन के संबंधी] और खानदान [तापे चाचे जाये] में खन के संबंधियों पर मंदा होगा । जब तक मंगल नेक हो बुध की जट्ट ऐ बचत होती रहेगी वरना मंदी मंदी किस्त के चक्र में फंसा हुआ जगह जगह का उजड़ा हुआ मुसाफिर होगा खाना नं.3 अगले में बुध की वप्पों राश या दुनियावी हालत में एक भाई जंगल माना यदा है बुध खुद खाली खलाब आकाश का चक्र या फर्जी दिमागी दाचा होगा । यंत्रे में संसार के जंगल में मंदी आंधी चल जाने के समय वृक्ष जड़ों से कट कर इस करर ऊंचे उड़ों कि साह आकाश [बुध] ज्यान से पर्याप्त होगा । कोई इधर कटा कोई उधर कटा कोई ऊंचा उड़ा और कोई वृक्ष किसी प्राणी की चोटी पर टक्कर कर उस का नाश कर रहा होगा । योड़े शब्दों में बुध नं.3 की हालत मंदी जिस करर घोड़े नुकसान पर समाप्त हो जाये भला ही होगा क्योंकि यह जालिय लौड़ी अपने खानदान के भाई बन्धु [खाना नं.3 के संबंधित रिश्तेदार] उब के उब वर्क करवा कर अपनी दांतों की चमक जवान के रान और छोटी आयु के भोलापन की दिलदाद होगी ।
2. अंधेरे जंगल में मुझाफिर लुटते को तरह आप्य के भेदान में खण्डियां होगी । फजूल फर्जी चक्र के दायर में आ कर प्राणी खएव होता और कष्ट में होता होगा । आप का चक्र [मंगल वद] बुध जलता हो मंदे 32 दांतों वाला कई घरों को तवाह करेगा ।
3. खाना नं.9 में बेठे हुए ग्रह के उंचित रिश्तेदार चीजें और कारेबार उजड़े हुए उजाड़ देने वाले अक्षर के खाना नं.11 में बेठे हुए ग्रह ऐ संबंधित रिश्तेदार मुर्दा या मुर्द की तरह मंदी हालत पैदा करने वाले । खाना नं.3-4-5 में बेठे हुए ग्रह के संबंधित रिश्तेदार गर्के होते या वर्क करते होते । मुंह में दांत [अमूमन 32] कायम होने तक बुध का मंदा अगर खाना नं.9-11-4-5-3 पर होता रहेगा । 34 गाला आयु तक जोर पर होगा । 42 तक घट्टत 45 तक मध्यम नर्म हालत में मंदा और 48 पूरे होने पर बुध बदजात के बुरे प्रभाव से छुटकारा होगा । हर हालत में बुध का खुद अपना प्रभाव टेवे वाले पर भला ही होगा ।
4. मंदी हालत की किरणे केतु की चीजें काम रांघ संतान माजा पर उब से पहले चमक देनी इधर तिए केतु कल्पन करता [कुत्ता आदि पालना या 3 उच्चरेक कुत्तों की सेवा करना] सहायक होगा । अमूमन बुध की आयु 34, 17, 8 $\frac{1}{2}$, 4 $\frac{1}{2}$ साला आयु तक की उंचित चीजें [जैरे पूजा पाठ पुरखों की शान धर्म ईशान की खानदानी स्वर्णमय नींव आदि]। अनुमन खाना नं.9 और खाना नं.9 के उब के संबंधित रिश्तेदार या कारेबार भौतों का शिकार या मातम का बहाना होते । खाना नं.11 से संबंधित चीजें [जैरी जन्मों कर्माई का बच्चा संबंधियों से पहले मकामी अफसर की भेहरवानियां या धन की आमदन के दूसरे रास्ते] और खाना नं.11 के रिश्तेदार या कारेबार खाना नं.9 की तरह भौतों का शिकार या नीतों का बहाना तो न होते मगर उजड़ जल्द जायेगा जैसा कि फलदार हरामर । जंगल उजड़ चुका हो । खाना नं.4 के चीजें जापदाद जट्टी आप का कव्याय शक्ति तुम्ही मट्ट जपरी आमदनी, नं.4 के रिश्तेदार वर्क होते । यानि यह अपनी वर्कों से चत्ती आई ही जरह छोड़ कर किसी ऐसी जगह चले जाएंगे जहाँ कि उन्होंने और उनके बड़ों ने जन्म नहीं लिया होया अर्थ यह है कि नीते भी नहीं होगी उजड़ भी नहीं होगा । मगर जगह की तमदीली तो शायद जल्द ही होगी । इसी तरह ही खाना नं.5 और खाना नं.3 का जवाब होगा । बुध से उंचित चीजें [मुंग की दाल आदि] का प्रयोग अमूमन बीमारी का बहाना हुआ करेगा ।
5. दीक्षिण का दरवाजा बुध नं.8 का फल देना और सब खास कर स्त्री धन उत्तराहत की तबाही देना । हर ऐज दांत फिटकरी से गाफ़ करना सहायक होगा । उत्त के समय मुंग सालम पानी में भिगो कर प्रातः उसे जानवरों को ढाल दें और 43 दिन तक करते जायें व्यापार में सहायता होनी । पलाश दाक के चोड़े पत्ते दूध से धोकर बाहर रखाने में, जिस जगह किसी का बहम न हो, दिन के समय एक गढ़ुँड़ ने ढालकर और उसके ऊपर एक पत्तर का टुकड़ा [जैरन] रख कर निट्टी डाल दें । जिस चीज रे गदा खोदें और जिस जंतन में दूध ले उंचे पर वापस न लायें मगर पत्तर ये रंग जन्म कुण्डली के हिंसाब खाना नं.9-11 के ग्रह के उलट न हो । इसी तरह यह पत्ते मकान के दरमयान या परिचयनी दीवार की तह में भी दबाने दाक जाने

145

हैं भगर पर ये बाहर पिराने में दवाने अधिक शुभ हैं। पर में तगा हुआ पत्वर दूष से घोते जाना सहायक है। पीले रंग के गोदाया जलाकर उनकी एवं दरिया में डाल देना भी शुप के कोड़े से बचायेगा।

6. फलम या फल मंदा न होगा और चन्द्र का भी प्रभाव उत्तम होगा चाहे चन्द्र बरवाद ही हो रहा हो - शुक्र कायम।
7. संतान में देटी होगी - शुक्र नं. 4
8. शुग या फल मंदा गर्न एहु भी बरवाद - शशु ग्रह चन्द्र नं. 8 हो और नं. 6 में मिश्र न हो।
9. पिता की माया, मामा घानू पर एवं बरवाद - पापी नं. 6, 7

उपाय : हर रोज फिटकरी ऐ दांत खाक करना सहायक। आय दिन क्यामत को दूर करने के लिए अच्छा होगा कि बकरी [जु] की चाँचे का दान कर दिया जाये जिस तरह से गाय दान की जाती है। पर्कियों की सेवा सहायक होती है।



शुभ खाना नं. 4

[रज योग]

जन्म तेरे पर हंस माता क्यों रोई।
पता उरे लगा आयु बाकी न कोई ॥



एन का तो दरिया चलता है जो समाप्त नहीं होता

बहन बेटी रज मिलता, दिल मगर होता नहीं।

शुप दुने या पिता पर भाई, चौये माता पर मंदा हो
चन्द्र रवि पर 3-5-11, सार्थी गुरु 9 रेता हो
पापी मंदा शुरु मर्द हो मंदे, सफर सलाही डोलता हो
उत्तम स्त्री ग्रह नर होते, पाप बना शुप होता हो

तीन चौये 6 चन्द्र सार्थी, हीरा अमूल्य दुनिया हो।
पाप पापी हो सब ने छोड़ा, परिवार उम्र धन लम्बा हो।
माता मगर जब श्वर्दर्द रेठे, सूखे घड़े जर भरता हो।
शृण पितृ जब टेवे रेठे, माता दौलत पर जलता हो।

1. जब वृ. उत्तम या चन्द्र नं. 2 या खाना नं. 2 खाली।

हस्त रेखा :

- [1] दिल रेखा और सिर रेखा मिल जावे, सिर रेखा दिल रेखा को काटे, सिर रेखा शुक कर चन्द्र के बुर्ज पर समाप्त हो।
- [2] सिर रेखा आखिर पर चन्द्र के बुर्ज में आम हालत की जगह अचानक शुक जावे [तो दिल की कमजोरी होनी।]
- [3] अगर आम हालत में चन्द्र के बुर्ज में जा निकले तो दरिया का पानी बहुत धन या और ठंडा रेत। संसारी संज्ञारेक सुख आगर उत्तम और तोते भैना की जोड़ी उत्तम तथा आबाद होगी।

नेक हालत :

1. हर एक यी मां बेटी से डरने वाला। दूरहों की झुंगेभत अपने जब स्त्री या नर ग्रह उत्तम हो। ऊपर लेकर मरने वाला, मगर सब वाला होगा।
2. जब अकेला ही शुप हर तरफ से उत्तम और उब के लिए अपने साय स्वयं पास होगा। चन्द्र का संसारिक जल माया धन उत्तम। मगर हुपा प्रभाव दिल की शांति और दूसरों की शांति के लिए मंदा ही लेवे।
3. रज योग [सिरकार के पर का हिस्सेदार] शुप और चन्द्र हर दो जब चन्द्र नं. 2 में हो। ही उत्तम फल सूखे घड़े धन से भर देगा। 32 दांत हो तो भी मंगल वद या मंगलीक ना होगा चल्क सरे कुनवे को ताने वाला होगा। शुप और शुक दोनों का फल उत्तम होगा।
4. परिवार धन और आय की बरकत होगी और पापी ग्रह का कोई शुप प्रभाव न दें। नं. 3-5-11 में से किसी में भी सूर्य चन्द्र और वृ. नं. 9 में हो।

146

5. माता पिता का सुष्य गागर लंगा होगा ।

चन्द्र नं. 6-3 या नं. 2 द्याती ।

क्याप्रयः : जब मंगल के बुर्ज नं. 3 से शुरू होकर चन्द्र के बुर्ज नं. 6 में समाप्त हो तो भारू रेखा हो । जब वृ. के बुर्ज से शुरू हो आयु रेखा, जब आयु रेखा वृ. की जड़ या नं. 2 में या चन्द्र के बुर्ज में खत्म हो तो पितृ रेखा, छ्यात रहे कि वृ. के बुर्ज पर समाप्त हो तो, एर रेखा होगी । मातृ रेखा जब सिर रेखा वृ. के बुर्ज के नीचे तक जाती थालूप न हो और सिर्फ शनि के बुर्ज तक दौ रह जाये आयु रेखा होगी ।

6. एव योगः : उजड़े भेदान भी आवाद और निर रेखा का उत्तम

गुल उत्तम हो ।

फल और सम्भा एमय उन में प्रश्नन्ता होगी । सरकार के पर से हर तरह की मदद और बरकत होगी ।

मन्दी हालतः

1. इस के जन्म पर माता हंसी कि बेटा पेटा हुआ है शुभ होगा मगर जल्द ही ऐने सारी जबकि उसे पता सगा कि उस की [माता की] तो उस अव बाकी नहीं रही । युध की जानदार चीजे [बक्षी, तोता] घर में आयेंगे तो चन्द्र की चीजों [माता, बोझ़ा] चलते बनेंगे या मर जावेंगे । माता की आयु शक्की ही होगी बगर जीवित तो धन दोलत की हालत और वह बुद्ध मुर्दा से दुरी हो । मंदे युध के उत्तम तूर्प की चीजों का उपाय सहायक होगा, धन के लिए वृ. का उपाय सहायक होगा ।

2. मर्दी की हालत मंदी होगी ।

यहू मंदे घरे में या मंदा होगा ।

3. सफर और दूसरे संउरिक साथी सलाहकार मंदे नतीजे दें

केतु मंदा या मंदे घरे में हो ।

4. स्त्री धन और आम गृहस्त्री सुन्द उव कुछ जलता और बरवाद होगा

इष पितृ 2-5-9-12 में शुक्र एहू या शनि पापी ब्रह्म हो

5. आत्म इत्या करने तक का प्रयास

चन्द्र नं. 6 या मंद बरवाद [खुदकशी की रेखा] सर रेखा

चन्द्र के बुर्ज पर बहुत शुक्र जावे, सर रेखा और दिल रेखा निल जावे । सहर रेखा दिल रेखा को काटे ।



Free by Astrostudents

युध खाना नं. 5

| प्रस्तु, वर्के मुंह से निकला ब्रह्म-वक्ष्य उत्तम होगा । (मासूम की श्याम) |

जवान से पता नस्ल तेझी जो चलता ।

उसे कानू फिर व्यो न तु अपने करता ।

चन्द्र हो या नर ग्रह, वेठे 9-3-11

युध आ निकले पांचवे, चावे पोते ताह ।

शुक्र चन्द्र हो जेहे टेवे, असर वही युध देता हो

पेत्ता भत्ते का खजाना बिनते, सून नस्ल सब उत्तम हो ।

असर शनि सब उत्तम होगा, संतान कभी न मंदा हो

मदद जल्ही शुक्र देगा चीज चन्द्र से तरता हो ।

गुरु चन्द्र जब टेवे मंदा, युध¹ जहरी आ होता होतीन चाये 7-9 ग्रह वेठ, एच² हुआ सब जतता हो ।

1. चाहे पिता के लिए मंद भाग्य नगर संतान पर कभी मंदा न होगा । वाकी तीन बचने वाले मकान की किल्लत होगी ।

2. खान कर जब युध टेवे में चन्द्र रे पहले घरे में हो मगर आम तोर पर चन्द्र या वृ. 3 या 9 में उत्तम फल और सूर्य नं. 9/3 के रमय भाग्य 34 के बाद जानें । हर हालत में खाना नं. 5 का सोया युध उत्तम फल देणा ।

हस्त रेखा :

सेहत या तरक्की रेखा कायम हो जल्ही नहीं कि शुक्र के बुर्ज की जड़ तक होवे सही हालत यह होगी कि हथेती में खाना नं. 1 की जड़ तक ही हो ।

147

नेक हालत :

1. ज्ञान भंडार उसपे गुह है निकला वाय्य ब्रह्म-वाय्य [अचानक निकला शब्द] का उत्तम और शुभ फल होगा ।
2. यह यो मी तार देये टेये यासे के लिए धन और परिवार का दाता मगर सूर्य के असर के लिए गुड़ में रेत और राजदरबारी सम्पर्क में कनक की रोटी में रेत मिली हुई यह भी निकम्भी या नहाने के बाद शरीर पर रेत पढ़ जाये या पेशाव की तुलनुलोकी तरह भाग्य का फर्जी उभार मगर अधिक पर फर्जी चक्र लगा देगा ।
3. यदि सूर्य और नुय दोनों का उत्तम फल होगा, चन्द्र से संबंधित यीजे तारने वाली होगी ।
4. शनि का फल उत्तम [पांच बाकी बचने यासे मकान बाल बच्चों की बरकत होगी] ।
5. संतान स्त्री और स्वयं अपना भाग्य सब उत्तम जब अपना घर गृह घाट हो । सूर्य यह दरबार भी सहायता पर होगा और नुय का स्वयं नेक फल साय होगा । जब तिर रेखा की लम्बाई सिर्फ खाना नं. ॥ तक हो और स्वास्थ्य रेखा काम हो ।
6. मनुष्यता की सिफते जट्ठी मकान का असर हर तरह से उत्तम होगा, गृहलौक संतान की हालत हरदम उत्तम होगी । दृष्टि का घर साली या नं. ५ का सोया हुआ नुय ।
7. 34 साल आयु के बाद भाग्य का सूर्य चढ़ेगा । सूर्य, चन्द्र, वृ. नं. ३-९ में
8. नुय नं. ४-६-७-८-९ के ग्रहों को मार देगा । चन्द्र नं. १-२-४ में रेत हो या वह ६-१२ में मंदा हो रहा हो ।
9. यिह तरह गृह वृहस्पति यो ज्ञान [गूर्ह] प्रशायक है जही तरह ही तड़के [सूर्य] को तड़की [नुय] सहायता देगा ।

मन्दी हालत :

1. नं. ३-४-७-९-५ सब का असर मंदा और नं. १ के ग्रह की तो मिट्टी ही बोतली होसी तेकिन यदि स्वयं ही चन्द्र या वृ. ३-९ में हो तो उत्तम फल होगा ।
2. चन्द्र की चीजों से सहायता होगी या चन्द्र की चीजें तारती होंगी और शुक्र [लूंग] हर तरह से सहायक होगी । सूर्य की चीजों का फल उत्तम होगा पिता के लिए वेशक मंद भाग्य हो मगर संतान पर कभी मंदा प्रभाव न होगा ।
3. गते में तंबे का ऐसा खजाना की बरकत होगा ।
4. नुय जहरीला प्रभाव देगा । इसान और पशु में सिर्फ [जवान] नुय की चीज का फर्क है मगर पता नहीं चलता कि अब उच्च जुगान यो स्या द्यो गया यानि स्वयं उत्तमी अपनी ही जवान बराबरी का बहाना होगी । चन्द्र का वृ. जब नीच या रद्दी खालकर नुय टेवे में चन्द्र से पहले घरे में हो ।

नुय खाना नं. ६

[युमनाम योसी और दिल का एजा]

निकले चखुन नुंह से पूर्ह जो होगा ।
जगान मंडी तेही भला दूर्जरे का ।

- थेष्ठ रेखा जब शुक्र उत्तम, नुय मंगल न चन्द्र हो^१
हाल शुक्र पर दूना जैसे, चाल वही नुय चलता हो
नुय यीजे न होनी मंदी^२, आयु जेटी चाहे कितनी हो
दर्जाम लालच जड़ अपनी जट्टा, गुणि रायर लुट फलता हो
- भला गुरु शनि सूर्य रेता, योग उजा जर भादर हो ।
कायद देता ग्रह जो कोई टेये, उत्तम असर सब देता हो ।
तड़की द्योये जो उत्तर वियाही, सुखिया कभी न होती हो ।
गूर्ह शनि गुरु दूने रेते, जारीर एजा पन नदत्ता हो ।
1. चन्द्र यो जानदार यीजे [माता पोड़ा आदि] या वेशक कोई फायदा नहीं आएगा न दोष मगर चन्द्र की बाकी चीजों की पूर्णी

148

मदद होगी ।

2. दिमागी कारोबार और व्यापार का पूरा फ़ायदा मगर हुनरमंदी दस्ती काम आदि हल्का ही फ़त देने ।

दस्त रेखा :

बुध से शुक्र तक रेखा कायम हो । चिर की श्रेष्ठ रेखा कायम हो ।

नेक हालत :

1. ऐसा रेखा माता के घेट में आने के समय हो ही अपना असर शुल्क कर देगा ।

2. बुध अब कुत्ते की तरह हर समय मासिक के पीछे दुग्ह हिलाने याला और वफादार लौटी की तरह उत्तम फ़त देगा । आखरी समय जबान भव्य न होगी और जुबान का बोला शब्द अच्छा या बुध जल्द पूर्ण होगा हर एक पूछता होना कि उस की आवाज से कुल जमाना ही क्यों गूंज उठा ।

3. फकीरी से स्वयं बना अमीर और फूल की तरह जीवन का मालिक होगा । गुमनाम एजा योनी और मन का एजा । जाना नं. 2 या शुक्र की हालत पर बुध का अम बरर होगा जो ग्रह कायम होगा, बुध उसी का अचर देगा या टेढे में जब भी कोई ग्रह उत्तम हो [खालकर नं. 2] बुध उसी की नकल करेगा । अमूमन जैसा शुक्र हो रेगा ही बुध का भी फ़त हो जायेगा ।

4. बुध की जानदार चीजें तथा संवित रिस्तेदारों की आयु छोटी हो जल्दी नहीं कि छोटी ही हो मर दुध की चीजें कभी मंदा फ़त न देंगी । उन्हें याला रहे तो हरदम फ़तेगा । समुद्री सफर का परिणाम शुभ होगा ।

5. दिमागी काम व्यापार और विद्या से संबंधित कारोबार अक्स की चारीकी और दिनागी काम का पूरा फ़रमदा नितेगा नगर दस्ती काम हुनरमंदी आदि हल्का ही फ़त देंगे । झगड़ों का फ़रला अपने हक में होगा ।

6. खेती की जर्मान रे फ़ायदा । लिंदाई और व्यापार का शुभ फ़त हो ।

7. ईमानदारी के धन की बरकत होनी ।

8. शुभ कामों में बुध की चीजें [फूल, लड़की, कन्या] का शमन शुभ होगा ।

9. बुध का जाती फ़त बुध की जाती चीजों पर कभी मंदा न होगा साहिं कुण्डली में जब भी कोई ग्रह उत्तन फ़त देने वाला होगा बुध भी फ़ोरन उसी ग्रह के नेक फ़त का हो जायेगा या यूं कहो कि बुध नं. 6 के समय पर उत्तम ग्रह दो गुजा उत्तम हो जायेगा ।

10. चन्द्र की जानदार चीजों के अलादा चन्द्र का बाकी सब नेक फ़त होगा छापाखाना कागज आदि के कामों से फ़ादा होगा ।

बुध अकेला दृष्टि खाती ।

11. स्त्री अमीर घर की होगी

शनि नं. 9-11

12. एजयोग धन और धर्म मर्यादा का स्वामी जागीरदार होगा

नं. 1 में सूर्य वृ. या शनि

13. एजयोग यागनी काम काज छापाखाना आदि लोगों के काम के

वृ. कायम

- लिए जैहे [अखवार, रसाले आदि छापना] ईमानदारी का धन साय देये ।

मन्दी हालत :

1. बुध भाग जाने वाली लौडियां की तरह होगा जो जाती हुई मालिक के लड़के को भी उठा भासेंगे । नमक हएनों करता होगा ।

2. उत्तर का रास्ता या दरवाजा [जो नया बनाया होगा] मात्रम कुंड की तरह बुध प्रभाव देता होगा उन्नकर वो लड़कों उत्तर दिशा में [जद्दी मकान से] वियाहां गई हो कर्भा तुखी न होगी ।



| 49

3. लाजरी हयंग हो तो कुप ही अपनी जड़ काटता और बरबाद होगा ।
4. याना नं.६ या कुप टेवे यात्रे की ३५ साल आयु में मंगल चद का असर देगा । माता भरे या बरबाद हो जाये आदि ।
5. जब कुप मंदा हो दूष का बर्तन बाहर रोकाने में और जब चन्द्र सहायक हो तो गणजन की शोतल खेती की जनीन में दबाना यद्यायक होगा । शुक्र रक्ती होये ।
6. माता छोटी आयु में गुजर जाये, पर-वार बरबाद हो । मंगल नं.४-८.
7. संतान ३५ साल आयु के बाद काषम होये । स्त्री के बायें हाथ पर चांदी का छल्ला सहायक होगा । शुक्र नं.५ जब केतु मंदा हो ।
8. नजर कमजोर और शनि का जाती अरर मंदा होगा, बुझापे में मंदा हाल और आयु का समय अमूमन ९० साल होगा । वृ. चन्द्र नं.२ या वृ. नं.१। और चन्द्र नं.३

कुप खाना नं. 7

(संचार के लिए पास्त लड़के के टेवे में दूसरे को तारे, उड़म्बी के टेवे में कुप बपने लिए कभी मंदा न होगा)

मरे कफन पहने खुदा घर जो चलते
भला फिर भी जायेंगे लाल्हों का करके ।

- | | |
|---|--|
| जागता कुप ईया होगा, योगे ¹ मिट्टी जलता हो ।
खाती थेली ² लेख अपना, न ही शाही उम्दा हो ।
थीने शुक्र या चन्द्र जाती, उत्तम नेकी उस्माण्ड की हो ।
चन्द्र आया घर पहले टेवे, सफर सुन्दर मोती हो ।
१०वें पहले चाहे शशु जहरी, नेक प्रभाव रच उनका हो । | जान चीजे कुप हो मंदा, साल ३५ जहरी हो ।
गाय स्थी ग्रह जो बठा ³ , दूष पत्थर तेंग हो ।
चन्द्र शनि या मंगल पारी, नेक भला न झोई हो ।
नेव शनि हो जब घर तीने, सुर अमीरी होत्य हो ।
गुरु ऋषि घर मिट्टी उड़ती, भला शुक्र चाहे नेव हो । |
|---|--|
1. चाहे अक्तु की बारीकी साय न देगी मगर सांसारिक शान तथा सुख-खगर भला ही होगा ।
 2. जन्म रैंगतान थीकानेर की भाति रेतीले प्रान्त में, दीरा नदी नासे के निकट हो सकता है ।
 3. सिवाए मंगल के लिए साय या ताल्तुक से पानि मं.नं. १-७-८ हर दो मंदे और चन्द्र नं.७ सी दूष में मैगने होगा । यद्देने ३५ साल आयु तक उठका त्वयं और खानदानी शाल बहुत हल्का मगर हाँगिर मात का व्यापार उत्तम फल देना मधर त्वयं दौलत का रथक ही होगा ।

हस्त रेखा :

• दिर रेखा की लम्बाई रेहत रेखा की हद तक होवे । शादी रेखा कुप पर निन्ती में दो हो ।

नेक शालत :

1. कुप अब स्त्री की बफादार बहन [जानिसार साली] और मिट्टी में रेत की तरह एक ही जिस्म होकर दूसरे ग्रहों की नदर करेगा । उंसार के लिए पास्त होगा चाहे अपने लिए मिट्टी ही हेतु पढ़े । लिंगारी कलम का ऐसा जो तलवार को भी कट दे राते चलते ही किसी का कुछ न कुछ तो जल्द ही दना देगा । यद्देने थोड़ी सी भी मुलाकात पैदा करने पर बहुत सहायता कर देगा ।
2. बुझापा सदा उत्तम होगा ।



150

3. हाँनर माल के व्यापार से लाभ, दस्ती काम से फायदा, फौजदारी मुकदमे या तकरार फहाद में उत्पन्न कभी न होगी। तत्त्वार की जगह कलम पर अधिक जार देगा। चाहे अवल की बारीकी साथ न देरी मगर खजाना की दीतत सदा उपायता पर होगी।
4. अपनी बुल इयानदान तारने याता हीरा होगा। जागता हुआ युप या खाना नं. 1 में कोई न कोई ग्रह जल्द हो।
5. समुद्री सफर मोती देगे। चन्द्र नं. 1
6. स्त्री का घणना अग्रीर हो जायेगा। शनि नं. 3
7. इन ग्रहों का प्रभाव कभी मंदा न होगा स्वयं चाहे आपस में नं. 10-1 के ग्रह चाहे मिश्र चाहे शशु। या युप से लझते ही रहें।
8. शुक्र से सम्बन्धित चीजों में शुक्र तथा युप दोनों का अपना-अपना प्रभाव उत्तम स्त्री के इश्क में यक्क रहेगा जो उसे सुख ही देगा।

मन्दी हालत :

1. टेवे याते की बहन, बुआ, साली या टेवे याते की लड़की सबकी सब दरबाद दुखिया होगी। योग्य हुआ युप नं. 1 से दृष्टि खाली।
2. स्त्री की बिगड़ी हुई बहन बुआ तेरे ही भाईदों से मिलकर केतु नं. 1-8 तेरी ही स्त्री की मिट्टी खण्ड करेंगी यानि मंदा युप टेवे में मंगत और शुक्र का फल भी मंदा ही कर देगा।
3. यादूगाय या फल भी उत्तम ना होगा। मंदी रेत वयपन का समय मंदा होगा मगर बुद्धापा फिर भी उत्तम चाहे अपना भाग्य मंदा। फिर भी साथ के ग्रहों को तारता होगा। 34 साल आयु तक शुक्र का भी फल मंदा होगा।
4. रुदा गृहस्थ, मिट्टी उड़ती, स्वयं युप मंद रेत की तरह युप फल देगा चाहे गृहस्थी कारोबार के लिए शुक्र का फल नेक ही क्यों न हो। गृहस्थ खाना नं. 9

युप खाना नं. 8

[वीमारी, जहर और लानत का भर, युप तनाही का फंदा, माली छनि करने वाला, कोटी]

कच्च तक की लानत, फरिशता भी भागे
जले आप ऐसी, नजर जो न आवे।

- साथ ग्रह नर युप न मंदा, न ही युप युप मंगल हो। मंद समय साल 34 का, हाल वही जो नर युह हो।
मोत मंदी का बाजा बनता, खाली मंदिर जब होता हो। नाम जहर, ग्रह नीच में भरता, तार नदे ग्रह चक्षता हो।
बेठा कोई हो ग्रह जब दूजे, जहर मरे युप लानत हो। आयु गुरु पर युप जो फड़के, न ही पिता ना दीतत हो।
4 रुप या चन्द्र उत्तम, जहर धोत युप अपनी हो। छठा मंदा ग्रह मंगल मंदा, मुआफ़ी गुरु को मिलती हो।
1. युप के साथ नं. 8 में नर ग्रह या मंगल नं. 12 हों तो युप का नं. 8 पर मंदा प्रभाव न होगा।

इस्तर रेखा :

सिर रेखा मंगल वद में समाप्त हो या अन्त में दो शाखी हो जाये।



151

नेक हालत :

1. नुप नं. 8 यो अगर किसी नर युह का साय मिले तो कभी मंदा न होगा और उसे का पट्टा उत्तम प्रभाव होगा जैसा कि नर युह का हो । नर युह 7 नं. 8
2. 34 साल आयु में युप अपनी जहर पो देगा । अब केतु बरशाद न होगा । आता को आयु और चन्द्र की चीजों का फल नेक होगा । सूर्य चन्द्र या नं. 4 उम्दा हो ।
3. युप का नं. 8 पर मंदा असर न होगा । मंगल नं. 12
4. अब युप और मंगल दोनों का नं. 8 का फल उत्तम होगा मंगल नं. 8 का साय हालांकि दोनों अकेले अकेले नं. 8 में मंदा असर दिया करते हैं।
5. ज्ञानी होगा । कनिष्ठा का सिंह शोत हो । युप नं. 8

मन्त्री हालत :

- चाहे युप अब सेहत के संबंध में टेवे वाले के अपने शहीर [खून और नजर मंगल शनि] की तो अवश्य मदद करेगा मगर दाँतों और नाड़ियों के द्वाय [उनकी मंदी हालत करके] अपनी जहर उपलता होगा । वह एक ताजा कोड़ी फंसी की रस्ती या विषेल दांत की माति चलता होगा ।
2. ऐसी उपी रुग्न मिले की बड़े से बड़े भी अजल का फरिशता चिल्लाने लम्हे, मगर कसूर का पता कभी न चले । नक्से मर यार करे तो रिर्फ पन की हानि करेगा अमर ज्यादा नहीं तो 1/2 कर देगा या कभी नस्तर कर देगा मगर शून्य कभी न होगा ।
 3. रुजदरवार में अचानक धाँखे की पटना से जिनका परिणाम चिर्फ नाली हाप्ने होते, जैसे तड़की के दिल में आया जवानी का परिणाम क्या होगा । जब जन्म से ही कमिल्लान का बाजा बजने लम्हे सोच कर कहने लगी, अपनी जेब ना उठी तो दूसरे की ही उल्टा लगे । होनहार काम में लगी मगर परमात्मा से विनुब नौजवान पर नजर जा पहुंची । उसके मालिक, ने उसकी बदबलनी और लापरवाही की बेशुनियद तोहमते छड़ी कर दी ग्लैक के शक को दूर करने के लिए फिर उसी नौजवान के पास हसीती हसीती आंखे दो चार करने लगी । जबकि वह दोनों मालिक की नजर से हो गुजरे । वह क्या या उसी बेहया तड़की ने अपना नूता खोता, असरी अर्थ 800 का 400 याने 1/2 आप करने को पूछ कर दिखाया । वह शरीर इन्हत बचाने के लिए मांगी हुई कीमत देकर चलता बना मगर भेद न पा सका कि यह कोई स्वप्न या या असल में जामती हुई कहानी । उसी प्रकार रुजदरवारी पटनाओं में नीकरी का एक दम 1/2 दर्द पर चले जाना या पन की हानि होना आम होगा मगर युप नं. 8 यी बेहया तड़की मिल यताएं ऐसे फाटने के लिए कभी अपनी जवानी में दूढ़ी न होती ।
 4. युप की जानदार चीजें सब दुखिया बरशाद और स्वयं युप का प्रभाव मंगल की जानदार चीजों पर मंदा और युप की निश्चानी के समय मकान की सुंदिला गिरती या गिरकर नई बनाई होती । पूजा स्थान जब बदला जाये युप का जहरीला चक्कर शुरू होगा । जानी तथा कामों में तमाही का फंदा पन की हानि करने वाला । कोई ऐसी आप जो जलती नजर न आये मगर हर तरह राख ही राख करती जाये ।
 5. जब कभी भी वर्ष फल के हिसाब से युप नं. 8 में आये तो जन्म दिन शुरू होने से पहले 34 दिन के समय और जन्म दिन शुरू होने के बाद 34 दिन के समय में [34, 34 दिनों के दोनों ही दुकहों में जब भी भोका लगे] एक दिन जन्म दिन आने से पहले एक दिन बाद में [मिट्टी का कूजा शहद या सांड भरकर बाहर लाए जाने सहायक होगा अमर हर तरफ पहले ही आग लग चुकी हो और 34 दिन की हर दो ओर की मियाद के अन्दर अन्दर यह सांड याता उपाय तो करे ही करे । याय ही मूर्खी सागत का तांबे का बर्तन [पड़े की शक्ति] मय हुआ जन्म दिन से पहले या बाद में दीरें में बहाना उत्तम होगा ।

42 34 34 208 34 42
 । नौजवान । नौजवान । नौजवान । नौजवान । नौजवान । नौजवान

152

अगर यह दोनों उपाय जन्म हे 34 से 42 दिन पहले और बाद में 34 से 42 के अन्दर बन्दर दुनाय हो तो उत्तम फल देने। जन्म कुण्डली में नुप 8 के समय काला सुरमे से नितम्ब [पूतड़] पर काली धातु कायम करना, उत्त पर वर्षा का पानी या दूध रखना या लड़की के नाक में चांदी का छल्ला ढालना शुभ होगा मगर आतरा शीशा या लड़की के लाल रंग के कपड़े टेवे यहसे के सिए हर जगह आग लगाने का बहाना होगे।

6. कमी भी भला प्रभाव न देगा।

नुप अकेला 8

7. मंदा समय 34 घात आपु होगी गंडी गौत या बजता होगा और मट्टी का रेत जल रहा होगा उस समय टेवे में जो भी नीच ग्रह हो उसके असर में सांप की जहर भरता और स्वयं उस ग्रह के असर का शुल्क करने के लिए बतौर कमान का तीर बनेगा जोकि उस समय टेवे में मंदा हो।

खाना नं. 2 खाली हो वर्ष फल या कुण्डली का।

8. शृंहस्त की आयु 16 से 21 में नुप की जहर पिता की आयु और उसके पन दोतत स्थिति में हो।

खाना नं. 2 में कोई न कोई ग्रह हो।

9. नुप के मंदे असर के समय चन्द्र की चीजें उस ग्रह के रिश्तेदार या जानवर को दें जो वर्ष फल के हिसाब से नं. 2 में आये और नुप भी उस रमय नं. 8 में हो। उदाहरण जन्म कुण्डली में चन्द्र नं. 2 में आ या और नुप उस समय नं. 8 में बेठ या अब चन्द्र की चीजें केतु के जानवर या रिश्तेदार को देने यानि खोए के 24 पेड़ [जिनमें खांड न हो] कुत्ते को दें या दीरिया में डाल दें या किरी ऐसे रहते में एक तरफ करके रख दे जहां से कोई कुत्ता आदि उसे खा जाये। इसकी तरह दूसरे ग्रहों का उपाय होगा। जैसे नुप नं. 8 में आ जाये उस रमय नं. 2 में आ जाये शनि जन्म कुण्डली में नं. 2 में बेठा हो तूष्य अब तूष्य की चीजें [कनक मंदम गुड़ तांदा] शनि के जानवरों के देवें [यानि भैं, भछली आदि को। अगर जन्म कुण्डली में नं. 2 खाली हो तो वर्ष फल के अनुसार नं. 2 में आये हुए ग्रह की बत्यादी के समय वही उपाय करे जो कि उस नं. 2 में आये हुए ग्रह कि मंदी हालत में उसके लिए नं. 2 में दिया हुआ है।

चन्द्र नृ. नं. 2 में हो।

10. ऐयाये नृ. एवं ही ग्रहों के असर में मंदी हालत का चक्कर होगा।

खाना नं. 2 मंदा।

11. माता छोटी आयु में घल दे यरना मां देटा दोनों का धातु मंदा हाल होगा। यंतान और गामा भी दुखिया होने।

नर ग्रह 6 नुप नं. 12-8

12. पढ़ों के योग हो सकते हैं।

खाना नं. 12 खाली हो।

किस घर में नेत्र नीच होगा

कौन सा ग्रह नीच होगा

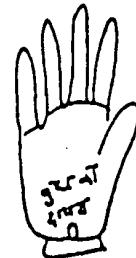
- 1
- 2
- 3

- शनि
-
- केतु

4	मंगल
5	
6	केतु शुक्र
7	सूर्य
8	चन्द्र
9	ग्रह
10	बृहस्पति
11	
12	बुध ग्रह

बुध खाना नं. 9

[कोढ़ी तथा गजा एक स्थ, कम उम्र फ़ाहसु]

अजब भूल भूलईया जवानी तमाश ।
दिखाते वहरूपी ले, किस्तर ही भाष ।

तीन पहले 6-7-9-11, चन्द्र केतु गुरु रेता हो
बुध पितृ गुरु एक अकेला, भाई छठे 10-11 जो
बुध मंगल न रही से भागे, न ही गुरु से ढरता हो
कारप किंडी हो आयु लम्बी का, संतान स्त्री सुध जलता हो
वर्ष फल चक्र में ॥² रेता, बुध तारीफी आता जो

धर्म आयु धन कुल पर्तियाँ, बुध कभी न मंदा हो ।
अल्पायु का प्राप्ती होगा, उत्तम चाहे चन्द्र रेता हो ।
चन्द्र केतु नं. ॥ बठे¹, खाक ग्रह सब करता हो ।
सापा 34 बुध उल्टा होगा, असर मंगल बद देता हो ।
जहर भरी ग्रह मंडल टेय, पौष्य जड़ समेत करता हो ।

1. 7-15-25-37-49-66-76-96-108-120 साला आयु ।
2. अल्प की नकल का बीज [अंडा] खाना नं. 9 में पेता होता है जिसके अन्दर की हालत खाना नं. 11 से मालूम होती ।

हस्त रेखा :

सिर रेखा या धन रेखा बुध या भाष्य रेखा जो जड़ में दावह होते । शुक्र या बुध नं. 9 सद्य बुध ही प्रभाव देते बुध का वही प्रभाव जो त्रिकोण या ।

नेक हालत :

अपने पेट के लिए चाहे रेती न मिले मनर अपने कर्दमे का पालन जल्द करता होगा । अकल की नकल का बीज [अंडा] नं. 9 में पेता होता है जिसके अन्दर की हालत खाना नं. 11 से पता तकती है यहाँ बुध का भेद खाना नं. 11 के प्रह की हालत पर होगा । अगर खाना नं. 11 खाली हो तो वह बुध बेहया लड़की जो अपनी माता के संबंध में अपने जन्म देने वाले शाप के संबंध को भी बुध संबंध का नाम दे देव तो उरी शाप के विषय करने की ज्ञान की भृत्यक हो ।

1. बुध कभी मंदा न होगा वालिक हर तरफ से खिला चाग होगा । खाना नं. 3-1-6-7-9-11 में चन्द्र केतु बृहस्पति खुशक बादल भी मोती बरसा दे । धर्म उम्र धन उत्तम सदस्यों की बरकत होगी ।
2. दरिया के पानी से धोया दरिया के पानी के छीटें देकर पहला कपड़ा डालता दिन या दोपहर के समय मगर रहत न हो । यदि चन्द्र नं. 3-8-9-5 में हो तो बुध अपने प्रभाव से आप बचाव होगा ।

मन्दी हालत :

इस पर में बुध चर्नीय और चुनूत अधिक गहराई के खाली कुएं का नहत होता या ऐसे व्यक्ति के जन्म में भेद होता

154

जिसके जाहिर करने में उसकी अपनी जुगान में भी पथलापन होगा ।

मंगल या गुर्य दोनों के साथ से लगूड़े की गिटक की भाँति भाग्य का हाल होगा । मंदे अर्यों में और उम्र का मंगल वर या स्वयं दुष्य या गुप्तy । । - 4 - 13 - 15 - 17 - 28 - 34 वां साल महीने का दिन । न कभी नेफ और ठांक होगा आयु के लिए । चमगाड़ के थांय भेहमान जदां हम लटके यहा तुम लटको, की तरह साथियों का हाल होया । जिसका उपाय नाक छेदन के बिना और कोई न होगा । अगर फिर भी जो चन्द्र की चलती चीजें या वृ. पीले रंग में रंगी हुई चीजें से वह एक चलती नदी होगा । सब्ज रंग भंदा होगा । जिसकी तुफानी हालत का कोई अन्त नहीं होगा । यह वह जातिमों को फांसी देकर गिराने के लिए तिलसी कुंआ होगा जिसकी तए देखने के लिए गीढ़ी का न कभी प्रवन्ध होगा । यदि यह सब कुछ न हुआ तो वह न दो जहां होगा । अगर किसी तरह आयु बाला होवे तो खानदान की परवरीश करने वाला नहीं तो 29 साल पिता दुखी रहे । पथलाकर बोलने वाला हो । दुष्य जब आयु के 34वें साल शुरू होवे तो मंगल का असर होगा जिसका इच्छन लोहे के ऊपर लाल की हुई गोली होगी । खाना नं. 9 में या खाना नं. 9 के ग्रहों का साथी ग्रह हो जाने वाला दुष्य यानि दुष्य भर में ऐदा हो उस घर का मालिक खाना नं. 9 में बैठ जाये । खाना नं. 9 के सब ही ग्रहों को । चाहे वह दुष्य के शत्रु हो या मिश्र, दुष्य से कमज़ोर हो या ताकतवर् । या खाना नं. 9 के उस ग्रह को जिसका कि दुष्य साथी ग्रह बन रहा हो, अपनी यानि दुष्य के खाली दायरा की तरह बेबुनियाद मुर्दा और निष्कल यानि जो कोई भी काम न देवे या किसी भी काम ना आ रुके, कर देच जैसे -

मिस घर में दुष्य बैठा हो

इस समय खाना नं. 9 में बैद्य हुआ कौनसा उह बरबाद होगा

6	दुष्य केतु
1-8	मंगल
2-7	शुक्र
3-6	दुष्य
10-11	शनि
9	वृहस्पति
12	वृहस्पति ग्रह
4	चन्द्र
5	सूर्य

उदाहरण के तौर पर घर से नी भीत कुएं पर के पानी का बड़ा भर कर बापिस चले । बर्तन के तत्ते में ऐद कर देगा जिससे बाप्स घर पहुंचने तक कपड़े खहर और पानी से खाली बर्तन होगा । हर तरफ निराशा यज्ञे दुष्य अब भाग्य का कोई और राजा एक साथ होगा । वह ऐसा हवाई कोद होगा जो स्वयं ही उड़कर या चिपटे । वृ., सूरज, मंगल । से उह नर ग्रह का उपाय करें जो नर ग्रह का खाना नं. 9 के ग्रहों को या खाना नं. 9 में दुष्य के साथी ग्रह हो जाने वाले ग्रहों या स्वयं दुष्य को ही बरबाद करे । फिर यही शहरत प्यान में रखते हुए काम ना बने तो स्वीं ग्रहों का उपाय । फिर भी काम ना बने तो तुच्छ उहों की सहायता देवें । मगर उपाय से बरबाद हो जाने वाले ग्रहों का स्वाल ना भूल जायें ।

मंद्य प्रभाव :

हर हालत में तथा घन तथा जीवन अगर कोई भी हो तो टेबे वाले की अपनी जान पर आयु तक होगी । स्त्री पांगल की तरह आप भैं सिर जलावे और संतान मंदी तथा व्यर्य हो । लोहे की गोल चीज जिस पर मंगल का रंग ही दुष्य की जहर से बचायेगा । नाक छेदन सबसे उत्तम और दरिया के पानी से धोया हुआ पीला कपड़ा शुभ । जर्द रंग केसर का निशान । घर की तह जर्मन में चांदी दबाना भला और गिल्म पर चांदी शुभ, गुरु ग्रास भी शुभ होगा । खुम्म भिट्टी के बर्तन में डालकर पर्म स्थान में देना एनदरबार के मंदे असर से बचायेगा । शुभ ऐसी उन्जी है जो वर्षा के दिनों के बाद अपने आप दृष्ट्यों पर उग आया करती है और पका कर खाई जा सकती है ।

1. धोया देना/दिया यज्ञन पूर्ण ना करना तमाज़ा रिखाते दिखाते नं. ।। में चन्द्र केतु ना हो ।
विस्तर ही ले भागना ऐसा व्याप्त या आम अगूत होगा ।

2. अल्प आयु ८x८=६४ याता आयु का प्राणी होगा चाहे आयु का गांतिक चन्द्र कितना ही उच्च क्षेत्र न हो वरना संतान तथा स्त्री दोनों का फल मंदा होगा । वृ. अकेला नं. ८-६-१०-११ में हो ।
3. आयु तो अवश्य लम्बी होगी मगर शादी और संतान में खराबियां होगी । ३-६-७ में चन्द्र या वृ. या दोनों ।
4. शहर फहारी होगा । ज्याप्त : हाथों की उर्गतियों के नाखून हरे रंग के होगे । नं. । घासी ।
5. पाये जड़ों से उखाड़ देने की तरह खराबियां देगा खारकर जब तीव्र शक्ति में आवे । जब किरी फकीर साधु रे कोई तावीज लिया जावे तो वुध ऐसे तावीज के आने के दिन रे आयु, १७/३४ दिन के अंदर ही अपनी जहर का स्वूत देगा । इसके बलाया ७६-९६-१०८-१२० साला उम्र में वुध ॥ में आयेगा तो भी मंदा फल देगा । जन्म कुंडली के साना नं. ९ का वर्षफल के हिसाब ॥
6. बेयका होगा । [कर्निष्ठा छोटी हो] अकेला वुध नं. ९ में आवे ।

वुध खाना नं. १०

[प्रणन्ता से निनाह करने वाला जी हजूरिया शम को रत कहे]

भला यार देत्त न मक्कार होता,
बचेगा कहां तक तू खानोष सोता ।



तीन चार पाँच पहले चन्द्र, ऊरुल मकान तीन बाकी जो । खाली भांदिर जर सुकर समुद्र, रिदफ मण खुद भोती हो । कान फटे पर राग जो भीठी, साप आंखों से सुनता हो । शनि भला तो सब कुछ उम्मा¹, वरना धोखा खुद मंदा हो । शनि इशारे वुध पे चलता², मंद उमर खुद पापी हो । सापा बालिद भी झक्की होगा, भरेता नजर न अपनी हो ।

1. जब शहरी कबानी हो तो शनि मंदा ही होगा । पिता को इच्छा हो सुख देवे या न देवे । नजर रहे या न रहे ।
2. फैरला शनि की हालत पर होगा । मगर खुद वुध तो शनि के दरवार में पूर्ण जी हजूरिया होगा । अच्छे या नुरे हुक्म को एकदम लम्बी से लम्बी हर तक पूरा कर दिखायेगा । दो गुणा नेक या दो गुणा मंदा होना ।

इत्तर रेखा :

वुध का दायरा शनि के बुर्ज पर हो ।

नेक हालत :

1. वुध अब सांप की सिरी, लोहे पर कली की पालिश की हैसियत का होगा इसलिए उच्चकी चालाकी का जवाब खानोषी से न बन पड़ेगा ।
2. ऐसा आदमी शहरती, मतलब परस्त, चालवाज, जी हजूरिया, शम को ही रत कहने वाला होगा । उसका एक इतना भीठ होगा कि कान फटने पर भी छोड़ा न जा सके ।
3. तीन बाकी बचने वाले मकान शेर दहाड़ने का प्रभाव होगा । जंगी चीजों का व्यापारी हो मर्दी वी बरकत गगर स्त्रियों और बच्चों के लिए अशुभ । चन्द्र ।-३-५-४ में हो ।

156

4. सुग्रद के एफर ये भोती पदा होगे सुद शर्महार तया हुनरयान
होगा । खाना नं. 2 खाती, हाय की उंगलियों के नाथून गोत ।
5. तुग शनि या प्रभाव उत्तम यानि 5 घिरे वाते शेषनाग की तरह
हर थोर घर पर साया और मदद होये चाहे केतु बरचाद हो
जाये । जब शनि की हालत नेक हो ।
6. बुध अब दो गुणा नेक होगा सूखे घड़ भोतियों से भर देगा । नं. 2 नेक हो ।
- मन्दी हालत :**
1. जब शहरी कबावी तो शनि मंदा और साप के जहरीले टेड़े दांत की तरह शरीर में पुसते ही जान निकल देने वाला होना ।
 2. जुवान का चक्कां खराबी की पहली निशानी होगा । अबल में शनि अब बुध के इशारे पर चलेगा और दुय स्वयं सांप के दांतों
के लिए जहर की यैती, लाख के महल, बाल्द का पटाखा की तरह शनि की मक्कारी की जुनियाद होगा ।
 3. न चिर्क 42 साला आयु तक बल्कि तीनों ही यानि यहु केतु शनि अपनी-अपनी आयु तक मर्दे होये ।
 4. बुध अब लिस्म से जुदा कटी सांप की सिरी होगी हो शनि की
हालत पर दो गुणा नेक या मर्दे असर की होगी । वालिद के
साये का कोई भरेणा न होगा स्वयं अपनी नजर का भी विश्वास
न होगा । जब शनि मंदा हो या कर लिया जावे ।
 5. बुध अब दो गुणा मंदा होगा जो आदमी को दोनों हाथों से मार-
मार कर उसे दोनों आंखों से हर दो जहाँ दुखिया कर देगा । जब नं. 8 मंदा हो ।

बुध खाना नं. 11

|पनी जन्म से स्वयं बुध का उह उल्तू का बन्धा और कोझी मर 34 साला ब्यु के बाद हीए मरदगार होगा।

सोना भाव बढ़ता, लम्हे जब कस्ती
समय नाश अपने, अक्तु पहले सोती ।

- बुध पढ़ा कुंप संसार¹ उल्टा, उमर 34 तक माता हो । शनि चन्द्र वृ. संसार माय, बुध आखिरी तारता हो ।
7 गुरु या चन्द्र बैठा, दूजा खाती तीजा मंदा हो । सीप हीए बन भोती देगा, तस्ते चक्र² जब लाव हो ।
बुध चक्र में शनि हो चलता, लेख गुरु पर होता हो । बुध ददाया हो या मंदा, शनि गुरु न उम्दा हो ।
सारन 9वें वा ॥ आये, तायीज फवीरी यनता जो । काम अकल न कोई दैये, अपनी जड़ खुद काटन्द हो ।
बाद मुरीदत मरद हो पाता, कमी अक्त जर दीलत हो । रेणे रोगन चाहे लेख न खुलता, खुशी मगर स्वयं उत को हो ।
1. जन्म ऐ 34 वर्ष तक ऐसा मंदा कि मनुष्य पानी में दूरे मुर्द की तरह भाग्य क्य हाल होगा और चन्द्र, शनि, वृ. का फल
मंदा करता रहेगा मार बाद में ऐसे मुर्द के घेट से पानी निकालने वाले उल्टे घड़ की तरह सब ओर ने दूरे हुए को जंगित
प्रस्तुत कर देगा । मन्दी हालत में भी ।
 2. 11-23-36-48-57-72-84-94-105-119 साला आयु ।

हस्त रेखा :

बुध से रेखा खाना नं. ॥ वचत में होये ।



मन्दी हालत का
बुध →



157

नक्ष दातत :

1. ग्रीन अथ बुध के चक्र में होगा ।
2. बुध का शून तथा युग शाना वृक्षस्थल की हालत पर निर्भर होगा ।
3. 34 रात्रि की थायु के बाद आराम मिलेगा और बुध तारने वाला हारा होगा । धन की जरुरत कमी दूर होगी ।
4. चाहे दिन का समय कम ही खुशी का होगा वृ. और शनि [जमाने की हवा और संचार की विष] हर दो को अपने दायरा के चक्र में ही दुनाता होगा । मगर 34 के बाद एत शाना हाल, सदा आएन तथा प्रलङ्घनता की होगी ।
5. स्वयं शर्मसार और हुनरवान होगा । हाय की अंगुलियों के नाखून गोल होंगे । यदि खाना नं. 2 खाली ।
6. जिस रात नं. 11 का बुध खाना नं. 1 में आएगा साप में हीरे भोती पदा होंगे । 11-23-36-48-57-72-84-94-105-119 साला द्युष यदि खाना नं. 3 मंदा हो ।

मंदी हालत :

1. अब बुध का ग्रह उल्तू का पट्ठा होगा, गले में तांबे का फेंसा सहायक होगा जो इस ग्रह को बेकूफी के कामों में धन हानि करवाने से बच रखेगा ।
2. जब यर्प फल में खाना नं. 9 का बुध खाना नं. 11 में आय जुआ हो और टेवे वाला किंचि फकीर से तानीज से तो बुध पूर्ण जड़ों से उछाइ देगा यानि अति मंदा होगा ।

बुध खाना नं. 12

नेक लम्बी बायु, अच्छ जीवन निताने वाला भवर भाग्य के फेर से रस की नींद उझाने वाला
जिसे दुखिया देखकर रासमान श्री रे देवे ।

गई रात न आयी, वह क्यों रे रहा है ।

लिखा सब परिश्वर, उल्ट हो रहा है ।

बुध भला न पुस्त के 12, बुध टेवे न स्त्री हो ।

साथ धनि गुरु¹ हो जब मिलद्यु, कुण्ड भण बुध अमृत हो ।

“वरना”

4 एटे² 9-12 मधे, तीन दूजा नहीं बचता हो ।
जैने रवि कोई 12 ऐठे, असर जहर न उन पर हो ।
उनर 25 गर शादी उठकी, गुरु पिता स्वयं रेता हो ।
गुरु शनि मच्छ रेखा टेवा, असर जल्तम बुध देता हो ।
ग्रह पर 6वां हर दो जलते, बुध जहर न घटता हो ।

बुध एहु खुद जड़ से कटते, सुखिया रानी न राजा हो ।

साथ साथी ग्रह शनु होते, जहर शनि में भरता हो ।

बुध होगा तब ननक हयगी, मर्द भाया सब ढोलता हो ।

टेवा मालिक न जहर चाहे चढ़ता, चीजे जिंदा बुध दुखिया³ हो ।

मदद केतु से जिस दम पाते, भोताद दोलत सब फलता हो ।

1. 12-2 में वृ. का साथ तो इन्जत ताकत मगर शनि के साथ से धन-दोलत परिवार मिलेगा ।

2. बाकी 3 बचने वाले मकान का भाग्य तथा ग्रह नं. 2-3-4-6-9-12 वरवाद ।

3. बहन, बुजा, तड़की, फूफी, मौसी अपने पर [टेवे वाले के] दुखिया मगर अपने समुहल में प्रलङ्घन होगी । खाना नं. 12 के बुध का अपना स्वभाव देख लेना ही कारगर होगा । उदासरप बुध का अपना स्वभाव [जेख बुध की भूमिका में दिया है] ।

हस्त रेखा :

बुध से रेखा खाना नं. 12 छर्च में होते ।



नेत्र हालत :

नं. 12 में गुरु शनि तथा गृह के साथ घेट उग्रका जहर से बचते ही रहेंगे। बुध नं. 12 साक्षीर पर दात फड़काता है भगर टेढ़ा दात लियके अन्दर बाहर जाने दे लिए मुराख माना है। सूर्य को बन्दर माना है और शनि से चांद सांप किसते हैं। बन्दर की शिक्षा है कि वह एक चाँज को मुँह में डालने से पहले मूँछ लेगा। अगर विपरीत हो तो धृव्या पर डाल देगा। फिर भी यदि चलती हो जाये तो अपने जगड़ों के नीचे की धैंतियों में हर एक खाने वाली चाँजों को डाल लेगा। ग़फ़्कदम निगलना किसी को भगर देने का बहाना होगा भगर यह घेटी अपने आप ही जहर अपने से बाहर नहीं निकलने देती। इसी तरह पर बन्दर और सांप गृह और शनि बुध की जहर के साथ घेटे हुए बच जाते हैं बल्कि कई बार बुध की विष को काम की चाँज बना लेते हैं। भगर बुध नं. 12 के समय खाना 6 में घेटे सब ग्रह शनि सूर्य समेत बरबाद ही होंगे। अक्षत् [बुध] के साथ अगर होशियारी [शनि] का साथ नं. 2-12 मिल जावे तो जहर से भरे हुए के लिए भी अमृत कुण्ड होगा जो मुर्दे को भी जीवित कर देगा।

1. अब बुध परिवार तथा धनदोलत के ताल्लुक में अमृत का भाई तालाब होगा। वृ. या शनि नं. 2-12 या वृ. या शनि नं. 3.
2. इन्जत शक्ति सांसारिक प्रसिद्धि सब कुछ होगा भगर धन दोलत की ओर या हानि या फालत ही उर्चा हड्डि आदि होंगे। वृहस्पत नं. 2-12
3. बुध भी अब उत्तम फल देगा जब तक शनि वृ. दोनों एक साथ भगर बुध से युद्ध हो टेवे याते पर युध असर ना होगा भगर बुध की जानदार चाँजे [बहन, बुआ, फूफी, लड़की, माती] आदि टेवे याते के पर में दुखिया भगर सुरुहल तुर्डिया होगा। शनि वृ. नं. 7 की मच्छ रेता।

मन्दी हालत :

1. ऐसा प्राणी स्वभाव में एक पल तो शाबाश बढ़े चलो जयानों हासारे घेटे किसका फिकर, दिलसे देता रायियों को आन की शान में डायाती महलों के दिलासों में भड़काता हुआ लेकिन उस समय दूसरे सांस में चिढ़ चिढ़ करता टूटे पत्थर की रुह कमरे के दरवाजे में शूमता न सिर्फ साधियों और अपने आप को बे-आएम करता होगा बल्कि उसकी जयान की तेजान भरी लहर से पढ़ीसी भी चिल्लाते होंगे। जयान का निना समय अपने भतलन के लिए बदल लेना और शूठ के हायियर से उंगीन तलवारों को काता कर देना उसके बाएँ हाथ का खेल होगा। उसकी दिनांकी भाषा उसकी तिखाई के अक्षरों के दामरों को मिट्टी में दबे हुए जुगनू की तरह कर देगा जो उसके रायियों के लिए मन्दे घोखे से बरी न होगा।

दिगाग में आई ऊर्जा चात [यदि अच्छी या चुरी] के पूर्य करने के लिए अपनी शक्ति और शारीरिक विर से ऐरो तक खर्च पर देगा बगर यह सोचे कि मिट्टी का पड़ा [बुध] पानी में डालने से पहले पत्ता या कच्चा दबने रुहर विचार के बाद एमझने वी योशिश के बाद या परिणाम उसे कोई सामन न देगा या मुँह के दात तक निकाल लेगा। मन्दी हालत की पहली निशानी शहज पीनी शुरू होगी जिस पर शूठ का रंग चढ़ता और आखिर पर दंगा-फरेब का पैनान भरता होगा। यानि जयान से सच्चे और अन्दर से शूठे होने का तुच्छेपन का ढंग आम होगा।

कोङ अमूमन एक के बाद दूसरे खानदान में चला जाता है भगर बुध नं. 12 एक ऐसा कोङ और खैलित जहर होगा जो अचानक पल के पल में सारे शरीर को फाइ कर टुकड़े-टुकड़े कर देये।

दम दने में दम नहीं अब खेर माने जान की
मस उमान्त हो चुकी, रफ्तार सब ग्रह चाल की।

2. बेवफूफ, नालायक मित्र जो बुध करते समय फिरी का भी अपने समेत लुट भला न सोचे हर समय पर कोङी।

3. चाहे कोई राता हो चाहे नियंत्रण सबकी ही रात वो नीद अचानक उजाड़ने वाला। दृढ़ गम के फिल्स्ट्री मुनाने वाला। कारोबार पर मंदा होगा। मंद क टेबे में बुध नं. 12 शायद ही। भला होगा लोंकन स्त्री के टेबे ने कर्मी बुह नहीं गिनते। भगव जब मंद क टेबे में खाना नं. 12 वा हो तो टेबे वारी स्त्री चाहे रानी ही भयो न हो नियंत्रण दुर्घटा से बेहो ही। तेव दांसी जैसे कि उपरा पर्ति जो बुध नं. 12 में दुर्घटा किया होये। यदि स्त्री का भी बुध नं. 12 वा हो तो एजा धर्ता होते हुए भी गृहस्थी द्वाक्षत के मंद होने से रात वो कफन में सोते हुए बराबर बक्स पूर्ण हो। यदि जन्म झुण्डली या वर्ष कुण्डली में केतु उच्च तो सुभी ठीक होगा। बुध की जहर धुत जायेगी।
4. शुक्र के दो भान बुध दोर केतु माने गये। बुध नं. 12 में खाना नं. 6 [केतु का] को भी मंदा करेगा। इस तरह बुध केतु बरबाद अतः शुक्र भी पागल होगा अतः सतान न होगी और मां चाप को भी याद करते रहेंगे।
5. हयाई काम व्यापारी सद्टा मंद असर वाला होगा।
6. 25 साला उमर की शार्दी दोर व पिता दोनों रोते होंगे मंद माया दोनों बरबाद, उम का हर तीन हात बरबाद।
7. 30 हे कम या 32 से व्यक्त दांत मंद असर की निशानी हो।
8. मंद वक्त में बफहुं भी दिल फाड़ देगी।
9. शर्हर पर बुध जो चाँचे और भर का ढाँचा, जुबान, दांत, नाड़ियों, नाक का अगला हित्त्या छहदं का कारण होगा।
10. बुध एहु का बंदा सम्बन्ध, जेलखाना, पागलखाना, घोरी, आग की पटनाएं गवन बैंडनां रे पांचा फेरव, खोटे सिक्के आदि से घन दर्हनि, बैझ्जता और फिनूल जहमत बरबाद ही होये।
11. केतु दुनियायी तान चुन्ते। यहन के पर भाई सुखुल के पर जगाई नानके घर घोता या चांचरिक आम कुत्ता दरवेश आदि की सहायता शुभ। दूरे सांचारिक बन्धुओं की एय सलाह नेक नतीने देगा। नाक छेदन उत्तम, जर्द चीजें सेने के साथ शुभ। धोलाद का छल्ता जिर्को जोड़ या टांका ना लगा हो खालिस फोलाद जिसे जंय ना लगने पावे अपने शरीर पर कायम रखना शुभ होगा और जिस कदर ज्यादा और चमकदार साफ़ होगा उसी कदर तेष्य में साफ़ चिमनी या बिजली की लहर के लिए बल्ल का कम्म देगा और माय्य की सोई हुई लहर को फोरन जगा देगा और एक शुभ समय कर देगा। मन्त्र स्थान रहे कि यह छल्ता किसी से मुक्त न लिया जाये वरना फायदा ना होगा। माये पर तिलक की जमह केसर, जर्द [बृहस्पति] का तिलक लज्जा भी सहायक होगा मगर सब स्थान रुख का तिलक जिता पर भारे [बुध नं. 2 का प्रभाव देगा] बुध का खाती दर्तन कोह बड़ा चलते पानी में बहाना सहायक होगा।
12. मात्र मामा दुखी। मात्र छोटी आयु में चल दे नहीं तो दोनों सूख या मंगल नं. 6।
दुखी।
13. पिता की उम बरबाद चैल्क शल्की और उसकी [पिता की]
माया दीलत तगाह होये। गृहस्पति नं. 6
14. अपना खून भाई टेबे याते के लिए भौत के यम और स्वयं बरबाद होये। मंगल नं. 6
15. सुखुल [एहु 6] जौलाद [केतु 6] पर जलती हुई रेत की वर्षा एहु केतु 6
अति दुख का जायन् भंडी हालत, विज्ञ, भोते होगी।
16. कम अक्ष्यु, जल्दबाज, भौदिर जाते रहना शुभ। खाना नं. 2 खाली।
17. अगर जेलखाना नहीं पागलखाना तो जल्ल नतीन होगा, वेशक कोई कसूर या बोनाही ना हो। ऐसी हालत में भौदिर के अंदर नाकर सिर टेकना जहमत का बहाना होगा। एहु नं. 8-12 [हाय की उंगलियों के नाखून बहुत छोटे]

18. माता भाग्य रद्दा, आत्महत्या तक नोकर । चन्द्र नं.6
19. शनि की चाने काम, कारोबार, रित्तदार सब मन्द भार
हैं । शनि नं.6
20. बिना बर्तन के पांती तथा स्पंज आदि जायन रखना निक,
एवंगार और आमदन के लिए शुभ होगा । चन्द्र नं.2
21. एहु [सुहल] के लिए मंदी मौत दुर्घटना टक्कर आदि साधारण
होगा । एहु नं.2
22. एजदरबार की आमदन के अलावा राजदरवारी सम्बन्ध में
खएव तथा मंदा कर देगा । शूल नं.6
23. यदि चन्द्र नं.5 और शनि नं.9 हो तो - चन्द्र को शनि उच्चारक सम्बन्ध में चलती हुई मांटरगाड़ी गिनते में दुय नं.12
या दुय एहु नं.12 के बज्जे अगर कोई नई मांटरगाड़ी खरीदी जावे को उच्चका रंग हहु [दुय का रंग] हो तो प्यार में तदो
हुई लड़की की स्थारी के समय ऐसे प्राणों के स्वयं अपने सम्बन्ध [करने सुहल उच्चारण जब दुय के साथ एहु भी हो] मांटर
का हादसा होगा जिसमें प्राणियों की मौत की शर्त ना होगी भगव कंटर को उनके अगले हित्ते को पिस्कर जर्मान पर उच्चा
करता पड़ेगा ।

उपाय :

प्राणी को अपनी जान वीर रक्षा के लिए दुय नं.12 में दिया हुआ उपाय पहले ही करना मुव्वरिक होगा । जबान
का कायू रखना, वायदे का पूण करना, तुस्से की आग से दूर रहना दुय की जहर से बचावेगा वरना भेंटक की तरह छतांग
लगाकर चलना पड़ेगा अंग के कटने पर ।

Free by Astrostudent

शनि

जमाने में बदकार अक्तर जो रहते
मते लोगों को उद्ध अहनक है कहते ।

पाप नेया न हरदम चलती, ना ही माता गुरु कुल की । शनि हांता न मुर्छिक दुनियां, बेड़ी भरक थी सब की ।
सब साथी या पाप दृष्टि, पापी शनि खुद होता हो । लिखत केतु दुय एहु जैसी, फैसला धर्म से करता हो ।
पहले घरों में दुम केतु होते, इच्छा घारी¹ शनि होता है । उलट भगव जब बैठा टेढे, अजदहा खूनी चनता हो ।
सांप शनि दुम केतु गिनते, मुखज्जा एहु खुद होता हो । युलम रवि नर सुफिया होते, कल्त शनि दिन करता हो ।
पराइ ठंड गुरु यायम घरती², धैय घनवंतरि पर गुरु हो । जहर पूँछ पर शशु अपनी, भला जाती³ न स्यभाय हो ।
अोरत हमला पहले लड़के, शनि देखे खुद अंधा हो । बच्चे शुक्ल न खुद कभी मारे, सांप बच्चे⁴ दो खाता हो ।
रवि दृष्टि शनि पे करता, दुय शुक्ल का होता हो । शनि रवि रे पहले बैठा, नर ग्रह⁵ स्त्री उम्दा हो ।
नगर शुक्ल में जब शनि आता, माया दीगर खा जाता हो । दृष्टि शुक्ल पे जब कभी करता, मदद ग्रह सब करता हो ।

1. इच्छाधारी से भतलब हर तरह से हर तरह की मदद करने वाला ।
2. चतुर ।
3. काली चीजें [शनि की] पर शनि या हमेशा दुय अरर देगा जब कभी मंदा हो खासकर जब शनि ऐसे पर में हो जहां वो
बच्चे भारता हो, जैसे नं.5 और टेये में मंगल बद भी हो ।
4. शनि खुद सांप भय बनावटी शनि एक ही बज्जे दोनों इकट्ठे जब नंगत दुय मंदा [एहु स्यभाय], बृहस्पति, शुक्ल नेक [केतु]
स्यभाय ।
5. उपाय सूरज ।

161

स्वभाव

पर्हते घर में	बाय में	बाद में	प्रभाव होना	
गृह	गंगा	केनु	खराब	ये नुए भला अगर शनि बेठा होने वाले घर [हियाप नं. 2
गृह	कनु	शनि	खराब	ओर नं. 10 की चोरी पर होगा ।
गृह कनु	कनु	शनि	खराब	
गृह	कनु	शनि केतु	खराब	
गृह शनि	कनु	केतु	खराब	
शनि	गृह	केतु	खराब	

वार्की रव छालतों ने बच्चा बनार होगा ।

बाय हालत 12 घर

तीन गुणा पर पर्हते नदा¹, दो गुणा रदा तीसरे है । पर चोये पे सांप पलंग का, पांचवे बच्चे खाता है । 9-7वें घर 12 बेटा, कलम विद्याता होता है । घर 11 में तिखते बिद्याता, जन्म बच्चे का होता है ।

एक गुणा घर छठे मंदा पर नदा नहीं उदा ही है । दूसरे घर में गुरु शरण तो, आठवें हैड्स्टार है । खाली कागज हो घर दरवें का, छठे स्याही होता है । किस्मत का हो हरदम रक्षक, पास स्याही घोता है ।

1. शहरवारी पहर्ते भर्ती निशानी होगी, बैंगानी, फिजूल गोच-विचार तथाही का कारप होने । काम रेखा का र्खज जयानी इश्क होगा । नेंदी फहमाण, झूठ का पुतला अपनी जड़ कटवा देगा । गंदी छालत में शनि की चीजें काते रंग की चीजें से प्यार होगा ।

बाय हालत :

1. उन्नास [उदाही बोर विहग] दुनिया छोड़ दो बाबा यह जंजाल कुछ नहीं । दूरी तरफ पकड़ लो सब को कोई कुछ नहीं या ये सब हमारे फ्ले हुए क्यूं उल्टे चल रहे हैं । शनि के दोनों पहनू होंगे या मकान् जापद, चाताकी की आंख से धन कमाना यानि 36 चाला आयु ।
2. तमाम संगर के फकाने, इन्सानों की आंखों की रोशनी और हर एक की नेंदी और बर्दी के आण्डों के लिखने वाले एजेन्टों का [न्यूतक] शनि देवता जाहिर पीर होगा । नेक हालत पर जब अपने जाती स्वभाव के अनुसार नेक प्रभाव का होवे तो बृहस्पत के घरे 2-5-9-12 में देख हुआ कभी बुध असर ना देगा । शनि का एजेन्ट केतु होगा जो उम्र की किरती का मल्त्याह है ।
3. खुद कामज के दायरे में यह केतु की तरफ से जिस कार्यवाही की लिखत तिखाई होवे शनि उस पर धर्म से ठीक-ठीक फूटता फरेगा । [..] प्रभाव के उमय शनि मनुष्य जीवन के 10-19-37 छात में उत्तम फल देगा ।
4. बफर टेवे में 1,2,3 की जिनती के हिसाब से या दृष्टि के अनुसू पर पर्हते घरे ने केतु हो और शनि बाद में हो तो शनि एक इच्छापारी तत्त्वे वाला सांप की तरह मदद करेगा ।
5. शनि अगर सांप कम्ल जाए तो उचकी दुम केतु देख होने वाले घर में होगी और चिर उचका यह देख होने वाले घर में गिना जाएगा । शनि क्ष सर यह दुम केतु हो । बृहस्पत कायम हो तो शनि उच्चर में एक ठण्डा हुए-भए पहाड़ होगा खासकर जब चन्द्र भी ठीक हो । बृहस्पत के परे 2-5-9-11 में देख शनि के असर पनवंतरे देख के असर का होगा ।
6. गर्भदती स्त्री अफेते या घर में अफेते ही लड़के के सामने शनि का सांप खुद लंगा होगा और इंक नहीं भार सकता ।
7. शुक्र पर्हते घरे में और शनि को देखता हो यो शनि के कीड़ों की तरह दूरों ताजी, नरीनी सम्बन्धी, मकान तथा शनि के सामना उसका पन स्थाते जावे ।

162

8. छोटे बच्चों को अकेला याप कभी जहर ना देगा लोंगन वगर टेंये में दो साप [वृ. शुश्रा] बनावटी शनि केतु स्वभाव अच्छा याप और मण्डत युग्म राय बनाएँ। शनि यह स्वभाव मदा साप। इकट्ठे हो, तो बच्चों को भी ढंक आरंडे द्यानुकर जब शनि ऐसे परे में खेल हो जाएं कि वह बच्चे खाता हो। [नं. 5 या मण्डत युग्म एक राय यह स्वभाव मदा याप होगा]।
9. मंदी हालत के समय स्वभाव में अच्छा थोर चाहर दानों और उंगलियों द्वारा चुका हआ मोत का फन्दा फेलाए दिन दहांड़ उपरे गमने एवं बाजार कल्पन करने की तरह मदा जनाना खड़ा कर देगा। फर्कार को मिला देने की बजाय उसकी झांसी ऐसी पर चोट मार देना ही अच्छा होगा। सबके घन की चोरी करता फिर भी निर्धन ही होगा। हर एक के आगे सवारी पर फिर पटनाएँ थोर मोत तक भी मंदी होगी। मंदी हालत में शनि का एजेंट यह होगा जो विष या मंदारी है।
10. शनि जब कभी मदा हो काली चीजें शनि आदि पर हमेशा युग्म बन्दर करेगा। साय सारी या दृष्टि के द्वारा यह केतु किसी न किसी तरह भी शनि से आ मिलते हैं तो शनि पांख ग्रह कहलाएगा जिसकी नीत उसके स्वयं स्वभाव के अनुर से जाहिर होगी। मंदी हालत में शनि [जन्म कुण्डली में मंदे घरे का शनि जब दोबार मंदे घरे में आ जाए तो] इच्छानी यापु के 9-18-27-36 साल जर्हीली घटनाओं या भारी हानि से भरे होंगे। चन्द्र यह इकट्ठे या अकेले जब नं. 12 में हो तो शनि रदा मदा प्रभाव का होगा जाहे टेंये में केगा ही हो।
11. 2 या ज्यादा नर ग्रहों [गूरज, मण्डल, दृहस्ति] के साथ से शनि दाढ़ू हो जाता है और जहर नहीं उगत सकता। जिस कदर मुकाबले पर दुश्मन ग्रह [गूरज, चन्द्र, मण्डल] का साथ यहता जाये शनि भी मदा हो जाता है। शनि की चीजों का दान पतोर खेलत। जनता को देते जाना मुझरक होगा जैसे बादाम तंकराम करना, लोह का सामान अंगीठी, चिनटा, तवा आदि गरीबों या यापुओं दो देना मदद देगा। [10 मण्डपूरे को एक ही समय पर भरपेट खाना खिलाना भी ऐसी मदद होता है।] मंदी हालत में अमृमन शनि खेल होने यासे पर के दोनों तरफ ही दाये-बाएं यह केतु खेल होने के बहुत उनका भी मदा प्रभाव होगा।

शनि खेल हो	यह या केतु खेल हो	का मंदा प्रभाव होगा
1	12	2
2	1	3
3	2	4
4	3	5
5	4	6
6	5	7
7	6	8
8	7	9
9	8	10
10	9	11
11	10	12
12	11	1

12. त्वी ग्रहों के साथ या सम्बन्ध हो जाने पर शनि खाना नं. 1-7-4-10 में अपने एजेंट यह केतु का युग्म अचर देगा क्योंकि यह केतु शनि की बुनियाद दिना जाता है। यही अच्छा शनि के साथ स्त्री ग्रह होने पर हर घर में हो रकता है अगर मुकाबला पर स्त्री ग्रहों के साथ उसके दुश्मन ग्रह रहे हो तो शनि ऐसी हालत में स्त्री ग्रहों को तो कुछ न कहेगा मगर शत्रु ग्रहों को जड़ से मार देगा। ऐसी हालत में शनि मध्यस्थी त्वी के सामने अंधा सांप होगा जो कभी हमला ना करेगा। जब स्वयं के स्वभाव यानि यह केतु शनि से पहले या बाद के परे में होने के असूल पर शनि मंदा हो तो अपने शत्रु ग्रहों के परे में खेल तुआ उनको अपनी जहर से जला देगा।

- १ नं. १ में बेटा हुआ गूर्ह मगल को
- २ नं. ३ में बेटा हुआ गूर्ह मगल को
- ३ नं. ४ में बेटा हुआ गूर्ह चन्द्र को
- ४ नं. ५ में बेटा हुआ गूर्ह गूर्ह को
- ५ नं. ८ में बेटा हुआ गूर्ह मगल को

जहर देगा

जब टेवे में पहले पर्हे में राहू हो और खूर्ती अनगर शनि बाद में हो तो शनि खूर्ती अनगर मंदा होता । पाप [राहू केतु] टोता का पार्श्व [राहू केतु] शनि नीचे एक साथ् ग्रहों का उत्तरांश होने की वजह से यह ग्रह बदनाम जरूर होगा अपने आप कभी पाप न करेगा ।

13. अगर सूर्य गुन्त जुलम करे तो शनि दिन दहाड़े सब के सानने कल्प करवा देगा ।
14. वृहस्पति के पर्हे में बेटा शनि कभी उप फल न देगा । नगर वृहस्पति द्युद शनि के घर नं. 10 में नीच फल का होगा । नगल अकेला शनि के घर नं. 10 में बेटा हुआ रहा होगा नगर मंगल के घर नं. 3 में बेटा शनि नकद माया से दूर कंगल करेगा । सूर्य के घर नं. 5 में बेटा शनि बच्चा खाने वाला साप होता होगा नगर शनि के घर नं. 11 में सूर्य सबसे उत्तम धर्मी होता । चन्द्र के घर नं. 4 पार्श्व में इच्छा सांप अपरंग से नारे हुए को मोर्तक कर देगा मगर शनि के हैडकर्पाटर नं. 8 में होता । जो मंगल की जाती का घर है चन्द्र नीच होता । शुक्र ने शनि से आंख ज्वार ली है जबतः शुक्र के घर नं. 7 में शनि उच्च होता । राहू दर्दी का एंजेंट है नगर राहू के घर नं. 12 में शनि हरेक का भला करने वाला होगा । केतु नेकी का फरिशत होता । राहू दर्दी का एंजेंट है नगर राहू के घर नं. 6 में शनि चाहे मंदे लड़के और खोटे पैरों की तरफ कभी न कभी काम आ ही जाने वाला होगा नगर प्राप्त: जहरीला साप होता ।
15. राहू अगर शनि का तिर यानि राहू पर एतचार या राहू सांप की मधि हो तो केतु उत्तरी दुम या केतु पर भयेशा या कान, पांव और केतु का विषय उत्तरी त्वर होगा । यानि अपनी माता भैरो शनि के विषय के बजत उत्तरक नर शनि पहचान सेगा । शनि देखे राहू को - हरद रे तत्त्वां होवे । राहू उल्ट चल रहा होता मंदा प्रभाव देगा । राहू देखे शनि को यानि राहू का नीला धोया जब शनि के लोंगे पर लगे तो हमेशा ही तांबा [नूज] बन जायेगा ।
16. शनि टेवे के हर उठ को नीचे तिती किस्म की आंखों से देखेण -
 खन्ना नं. 1 में शनि हो तो एक आंख से खाना नं. 7 के ग्रह या उत्तरके उत्तरी उत्तरन्ती लो देखे ।
 खन्ना नं. 2 में शनि हो तो दो आंख से खाना नं. 8-12 के ग्रह या उत्तरके उत्तरी उत्तरन्ती लो देखे ।
 खन्ना नं. 3 में शनि हो तो 3 आंख से खाना नं. 5-9-11 के ग्रह या उत्तरके उत्तरी उत्तरन्ती लो देखे ।
 खन्ना नं. 4 में शनि हो तो 4 आंख से खाना नं. 2-8-10-11 के ग्रह या उत्तरके उत्तरी उत्तरन्ती लो देखे ।
 खन्ना नं. 5 में शनि अंथा सांप होता जब नं. 10 खाती । लैकिं जब नं. 10 में वृहस्पति या केतु हो तो नर औलाद पर औलाद होती और जंगित रहती ।
 खन्ना नं. 6 में शनि राहत का अंथा सांप होता जब नं. 2 खाती हो ।
 खन्ना नं. 7 में शनि हवा की आंखों में मिट्टी डालने की शक्ति का स्थानी होया जब शनि कायम या जानता हो ।
 खन्ना नं. 8 में शनि नोत भरी दुष्टता की आंख होता जब नं. 3 में पापी या नं. 3 खाती हो ।
 खन्ना नं. 9 में शनि जले हुए को हरा-भरा करने का स्थानी होगा जब नं. 2 में शनि के देत्त हो ।
 खन्ना नं. 10 में शनि चारों तरफ देखने वाली आंख से नं. 2-3-4-5 के ग्रह के संघर्षों को देखता होगा ।
 खन्ना नं. 11 में शनि येनुहाह और मातृम चचे वी आंख का स्थानी होगा जब नं. 3 में पाप या नं. 1 में शनि के मित्र ग्रह हो ।
 खन्ना नं. 12 में शनि दीनार को स्थान्त्रिय, दुखिया को सुधी, उज़इ जो जाराद करने वाली आंख का मतिक होय जब नं. 2 में शनि के मित्र ग्रह या शुक्र मंगल कायम हो ।

झने की अदालत :

1. यहू यहर अपराधी का चालान पेश करने का शहादत [प्रार्थनाप्रश्न गयाई] तो केतु उम्मेक बचाने के लिए यहापक अदालत [अफेन्ह योन्हुल] होगा। दानों के बावजूद जात का दौर्जन्या फैसला करने के लिए शनि राहकम समय की कवर्दी का सबसे बड़ा जन होगा।
2. पार्षा ग्रहों [यहू केतु शनि] ने ही संगार्ह पार्षा गुहाहारे को संप्रे छत्ते पर लाने और वृहस्पी संयम को कायन रखने के लिए अपनी ही पंचायत ठहरा रखी है। इन बात को प्यान में रखते हुए वृहस्पत ने [जो सबका गुरु है] झने के खाना नं. 11 [कुम्भ राशि] में अपनी पर्याय अदालत-स्थानक रखी है, जहां कि झने दूर्जनी माता के दूष को घट करके [कम्ब दाकर] वृ. का हत्फ [पर्याय और प्रार्थिक वायदा] उठाने के बाद यहू या केतु की शहादत के मुताबिक फैसला करता है।

क्याप्त :

उंगली की पोरियो पर कनक जो का निशान हो तो कुल निशानों से 12 घटायें। श्रेष्ठ बचे उसी उंच्या बाले धर में शनि का दिव्य फल होगा। भुजलन, कुल निशान यदि 17 हो तो $17 - 12 = 5$ यानि अब शनि खाना नं. 5 में है और उसी तरह का फल देगा। [नूर्य का चित्ताए झने के बुर्ज पर या सूर्य के बुर्ज पर शनि की ओर हो या शनि चंचला सूर्य बुर्ज पर चली जाये।]

झने खाना नं. ।

[जब मंदा तो तीन मुग्ग मंदा वरना तीनों काल उत्तम (बचपन, जन्मनी, बुद्धपा)]

भ्रे जन्म पर जो खजाने दकानों [पुणे]

फर्रशता अजल दोल देवी नीलामी! : ३॥

- | | |
|---|---|
| झने शुक्र धर पहले भेठे, काग रेखा ² कहलाती है। | मालिक चाहे हो तत्त्व हजारी, मिट्टी कर दिखलाती है। |
| धर चातवां दस खाली ³ होते, भच्छ रेखा ⁴ बन जाती है। | माल माया चब दुनियां बढ़ते, उम्र सुखी कर जाती है। |
| काग रेखा फल काम जद्दी का, भाग चन्द्र भी उड़ता हो। | सामान झने उत्तम होगा, मदद रवि जब पाता हो। |
| पाप मदे शनि होगा मंदा, मंदा असर धर तीरह हो। | मर्द माया फल काग रेखा का, उम्र मगर खुद तम्बा हो। |
| शहर खोयी या इश्क जवानी, मकान शनि जब बनता हो। | पापी उम्र तक एज फकीरी, वैद्य नीमारी मिलता दो। |
| असर झने हो तेल मिट्टी का, आग चौथे पर बढ़ हो। | जद्दी दोलत जर इकदम उड़ता, जलती मिट्टी सब पापी हो। |
| सात रवि 10+।। नैगा, शुक्र भला न होता हो। | शनि मंगल दो हरदम मंदा, खरीद वाका रव रेता हो। |
| कुप टेवे पर 7वें आया, असर केतु 7 देता हो। | मात मिला धर लाखो माया, भत्ता चन्द्र जब होता हो। |

1. मां नाप तो बेटे की खुशी के बाजे बजाने में लगे हो नगर अंजल का फरिशता उन सब चीजों को जो कुछ भी पैदा होने के दिन पर मैं मौजूद हो नीलामी की सिस्त बनाता होगा या जन्म दिन का सब धन, सामान व शनि उजड़ कर ही बत्त्व या नीलाम हो।

2. जब कुप मंदा तालीम अपूरी निशानी होगी।

3. जब यहू या केतु हो खाना नं. 4 या 10 या कुप या शुक्र हो नं. 7 में/शनि हो नं. 7 में व जब शनि नं. 1 में/शुक्र नं. 1 में हो, तो दोनों पर खाली गिने जाएंगे।

4. साप ही मंगल भी 6 से 12 में हो तो नृच रेखा होगी रिफ्क धन दोलत बढ़ेगा। पर के सदस्य और उनकी जाती कर्माई की बरकत की कोई शर्त न होगी। भच्छ रेखा के समय झने खुराक रिजक व भवयान की तरह पालने की हिम्मत का स्वामी होगा। शुक्र [तस्मी] साप लाये खजाने का दाता होगा। वरना नं. 7 खाली दोले हुए भी काग रेखा होगी।

उपाय वस्ते माली मदद - गृह की मदद या बदर पालना ।

उपाय वस्ते एवत - मीट मिठां दूध से वड़ की जड़ की मिट्टी का तितक लगाना ।

उपाय वस्ते काहनार - गुरमा स्थार्हा तह जांत में दबाना ।

नक हालत :

शनि थव शुर्क एक थांख वा मालिक होगा । अगर दयालु हुआ तो धनी बना देगा । अगर उल्ट हुआ तो पंट के लिए एटी तक यत्य बगु देगा ।

2. शनि शुक्र नं. 1 में येठा होने के समय रिजक और माया दीलत पर अचर करता है । [चाहे मच्छ रेखा का उत्तम प्रभाव हो ।

चाहे काग रेखा की हालत में कौवे की खुराक की बदनसींदी भले लगे ।

3. नेक हालत में शनि से संबंधित सामान का फल उत्तम होगा ।

4. अब युप अपने अनुर की बजाय केतु नं. 7 का असर देगा अब गहन हुद नं. 7 में

या लड़की की जगह लड़का ही पेटा होगा माता पिता के पर माया

लादों में होगी व्यत्कर जब चन्द्र उत्तम हो पापी गहो एहु केतु

शनि की उम्र तक ।

5. शनि अब मंगल की 6 से 12 होने वाली शर्त पर माली मच्छ रेखा एहु केतु नं. 4-10 में ।

का अहर देगा । लेकिन थगर मंगल नेक न हो या 6 से 12 वीं

हृदयंदी से बाहर हो तो भी शनि जल्दी नहीं कि काष रेखा का

ही अहर दे । लेकिन मच्छ रेखा [माली] का प्रभाव भी तो सिर्फ

उस वक्त देगा जब उसके एजेन्ट [एहु केतु] चौथे वा मिले यानि

या तो यो दोनों एहु केतु खुद अपनी मुश्तरका मिलने की नियाद

यानि 45 सालों ऊँ की हृदयंदी में आ जाये या उन दोनों में से कोई

शनि की बराये इन्टि आ मिले या शनि पापी गह की तरह ही बैठ

अर्थात् हानि का ही पापी बनकर चलता पाप की हृदयंदी में चाहे

बैंझानी चाहे ईम्लदारी से लिप तरह भी हो सके धन की हालत

में नेक प्रभाव देगा सूक्ष्मि बैंझान या पापी का धर्म माया को इक्क्षव

करना ही हुआ करता है ।

मन्दी हालत :

1. नित्य पर हृद से ज्यादा बात हो तो निर्धन होने की निशानी होगी । माता-पिता जन्म वस्त सुशी के बाजे बजवायें मगर यो

अगले परिशता 18 साल भी आपु तक उनका सब कुछ विकाया देगा । शहर दोहरी या इश्क जवानी बहाना होने या शनिका

मकान या ऐसा मकान निरका पश्चिम को दरवाजा हो जब तो शनि मंदा प्रभाव दे, चत्क 36-42-45-48 उम्र तक रज

फकीरी, पेय बीमारी इकट्ठे ही चलते होगे । सापरपतया: मच्छ रेखा बनाये । काष रेखा उड़ावे । क्षय कुछ जवाद देगा । सब

कुछ कष तक जवाद होगा शनि की मियाद तक । शनि अब काष रेखा का पूर्ण मंदा फल होगा । या यूं कहें कि शनि अब

36 से 39 और कई बार एहु केतु की आखिरी मियाद [एहु 42, केतु 43 या दोनों एक साथ 45] उम्र तक मकान जायदाद

नकद धन राजदरबार तक तरफ मंदा ही फल देगा ।

2. पाप टेवे में ही जब मंदा, काष रेखा बन जाती है । मालिक चाहे हो तब्द बैंझानी, निट्टी कर दिखलाती है ।

3. विद्या तो विशेषकर अधूरी होगी ।

4. जनीन में गुरमा दबाना, वड़ के वृक्ष की जड़ के दूध से तिलक लगाना मिया जीनारी में, दुष्प में सहायक होगे । प्ल मी मंदी

हालत में रूप यी नदर सहायक होगी ।

5. शनि अव 3 गुना मंदा होगा, विद्या स्त्री पन और स्त्री की मंदी हालत चलक यह दुर्घट्या होगी। चन्द्र भाग भी मंदा होगा।
6. जद्दी कारोबार गेर्ड और मासा पर कान रखा का फल होगा। जन्म लेते ही नीलामी का ढांच बनने लगे, देवक 9 ही गहों का प्रभाव जहरताल पैदा हो। मगर टेवे कान की अपर्णी उज्ज जस्त लम्बी होगी।
7. शनि अगर मिट्टी के तेल का क्षमर टेवे तो ऐसा ग्रह चल के समय नं. 4 में रेठे हुए शनु ग्रह की चाँगे, कारोबार या रिश्तेदार इच्छे संबंधित वुग्र प्रभाव देंगे। पिता की हालत मंदी होगी। जद्दी पन दोलत उड़ती और शनि, राहू केन्तु तानों का ही फल मंदा होगा। स्वयं चोर फरेवा [चूलहे की तरह] हो सकता है।
8. एगरतार का फल शक्की चलक मंदा ही होगा।
9. शुक्र का फल भला ना होगा चलक मंगल का प्रभाव भी मंदा और स्वयं अपने मास्य की मंद मास्यता और खारीष वा बकारब उब, दुर्घट्या होगे।
10. चोर फरेवी बैंगान झगड़ातु धारयाज। चतान का दुख। आय मंगल बद हो। मरण, आंखों में नुस्ख आदि।

जब राहू केन्तु मंदे हो या खाना नं. 7 में कोई ग्रह हो

जब चुप मंदा हो।

खाना नं. 4 में शनि के शनु सूर्य, चन्द्र, मंगल या शनि के दुश्मन सूर्य, चन्द्र, राहू कोई भी ग्रह साथी सिवाय सूर्य वृहस्पति।

सूर्य नं. 7 में हो।

खाना नं. 10-11 में सूर्य हो।

मंगल बद हो।

Free by Astrostudents

शनि खाना नं. 2

[शुरु श्रष्ट]

पांव नंगे मंदिर जो तू भूल कहता
जहर बाकी कोई बला का न रहता।

साप स्त्रु घर आय हो जलती, शादी लग्न जब होता हो। भली जगह जब माता चन्द्र बेठी, पिता शुरू चल जात्य हो।
नेक शुरू चाहे कोई बेठे, आठ 9वें 10-12 जो। हसब हैरित जीवन शुजरे, जीवित जब तक रहता हो।
गुरु मासिक 10 लहर जो मुल्की, अमीर हासिद हवे 10 का हो। तुरी शोहरत और खबीर पचन्दी।। गुरु जब बेठा हो।
पेर शनि खुद पाप से करता, राहू टेवे 8 बेठा जो। गुआ जुआई 12 रवि का, यहम दिमागी भरता हो।
सात राष्ट्री हो पन की धेती, गर्द 6वें जा चौलता हो। घर 12 से तुख गृहस्ती, चंगे शनि घर दूरह। हो।

1. खाना नं. 2 का शनि सिर्फ शनि की ही चीजों पर अतर देगा

इस्तर रेखा :

उमर रेखा वृहस्पति के पर्वत से शुरू हो।

नेक हालत :

1. शनि का शनि की संबंधित चीजों पर प्रभाव का फैसला खाना नं. 8 के गहों का शनि नं. 2 से ताल्लुक की अच्छी तुरी हालत पर होगा। दिमागी खाना नं. 7 शुक्र से मुश्तका जिंदगी बढ़ने की इच्छा तरक्की से मुहरद ह उमर लम्बी से नहीं। बात के मुंह की हवा से ही ताङ लेगा। शरीर पर हर जगह से 3-3 चाल पैदा हो तो परमात्मा को मानने वाला पूजा पाठी भक्ति मनुष्य होगा।



2. तिलक की जगह तम लगाना अनुभ होगा । मगर दूष या दर्ढ़ी के तिलक लगाने ये ज्ञान या वृहस्पत हर दो का उत्तम और मुशारक प्रयोग होगा । मूर्ग भेज मुशारक होगी ।
पन की थेली सातवें होये, गर्दं की तादाद बालते ६वें है ।
पर आठवें से उम्र मिलती हो, बने महल घर दूसरे है ।
3. उम्दा यंत्रत का स्वामी मगर धर्म स्थान में कम ही जाने याता होगा । देखने में चुद्ध मगर भिनती में भर्ती होगा । जो खुसुर्धी रहमादात् न्यायाग्रीय होगा । निर्वन कर्मी न होगा । किंतु कोई दुख न देगा क्षम्कु गुरु की शरण या प्यास रखने वाले जर्मानों का मार्तिलक जन्म होगा ।
4. यज तक जिन्दा रहे थपने द्युद मुन्द्रार्थी और नवरदारी या द्युद फाम करने के दिन हुे स्वयं कारोबार करते रहने के समय तब उत्तम होता है । आई चतुर्ई बरादर का मालिक होगा ।
5. इन्सानी उदासी विषय एक थार रहने की शक्ति का स्वामी होगा इन नं. 2 कायम । क्याप्ट : मध्यमा सीधी ।
6. हर दर्जे की उदासी का मालिक होगा । खाना नं. 8-9-10-12 में कोई न कोई ग्रह जल्द हो ।
7. सुख और उम्र लंबी मगर पिता [वृ.] अमूर्मन बरवाद ही होते । यदि चन्द्र उत्तम हो ।
8. बक्त की वार्दीकी ओर दुश्माई पहुंच दर्जा कमात होगी । बुध नं. 4 क्याप्ट : हाथ की तमाम उंमतियों का शुकाव मध्यमा की ओर ।
9. शनि का जाती वुध या भला अचर चिर्फ शनि की चीजों पर होगा जो नं. 8 से 12 के सम्बन्ध में जाहिर हो जायेगा ।
10. मकान जैसा और जब बने बनते हैं शुभ फल देगा ।
11. शनि नं. 2, केतु नं. 8, मध्यमा उंगली का सिर्ह नोकदार हो तो बच्चों के विचारों के स्वभाव का स्वामी होगा ।
12. शनि नं. 2, केतु नं. 9, मध्यमा लंबी तो जल्द समझने याता होगा ।
13. शनि नं. 2, मंगल नं. 8, मध्यमा का सिर्ह चौकोर हो तो धनवान ।
14. शनि नं. 2, बुध नं. 8, मध्यमा का सिर्ह गोल तो चुदिमान ।
15. मुल्की लहर का मालिक पारी, कर्म पर्म याता, सोचकर कम बुर्च करने याता । वृ. नं. 10 तर्जी मध्यमा से बढ़ी ।
- गाढ़ दीसतांद, ईर्ष्यातु और कंजूह दोगा । सूर्य नं. 10, अन्द्रनिका मध्यमा से बढ़ी हो ।
16. तर्बायत का गुलाम, इहेद का कच्चा, मुर्दा दिल, सापु के विचार, हर जगह दूटे होते का स्वामी । चन्द्र उत्तम हो ।
17. मध्यम सी हालत में मंदी शोहरत को प्रसंद करने याता । सूरज खाना नं. 12
18. चाहे बुध नं. 12 का कर्मी भला नहीं होगा [सिवाय शनि और वृ. की भद्र के] तोकिं अगर बुध की भियाद के अन्दर-अन्दर [34 याता आपु तक] टेवे याते के कोई लड़पी पैदा हो जाय और यो लड़की अपनी लतुरात को दे दे तो वह लड़की सुरुरात अमृत कुंड बन जायेगी । जब यह लड़की अपने मां-बाप [टेवे तते प्राणी] की कनाई से परदरिश पालता या गुजर शुरू न करे बुध नं. 12

वरना टेवे याते और सुगुण दानों के लिए ही मंदी यानि
[याजा] का एग शुरू होगा ।

मन्त्री हालत :

1. इन अगर जारी स्वभाव के अनुप्र पर मंदा उचित हो तो शार्दी चंद्रिक नगाई के दिन से ही सुगुण के पर खबर उड़ने लगेगी । टेवे याता जिए कदर शनि की चाँगे मकान, मर्शन, माटरगाड़ियां आदि कायम करता चला जाएगा उसी तरह ये चाँगे [सुगुण] की विकटी चली जाएंगी या खगव होती जाएंगी ।

2. नंगे पांव मंदिर जाकर भूत मान लेना बला के अनुर से बचाएंगी ।
3. सांप का बजारिया चन्द्र [द्रूप पिलाना आदि] उपाय से सुगुण की हालत उत्तम होगी । कल्ती या दोरंगी ऐसे मनहूम फल देगी ।
4. इस पर दो आंख का मालिक ज्ञान अगर मंदा हो तो यह [सुगुण] की जड़ मार देगा जिससे टेवे याते के लिए ही उत्तरदी दुष की शरारते छढ़ी हो जाएंगी बगर अब दृ. भला फल देगा । शार्दी के लग्न के वक्त ही से [कुड़माई आदि] सुगुण पर में याहना करने वाली आग जलनी शुरू होगी और उनकी गरंदी दिन व दिन बढ़ती होगी । सुगुण की जड़ में आक मदार या सुगुण का पर चाल योयो के दैठने की जगह [बत्ताव] होगा । पापी ग्रह खुद बाहम एक दूररे का बुध करने कहने टेवे याते के लिए खण्डी-दर-खण्डी छढ़ी करते जाएंगे । यह नं. 8 के वक्त सुगुण पर में पुरुषों की कमी और राह नं. 12 के समय सुगुण पर में दोलत की कमी होगी ।
5. तुरी शोहरत और खुदपसन्दी का मालिक होगा । दृहस्त नं. 11
6. मशहूर जुआरी या दिमागी बहम का मालिक, आप खर्च बहवर । दूरज नं. 12
7. 28 से 39 साल तक हमेशा वीमारी गले लगी रहेगी । नंतत नंदा हो ।

स्वभाव

बहमी होगा
जुदाई पसन्द होगा
मुर्दा विचार या होगा
बेगुनियाद पिचाई या स्थानी [नं. 8 में देखें]
हद से ज्यादा उदासी, जुदाई पसन्द होगा

त्रह स्थिति

यह नं. 8
यह नं. 9
म. नं. 9
सू. नं. 8
सू. त्रु. नू. नं. 8

क्षयाप्त

हाय की उंगलियों के सिरे चौड़े होने ।
हाय की अंगुलियां बहुत लम्बी ।
हाय की उंगलियां बहुत ही लम्बी ।
हाय की उंगलियां बहुत छोटी ।
तनाम उंगलियां मध्यमा की तरफ सुकी हुई ।
बनामिका मध्यमा की तरफ सुक जाये ।

स्त्री साना नं. 3

[अगर हुआ तो 2 बुग मन्त्र होगा]

निते एजा दो झेर दकही कहेंगे
मगर मर्द माजा जुदा ही रहेंगे ।

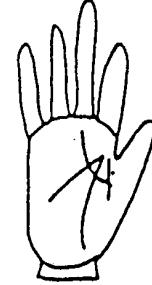
169

मद८ केतु ये खुद शनि बढ़ता, यरना केतु खुद काटता हो । ये प्रथमंतरी नजर का होता, काय शनि सब उम्दा हो ।
 दरवाजा¹ दीक्षण या पूर्व मंदा, या लकड़ी शगुन न उम्दा हो । साथ² मकान जब पत्थर गढ़ता, मोत जहर शनि देता हो ।
 केतु बेटा 10 वर्षम राही, माया दोलत सब बढ़ता हो । बिगड़ा मंगल घद दो जब जहरी, गैर मदद उम्दा करता हो ।
 5 वर्ष ये केतु मंदा, उम्दा शनि न होता हो । नजर दर्वाई मुफ्त जो देता, आय कायम खुद रहता हो ।
 चन्द्र टेंपे पर 10वें बेटा, याप शनि जड़ करती हो । मोत कुंआ खुद अपना होगा, उर्ध रेखा माया फट्टी हो ।

1. यात बच्चों के सहित रिहायशी मकान का दरवाजा ।
2. बड़े दरवाजे के गमने दाखिले पर मगर मकान से बाहर ।

इस्तर रेखा :

शनि से रेखा उम्र रेखा को काटकर मंगल नेक या गृहस्त रेखा शनि के दुर्ज पर ।



नेक हालत :

1. तीन आंख का मालिक फरिश्ता अनल पुल्प और घन दोनों इकट्ठे कम ही होंगे मगर उम्र की रक्षा जल्द होती रहेगी जब तक ज्यान के चक्षे के लिए शारीरी क्षमता ना हो ।
2. मकान बनाने वाले [एज मजदूर] मिस्ट्री को रूपयों की थेली की जल्दत नहीं उरे तो इंट पत्थर हर बत्त मौजूद चाहिए । इसी तरह से शनि का हर घक्त मकानों का प्रभाव उत्तम होगा खारकर जब कुत्ता रखे । दुनियां के तीन कुत्तों की सेवा करे । मकान बनाने पर ये बढ़ेंगे आंखों का बड़ा उत्तम हर्काम होगा केतु की मदद जब केतु नं. 3-10 में हो । शनि से सम्बन्धित काम तथा रिश्तेदार उत्तम फल देंगे ।
3. गैर व्यक्ति भी मदद पर होंगे । चाहे लोगों के काम बिगड़ता मंगल घद या मंदा जहरी मंगल । मगर खुद आएम पाता हो ।
4. मगर कुत्ता न रखे तो कुत्ता [मन्दा केतु] काटता ही होगा । शनि बरबाद करेगा । जिस से चार-चार बाल खेड़ा हो तो गरीब, मन्द चुद्धि, ऐसा शर्करा होगा । अपने भाई बन्धु खराबी का कापे होंगे । माली हालत [नकदी] में मंदा ही होगा । अमर मन्दा हो तो तीन आंख के मालिक फरिश्ता-ए-अनल की तरह 2 गुणा नन्दा होगा [रिफ्क घन की हालत में] मगर रशिफत का [उपाय योग्य] केतु का उपाय सहायक अगर केतु नं. 10 या 3 हो तो किसी उपाय की जल्दत नहीं ।
5. नजर की दर्वाई दूरी को मुफ्त देते रहने से अपनी नजर में बरकत होगी ।

मन्दी हालत :

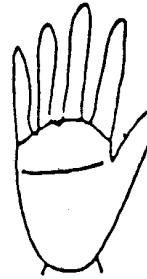
1. पूर्व खाना नं. 1-5 या दीक्षण [खाना नं. 3] के दरवाजा [सूरज] का साय हमेनिकाटक होगा । दीक्षण के दरवाजा के साथ पत्थर गड़ा होने के यस्ते या जन कमी भी होने तक 40 दिन के अन्दर-जन्दर एक के बाद दूरी 3 मोते हुआ करेगी ।
2. मकान के आखीर पर अंगेरी कोठरी घन के लिए शुम होगी ।
3. केतु नर संतान और खुद शनि का प्रभाव मंदा होगा । सूरज नं. 1-3-5
4. शनि मंदा जड़ से काटता होगा । ऐसी हालत में अपने ही पर का कुंआ मृत्यु देगा और घन दोलत बरबाद होता होगा । चन्द्र नं. 10
5. ऊर्ध्व रेखा का बेशक चोर ढाकू मगर फिर भी मदे हालात । जब शनि राही हो । चोरी घन हानि और दूरी ऐसी घराबी आम हो ।

रुनि खाना नं. 4

| पारी का सांप |

युग्म जहर से मरने वाला मरेगा ।

मूर्ती जब वां पारी न कोई बचेगा ।



3 चन्द्र दो पितृ रेखा, उर्ध्व रेखा गुरु तांगरा जो ।

10वें चन्द्र से दुर्विषया माता, उल्टी जहर खड़ी करता हो ।

मकान नया खुद अपने बनते, सांप माता घिर चढ़ता हो ।

एत पिण्ड दूप जहरी होगा, जहर दग्ध खुद बनती हो ।

साय सारी जब चन्द्र बेठा, जहर शुक्र दूप मंदा हो ।

संहत गिर्जा हो जब कर्भा मंदा, सांप शका खुद देता हो ।

जहर मगर जा मामू पकड़े, पेशा हक्कीमी उत्तम हो ।

तेल बेचे जब सांप का दुर्विषया, चंतान मर नित्यंतानता हो ।

हस्त रेखा :

उमर रेखा और दिल रेखा नित जाए ।

नेक हस्तत :

1. ऐसे आदमी में दिमारी खाना नं. 4 मोहन्यत के तमाम भाग उल्फत [माता पिता का प्यार] इसके बाद का गलवा [यानि दूर रहना] विहार मौजूद होंगे ।
2. हक्कीम शाहब, चार आंख का मालिक शनि अब टेथे वाले पर कर्भा मंदा प्रभाव न देगा । अगर अपरंग आदि से नाकाह छोकर पृथ्वी पर गिर जाय तो सांप उसे खुद आकर ढक भार कर उसका अपरंग हटा कर स्वास्थ्य वाला चर्लिक मुर्दे से भी जिन्दा कर देगा । सिर्फ शनि की उंचाईत चीजों से संहत में शका होगी । चर्लिक बहुत गिरी हुई हालत और गर्वावी बगेह के बक्त शनि के बाम या संघर्षी [शनि के सहायक होंगे] । शनि की चीजें या हक्कीमी पेशा [अनर मंगल नं. 5 वाले] के खानदान में वाप बाबा ताया चाचा जल्लर हक्कीम या [डॉक्टर होंगे] । तो शनि नं. 4 वाला भी खुद रिजिक के संबंध में हक्कीमी डक्टरी संबंधित से दूर नहीं रह सकता और जहरीले जानपाहे के काटे का इलाज मुबारक और जहर खुद झपनी दर्वाई क्य काम देगी । लेकिन सांप का तेल बेचने से निरंतर का सन्-ही ही मिलेगा चाहे औलाद के योग लाख उत्तम हो । इसी तरह जल्लर शहर पीना, सांपों के मरवाने या रात के बक्त मकानों की बुनियादें रखने से शनि नाकाह कर लिया होगा और इस कारण जपनी ही उत से पिण्ड हुआ पत्त्वर अगर सुर नहीं तो आंखे जल्लर खराब कर देगा ।
3. मातृ पिता का सुख सागर और अपना और सांसारिक काम चन्द्र नं. 2-3 में उत्तम ही होगा ।
क्षाप्त : पितृ रेखा उम्र रेखा वृ. के बुर्ज की जड़ की बजाय वृ. के बुर्ज नं. 2 तर्जनी की जड़ के निकट से शुल्ष हो ।
4. उर्द्ध रेखा का मालिक तब उसे को लूट खोट कर जायदाद वृहस्पत नं. 3
बना लेवे ।
5. अपने नये बनाये मकान की बुनियाद रखते ही माता को सांप लड़े, मामू को जहर चड़े की तरह जानों के लिहाज से माता, माता खानदान की जड़ में जहर और माली हालत के संबंध में अपने ही खानदानी खून अपने सुनेत शनि की मियाद तक मंदा अवर देंगे । शनि अब पारी का सांप होगा ।
6. टेथे वाले पर शनि कर्भा मंदा अवर न देगा मगर औत की कम्बूतरवाजी से शनि का मंदा अवर होगा और शुक्र का फल जहरीला होगा ।
7. एत को पिण्ड दूप जहर समान होगा ।
8. छाती पर बात न हो तो बेतवाह होगा ।
9. मंदा स्वास्थ्य के समय सांस खुद शहर तेल [शनि की चीजें] यानि जहरीली नशे वाली चीजें उचापता देंगी । और चन्द्र की चीजों से कोई फायदा या मदद न होगी ।

10. यां प या दृप पिताना, मठर्ता, भैय, जोआ, मनदूर आदि की पालना करना शनि वी जहर को धोया जिससे माता तथा माता खानदान या बचाव होता रहेगा और बुग्रे में दृप गियना चन्द्र {मार्ता हालत} के प्रभाव यो नक करेगा ।

11. चन्द्र नं. 10 में माता दुर्गम्या चन्द्र वी चीजे उल्टा जहर यज्ञ करें, चन्द्र युद्ध बरचाद दृगा । उगम्य अग्र जानी के द्वितीय गुण देव याते वी माता खानदान के सून पर और पन की हालत में थपने खानदान पर जहर वी तरह मंदा होगा या दृप में जहर होगा । पार्नी ऐ घटय मंद दृगा । पन बरचाद, जापदाद जट्ठी के थपने करेगा । युफर का खेलानी यर्चा, पर्तहान या स्त्रियां {पर्तहान या प्रेमका} तंग करेंगी ।

च. न. 4-10

क्षाप्त : उग रेणा दिस रेणा मिस जाए ।

शनि खाना नं. 5

[बच्चे खाने वाला सांप]

जले माया धन, जान खत्ता रहेगा ।

मर देटे पोते, तो फिर क्या करेगा ।

सांप शनि का लड़के खाता¹, या शनु हो वह मवानों या । वाकी उभी फल उत्तम होगा, शनि वृहस्पत दोनों का ।
उे मले संतान हो बढ़ता, मकान यहु से बनत्य हो ।

12 वे शुक्र आया, ये चन्द्र 5-10-9 हो ।
मकान नेंग जब अपना बनता, सामान लावल्हे होता है ।
उे टेवे जब तस्त पै बेठा, शनि पाया धर पहल्हे हो ।

स्वप्नाव शनि हो जब कभी मंदा, पाप आए तक जलता हो ।
मंगल² टेवे चाहे 10वें बेठ, संतान बुझ नहीं होता है ।

महत लाखों संतान बनाया, बुझ कोई न होता हो ।
अक्षर अंग चाहे खांठ क्या पूछ, फिर भी माया जर कलपता हो ।

¹ सूर्य या चन्द्र या मंगल ... चीजे कायम रखे लेकिन जब नं. 10 में यह केतु हो तो जद्दी मकान में सूर्य,

² वर्षफल में बादाम मंदिर में लेजा कर आये याप्त धर में कायम रखे । शनि बच्चे भारती

की निरामी भैर आपु पर तो बेशक मंदा न होगा मगर उनकी बच्ची सुन खत्ते मरलन [३. नं. 10] तो संतान सूर्य ही देख चौरी करके बाहर चोरों को लोहे के भाव पर बेच दे । पर हृष्णि होये ।

देखि हे रेणा स्वप्नाव ११ जो देहे ।



स्वप्नाव ने उत्तर के खुदवारी का स्वधाव का स्वामी होगा ।

उे उे और भवाने का जलत यहु है पतो चल जाएगी । चाहे कुछ भी हो वह निस्तंतान कभी न होगा ।

उे उत्तर के खुदवारी को शालिक होगा । मगर छनवीन की अदत से जीवन सफल बना लेगा । सूर्य अपना चंद्र की वर्ले लेंगे अपर उल्लन के बनाए खरीद मकान कभी बुझ प्रश्नाव न देंगे ।

5. एतकी कर्लो ऐ जहर के लोदने यो अपे बहु सेवा ! उत्तर जब केतु भत्ता हो ।

उदत्ती होये ।

6. 'मकान बनेगे ।

7. अब शर्तान या उत्तान पर योद्धा युग अग्रर न होगा और किसी
उपाय की जस्तर न होगी । चाहे अब गिरती थीर आयु सतान
पर कोई युध अग्रर न होगा । मगर ऐसी सतान माता पिता के
लिए कोई लाभकारी न होगी, वर्तम ऐसी सतान पर का ही छोड़ा
[वृ.] यामान युराक [मंगल] चोहे से निकाल कर बाहर चारों
को लोहे के भाव पर दंच देगा ।

8. शनि अब पर्म देदता होगा ।

9. भाग्य का शुभ प्रभाव 5-17-41-29-53-65-77-89-101-
103 साला आयु में होगा मगर सतान का फिर भी मंदा ही
हात होगा ।

10. पहला लड़का कायम रहे या न रहे मगर अब सतान पर शनि
नं.5 का युध प्रभाव न होगा चर्लिंग उसके बदले में टेवे याते
का बानदारी पुरोहित वरवाद होगा । सांगारिक तीन कुत्तों का
पालना सहायक होगा ।

मंदी हातत :

1. शनि [जन्म कुण्डली में] खाना नं.5 या 7 में हो तो सूर्य या चन्द्र या मंगल [वर्ष फल के हिसाब] नं.7 में आने के समय
स्वास्थ्य का हात मंदा ही होगा ।
2. सारे शरीर पर यात हो तो देशक चोर फरेंदी भी बने, फिर भी गन्दा भाग्य और दुरे नर्सीब याता होगा । चाहे चलन पर पूरा
काबू हो मगर निर्वन ही होगा । मुकदमा जहमत बीमारी का आम झगड़ा होगा ।
3. मंदे वक्त पर किसी का धन्, किसी की ओलाद, किसी का जिस वरवाद हो ।
4. जट्ठी भयान में सूर्य [मोग] स्काई लाइट, बन्दर, तांवा, मूरी भैरु [चन्द्र] चावल, दूध, मोती, चक्रवर्ती, दृ. [धोना के सर], मंगल
[शहद, खांड, सौफ, लाल, मूरे, हयियार] की सी चीजे कायम करें । लैकिन जब नं.10 में यह केतु हो तो मंगल की चीजे
जट्ठी भयान में याता हो तो सतान की गिरती तथा धन में वरकत आएगी । जब कभी वर्षफल के कनुचार शनि नं.5 हो तो
पर्म स्थान में यादाम से जाकर आये वापस ताकर धर में कायम रखें । सतान ऐसा होने पर भीठे की जगह नमकीन चाटे या
खेहपत में हों ।
5. शनि की आयु 36-18-9 में नं.2 के ग्रह के सम्बन्धी या उस ग्रह की चीजे जानदार को सांप काटे या नुकसान देवे । शनि
अब राहु स्वभाव [मंदा] बनावटी सांप होगा । [मंगल युप टेवे में इकट्ठे या दृष्टिकोण में बाहर निलटे हों ।]
6. अन्य बच्चे खाते याता सांप, नर सतान का शत्रु, शादियां चाहे
7 हो और सतान बहुत हो, मगर अपना बनाया भयान या जन्म-
बनाया भयान खरीदे तो 48 साल की आयु तक सिर्फ एक लड़का
या भयान ही होगा । खासकर जब 7-12 में शुक्र और 5-9 में
सूर्य या चन्द्र न हो । सतान को तो लोहे के जंग की तरह
वरवाद पर देगा ।

जब यह भला दो ।

शुक्र नं.7-12 या सू. चं. नं.5-6-10, मं. या दृ. नं.10

खाना नं.11 खाली हो ।

क्याम्ब : संहत रेखा कायम और खाना नं.11 तक
जावे ।

वृहस्पत नं.9

केतु नं.4

7. पाप राहू केतु की आयु तक शनि का अपर मंदा होगा, वर्तिक
उम्र भर जुतामा मैं गुनार है।

जब जाती स्वभाव के अपूर्त पर शनि मंदा।

8. चादे अपर या अंधा गांठ का पूरा भी दो फिर भी माया की
करपना होगा।

वर्षफल में सूर्य नं. 1 या शनि नं. 1 हो जाये।

उपाय :

जदूदी मकान के बाना नं. 10 [पश्चिमी ओर] में शनि के शत्रु ग्रहों की चीजें कायम करे या शनि की अपनी चीजें
चादाम पर्स स्थान में ते जाकर अपे लाकर पर में कायम रखें। छात रहे कि यह बादान खाया नहीं करते। शनि ने अब
तुर्धई न करने की करम द्वा ली गिनी जाएगी।

सू - गुड़, तांवा, शूषी भैंस, बन्दर।

मं - सौफ, खांड, शहद, लाल मूंगे, हयियार।

च - चावल, चांदी, दूप, कुंआ कुदरती पानी, घोड़ा, चकोर [पक्षी]।

शनि साना नं. 6

[सेष की स्पष्टी एक बुनाह मंदा]

बुध लड़का चाहे, पैसा खोटा न अच्छे।

मगर काम फिर भी वह अप्सर ही आते।

उल्टी दृष्टि दूजा देने, अपर बुध न वस पर हो।
बुध केतु न दो कोई मंदा, न ही लावल्दी टेवा हो।

अरार शनि स्वयं वैरे होगे, जैसा केतु कही भैंस को।

शादी पहले जब 28 करता, चन्द्र शुक्र केतु मन्दा हो।

केतु टेवे पर 10 की गिनती, हात मुशाफिर उम्दा हो।

शाप से ऊपर नाम खिलाड़ी, आयु मर्द माया बढ़ता हो।

मिन शनि 10! चोये बैठा, बुध फाया घर दूजा हो।

मोत फरिश्ता सिर जब कटता, मदद शनि न करता हो।

हालत कोई चाहे केही टेवा, हलफ शनि जब लेता हो।

बाद 42 ऐसा उम्दा, फलक स्थाही धोता हो।

1. बुध, शुक्र, राहू।



हस्त रेखा :

शनि से रेखा आयत को जावे।

नेक हालत :

1. अमूमन खाना नं. 2 देखा करता है खाना नं. 6 को। मगर शनि नं. 6 के समय अब उल्ट हालत होनी और शनि अब नं. 6 में
बैठा हुआ खाना नं. 2 के ग्रह को देखेगा और वहां खाना नं. 2 में अगर शनि का निश्च भी [चाहे शुक्र ही] होवे तो भी विषेश
डंक मार देगा।
2. जिस्म से अगर एक मुग्याय से दो-दो वात पैदा हो तो बुद्धिमान और हुनरयान।
3. नहोणता वाला सांप निश्चलो दिन को तो नजर आवे मध्य रात के अन्या हो या रात के किये हुए काम में शनि का कोई मंदा
प्रभाव शामिल न हो सके।
4. अपनी बिल से बाहर निकल कर फण [दिर] उठाते हुए ढंग पर फिरी को जान से जार देने के तिए तेपार हुए सांप की तरह
शनि अब उल्टी दृष्टि खाना नं. 2 में ग्रह को देखता होगा खासकर जब राहू नं. 8 में हो। शनि स्वयं अपने खाना नं. 10 के
ग्रह पर कोई बुध असर न करेगा। जैसा केतु का असर उस उम्य टेवे में हो, ये दो ही शनि के हुम्ल पर ओरे का हाल होगा।
जहां केतु होगा वहां ही ज़ंग का फरंटा [या प्रभाव की लहर] जायेगा। शनि वर्षफल में जब शुम बरे में आ जावे तो निर
पर साया करने वाला शेषनाम होगा। बुध मंदा न होगा और न ही लावल्दी का टेवा होगा, तेकेन यदि शादी 28 साता आयु

174

रे पहले हो तो नुप चन्द्र, शुक्र तीनों ही मन्दे । 28 साला आयु के बाद अगर शादी हो तो 24 साल लड़के ही लड़के पदा होने । मातृ पिता मातृदोतत यिथा सब की बरकत होगी ।

5. मंदा एम्य रिर्फ 42 साला आयु तक होगा जिसके बाद शनि पक्षा नें असर देगा । चाहे टेवे में रूप नं. 12 ही क्यों न हो शनि यदि तारे तो कुत जमाने की स्थाही धो देगा । नालायक देटा और घोटा पिर भी कभी न कभी काम आ ही जाता है ।
6. अब शुक्र आवाद और स्त्री सुखिया होगी । सूर्य नं. 12
7. शनि नेक घर्णे में आ जावे या टेवे में वर्पक्षत के अनुसार नेक प्रभाव का होवे तो गुरु नुप का असर होगा । और लड़की की जनह लड़के पदा होने । सफर से परिणाम उच्च । बाप से भी उत्तम खिलाड़ी और हर प्रकार की खेल, कर्तव या चाल चलन की रूप विरंगी हालत में सब से ऊपर के दर्जा का मालिक । मर्द आयु भाया की बरकत होगी । केतु नं. 10 या जब केतु उसमें हो ।

मन्दी हालत :

1. शनि नं. 6 अपने प्रभाव की मंदी हालत स्वयं शनि की चीजे जाहिर करते । यानि चमड़े के बूट, जूते या लोहे की चीजे जो दम्चों के प्रयोग की हो अमूमन शनि के मंदे असर आने की पहली निशाने होगी । ऐसा व्यक्त यदि शहर का आदी हा जाय या नकान बनाये खास कर जब शनि नं. 6 [जन्म कुण्डली नं. 6] दोबारा नं. 6 [वर्पक्षल] नं. 6 आवे तो शनि जस्तर अदालत, एन दरबार और महकना पुलिस के संघर्ष में व मंदे और दुख देने वाले परिणाम पदा करत्व । शनि नं. 6 की मंदी हालत की पहली निशानी के तोर पर अमूमन टेवे वाले के जूती या बूट नुम होने या नं. 6 [जन्म कुण्डली का शनि नं. 6] व [वर्पक्षल] में जाए शनि के समय नए जूते खरदने की अति आवश्यकता पड़ती । जिनके द्वारे जाने के बाद एज दरबारी संघर्ष में विजेता या मंदे परिणाम होगे । यही हाल नई मशोने या श्नैने से संबंधित चीजें खरदने पर होना । उबरे अच्छा तो यही हांग कि चमड़े की शनि की नई चीजे पांच केतु के लिए खरदी ही न जाये ताके चमड़े के जूते सिर पर न पड़े ।

[चन्द्र स्वयं शनि की चीज है और केतु उज्ज्वला उहायक ग्रह है जो पांच का स्वामी है लेकिन चमड़ा चूके मूर्द चीज है बोर मिन्न की खात उत्तर हुई है इसलिए शनि भी चमड़े की चीजों के आने के समय मूर्द को तरह मंदे असर देगा ।

2. लेख की स्थाही का मालिक अगर मंदा हो तो रिर्फ एक गुप्त मंदा होगा और वह भी चदा ही मंदा न होगा यदि यह विष से न नंतर तो अपने निष्प्र के लपेट [चक्र पर चक्र लेना] से छुट कर ही दुखिया कर देगा । शनि नं. 6 का प्रभाव बेस्क शक्ति [झूम्या या बुध होगा] मगर अब व्. का असर जस्तर ही मंदा होना चाहे व्. उस समय [शनि नं. 6 के समय] कही और केवा भी रेता हो । नारियल या बादाम पानी में बहाना शुभ फल देगा ।
3. 28 में पहले शादी हो तो शनि छाती पर सांप की तरह जहरेला प्रभाव देगा और दुध नंदा होगा जिस्ते 34-36 साला आयु में नंदा तथा संतान बरबाद होंगे मगर वह कभी मंदा न होगा । अब न सिर्फ शनि अपना बुध प्रभाव देगा बल्कि शनि की अपनी चीजे और केतु की चीजों दोनों के नंदे परिणाम होंगे । शनि की मियाद 36-39 [चाला] आयु के बाद मकान बनाना शुभ बल्कि 48 तक मकान बनाना ठीक नहीं होगा ।
4. सांप की रेता से संतान बढ़ेगी ।
5. केतु को बरबादी को ऐकने के लिए पूरा काला कुत्ता [सर्तजों तथा राहू की चीजों का उज्ज्वल हायक होगा] ।
6. मंदन के रिश्तेदार [टेवे वाला का बड़ा भाई उस के बाप का बड़ा भाई यानि ताया माता का बड़ा भाई पनि मामा] का संघर्ष । मंदन के प्रभाव नगर यादि मंदी होगी खात कर जब राहू नं. 1 में हो तो मामा 21 वर्ष की आयु में अंथा होगा ।

। जब मंगल नं. 2 में हो ।

175

7. गिर करने से मोत दोगों उपरे काम करने का आदी होगा । पर में ऐसी पकाने के लिए मिट्टी के तये या पूरी बद बल्टी होगी ।

उप शुक्र नं. 4-10 या उप नं. 2 या सूर्य, चन्द्र मंगल या साथ ।

क्षम्भ : हयेली का खाना नं. 6 में सिर रेखा के मगर दिल रेखा के नीचे शनि के तुर्ज के नीचे छात लकीर या झात श्रिशूल का निशान हो ।

8. मंद भाग्य होगा ।

9. शनि पिपेला मंदा रांप होगा जो गाय विज्ञ और पन हानि करेगा यानि शुक्र की जानदार चीजें [गाय बेत त्वी आदि] और चन्द्र की जानदार चीजें [माता आदि] पर भी हनता कर देगा । खासकर जब यह नं. 8 में हो या मंदा [एहू] हो रहा हो ।

शुक्र या चन्द्र नं. 2

उपाय : शनि नं. 6 की साधारण मंदी हालत से बचने या जहरीले असर को रोकने के लिए उत्तम के तेल से भरा मिट्टी बरतन किरी तलाब या दरिया में पानों के अन्दर जमीन की तह में दबा दे जहां वह बरतन पानी के अन्दर छिप रहे तब खाना नं. 2 खाली हो तो खाना नं. 6 का शनि रात को अंधा होता है इसलिए अमर शनि के कारोबार या सामान के या ऐदा करने की जरूरत पड़ जाये तो रात का समय ऐसे कारोबार सामान के लिए शुरू या ऐदा करने के लिए लाभकारी हो जर्त यह है कि रात कंदेरी हो यानि उठ समय चन्द्रभा न चमक रहा हो दूसरे शब्दों में कंदेर पष्ठ हो ।

शनि खाना नं. 7

कलम विधाता [रिजक]

उल्ट रंगी बोतल जो नाजीन ! थी ।

कफन खीचने को वो तंया छड़ी थी ।

ना बुजुर्गी शान माया, ना इलम दरकार हो ।

बुनियाद शनि की शुक्र होता, ताकत युना 7 होती हो ।

गुरु शुक्र बद मंगल मिलता, नचांब माया वो होता हो ।

उप शनु 10-3 या सात का, आयु पिता जर नंदा हो ।

हकीम हाजिक दुनिया बनता, पुत्र चन्द्र घार हो ।

दोलत हुक्मत साय लाता², शर्त जानीर न कोई हो ।

परेपकाई दोलत उम्दा, बत्ता नम्हरही माया हो ।

चन्द्र करे जब मंदा टेवा, शनि मंदा बुद होता हो ।

- पर्दई नाजीन की मोहन्मत से अपनी ओताद मंदी बल्कि व्यर्थ ही हो ।
- जब शनि की तबीयत [चालाक] का क्षेत्र और औरतों से मोहन्मत रखने वाला ।

इस्त रेखा :

उमर रेखा और सिर रेखा मिली हो । शनि से साथा सिर रेखा पर या शुक्र के दुन्ज में हो ।

नेक हालत :

- जिस पर एक मुराम से आग एक वाल पैदा हो तो शनि नेक तया उत्तम प्रभाव देगा ।
- किसके हुस्म से इधर देव रहे हो को पमकी देने वाला पक्का हठघर्मी देखने को बजाय हुनने पर भरेगा रखना वाला और युदाई पसंद होगा ।
- माल हराम तया हराम कारे कफन दुन्त न देगा । आई चलाई चाहे लाखों की हो या हजारों की मगर जानीर की जर्त न होगी ।
- कलम विधाता [रिजक] उच्च गृहस्ती हालत । जन्म उमय चाहे राई के बराबर नानूर्ती जानीर हो नगर शनि की मियाद पर



जर्ज से ऊंचा पहाड़ हो जायेगा काम रेखा यदि शनि के कल्प निह तरह बहुत मंदी हालत हुआ करती है अब उर्जा तरह ही उन्न द्वारा भूलते हैं हर ओर ही अच्छा होगा ।

5. अनुस्त में शनि की नीव शुक्र ही होगा और प्रभाव की शक्ति सात मुग्ध होती । दोलत हुक्कनत का साथ होगा अगर शादी 22 साल आयु तक न हो तो टेंट यासे वी नगर नेशनियाद अंधापन होगा । मक्कन ने बनाये बहुत मिलें ।
 6. पंहुपकारी हो तो घन आये वरना न्यर्सिरी माया होगी । [निच पर जाये उसी के तबाह कर आये चल पड़े] याली गाया होगी ।
 7. चालकी और होशेश्यारी के लिए उड़ती हवा को फर्जी तीर पर एक जानवर मानो तो उस जानवर की आंख में मिट्टी ढालने की हिम्मत का मालिक होगा ।
 8. एम दरबार से 5 लड़कियों की शादी करने के बराबर घन मिलेगा । उच्च शनि अपने उन्नय में उच्च वृ. का काम देगा या वृ. या शुक्र का फल उम्दा होगा और वो अमीरों में अमीर होगा ।
 9. हजारे सफर करे । उसके बुजुर्गों की शर्त नहीं बगर पुल बांधे ही सुन्दर को पार करने की हिम्मत और उम्र अच्छे जीवन का स्वामी होगा ।
 10. पर में लेटा हुआ पत्थर या खड़ा स्तूप [पिलर] उत्तम शनि की निशानी होती ।
 11. शनि शुक्र वृष्ण यहू सब उत्तम फल सब सहायक होंगे । लेकिन दोत्त प्रथा शुक्र यहू 3-5-7-11 उमर रेखा से पेश शनि से शमिल होने वाले व भाल व दोलत खा जाये । मिल जाये ।
 12. जायदाद जद्दी तो वेशक इतनी ना होगी भगव शास्त्रिक आये हजारे जब मंगल नेक हो ।
 13. मां का मालिक रईस होगा । जुध नं. 11.
 14. दो बुना मंगल नेक और 2 नेक केतु का उम्दा फल होगा । मंगल शुक्र शनि एक साथ ।
 - मुआदन सहायक उम्र रेखा से लम्बी उम्र स्वास्थ्य उत्तम । संतान का सुख और शुनुवा के समय हरक से स्पष्ट और छुपी मदद मिले क्याप्त : उम्र रेखा के साथ साथ एक और सहायक उम्र रेखा ।
 15. सहायक घन रेखा हो माया घन देहद ज्यादा कायम । मंगल वृ. या मंगल शुक्र देखते हो शनि को ।
 16. सहायक रेखा उम्र तया उपर्युक्त सहायता रेखा का उत्तम फल होगा । मंगल चन्द्र या चन्द्र शनि देखते हो वृ. को ।
- अन्ती हस्तर्त :**
1. किरके हुम्म से ध्यान देख रहे हो की तरीकत की स्वामी दुनियादार होगा ।
 2. शनि जन्म कुण्ठली के हिसाब खाना नं. 5 या 7 में हो तो सूर्य या चन्द्र या मंगल यर्ष फल के हिसाब खाना नं. 7 में आने पर बेहतर के संबंध में दुह प्रभाव होगा ।
 3. पर्वई स्त्री के प्वार के वक्त अपनी संतान मंदी बत्तिक व्यर्ष होगी सब कुछ बिक जाय लेकिन जब तक पुणे जद्दी मकान को दहराल कायम हो सब कुछ याप्ति कायम होगा ।
 4. शहर खारी, काम रेखा और शनि के मंदे असर की पहली निशानी जब शनि जाती स्वभाव से मंदा हो ।
 5. दुर्योग पुतला होगा । मंगल चन्द्र शुक्र उम्र रद्दी ।
 6. हरिंदर कर्माना भक्त जाहिर दारी उत्तम [रिखाया] वृ. मंदा ।

उपाय : घाट से भरकर बंदी भार दमाना शुभ । शर्त यह कि शनि सोया न हो । अमर सोया हो तो शहद के चर्तन उपाय मददगार होगा ।

- | | |
|---|---|
| 7. बनायटी शनि [३. शुक्र केतु स्वभाव] मंगल ३. राहु स्वभाव | मंगल मुख एक साय या ३. शुक्र एक साय |
| 27 साल हायियार या ३८, २९ साला आपु तक मंदी सहेत,
झगड़ानु नर्गश भाष्य होगा । | |
| 8. शनि भी मंदा ही होण पन के लिए तिर की बीमारी होगी । | चन्द्र मंदा । |
| 9. आयु जर्द व पन [जैना] पिता सब मंदे होगे, जद्दी जापदाद
और मकान मंदे । | नुप या शनि के दुश्मन ग्रह [सूर्य, चन्द्र, मंगल]
-नं. 3-5-7-10. |
| 10. वेगर्ज मगर मंदा आप्सिक होगा । लौ तन्वे अरते तक बीमार रहे | शुक्र का साय |
| 11. हर तरह की बरफत पर में शहद का चर्तन रखना जल्दी यतना
पोते के आने तक सब माया बरचाद होगे । | खाना नं. । खाली |
| 12. मृत्यु सर कटने से होगी । | नुप नं. । |
| 13. आंख खराव होगी । | नुप आवे नं. ७ में वर्षफल के । |
| 14. हिजड़ा निकम्मा आदर्मी रहीं । टेवा में रात के वक्त ग्रह
काम नहीं करते । | सूर्य नं. ४ |
| 15. शनि नं. । या दिया हुआ मंदा फल देगा और 27 साल आयु
तक हायियार कम ढर होगा । | जब मंगल चर हो । |

Free by Astrostudents

शनि खाना नं. 8

[हेड्स्टार्टर]



खुशी जन्म की उसकी क्या वो करेगा ।

जन्म ते ही जिसके हो मात्रम पड़ेगा ।

ना शनि की योने मंदी, ना बुध बुद आप हो ।

चाल होगी उसकी कैवी, जैसा नुप या पाप हो ।

शनि ग्रह जब साय या चाये, मंदा शनि बुद होता हो ।

जहर भरेंगी नाश में इतनी, मोते बड़ी ही रखता हो ।

असर शनि दे मंगल जैसा, बड़ा टेवे में जैग हो ।

खाती पड़ा पर । २ टेवा, उस कड़ तक दुखिया हो ।

इस्त रेखा :

मंगल चर से रेखा शनि में, शनि का हेड्स्टार्टर खाना नं. ४ होता है ।

नेक हालत :

1. दिमारी खाना नं. १४ तकम्बर और बुदपसन्दी का मालिक होगा ।

2. सांप और चांर मुदां भी हो तो भी उन्हें डर ही लगेगा । शनि अब अपने हेड्स्टार्टर में नेत्र होगा किन्तु कुछ पता नहीं कि भला असर करेगा या बुध फल दे । मगर असर शक्ति ही होगा । ऐसा व्यौज्ञ अपना भला हरेक के भले में मानने वाला होगा या विल में मुझे सांप की तरह शनि अपने हेड्स्टार्टर में अकेला नेत्र मोत के वाटं जारी करने वाला स्वयं ही पूर्ण [जज] हाकिम होगा ।

3. जैसा नुप राहु की चाल भरी जैन की चाल । शनि अब अपने एजेन्टो के एतवार पर काम करेगा । मगर स्वयं शनि का

178

जाती असर तया अपनी हाय की दलान खेणी ही होगी जैसा कि मंगल हो । अंकला देठा हुआ कर्भा भंदा ना होगा । ये घ

4. चन्द्र का उपाय बप्ने पाए चांदी का चौकोर टुकड़ा रखने से शनि की ऋणितत का पता चलेगा ।
5. शनि की चीजें ना भंदा होंगी ना शनि का असर भंदा होगा भगर ये भी शर्त कही कि भला होगा समय के अनुसार जैसा मुनासिर होगा बदल जाएगा । जब शनि बकेला हो ।

मन्दी हालत :

1. शहन से परहेज शनि का असर भंदा न होने देगा ।
2. छाती पर ज्यादा चात थी उम्र भर गुलामी से गुजार दे ।
3. इस घर में अब शनि के नितने ग्रह साथी हो उतनी ही मोते हो जाने के बाद ऐसा व्यक्ति जन्म लेगा । मन्दी हालत में चन्द्र का उपाय यहने खालिस चांदी का चौकोर टुकड़ा अपने पत्तर रखना या पत्तर पर बैठकर दूध से स्नान करना शुभ होगा । यानि भिट्टी पर बैठकर स्नान ना करे । जब कभी होवे स्नान करते समय अपने पांव के तले कोई न कोई चीज जल्लर रख ले चाहे कंकर पत्तर ही खो न हो ताकि पांव का तलवा सीधी जलन की कच्ची तह में न लगे ।
4. शनि खुद ही इतना भंदा होगा कि मोत ही मोत खड़ी रखेगा । शुभ ग्रह [सूर्य, चन्द्र, मंगल] समय या साथी हो । नजर का नुदापे में धोखा होगा ।
5. कुल उम्र चर्टिक आडिरी वक्त तक कम धन और दुखिया ही रहे ऐसे टेवे वाले के जन्म लेते ही दूरे साथी ग्रहों से सम्बन्धित करीबी सम्बन्धियों को कड़ में जाना पड़ेगा । नुदापे में नजर का धोखा होगा ।

खाना नं. 12 खाली ।

क्षाप्त : हाय की उंगलियों के नाखून काले रंग के हो ।

शनि के मन्दे असर का स्वरूप तरफ होगा :

यहू को निरु केतु को दुम रमझकर एक सांप की शक्ति बनायें, यहू देठा होने वाले घर से आये जहां कहीं भी यानि जिस खाने में रेखा निकलकर रुंदी ही जा सकती हो उस घर पर शनि का असर पड़ेगा । अच्छा या नुह जो समय के अनुसार [जन्म कुण्डली या वर्ष कुण्डली] संवित हो । दुम केतु पहले या कुण्डली के पहले घरे में हो तो शनि का प्रभाव उत्तम तथा सहायक होगा ।

शनि खाना नं. 9

| कलम क्षित्या (मध्यन मटी) |

सोया यत निर्धन चते जब सदेरे ।

उठता नहीं कोई घर बार तेरे ।

जार्गार मालिक और भार्ह कर्बाला, पुष्ट तीनों तक चलता हो । नुह यो पहा ना कभी करता, खुद कोड़ी से ढरता हो ।

60 सात तो उम्दा होगा, चर्टिक उम्र हो सारी ही ।

शनि मालिक है धांव शुक्र का, तरफ चारे ही देखती जो । शर्त बृहस्पत इतनों करत्य, हाँवे परंपकारी भी ।

शनि देठा जब उत्तम टेवे, शुक्र असर 2 देता हो । चोट शनि हो जब कही खाता, अंघ शुक्र खुद होता हो ।

मंगल टेवे जा चैदे देठा, शनि जलाये 9वें को । शुक्र मधर जब आया दूजे, शनि गुना नीं होता हो ।

सात छठ नुप शुक्र उम्दा, शनि नुह न तीजे हो । फूँक तमाजा जारी दुर्नियां, खुद न्त्तें चूहा हो ।

पारी ग्रह हो जब शनि भनता², पूमता पत्तर होता हो । रेव कपन खुद धन पाता, द्याती पड़ा जब दूजे हो ।

पीनावरी शाह हांवा माड़ा, मन की दलीलें सोचता हो ।

1. जिस पर शनि हो शुक्र में वही अमर और दृष्टि भी शुक्र की उप पर की तरफ होंगी मगर दृष्टि की चाल स्वयं शुक्र की अपनी पिछली ओर [जहाँ ने बेठा हुआ शुक्र आने के पर्ये को देख सकता हो] की होंगी तर्केन अमर शुक्र बैठा ही हो चाह के पर्ये में तो भी वह [शुक्र] देखेना तो यो शनि ही की तरफ मगर दृष्टि दर्जा टेढ़ी आंख की तरफ देखने के दौर का होगा ।

2. बच्चे के माता के पेट के समय का बनाया हुआ या खरीदा हुआ भकान ।

हस्त रेखा :

भाग्य रेखा की जड़ पर काँच विशूल हो या उर्ध्व रेखा हो ।



नेक हालत :

1. पुरुषों और मकानों के लिए कलम विद्याता [वहुत उत्तम और नेक अर्थाँ में] शनि की विद्यापर या दुनियां से कूच के आधिरी सुभय तक कम से कम तीन मकान रहने वाले काम होंगे या तीन मकान काम हो जाना ही उसके आधिरी वक्त की निशानी होगी ।
2. पहाड़ी हवा या प्रवर्ष पहाड़ों के घैस्त की तरफ उत्तम और हण-भण करने वाली आंख का मासिक सफर का सामान तथा विद्या मकान की विद्या में कामयान हमर्दद और सुखी होगा ।
3. भाई कर्त्ता, जागीरों का मण्डिक, उदा सुखी, लम्बी उम्र, माता-पिता का सुख उत्तम होना व किसी हालत में भी-कर्द-जोड़कर नहीं मरेगा । तीन पुरुष याच, याप, पोता हरदम काम का स्वामी और शुद्ध शनि कर्त्ता नंदा असर न देगा । 60 साल ते जल्दी बल्कि सारी उम्र उत्तम प्रभाव होगा मगर शर्त यह कि मनुष्य परेपकारी भी होवे । माता पिता के बाद अमर तकलीफ हो तो वृहस्पत का उपाय उहायक होगा । नाकों ऊंचार में शत्रु उसे काटने वाले सांप की तरफ मारने को दौड़ेंगे । घर में जन्म का गड़ा हुआ पत्थर शुभ फल देने की निशानी होगा ।
4. जब तक उत्तम बैठा हुआ हो तो शुक्र कहीं भी होवे वो [शुक्र] शनि के सम्बन्ध में शुक्र नं.2 का दिया फल देगा, तर्केन अगर शुक्र ही नं.2 में तो शनि 9 गुण नेक होगा । मगर चन्द्र भाग हर दो हालत में मंद होगा ।
5. हर तीनों [शनि, बुध, शुक्र] का प्रभाव उत्तम होना लोगों के आहम के कामों से फायदा होवे । तांगों अंगों खानदान से होंगी । जब बुध नं.6 या शुक्र नं.7 हो ।
6. कोई मंदा असर न देने लेकिन अगर पित्तों अंगों कोठरी में ऐशनी कर दी जाए [दीवार तोड़ दी जाये] चंशनदान खाकर दक्षिण की ओर तो तीन साल में सब कुछ बरबाद होगा । शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र भवत नं.3 में हों ।
7. उर्ध्व रेखा का स्वामी, दुष्ट, भाग्यवान लिरके पन से सढ़े हुए मुर्द की बदबू आये या पन दोलत के होते हुए भी मन्दे जीवन का स्वामी हो । नं.2 खाली ।
8. संतान का हाल मन्दा न होगा । वृहस्पत नं.5
9. कुदरत की ओर से कोई मुर्द घटना दृश्य आदि दुख देने वाली न होगी । सूर्य, चन्द्र या भवत नं.3
10. मां चाप दोनों की तरफ से उत्तम भाग्य भला लोग होंगा । स्त्री अमीर खानदान से और अच्छे भाग्य वाली होगी । चन्द्र नं.4
11. दूर्घट से हमदर्दी और माता पिता की आपत में टीक नहीं हुई । सूर्य नं.5
अब सूर्य और शनि या कोई शगड़ा न होगा ।

180

12. यादे माया ज्यादा मगर माया पर पेशाम की धार मारने वाला होगा ।

वृहस्पति नं. 12

मन्त्री छाता :

1. माये पर या पांय की पीठ पर बात हो तो मंदभाग होगा ।
2. फिरी निर्धन को घाट को भी बपते मकान में आएग नहीं करने देगा । उसे डर होना कि कही वह उसका घर-यार ही उठा कर न ले जाये ।
3. बच्चे के माता के पेट के बक्त का बनाया या खुरीदा नकान पिता को शनि की मियाद पर जिन्दा न छोड़ेगा । एजदरवार में पीर-धीरे कहुवे की चात की तरह तरक्की लेगा ।
4. ऊं पर चौबट, ईंगन, लकड़ी आदि मन्दे असर की पहली निशानी होगे । मन्दे समय वृहस्पति का उपाय काम देगा ।
5. जब संतान पर युग असर न होगा बल्कि पूरी मच्छ रेखा [नी केतु नं. 5 लड़के, तीन लड़कियाँ] जायज होगी ।
6. शनि खाना नं. 9 का जलायेगा, घर बार और सारी दुनियां को फूंक कर रहीं । प्लेसी चूहे की तरह बीमारी लात की शंदी हवा फेताने वाला होगा । मंसल नं. 4
7. ऐसा व्यक्ति अमरी तो होगा मगर दुष्ट मंद भाग्य जो दूर्जे के कफन तक बेचकर दोलत इकट्ठी कर लेगा ।
8. शनि निर्धन प्राप्ति अपने ही मन की दलील करता रहता और कीनावरी से नक्क होता रहता होगा । वह अपनी संतान के जन्म के उत्ते में भारी मनहसु मंदा पत्थर होगा । साक्षात् से गर्हन हो चुका निर्धन प्राप्ति अपने ही मन की दलील करता रहता और कीनावरी से नक्क होता रहता होगा । वह अपनी संतान के जन्म के उत्ते में भारी मनहसु मंदा पत्थर फस्ता रहा होगा । शनि खाना नं. 5 में संतान के मारने में एक जहरीला सांप माना है यहने जो संतान पैदा हो जाने के बाद भी उन पैदा हुए बच्चों को उनके पीछे भागकर उनको मारने के लिए जहरीले सांप की तरह उनको मारकर अपनी प्यास बुझायेगा । मगर खाना नं. 9 का शनि संतान के संबंध में सांप की बजाय एक बड़ा भारी पत्थर का पहाड़ होगा जिसको पार करके बच्चों को अपने माता के पेट से बाहर आना मुश्किल होगा लेकिन जो बच्चा पैदा हो गया उसके पीछे शनि नं. 9 का पहाड़ शनि के नं. 5 के सांप की तरह नहीं भ्रम सकता संशेष में शनि नं. 9 के समय बच्चे देर के बाद पैदा होगे और जो पैदा होगे वह जीवित रहेंगे ।

खुद बदला लेने वाला बरना संतान को बदला लेने के लिए नीहत कर जाने वाला होगा । आग की घटनाएं वृहस्पति की चीजें [सोना हवाई पीला रंग] और चन्द्र की चीजें [चांदी, बगाजी] और चू. के कामों से लाप्र मगर शनि की चीजें और शनि से संबंधित काम मंदा फल देंगे ।

नं. 2 खाती । व्याप्ति : उर्वर रेखा हथेली के खाना नं. 5 से चलकर हाय ज्ञे दो भागों में बांटने वाली हो ।

शनि पापी ग्रह की वह [यह केतु] किसी तरह शनि को मिलते या देखते हो ।

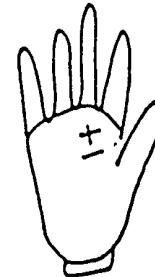
181

शनि खाना नं. 10

। सेष का कोण साली कामन ।

परजई दिल की आंखों पे इन्जत करेगा ।

कदम पर कदम आगे बढ़ता चलेगा ।



मातिक नजर ग्रह मण्डल होता, दोलत शाहना पाता हो । नेक असर खुद अपना देगा, दूजा मुर्झा मिलता हो ।
केतु वेशक हो टेवे मंदा, पार्श्व बुध न होता हो । नेक शनि तो सबसे उम्दा¹, मन्दे जहर खूनी होता हो ।

शनु ग्रह या मंदा साथी, अंषा शनि खुद होता हो । नजर उड़ेगी ग्रह सब ही की, ना ही भला शनि रहता हो ।
39 साला 48 होते, उम्र पिता का साथी हो । शनि मन्दर दे जब खुद मंदे, मली मदद मुर्झा होती हो ।

तथा चन्द्र गुरु चौथे बैठा, ऐशा सवारी देता हो । 4 मंदा या दुश्मन धैर, 27 साला जर मंदा हो ।
साल सातवां/तीसरा हर कोई उत्तम, चारों तरफ² शनि देखता हो पूर्म चक्र बुध सातवें आता, समुहल अमीरी देता हो ।

1. मगर आखिरी नर्तजा मंदा जब खुद मला लोग धर्नात्मा हो लेकिन अगर शनि की त्रियत का त्रो हर तरह उम्दा ।
2. 3-9-15-21-27-33-39-45-51-57-63-69-75-81-89-93-99-105-111-117 साला आयु में ।

इस्त रेखा :

शनि के बुर्ज पर मध्यमा की शक्ति हो  या शनि के बुर्ज पर मध्यमा की जड़ से रेखा हो ।

नेक हालत :

1. खाना नं. 10 का शनि अगर खाना नं. 1 के ग्रह का रहायक हो तो 2 मुना उत्तम बरना नं. 10 का शनि खाना नं. 1 के ग्रह का 2 गुना शनु होगा ।
2. पिता की आयु का टेवे वाले की कम से कम 48 साल उम्र तक साय होगा । शनि हर चातवें साल हर तरह से मान धन बरकत देगा और खुद शनि तया वृहस्पत दोनों कांही उम्दा प्रेसाव होगा । 3-9-15-21-33-39-45-57-63-69-75-81-87-93-102-111-117 या 105.
3. अफेले शनि की हालत में उम्र का हर तीसरा साल उत्तम और शनि न रिंक चारों तरफ देखने वाला आंख का स्वामी या सहायता करने वाला भाग्य का कोण कामज शुभ अर्यों में तमाम ग्रहों की दृष्टि का स्वामी और उनके लिए पिता समान होगा ।
4. वृक्ष जंगल पहाड़ तरह की जायदाद का स्वामी व्यजायारी की तरह शाही धन । अचनान तक ऊँचा मान पाकर आखिरी समय ऐसा गिरेगा कि उजका ढूँढ़ा कठिन होगा । पिशेषकर जन वो धर्मात्मा हो लेकिन अगर शनि का स्वभाव ³सांप की तरह चौकन्ना⁴ और दूरहों पर कठोर मातिक होगा और शनि खुद शेषनाम सिंहासन की तरह सहायक होगा । ज्ञौ तरह ही भारी पहाड़ की तरह स्थिर होकर शनि बैठा ही रहकर काम करने वाला हो या ऐसे काम हो जिनमें बैठ ही रहना पड़े तो फायदा लेकिन अगर छोड़ने व भासने में हर दम नाए-माए फिरने वाला हो यानि अजटडोर इपूटी वाला हो तो नुर्दा सांप की तरह हरेक के पांच के नीचे आता होगा । केतु बुध हो तो वेशक बुध हो । मन्दर राहू शनि कम्भी मंदा असर न देंगे ।
5. पिता की उम्र लम्बी । टेवे वाले की कम से कम 39 या 48 साला आयु तक पिता का चर द्वारा और टेवे वाले की खुद अपनी आयु 90 साल के कर्त्तव्य होंगी । एजरभा चाहे शादी या धन्त्यान मंदिर आदि यानि हर जगह नत्तोर अपनी नजर मान होगा और वो उम्दा फर्दार की झोली की फिल्मत ⁵जिसका भेद न खुले⁶ का स्वामी होगा जिसका फैसला खाना नं. ॥ से होगा ।
6. जिस कदर दूररों का मान करे उस कदर ही अपना मान बढ़ता जाए ।
7. जीरो बुध का गोल दायर प्लॉट । वृहस्पत का संपाठ ढण्डा ⁷टोटल 10 या दोनों मिले हुए बुध वृहस्पत के बाली आकाश का ग्रहमाण्ड होगा जिसमें शनि ⁸त्रिशूल⁹ की निशानी वृहस्पत की रेखा को श्री गणेशाय नवः का उपरे ऊपर इन्जत निशान देगा यानि वो जादू की विद्या या स्वामी और आंखों से ही मुक्ता होगा ।

182

8! जब तक श्वेत न पिये श्वेत की बरकत बढ़ती रहे उसका भैरव की प्रकट न होगा और अगर 48 साला आयु तक मवान न चल पावे तो श्वेत टेपे याते यो मवान की कीमत तथा सामान के बएवर धन दोलत देता जाये और जब मवान बन जाये शनि अपनी मदद का चौराया भित्तर गोल कर जाये । उस दिन से आगे भौं अधिक साथ न देगा ऐ अर्थ नहीं कि दुष्य असर देने लग जायेगा, अर्व केवल यह है कि उस दिन के बाद यानि जब मवान बन जाये शनि मवान बनाने के लिए फालतू धन जना न होने देगा ।

9. हर तरह रे ऐस व सवारी का आहम ।

चन्द्र नं. 1, बृहस्पत नं. 4

10. मुरुहत खानदान अमीर होने और धन देने ।

जब युव वर्षफल नं. 7 में आये ।

11. यह अब शनि एक सोपे हुए साप की तरह होगा मगर प्रभाव अच्छा ही होगा ।

खाना नं. 2 खालौ ।

12. शनि अब नेक ही फल देना ।

क्षणम् : हाथ की उंगलियों के नाखून दरम्याने हो ।

क्षणम् : शनि के बएवर मध्यमा की जड़ में रेखा हो ।

शनि जगता हो ।

मंदी हालत :

1. दाढ़ी या मूँछ के बात कम या फिल्कुल साफ तो कम होला, उसकी पेटा की हुई जायदाद न होगी । नं. 10 में प्रयम तो शनि मंदा ही न होना लेकिन अनर हो जाये तो खूनी अजदहा होगा ।
2. शुभ ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल या कोई और मंदा ग्रह अगर साथी साथ हो तो सभी ग्रह अन्ये चर्के खुद शनि भी मंदा होता ।
3. हवियारे से हत्या करने से 27 साला धन दोलत का मंदा उमय हो । जब शनि क्य असर मंदा हो तो बृहस्पत की मदद सहायक होगी ।

Free by Astrostudents

शनि खाना नं. 11

| लिखे कियाता, स्वयं कियता |

दंत कथा दुनियां से धर्मी जो डरता ।

पकड़ पापी देही है खुद पार करता ॥

दरवार गुरु के हलफ रे पहले, पर्व अदालत मेठा हो ।

केतु यह हो जैसे टेवे, फैरत्त्य उन पर करता हो ।

ग्रह उत्तम को वह बढ़ाकर, बल्दी जल्दी खुद बढ़े ।

सिर्फ युप से है वह ढरता, कि न हो धर तीर्तरे ।

साय तायी जब हो गुरु बेठ, पर्वी शनि खुद होता हो ।

मंदे गुरु पर तीस्तु मंदा, खत्ती तीने शनि सोता हो ।

सेख नंगाचा तख्त पर¹ खुलता, आयु 84 रक्षा हो ।

युप दबाया हो या मंदार², बेकार शनि खुद होता हो ।

रुदि मंसल पर 10वें बढ़े, चन्द्र आगा धर 6वें हो ।

रुदि धन सब उत्तम होते, पाप स्वाही घोता हो ।

द्वार दक्षेष का साय नित्तते, असर दोलत धन मन्दा हो ।

ऐपाश जनाही धर खुद होते, जिस्त आयु शनि जलता³ हो ।

1. 11-23-36-48-57-72-84-94-105-119 साला आयु ।

2. तहकी भैरव का मन्द्य हाल, युव की चीजों के अशुभ परिणाम ।

शनि का उपाय मुहायक, जब शनि खुद के स्वभाव पर मंदा हो वरना साधारण हालत में बृहस्पत का उपाय ।

3. जब यह केत मंदे या उनकी चीजों की मंदी निशानियां वा ग्रहण निशानी हो तो मंदत क्य उपाय और उपाय के दिन से एक साल लगातार लगाए पर पूण कानू रखे ।

182

8: जब तक शहन न पिये ज्ञान की बरफत बढ़ती रहे उसका भेद किसी को प्रकट न होगा और अगर 48 साला आयु तक मकान न बना पाये तो ज्ञान टेवे वाले को मकान की कीमत तथा सामान के बएवर धन दौलत देता जाये और जब मकान बन जाये शनि अपना मदद का बोरिया विस्तर गोल कर जाये। उस दिन से आगे और अधिक साय न देगा ये अर्थ नहीं कि उस दिन के बाद यानि जब मकान बन जाये शनि मकान बनाने के लिए फालतू धन जना न होने देगा।

9. हर तरह से ऐज़ व सायारी का आएम।

चन्द्र नं. 1, वृहस्पति नं. 4

10. शुभ यानदान अपीर होने और पन देने।

पर गुण वर्षफल नं. 7 में आये।

11. याहे अब ज्ञाने एक सौथे हुए साप की तरह होगा मगर प्रभाव अच्छा ही होगा।

खाना नं. 2 खालो।

12. शनि अब नेक ही फल देगा।

क्याप्ट : हाय की उंगलियों के नाखून दरम्याने हो।
क्याप्ट : ज्ञाने के बएवर मध्यमा की जड़ में रेखा हो।
शनि जागता हो।

अर्थी हालत :

1. दाढ़ी या मूँछ के बाल कम या विल्कुल साफ तो कम होरला, उसकी पिंड की हुई जापदाद न होगी। नं. 10 में प्रयम तो शनि मंदा ही न होगा लेकिन अन्य हो जाये तो खूनी अजदहा होगा।
2. शुभ ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल या कोई और मंदा ग्रह अगर सायी साय हो तो सभी ग्रह अन्ये चर्किं खुद शनि भी मंदा होगा।
3. हयियारे से हत्या करने से 27 साला धन दौलत का मंदा समय हो। जब शनि का असर मंदा हो तो वृहस्पति की मदद सुहायक होगी। नं. 4 मंदा या नं. 4 में शनि के शुभ [सूर्य, चन्द्र, मंगल]

Free by Astrostudents

शनि खाना नं. 11

[लिखे कियात्, स्वयं कियात्]

दंत कथा दुनियां से धर्मी जो ढरता।

पकड़ पापी देशी है खुद पार करता॥

दद्वार गुरु के हस्तक चे पहरे, पर्व अदालत भेठता हो।

केतु एह हो जैसे टेवे, फैरत्य उन पर करता हो।

ग्रह उत्तम को वह बदाकर, जल्दी जल्दी खुद बढ़े।

सिर्फ चुप से है वह ढरता, कि न हो घर तीसरे।

साय सायी जब हो मुरु बेठा, धर्मी शनि खुद होता हो।

मंदे गुरु पर तीसरा मंदा, खालों तीने शनि सोता हो।

लेख नर्जीगा तख्त पर¹ खुलता, आयु 84 रखा हो।

बुप दद्वाया हो या मंदा², बेकार शनि खुद होता हो।

रवि मंसत पर 10वें बढ़े, चन्द्र आया पर 6वें हो।

राज धन सब उत्तम होते, पाप त्याही धोता हो।

द्वार दक्षिण का साय न्तिते, असर दौलत धन मन्दा हो।

ऐपाश जनाही घर खुद होते, जिस्त आयु शनि जलता³ हो।

1. 11-23-36-48-57-72-84-94-105-119 साला आयु।

2. तइकी भैसु का मन्द्य हाल, बुप की चीजों के अशुभ परिणाम।

शनि का उपाय सुहायक, जब शनि खुद के स्वभाव पर मंदा हो वरना उपाय इस्तेमाल हालत में वृहस्पति का उपाय।

3. जब राहू केत मंदे या उनकी चीजों की मंदी निशानियां या ग्रहण निशानी हो तो मंसत का उपाय और उपाय के दिन से एक बाल लगातार लंगोटे पर पूर्ण काढ़ रखे।

183



इस्त रेखा :

बृहस्पत शनि के बुरी की दरम्यानी जगह खाना नं. ॥ पर ग्राह + होगा ।

नेक हालत :

1. शनि की नेक तथा बद नीयत का फेरता यहू और केतु बदजात स्वयं की अपर्ना अपर्ना हालत से होगा ।
2. प्रनवान मगर आंखों की चतुरता और फरंम से धन कनाये । अमूमन 40 साला आयु [अच्छी या दुरी] कर फेरता होगी । नेक हुआ तो मिट्टी को हाथ ढालने पर गोना कर देगा । अशुभ हुआ तो सोने को मिट्टी कर देगा । मगर हर दो हालत में आई घ्रस्ताई चलती होगी ।
3. शनि अब चच्चे के जन्म का हुक्म देने वाला स्वयं ही विधाता की तरह होगा यानि संतान के ये चाहे मरे हो मगर अब ऐसा प्राणी कभी लावल्द न होगा । शनि स्वयं किल्त का हरदम रखा और पाप [यहू केतु की स्थानी] धोने वाला होय । ऐसा व्यक्ति पक्का मर्द होना मगर उनकी स्वयं की फौटा की हुई शायद ही कोई जायदाद होगी या यहू पिता से अमूमन जायदाद पाएगा । वह धर्म स्वभाव और धर्मी आंखों का स्थानी होगा ।
4. रम से पहले अब शनि कुल जमाना और रम ग्रहों के गुरु बृहस्पत का इलाफ लेगा और फिर बद में धर्म अदालत करेगा । ऐसे यहू केतु होगे ऐसा ही अपने धर्म इमान से फेरता करेगा । उत्तम ग्रह को जल्दी जल्दी बदल्कर स्वयं बदल, जब तक दुष्य नं. 3 में न हो ।
5. अब शनि स्वयं धर्मी होना खाउकर जब टेवा धर्मी [पाप यहू केतु] चन्द्र के साय या नं. 4-10 में हो । लेकिन यदि बृहस्पत मंदा हो तो खाना नं. 3 खाली हो तो शनि सोया हुआ होगा और न सिर्फ स्वयं शनि का अपना फेरता बहात होना चलिक तद्दत पर आने के दिन ॥ 11-23-36-40-57-72-84-94-105-119 ॥ साला आयु से शनि नेक फल देगा और 84 साल तक सहायता देता रहेगा । [जब बृहस्पत साय साथी हो ।]
- क्षणाकार : शनि के बुर्ज या मध्यमा को जड़ से शनि व बृहस्पत के दरम्यानी खाना नं. ॥ १ में बकर रेखा जावे तो शनि मंदा होगा लेकिन अगर मध्यमा की जड़ या शनि के बुर्ज से हयेली के खाना नं. 13 में रेखा जावे तो शनि का फल उम्दा, उत्तम और सहायक होगा ।
6. यज दरमार माया दौलत रम उत्तम और खुद यहू केतु भी पाप की स्थानी धो देंगे । सूर्य मंगल नं. 10 और चंद्र नं. 6 या सूर्य नं. । और चन्द्र नं. 2.
7. आम लोगों के फायदे और आएम की पूरी ताकत और नेक प्रभाव और खुद आएम पढ़े । शुक्र नं. 7
8. पानी का भए हुआ पश्चा [शनि खाना नं. ॥ १ में दृष्टि खाली यानि जब या निषिका शनि खाना नं. ॥ १ में हो तो ऐसे व्यक्ति को शुभ काम करने के समय पानी का भए हुआ पश्चा, मिट्टी का करचा भर्तन् । नतोर कुम्भ रख लेन् । अति उत्तम होगा ।

मन्दी हालत :

1. खाना नं. ॥ १ से चलकर खाना नं. । में आने के दिन से यानि 11-23-36-40-57-72-84-94-105-119 साला आयु में शनि मंदा होता हुआ भी नेक फल देगा ।
2. अण्डे ही खा जाने वाला सांप चच्चे कहाँ छोड़ेगा की तरह शनि की खुराक यानि शहर खोरी से शनि के नेक प्रभाव समाप्त होंगे । और मंदे समय की सायारण लहर होगी । अपना बनाया नया मकान पिछली अवस्था ॥ 54-55 ॥ में लायम होगा । लेकिन अगर पहली अवस्था शनि की आयु 36-39 ने पहले बना लेये तो आदिरी अवस्था में उड़ी मकान में लम्बे समय तक बीमार रह कर मौत होवे । [मन्दे हस्तात की तरह] अपनी संतान और गृहस्ती जिम्मेदारियों की देखी को सुन्दर के मंज़धर के ठीक धैर्य ही छोड़कर मर जाएगा कि उनकी आहों को सुनने वाला शायद ही कोई संचारी गृहस्ती सहायक होगा या हो रुकेगा ।

3. दृष्टिकोण के दरवाजे या गाय दो तो पन का मन्दा छाल होगा और जब ऐपाशा जनाई होये और शरण खोए अपना कर्ज है बना लेये तो अपना नित्य आयु और स्वयं शनि का नेक प्रमाण सुन मन्दे और जलते ही होगे। दंत कथा अफ़कारें मंदे समय की पहली निशानी होती है। ठीक तो यही होगा कि जब कभी मोक्ष आये शरण को मुंह में ढालने की जमान पर गिर दिया करे तो शनि का नेक प्रभाव रद्द होता है। उत्तम यह ही होगा कि शरण को जै राम जी की ही कर दे।
4. कुप्र की चीजें, रिश्तेदार या कान काज, लड़की, बहन का मन्दा छाल और हानिकारक होना। फरेन और बैईमानी का पैसा अपने लिए ही कफ़न का बहाना होगा। अपने जन्म से पहले बने हुए मकानों के दरवाजों का लख बदल देना यानि उखाड़ कर पूर्व से परिचय या उत्तर से दृष्टिकोण की ओर यानि पहले से उर्द्धी और [खासकर दक्षिण को] अच्छे बने बनाए खेत को मंदा कर देगा और जीवन मातम की सहाय बन जायेगा।
5. नया सुरमाया चाहे विद्या अधूरी मगर धन दौलत भला ही होगा बेशक जमाने का उत्तर-चढ़ाव बहुत देखेगा मगर गुजार मंदा न होगा।
6. तीनों ही निष्पक्ष होने और मंदे अचर के साथित होगे।
7. मंदी सेहत के समय स्त्री से कम से कम एक साल दूर रहें नहीं तो शनाई तीन साल के लिए आगे बढ़ जाएगी।
8. शनि बेकार और निष्पक्ष होगा।
- कुप्र दबा, दबाया या मंदा हो।
9. एहु केतु की चीजों के मंदे असर की निशानियों के समय मंगल का उपाय सहायक होगा। यदि बृहस्पत निकम्मा हो या चाप बुरुर्ग गुरु या लम्बी आयु का कोई बूढ़ा कोई साथी ना हो तो पुर्येष्ट बृहस्पत का उपाय सहायक होगा। मंदे समय में बृ. का उपाय और स्वयं के स्वभाव के अनुूत पर अपर शनि मंदा हो तो स्वयं शनि का उपाय सहायक होगा। कुम्भ यानि शनी का भय हुआ पड़ा कायम रखना सब ही मन्दी हालतों में और सदा ही नेक फल देगा।

सशारप उपाय :

शनि की पानी की तरह बहने वाली चीजें [तेल सरसों का, शरण, स्पिरिट आदि] सुनह सूत्र निकलने के समय जमान पर गिराना राजदरवार, गृहस्थी हालत और आमदन के सम्बन्ध में हर की खरबियों से बचाव देगा।

शनि खाना नं. 12

[कलम कियात्, आहम]

मदद सांप जहरी, जो तेरी करेगा।
जमाना में शशु न चाकी रहेगा।

नाग येठे न जले¹ जंगल में, मछली² नहावे जल³ में। साधू⁴ खुशी हो अपनी समाई⁵, बृहस्पत⁶ खुशी हो धन⁷ में। लेखा⁸ क्या देखे दर्पण⁹ में, जब शुक्र मंगल नहीं¹⁰ घर में। असर शनि का प्रवल ऐसा, सांप हाथों में खेलता हो। |या शशु आए हो दर में।|

कुप्र¹² बारह न पानी मंदा, शेष नाग लाया करता हो। व्यापार करीता बेहद लम्बा, अरब करंडी होता जो। उत्तम शनि चाहे तब्दि हो देता, पेशान दौलत पै करता यह। पिछली कोठरी घोर अंधेरा, ऐशन जमान होती हो। पाप नैठा जब उच्च हो घर का, उत्तम रेखा मच्छ होती है। सूर्य छटे दीवार¹³ जो फटती, स्त्री, लंबे पर मरती हो। पदम असर न झूठ शरणी, मच्छ मुआवन उड़ती हो।

1. मंगल कुप्र
2. मच्छ रेखा

3. चन्द्रमा नं. 4 उत्तम नेक
4. नं. 12 शुभ
5. उत्तम पन रेखा नं. 7-9 नेक
6. बुध
7. कायम उत्तम
8. सूर्य, चन्द्र, मंगल
9. नं 2
10. गुरु
11. उम्दा हालत
12. बुहस्पति

13. अन्धेरी कोठरी के दक्षिण पूर्वी कोना में बादाम शुभ। शनि मन्दा होने से पहले बुध की मंदी निशानी दर्द आंख होगा।

हस्त रेखा :

मच्छ रेखा जब आयु रेखा या उर्ज्व रेखा मञ्जो के मुँह में होवे शनि उत्तम फल देगा। लेकिन जब मच्छ रेखा के मुँह में सूर्य की तरफ़ी रेखा या बुध की सेहत रेखा घिर रही हो तो जनन का चस्का बरबाद करेगा।



नेक हालत :

1. शमुओं के सम्बन्ध में हाय में श्रिशूल लिए थीर की तरह अच्छा व उत्तम जावन गुजरेगा और सामान खुराक की कभी कमी न होगी। अगर थिर के बाल उड़ जाये तो पनवान और सुखी होगा।
2. अब यहू केतु का टेवे में बुह फल न होगा और बुध भी अपनी शहरतों से बाज आ चुका होगा।
3. अमूमन हर 6-12 साल की आयु में नया मकान बनेगा मकान बनने को न रुके जेसा और जब बने बन ही लेने देये। क्योंकि मकान बहुत बनेगे।
4. जहर और तमाम सांप हमेशा इंसान को मारने का बहाना नहीं होते। शनि बन रहत के समय चिरहाने बेठ कर रक्ष करने वाला अजदहा होगा जो जले हुए को आवाद करने वाली आंख का मालिक होगा। शनि का नेक असर इतना प्रब्रत होगा कि यदि सांप भी हायों में आ जाय तो लड़ने की बजाए खेलता होगा। शनि त्वयं शेषनाम का साधा करने वाला होगा। व्यापार कमीता हर दो लाख ऐनाने पर उत्तम दर्जे पर होने। चाहे शनि अब कहें त्वया देवे मनर वह व्यक्ति उपी हुई फेरेबद्यनी का आदी होगा। वह माया पर ऐश्वर की पार नारता होगा।
5. यहत का पूर्ण आरम्भ और सुख के लिए कल्तम विधाता की ताकत जब नं. 2 में शनि के शत्रु [सूर्य चन्द्र मंगल] न हो। जब मालिक दोगा।
6. जब तक पिछली अंधेरी कोठरी कायम हो और पाप [यहू केतु] उच्च वैठा हो उत्तम मच्छ रेखा का फल होगा। ऐसे समय मंगल भी खाना नं. 6 से 12 में होगा। यहू नं. 3-6, केतु नं. 9-12
7. अब शनि तारने वाला इच्छापारी सुहायक सांप होगा। यहू नं. 12

स्थाप्त : उर्ज्व रेखा मञ्जी के मुँह में घिर रही हो।

मन्दी हालत :

1. अगर शूठ बोलने वाला, स्त्रीबाज और गरणतों हो जाए पदम और उहायक उनर या मच्छ रेखा का भी नेक असर न हो। जनन का चस्का बरबादी का बहाना होगा।
2. ओरतों की नीमारी के बाद मंदी सेहत फिर बाद में रहने का मंदा प्रभाव शुरू होना।

3. 'स्त्री पर स्त्री मरती जाये खाएकर जब अपने मकान की पिछली सूर्य नं. 6
दीवार फोड़कर मकान को रोकन कर दिया जाये ।
4. चन्द्र यम चुप होगा । चन्द्र राह नं. 12
5. जयान या चत्स्या या चुप के काम चीजें रिश्तेदार चुप से
सम्बन्धित वरावाद करे । चुप मंदा हो ।
6. तर्यापत का गुरुणा एजदरवारी सम्बन्ध में मंगल और शनि का
आपरी झगड़ा सांप बन्दर की लड़ाई का नजारा पेदा करेंगे । सूर्य का सम्बन्ध
क्षाप्त : मछली के मुँह में सूर्य की मरक्कों रेखा या चुप की
ऐहत रेखा गिर रही हो ।

राह

[रहनुमारं शरीरं मुखाकरं]

मुचारीक यही तू जो अंमू बहाता ।
हुई मोत - शीती, चाहे शत्रु की भाता ॥

फलक ऊंचा जहर दुनियां, दोनों नीता हो गया ।	मदद पर जब राह आया, दुनियां चर चर सुक रखा ।
मातिक ¹ बढ़ी का पाप ऐसेंटी, मोत ² बहाने पड़ता हो ।	लिखा शनि का स्वप्न में पढ़ता, लिखा हुआ बद मंत्र जो ।
साय शनि स्वयं सांप का मधका ³ , अरर मगर खुद अपना हो ।	बाद नैठा ले हुक्म शनि का, पहले देव सुद हड़किन हो ।
शनि दृष्टि यहू पे करता, लोहा तांचा रवि बनता हो ।	यहू मगर हो उल्ट जो चलता, हस्त तवाही करता हो ।
शनि भैठे को यहू देखे, यहू मंदा स्वयं होता हो ।	मदद मगर न शनि को देव, जब लोहे को खाता हो ।
मंगल यहू जब जुदा जुदाई, भंती हायी यहू बनता हो ।	घर बेठक पर असर न कोई, मत्त खूनों चाहे केत्ता हो ।
मंगल भैठे जब साय दृष्टि, अरर केतु का देता हो ।	असर मगर इस घर का गिनती, मिले बसर जब घर में दो ।
मंगल दृष्टि यहू पे करता, चुप यहू स्वयं होता हो ।	उल्ट ममर हो जब वह बैठा, बाजू नंतर के पकड़ता हो ।
शनि रवि दो एक गाय टेवे, असर भला न दो का हो ।	झगड़ा दोनों का लम्बा बढ़ते, नीच यहू बद मंकल हो ।

1. मदे राह के समय दृक्षिण के द्वार का मकान का साय न रिक्फ़ धन की हानि करेगा बल्कि उच्चा ताकतवर हायी भी चीटी से
मर जायेगा । जब तक आना नं. 4 या स्वयं चन्द्र उत्तम हो, यहू कभी मंदा न होगा । चांदी क्य उपाय सहायता करेगा ।
2. मंगल नं. 12 या 3 या सूर्य, चुप नं. 3 या राह स्वयं नं. 4 के समय यहू कभी मंदा प्रभाव न देजा ।
3. सांप की भणि उएके दिर में हो ओर जिसे सांप जान से भी ज्यादा मूल्यवान समशता हो ।

दुनिया के फर्जी डर का सोच विचार जागते हुए ही इंगानी दिमाश में खण्डी तहर और क्यासी ढापालात की नकलों
हरकतों का 42 साल आयु का समय यहू का समय होगा । सब कुछ होते हुए भी कुछ न होना यहू शरीफ की बस्तविकता है
दिमानी लहर क; स्थानी, सब शत्रुओं से बचाव और उनका नाश करने वाला माना गया है ।

वाम हालत 12 घर :

हायी तखत पर ग्रहण रवि का, 10वें शक्कों खुद होता यह ।	लेख पगड़ा गुरु मंदेर का, रोता गुरु चर ॥ हो ।
आयु धन का एखा तीजे, गोली पवका बंदूरखी हो ।	पाप किस्म वह करता चाये, संतान बच्चा न पांच की हो ।
धुंआ शुक्र चुप 7वें उड़ता, कट्टीं फासी घर 6 से हो ।	मोत नकाह पर 8 बनता, जहरी चन्द्र जब [र्जन] चांप से हो ।
जले धर्म 9 यहू भट्टी, शफा पागल को देता हो ।	लाख उम्नीदें 12 फर्जी, हायी खर्च न स्कता हो ।

इस्तरेखा :

एहु केतु यी कोई रेखा नभी नहीं हुई है। तिर्फ निशान भये हैं। जहां निशान मिले वह पर कुण्डली का होगा। औ बगर निशान भी न हो तो दोनों ग्रह अपने पर के होते हैं। यानि राहु धाना नं. 12 में दोगा, केतु नं. 6 में होगा। बच्चा रेखा के उम्मीद एहु केतु उच्च पर में यानि एहु 6-3, केतु 9-12 में (उच्च पर है) काष रेखा के समय यह दोनों नीच धरे के होते हैं। यानि एहु नं. 9-12, केतु 3-6 [नीच पर]।

नेक हालत :

1. उत्तम प्रभाव के उम्मीद लगने से नीता रंग हो चुके शरीर को पकड़ से ही ठीक करने वाला मनिंद हाथी मगर सफेद रंग का हो।
2. आहमान के गुम्बद और संहार के समुन्द्र दोनों ही नीते रंग का मालिक एहु निरुक्ती मदद पर आ जाये कुल संहार का सिर उठके सामने सुक जाये। मंगल के साथ या ट्रिप्ट में होने से केतु का असर देगा। जब टेवे में मंगल शनि मुश्तका [जब मंगल खुद अपनी हैरियत में नेक मंगल हो] हो तो राहु हमेशा उत्तम और नेक का होगा खासकर जब धाना नं. 4 खुद या चन्द्र उत्तम हो या मंगल नं. 12 में हो [या सूर्य दुष्य नं. 3 या एहु अकेला नं. 4 हो तो एहु कभी मंदा प्रभाव न देगा बल्कि टेवे वाले की मदद ही करता जाएगा। और मंगल नेक के दोहन [नं. 1] में आने के समय पर चुप रहेगा।]
3. मंगल वद जो लिखाये थेर शनि निरु खुद लिखे जरुर लिखाई को छापाली सफर की शक्ति का यात्रिक एहु स्टून में ही यहाँ [मंगल के और शनि के मंदे प्रभाव का उच्च पहले ही पता चल जायेगा] पढ़ लेगा। कुण्डली में शनि के बाद के धरे में देढ़ा हुआ शनि से हुयम लेकर काम करेगा। लेकिन शनि से जब पहले धरे में देढ़ा हो तो स्वयं हाकिम होगा और शनि को हुयम देगा। यह चन्द्र को मध्यम करता है मगर चन्द्र के साथ ही ठंडा और अकेले चुप नया हुआ चुपचाप रहने वाली हाथी होगा याहे सूर्य को यह ग्रहण लगता हो मगर उसकी गर्मी से और भी अधिक हानि करने वाला हिलता हाथी होगा। बृहस्पति के शेर और सापु को तो कोढ़ और दमा ही कर देगा मगरु चुप के पक्षी और शनि के कवचे को न तिर्फ असमान में उड़ने शुश्रू और केतु को रास्ता दिखाने वाला उरदार है तो दूसरी ओर शनि के सांप की मणि और मंगल के महावत के साथ झेरों का शिकारी हाथी भी माना गया है।

मन्दी हालत :

1. एहु के मंदे समय इसका मंदा असर एहु की कुल निपाद [42 चाला आयु] के पूर्ण होने पर दूर होगा। फालतू घन, संसारिक आहम बरकंत 42 के बाद एकदम गिर जायेगे।
2. कड़कती चिङली, भूचाल, आग का लावा, पाप की एंजेंसी में बदी का स्वास्थी, हर मंदे काम में मोत का बहाना बड़ने वाली शक्ति ठगी, चोरी और ऐपारी का सरगना, आनन फानन में चोर मार करके नीते रंग कर देने वाली चुपी लहर का नामी फरिशता कभी उपा नहीं रहता।
3. निरु टेवे में सूर्य शुक्र मुश्तका हो एहु अमूर्मन मंदा प्रभाव देगा और जब सूर्य शनि मुश्तका हो और मंदे हो तो एहु नीच फल बलिक मंगल भी वद ही होगा।
4. कुण्डली में यदि केतु पहले धरे में और राहु बाद के धरे में हो तो राहु का प्रभाव मंदा और केतु शून्य बरबर होगा।
5. यदि एहु अपने शुश्रू ग्रहों [सूर्य, मंगल, शुक्र] का साथ ले कर केतु को देखे तो संतान नर और केतु की चीजें काम तया रितेदार बरबाद होंगे।
6. सूर्य की ट्रिप्ट या साथ से एहु का प्रभाव न तिर्फ देढ़ा होने वाले पर पर मंदा होगा बल्कि साथ तगत्ता भर में बरबाद होगा।
7. मंदे राहु के समय दक्षिण के द्वार का गाय न तिर्फ दूर होने करेगा, बल्कि उसका शक्तिशाली हाथी भी मामूली चीटी में मर जायेगा।

188

8. मंदे राहु के समय यानि जब बुधार सांवारिक शत्रु या अचानक, उत्तम पर उत्तम आये तो :
- |ग| चाँदी/पार्सी या उपाय मंदद दे जब मन अशांत हो, यानि मन की शांति भवाद हो रही हो ।
 - |ब| दात मगर लात रंग की दली हुई भंगी को प्रातः दें या खेद ही भंगी को पैदा अदि देहत करते रहें ।
 - |ग| मरीज के बनन के बहार जो {अनाज कनक जी} चलते थानी में वहां दें ।
 - |ष| जो यत्रि बहाने रख कर प्रातः जानवर्य या किती गर्तिको भाट दें ।
 - |च| एजदरबार या व्यापार के आगे दिन शगड़े और शनि के समय अपने जिस के बहार यजन के कच्चे कोपते दरिया में बहा देना उहायक होगा ।

राहु खाना नं. ।

[सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी, घनवानदा का प्रतीक मगर सूर्य नेत्र होने के बर ग्रहण होगा]

हुआ लेख अंधेद बादल जो धेर
कोई पूछे अंसु पसीना न तेह ।

हाथी बेठा तख्त पर तो, तख्त धरवहने लगा ।
सुंड राहु की शुप हो बना², केतु मिल्लन बन चलता हो ।
चलती गाड़ी में ऐड़ा अटका, माला मलने जो टूटी हो ।
घन दीलत और लड़के पोते, कायम रम्भी चाहे होता हो ।
शुप शुक हो जब तक उम्दा, ग्रहण कर न मंदा हो ।

सूर्य नेत्र जिस ही घर में¹, ग्रहण वहां आने लगा ।
टोला तीनों का जिस दम मिलता, नीर फरिशत मूंजता हो ।
होते सभी कुछ न कुछ होना, इन कहानी होती हो ।
राहु चमक जब अपनी देवे, कान कोई न आता हो ।
मंगल बेठा जब आ पर 12, राहु शून्य स्वयं होता हो ।

1. सिवाय सूर्य शुप नं. 3 बेठा होने का समय ।

2. खाना नं. 1 से 6 पर सूंड का प्रभाव यानि शुप का प्रभाव जैसा भी टेवे के अनुगार जन्म कुण्डली या वर्षफल के हिसाब हो रहा हो । खाना नं. 7 से 12 पर वाकी शहर का प्रभाव यानि केतु का प्रभाव जैसा भी टेवे के अनुगार जन्म कुण्डली या वर्षफल के हिसाब से ।

हस्तरेख्य :

सूर्य के बुर्ज पर राहु [जात] का निशान हो ।

नेक शाहत :

सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी दोलतमदी [पनी] की निशानी अपने शहर पर ओर कर्बलदाही के कानों में चाहे खर्च ज्यादा होगा, मगर शुभ होगा । कुण्डली में सूर्य बेठा होने याले घर में अंधेह ही होगा और टेवे में तूर्य ग्रहण [चन्द्र ग्रहण] के समय यानि यदि एक तरफ भाग्य हार देगा तो सूर्य की चमक दूसरी ओर हो जाएगी और ग्रहण हटते ही सूर्य की पहली शक्ति, सूर्य की पहली वाली शक्ति रिजक सब कुछ फिर से बना देगी ।



1. खाना नं. 1 से 6 पर हाथी की मूड़ [शुप जैसा भी जन्म कुण्डली या वर्षफल में हो] और खाना नं. 7-12 पर हाथी के जिसके केतु जैसा भी जन्म कुण्डली या वर्षफल में हो] का प्रभाव होता है ।
2. मिल्ली की जैर सूर्य रंग के कपड़े में रखी हुई उत्तम फल देगी या सूर्य से सम्बन्धित चीजों का दान शुभ और अशुभ दोनों हालत में सहायक होगा ।
3. एक अच्छा मालदार आदमी होगा मगर स्त्री की युहत निकम्मी तथा शक्की [जब शुक्र नं. 7 में] ।
4. राहु का प्रभाव नदारद न भता न दुग्य यानि राहु अब टेवे में शुप होगा मगर शुक्र न होगा [जब मंगल नं. 12 में हो] ।

एहू नं.। के समय
सूर्य रेत्र हो जिए
पर में

तो प्रभाव दोषा

- 1 राजदरबार में अपने दिमागी विचारों में बेबुनियाद बहम और मंदी शहरते खड़ी होंगी ।
- 2 धर्म वित्त, पुजा-पाठ से पृथा, सुखल और धर्म-स्थान दोनों मान की जगह उनका अपमान करने वाला ।
- 3 भाई बन्धुओं पर दुष्य मुरीबत खड़ी हो ।
- 4 माता खानदान और सुख जारी आपदन में ऐड़ा अटकता होगा ।
- 5 अब एहू नूर्य की सहायता करेगा, ओलाद अवश्य होंगी, बंशक हाथी की लाद से पर की ऐसायाही करे ।
- 6 लड़के लड़कियों के सम्बन्धियों की ओर से तोहमते मिले या बुध भला कहा जाये ।
- 7 अदालती काम और गृहस्थ कानों में हानि ।
- 8 निना कारण खर्च या आदानी की ऐटी कुत्ता खा या की बातें ।
- 9 न स्वयं ही धर्म से लापरवाही होंगी अपितु पूर्वजों के धर्म-मैदानों को नावलों की लाइब्रेरी बना देगा ।
- 10 सांघरिक जीवन में बेएतबारी आन बताय होगा ।
- 11 मुरिफ़ द्वारा न्यायपरिषदों की भी तक्कबर को बदबू से भर देगा ।
- 12 एहत को सांते समय और आएम समय कोई न कोई लानत खड़ी रही होनो निरका परिष्प्रम कुछ हो या न हो

मन्दी हालत :

जब एहू नं.। की विजली चमक रही हो नं.। से 6 पर हाथी की सूड का साया यानि बुध का प्रभाव ऐसा भी हो पड़ रहा होगा और खाना नं.7-12 पर हाथी के बाकी शहर का साय यानि केतु का प्रभाव जैसा हो, पड़ रहा होगा ।

1. जन्म समय सुख्त वर्षा आंदी, नाता-नाती जीर्णित, टेवे वाले के जट्टी पर के निकलते ही सामने पर का हाल मंदा या बहा बीरना होगा, संतान न होंगी । 40 साला आयु तक एहू की चीजे संबंधी कार्य सब मंदे या मंदा प्रभाव देंगे, वस्ते स्वयं [नं.1] से रम्भन्धित ।
2. एहू का कड़वा पुंआ - मृत्त हाथी का शहरते सूड चोरी करना तो कोतवाल का स्था डर के - एतकार का हाथी, चोर म बदर्नायत कोतवाल की तरह जो स्वयं चोरी आदि करता हो या करवा रहा हो, जित्त फेलाए हक्कमत की कुर्सी को तोड़ रहा ह
3. एहू की उम्र [11-21-42] पर पिता के लिए मंद माम [सांघरिक व्यर्य भेनत] छारी व धन हानि का बहाना होगा ।
4. तपर्दीती चाहे किरनी भार हो नगर तरक्की महदूद होंगी ।
5. सूर्य घेठे होने वाले पर के भाग्य को ग्रहण लगा होना [स्वयं नूर्य को नहीं और रिवाय सूर्य नं.3 के समय] और एजा क जगह एज्य रिंहासन पर घरटे जाने वाले हाथों घेठे होने की तरफ भाग्य का हाल होता । चलती चाड़ी में ऐड़ा अटकान उठावी आम यात होंगी । एम या नाम जपते-जपते अचानक माला टूट जाने की कहानी होंगी । चाहे धन परीयार सब कुरा हो फिर भी कुछ न होना इरकी तासीर होंगी [खाना नं.। की] और खासकर जब एहू की विजली चमक रही हो दिव्या पक्का पर नं.5] जो 42 साला आयु तक मंदे साय का सबूत देगी । मंदे समय कोई अंसू तक पौँझे में मदद न देगा ।
6. शादी समय शनि या एहू की चांगों का कोई वहम न होगा मगर शादी के बाद सुखल के यहां से छैने की चीज या एहू [विजली अदि का उपाय] निरु उन्य टेवे वाले के पास आये राजदरबार या सूर्य नेत्र होने वाले पर पर ग्रहण का समय ह जाये ।
7. धर्म ईमान की उण्ठायियां होंगी [नूर्य नं.9]
8. एहू का मंदा समय आम उमय दो साल और एक साल के वर्षफल के हिसाब से 2 मास और सारी आयु के या आयु के पहल , 42 माला हिस्से में 18 साल महादशा का समय हो सकता है । सूर्य ग्रहण या चन्द्र ग्रहण [सूर्य + एहू, चन्द्र + केतु] वे

190

'समय जो घरांचियां होगी वह अपनी स्वयं की ही पेटा की हुई होगी और जब कभी सूर्य बैठा होने वक्त घर पहते ही मंद हो तो मार्तार्यांतिपा। आवाय फिरते-फिरते अपने आप चालते रहने की रीढ़मारी का दुख होगा।
उपाय : चन्द्र का उपाय उदायता देगा।

एहू खाना नं. 2

। एजा गुरु के मातहत, लेख पंगूदा, बरणती बादल ।

उमर गुजरी मंदिर मुक्ति माल खाते।

मिले दिल कहां, फिर जो खेत चाटे।

लेख पंगूदा 2-8 घूने, मिट्ठी सोना दो मिलता हो। मूचाल माया जर चन्द्र रेके, एजा सुखी वह होता हो।
अम लम्ही गुजरन हो उम्दा, जगत यारी चाहे एजा¹ हो। बचत शून्य या हो गुना ॥, लेख मलक दे रंगा होगा।
लेख पुआ जब शनि हो मंदा, मदद² चन्द्र गुह करता हो। शनि, केतु बुध फोरन उम्दा, मंगल, शुक्र घर भरता हो।
घर्म मंदिर का पापी दुनियां, कम्भ बैठा खुद तरहता हो। जुलम जम्मना बेशक किरन्, केद एजा ना होता हो।
गुरु हालत पर माया चलती, पुआ निशानी होता हो। वर्षा मगर जर उस दिन होये, शनि रुद्धत कुरु उम्दा हो।

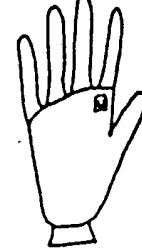
1. चाहे जगत का ही एजा हो।

2. चन्द्र [चांदी की ठोस गोली] दृ. [सोना, केरट, पीली चांदी]।

हस्त रेखा :

वृहस्पति के वर्ज नं. 2 पर राहू [जात] का निशान।

नेक हालत :

- 
- मध्यम दर्जा की जगह अब एहू की चाल आखिरी दर्जा [नेक या बुरी] होगी।
 - वृहस्पति दर्जा बेहद लम्हा मगर मालो-दोलत की अच्छी या बुरी हालत का फेरल वृहस्पति की हालत पर होगा। जिसकी निशानी एहू त्वयं ही अपनी चाँदी काम या सम्बन्धी एहू से सम्बन्धित रे दृष्टिशोचर होगा मगर धन की वर्षा उर दिन होगी जब शनि नं. । मैं आ जाये और वृहस्पति भी उत्तम हो।
 - यदि शनि के जाती त्वयभाव के असूल पर या शनि नं. । के हिसाब से उत्तम तो एहू का पुआ उत्तम बरसाती बादल या आये आने वाले अच्छे समय की निशानी होगी और शनि नं. । या गुरु के उत्तम होते ही धन की वर्षा होगी। शनि मंदा तो जहर की नेत्र या मंदा कड़वा पुआ लिसुसे दम और भी पुटने लगे।
 - यह पर एहू के लिए उसकी अपेक्षा नेत्रक या गुरु का घर है जिससे एजा समान है मगर चलेगा गुरु की आज्ञा अनुसार। पापी मंदिर में भी नहीं हुए हैं, जिस पर की कभी चोरी न हुई हो या वह पर जिससे चोर कोंचों दूर भागे वह भी एहू की चोरी और दिन दहाड़े शीता जोरी से चरी न होगा। एहू मंदिर के नं. 2 में बैठा हुआ हो और जरे चुहने को कुछ भी न मिले तो वह पुजारियों की आंखों के सामने और उनके पूजा करते-करते ही मंदिर की मूर्तियां बांद कर ले भागे। अर्थ यह कि एहू चोरी का त्वामी है और चोरी के बाकशात् [माल या नकद] पर आम होगे और वह भी जातक के सामने भी दिन दहाड़े। एहू का घर्म इतना ही होगा कि रात को कोई नुकसान न होगा। दिन के समय अपनी संमाली जंब से भी माल चला जा सकता है। टेये वाले के अपने अपना-आप चोर द्वाने की शर्त नहीं मगर उसके पीछे चार होगे। चांदी की ठोस गोली एहू की चांदी की शर्हरतों या ससुरात के भंडे हाल से बचाव करेगा।
 - ऐसा व्यक्ति एजा या अधिकारी होगा चाहे जंगल का ही हो या जंमल का एजा हो और अगर घर्म मंदिर का साथू भी हो जाये तो भी एयियों को याना देने की शक्ति रखता हो।

।३।

6. यह सुर्यी राजा के स्वभाव व हालत का स्थानी होगा ।
7. माय्य का तंत्र पूर्ण हो मिट्टी का सोना, सोने की मिट्टी होगी । उस उत्तम जायन हो ।
8. नेप द्वारा मैं शुरू का 25 साला समय आय धन के आणम का होगा ।
9. कंगाल हो या घर एंडफर भागे राज ठोड़े चाहे दरवार छोटे कुछ भी दो बनर वह किसी भी हालत में राजा की केद-भौग मगर खेत के जमा हुए माल से चोरी का दाग न धो सकेगा यानि जिर जगह और लोग अपनी मुरीबते की हालते लिए धन की खेत दे रहे होंगे वहाँ उसे चोरी हो ही जायेगा या कर लेगा ।
10. वृ. शुरू चन्द्र जगा शनि केतु एक के बाद दूसरा चाहे मंदा भी होता जाये तो भी ऐसे टेवे वालों को राहु की सबसे ऊँ सहायता होती जायेगी ।

मन्दी हालत :

1. राहु की मियाद 42-21-10^{1/2} यदि जद्दी मकान के उत्तर पश्चिम कोना [छत पर बैठकर पूर्व की तरफ उंह करने मकान कुण्डली खाना नं. 2 की जगह मैं पुंजा ऐटी पकाने के लिए नया मकान कायम होवे तो राहु न सिर्फ टेवे शते क बल्कि उसके समुहल दोर उसके अपने घर [घानदान] का धुंजा निकाल देंगा । जो टेवे बाते की 21 से 42 साल की आयु तब जोर से गंदी हालत पर प्रभाव देता जायेगा । माय्य का हाल ऊपर से नीचे धूमते पूर्णे की तरह [सोने से मिट्टी-मिट्टी से सोना] दोनों ढंग का हाल होगा । मंदे याक्यात और बनन चोरी आदि से धन ज्ञानि बहुत होती आम होती । [केदखान जेलखाना बेतवारी, हर तरह और हर ओर का काला समय जुह समय] जोर पर होगा ।
2. ऐसी हालत में चन्द्र [चांदी की ठेस गोती] या वृहस्पत की चाँचे सोना केवल पींती चींजे अपने ज्याहे पर या पास रखना सहायक होगा या अपने उत्तर पश्चिमी कोने, खाना नं. 2 मकान कुण्डली के हिंडाब से मकान में चन्द्र की चींचे रखे ।
3. ऐसा व्यक्ति चाहे गाहे आयु मुफ्त का माल खाते गुजार दे भनत स्वयं भिक्षा नहीं देना चाहेगा ।
4. माय्य धन पर मंदे भुचात को चन्द्र रोकेगा या माता से नेक उंचाय होने पर रव कुछ उत्तम होगा ।
5. माय्य की हालत मंदे जहर से भरे हुए धुंए जैसी होगी [शनि मंदा हो] ।
6. धर्म मंदिर खाना नं. 2 में बैठे हुए पापी [राहु, केतु, शनि] को तरह अपनी कर को भी तरसेगा यानि ऐसा व्यक्ति धर्म मंदिर में भी बैठकर पाप करने से पीछे नहीं रहेगा । अपनी आखरी अवस्था खबर कर लेगा । 25 साला आयु तक केतु जो राहु नं. 2 के उन्नय नं. 8 का हुआ करता है का फल उत्तम रहेगा मगर 26वें चाल में राहु केतु दोनों ही का फल मंदा जुह हो जायेगा ।

राहु खाना नं. 3

। आयु तक धन का स्थानी, र्खस, भोली बंदूक लिए पहरेदार ।

अकलमंद कभी तेह शत्रु बनेत्,
मुह यार अहमक से कमतर करेत् ।

सात खर दो पहले देता, स्वन्न सच्चा उरे आता है । जात नर्क त्रिलोकी करता, संतान उहित कभी न होता हो ।
आयु रद्दी और शर्त तरक्की, मातिक जागीरों का होता हो । मंद 12 कोई दूजा सर्वी, 34 केतु जुह¹ मंदा हो ।
शुप रवि घर ताजे सारों, बहन दुखी पतिहीन बेठी हो । साय नंगल से शाही उबारी, राजा महावत हाथी हो ।
साय देही न राहु मंदा, न ही ग्रहण रवि होता हो । स्त्री धन दोलत हर दम सुधिया, संतान अमीरी भोगता हो ।

1. मंगल खाना नं. 12 में ।

192



इस्तरेखा :

मंगल के दुर्जन नं. ३ पर राहू [जाल] का निशान।

नेक हालत :

१. ऊंचे आएमान की चोटी तक सहायता करने वाला अर्मार जापदादो याता होगा। यह अकेला ही होने की हालत में स्वयं आ और धन का याता। हाथ में बंदूक गोली लिए पक्षा निशाने जान और चौकन्ना पहरेदार है। ऐसा आदमी कभी किसी से ढेरा चाहे शेर के शिकाही हाथी की तरह जंगल और यीहाना ही क्यों न हो। ये पढ़क होकर सहायता करने वाला होगा यदि वह शत्रु भी हो जाये तो भी देवकूप मिश्र से कम ही नुए करने वाला चेल्क आखिरकार पर शुभ ही होगा।
२. किसी बात के होने से २ वर्ष पहले ही उसे उस का शान हो जायेगा और जो स्वप्न आयेगा वह सच्चा होगा विलोकी वे नई का जात करेगा। निःरंतान कभी न होगा। लम्बी आयु और तरक्की। जाहीरे की मालकीनत की शर्त जल्दी है स्व सुखिया, शत्रु का सर कटने के लिए कलम में तलवार से अधिक शक्ति होगी। सूर्य का प्रभाव बब दो गुण नेक होगा आखरी सनय जापदाद जल्द बाकी बची रहेगी और कर्जा कभी भी न छोड़ कर जाएगा। दुश्मन पर हाथी होगा।
३. शाही सवारी का हाथी या एजा की गिनती का आदमी होगा। जब मंगल नं. ३ हो।
४. यह अब शत्रु ग्रहों से मंदा न होगा और न ही मरेगा, शत्रु ग्रहों के प्रभाव में भी कोई खुराकी न होगी चेल्क सब और से सुखिया होगा। जब शत्रु सूर्य, मंगल शुक्र साथ या साथी।

राहू खाना नं. ४

| पर्मी भर धन से वाम वम |

भला कहते स्नान गंगा जो करता
वही तेह स्वयं अपने घर का ही बनता।

राहू खड़ा^१ न जब तक करते, पर्नी टेया वह होता हो। चन्द्र उत्तम का तत्त्व पे बैठा, हाथी माया में नहाता हो। माय चन्द्र के पर से लेता, नुप घरों में भरता हो। समुहल धन जर शादी बदलता, केतु समय तुरु फलता हो। लेख भला जो मामा घर वा. मिट्ठा उमर सब चन्द्र हो। साथ मिलेगा रवि मंगल^२ का, बैय कोई जब^३ मंदिर हो। १०वें ग्रह नर चन्द्र साथी, मदद शनि चाहे हल्की हो। साल गुजरते आयु चन्द्र की, वर्षा धन-दोलत होती हो।

१. स्वयं अपनी कोशिश से और सिर्फ शैकिया ही यह की चीजें कायम करना। उदाहरण - टट्टै खाना, यरकी, मट्टी बनाते बदलते रहना, कोयले की चोरियों के अम्मार जमा कर लेना, सिर्फ छते बदलना।
२. सूर्य या मंगल में से एक या दोनों।
३. मंदिर = खाना नं. २

इस्तरेखा :

चन्द्र के दुर्जन नं. ४ पर राहू [जाल] का निशान।

नेक हालत :

१. पर्नी होने की निशानी होगी।
२. पर्मी टेया चन्द्र के बेजान चाँजों का फल मध्यम चेल्क मंदा ही होगा। चन्द्र की रिस्ते विद्या तथा बुद्धि का साथ खर्च चाहे गनमर्जी करे भगर तम्हा और शुभ दर्चा होगा।



193

3. केतु और शनि दोनों में अब यहू के ग्राम हाँ में हाँ नहीं फिलायेंगे और उनका अपना-अपना फल होगा यहू स्वयं माता के चरणों में घिर शुभगंगा माता पिता के संबंध में पाप न करने की कसम उठाये हुए नेक और धर्मात्मा होगा जब तक अकेला ही या चन्द्र के ग्राम नं. 4 में हो। वरना अपनी शरारती नस्ता का सघृत देगा। ऐसे व्यक्ति का अपना घर ही का स्थान गंगा स्नान यात्रा ही अच्छा होगा।
4. माया पर हायी का सामा या हायी माया में नहाता। बहुत धनी। चन्द्र उच्च या नं.। थोर जैला चन्द्र होगा भेटा ही हायी की सूड में पार्नी भरा हुआ। पन की हालत। होर्णा घन चन्द्र भेटा होने वाले घर से लेगा यानि चन्द्र भेटा होने वाले पर की रांवित चीजें काम या संबंधी हैं वह घन भेदा करने को सहायक होगा और जहाँ चुप भेटा होगा उस घर में भर देगा। यानि चुप जिस घर में हो उससे संवित रिश्तेदार या काम या चीजें उससे लाभ उठायेंगे और स्वयं उसे सहायता देंगे।
5. जैसे यह घर से घन कमाकर पुरखों के पर भर दें। चन्द्र नं. 1, चुप नं.।
6. विषाह के दिन से सुहृत का घन बढ़ता होगा और टेये वाला शुक्र उत्तम हो। उसमें से अपना हिस्सा लेता होगा।
7. टेये वाले पर यहू का साया होगा, सूर्य और मंगल सहायक होगा। सूर्य या मंगल या दोनों नं. 2 में।
8. 12, 24, 48 साला आयु में या संतान के जन्म दिन से माता पिता के लिए शुभ और उत्तम होगा। जब केतु उत्तम हो।

मन्दी हालत :

24, 48 साला आयु तक चन्द्र के बेजान चीजें का फल मंदा होगा। मगर वह धर्मी और बुद्धि का स्वामी होगा। 45 साला आयु से यहू केतु दोनों ही का उत्तम फल होगा। मामा घर का उत्तम लेखा चन्द्र की आयु 6, 12, 24 तक बत्वाद हो चुका होगा। स्वयं धर्मी होगा मगर मंदी हालत में घन के फिझ गन आम होंगे, खत्कर जब स्वयं जानबूझ कर यहू खड़ा किया जाये। यहू नं. 4 वाला अगर मकान को छेड़े तो सिर्फ छत ही बदल कर न हट जाये बल्कि नीचे से ऊपर तक कुत इस छत से सञ्चन्यित, चार दीवारी और छत दोनों को ही बदले वरना यहू खड़ा गिना जायेगा और घन की कोई हानि हो जाएगी या हानि का बहाना हो जाएगा। मकान या छत की मरम्मत इस जात से बड़ी होगी यदि घिर्फ छत खण्ड हो गई हो तो नई छत में पुरानी छत का कुछ सामान मिलाकर दोबाह छत ढाल देये जिससे कि नई ढाली गई छत नई न गिनी जायेगी।

1. घन दोलत का प्रभाव इस्तका रहेगा। चन्द्र उत्तम न हो।
2. सब ग्रहों पर पुंजा पढ़ता होगा मगर मंगल समय स्वन्न की चन्द्र या नर ग्रह [सू. मं. चू.] नं. 10 या चन्द्र नं. 4 तरह गुजरता होगा और चन्द्र की आयु गुजरते ही घन की वर्षा होगी। सब नर्क घुत जाएंगे।

यहू खाना नं. 5

। शरणदी, संतान वर्क मध्य सूर्य को तारे।

युशी दिन त्योहार काफर जो बनता
निशानी लावलदी की भेद वह करता।

पहाड़ी स्त्री युतान न देखे, शनि मंदा जब भेटा हो। लावल्द जन्म्य जाझी गिनते, दिया बत्ती गुल करता हो।

194

यात्रा 21 पर पदला लड़ाना, आयु 42 दूजा हो । न. दृष्टि गिर दम आता, शगुर याय घत रहता हो ।
 याय चन्द्र रंग तटत पे रेखे, मवर एहु खुद करता हो । बढ़ी माता ना सादी होये, जिन्दी होये मच्छ रेखा हो ।
 रंग चन्द्र या मंगल चोये, चन्द्र पर 6 से 12 हो । गिनती ओलाद न लेख ही मंदे, आगे नस्त चाहे चंद्र हो ।

स्त्री पुरुष हर एक या दोनों की पहली शादी या ओलाद चाहे वृहस्पति [बुद्धि आमदन] सूरज [सेहत रुजटवार] माया घन का फल उत्तम, मगर संतान [नर संतान का न होना] का दिया बुझा हुआ और शनि का मंदा फल ही लेंगे ।

हस्त रेखा :

सूरज की तरफ़ी रेखा पर राहु [जात] का निशान ।



नेक हात्तर :

1. वृ. [पर्म, मर्यादा, मान, बुद्धि, आमदन] और माया घन का उत्तम, खुद तेज, उत्तम स्वास्थ्य और स्वयं सूर्य की शक्ति देने वाला जिससे दरबार से सम्बन्धित बरकत ही बरकत देवे । यदि माता जिन्दा तो उसके आखिरी दम तक संक्षेप और घन दोनों की बरकत होगी । मगर वृहस्पति, शनि मुश्तकों नं. 7 के बएवर बड़ी भारी मच्छ रेखा न होगी । यदि नर संतान जल्द और जल्दी होगी मगर यह जरूरी नहीं कि 9 लड़के 2 बहने और घन का भी साय देसी या हालत नादश्वाही होगी । बहरहात परिवार तथा माया की ओर से सुधिया ही होगा ।

2. अविदि [पूजा करने याता] सूफी भौर ब्रह्मशनासु [पहचानने याता] होय दीलत पर हाथी का साय चन्द्र के साय से चाहे ओलाद [नर या मादा] के विष्ण जरूरी होंगे । मगर संतान की बाकी सब याते गिनकर संतान के लिए कोई मंदा न होगी । बल्कि एहु अब चन्द्र और सूरज की स्वयं सहायता करेगा । माता अमूमन लम्बे समय तक टेवे वाले का साय न देगी । छोटी उम्र में गुजर जावे या वैसे ही जुदा हो जावे मगर माता जीवित या साय होने पर मच्छ रेखा [माली] होगी ।

चन्द्र नं. 5, सूरज नं. 1-5-11

3. ओलाद के योग चाहे लाख मंदे हो तोकिन अब गिनती ओलाद और हर तरफ़ से आयु और नसीब की बरकत होगी । उसके भाई स्वयं समेत योगी एजा के समान और वह पांच बेटों का साप होगा मगर उससे अधिक ओलाद गिरे कदर बढ़ेगी भाई ओलाद से पटते ही होगे ।

सूरज, चन्द्र, मंगल नं. 4-6 या शनि मंगल नं. 5

मन्दी हात्तर :

- अचानक विजली गिरने पर जान और बेजान का क्या फर्क होगा की तरह ऐसे प्राणी की सेहत, बीमारी पर फिजूल खर्च आम होगा ।
- ओलाद के त्योहार या खुशी के दिन न मनाने वाले काफिर को ओलाद देखनों ही कब नज़ार होगी बल्कि उसकी ओलाद नर संतान का दिया बुझा हुआ होगा । साता नं. 5 में शनि ओलाद को माने वाला सांप और साता नं. 9 का शनि ओलाद के जन्म के रहते में एक बड़ी भारी पहाड़ बन गया । शनि की इन दो हालतों के मुकाबले पर एहु नं. 5 नर संतान के सम्बन्ध में एक ऐसी कड़कती हुई विजली या जमीन के अन्दर भूचाल पैदा करने वाला चलता हुआ लावा होगा जो संतान को माता के पेट में आते ही या गर्भ ठहरते ही अपने जहरिते असर से समाप्त कर दियायेगा । यही एहु खाना नं. 9 के संतान के संबन्ध में सांप की जहरीली सिरी [ऐर का हिस्सा जब सांप का जाकी शरीर कट चुका हो] भागती हुई समित होगी जो कि पैदाशुदा बच्चों को उनके भागने वी तापत पा जाने के दिन तक मारने से गुरें न करेंगी । या एहु नं. 5 में बच्चे माता के पेट में दी मर गये तो राहु नं. 9 के सुग्रीव खेलना यूदना गीघते ही उस सहार से यूच करते गये हों [दूसरे शब्दों में नर संतान देती

‘ऐ पैदा दो या विलग्न ही। न पैदा दो या माता के पेट में ही गर्भ दोती हो॥ अगर पैदा हो ही जाए तो 12 घात तक संत वीर रोहत मंदी ही होने फिर भी बाच पोते का झगड़ा होगा। बाबा ऐसे पोता न खेलना अमर टेवे वाले का पहला बड़ उग्री॥ 21 घात आयु में पैदा दो तो दूर्घट 42 घात की आयु में होगा जिहाड़ी पदाइश पर टेवे वाले का बाप या सुख चलता बनेगा। यदी हालत राहु की होती में संतान पैदा होने या संतान की आयु होने पर हो सकती है। ऐसे टेवे में छाओलाद पर ना हो तो हो सकता है कि राहु नं.5 का बुध असर टेवे वाले के पोते पर हो जाये।

3. हर हालत में न लिर्क राहु की कड़कती विजली और शहरती हाथी का फल मंदा होगा चर्लिक शनि का जहर का बुध असर दिन प्रति दिन बढ़ता है जायेगा। अमून निस्तंत्रान होगा वरना पहली मर्द/स्त्री नर संतान न देखे चर्लिक मर्द तथा स्त्री के जोड़ी पहली चाहे दूर्घट [जब पहली स्त्री या मर्द तन्दील ही हो जाये नर संतान के देखने या अपने लड़कों के सुख के तरसती ही होगी]।
4. 12 साल आयु तक संतान की चेहत और बाप [टेवे वाले] बाबे वृहस्पति साय या सायो या राहु बाबत दृष्टि आदि वृहस्पति से आपसी झगड़ा।
5. एक ही स्त्री से दो बार शादी की रस्म या रियाज दो दफा कर लेने से राहु का जहर दूर होगा।
6. जद्दी मकान में दायिते के समय सबरे पहले दहलाज के नीचे तमाम की तमाम में। चांदी का पता देवे या शुक्र की धीने का मंदा असर औलाद पर ना होगा।

Free by Astrostudents

राहु खाना नं. 6

| फँसी काटने वाला सहायक हाथी |

पिरे तुमरे जब खून भाई का कत्तु,
नहल नन्द तेरी का बढ़ता ही खत्तु।

असर वही जो शनि नं. 12 के, फँसी तगा खुद छूटता हो। पहाड़ जँचे जा शत्रु मारे, ताकत दिमानी छंचा हो।
युध मंगत कोई 12 मंदा, आर जली! सुर होता हो। चीमारी जहनत का पता न चलता, माय घृटी पर सुट्टा हो।
शगुन शुभ कुत्ता काला, छीक उत्त न उम्दा हो। गोली सिक्का या काला शीशा, अरर उत्तम देता हो।

1. सुखात का भाग्य कोसोकनाह होगा।

हस्त रेखा :

हथेली की बड़ी आयत खाना नं. 6 में राहु का निशान।

नेक हालत :

1. जाती आसाइश और पोशिज्ज [चीन्द्र्य अनुभूति, कपड़ा] पर उम्दा और नंक खर्च होगा।
2. नं. 6 में अकेला बेठा हुआ विजली की ताकत का स्वानी और शहरांर हाथी की तरह इसे में फँसी की रसी तसी हुई को मी काट देने वाला हवा की तरह सहायक होंगा, नामी चोर रजा से क्या ढेरेगा। नामवर चोरों को रजा देने वाला सदा ऐसे प्राणी का स्वयं सहायक/रक्षक होंगा।
3. राहु अब मंदी शहरत से रदा दूर रहेगा। दिमागी ताकत उत्तम देगा।



196

4. शर्न नं. 2 का दिया हुआ उत्तम असर साथ होगा जिसी ताकत वाले पठाइ की ऊर्जा पर वेठे हुए शवु को तुरंत मार देगा ।
5. एदा तरकी की शर्तें हैं बार-बार तबदीली की शर्त न होगी ।
6. दिनर्धा खाना नं. 14 [शनि देव] तपकर और घुटपण्डि का भास्तिन होगा ।
7. पूर्ण याता कुत्ता एदा उच्च शगुन होगा ।
8. सिस्के की गोली या काला शीशा सहायक होगा ।

मन्दी इस्तर :

1. अपर्णी ही पोल को मारने वाला मंदा हाथी हर तरफ मंदा कीचड़ हाँ फलापेगा ।
2. नामी चोर सजा से क्या डरे ।
3. तेरे हाथों से भाई के खून का गिर हुआ कतह तेरी नसल ही मार देगा ।
4. आगे से उल्ट छीक मंदे असर की पहली निशानी होगी ।
5. बीमारी का घर मगर अब उछका कारण मातृम न हो सके । बुध या केतु मन्दा ।
पन दीलत लुटा ओर पटता जाये ।
6. जब नड़े भाई या बहन से लड़े चूहे की आग जुझे [टेवे वाले मंगल नं. 12 का खाना व ऐटी बरबाद हो जाये ।

7. पर्व ईशान नेकी तया मान के लिए यह स्थायं मंदा । सुखल की किस्त मानिन्दे कोसेकजाह मगर अमूलन मंदी हालत ही होगी । पर्व-स्थान में वेठे हुए होने के बावजूद सूखे की मर्ने से जब न चिर्फ खाना नं. 6 का [जहाँ कि यह उच्च माता है] प्रभाव मंदा होगा वर्लिक खाना नं. 2 और खाना नं. 7 भी मंदा ही प्रभाव देंगे ।

Free by Astrostudents

यह खाना नं. 7

[चंद्रात्, लक्ष्मी का पुंजा निकालने वाला ।

फर्क बीवी बेटी या हो नजर माता,
बदेगा दिमागी ख्याली खुशी का ।

- बुध¹ शुक्र का तहजू उल्टे, स्त्री² मंद परिवार³ । पन का वह राखा होये, जाये दोत्र याएं ।
शनिदेव उस रक्षा करेंगे, शशु मरें दरबाद । मच्छ रेखा फल उत्तम देवे, बुध शुक्र 2-11.
एज संरंप परवी ऊंची, पन स्त्री ना खुशी हो । वृक्ष तले हो जिस जा नेठा, उखड़ा वही जड़ जलग हो ।
केतु कुत्ता ही सबसे मंदा, ऐपाश जनाही होता हो । काम [पिशा] यह ही हो जब करत्य, खतह उमर रक बढ़ता हो ।
तब्द शुक्र से मिट्टी उड़ती, जलती सेहत जर माया हो । उलट सभी जब हालत होती, अमर होता सबसे उत्तम हो ।

1. खुद तुला रुशि के दोनों पलड़े [बनावटी सूर्य] गृहस्त्री हालत ।
2. स्त्री के टेवे में तत्ताक, मंदी हालत आदि होनी । मर्द के टेवे में स्त्री की आयु बरबाद या कई बार शादी या स्त्री के मां-बाप का कुनवा बरबाद, जब शादी 21 वाल आयु में हो ।
3. बुध शनि, केतु कोई नं. 11 या उत्तरायं यार मित्र ।

इस्तर रेखा :

- शुक्र या बुध के उर्ज पर राहू का निशान ।



नेम हालत :

1. स्वयं धर्ती मगर द्वी तथा पन का गृहस्थी युध [शुक्र का प्रभाव] मंदा होगा । सुयुएल तथा स्त्री चाहे मर्द हो मगर सूर्य कभी मंदा ना होगा और उज्ज्वलमार ऊँची पदवी पर होगा । उसे किसी के आगे गरीबों के कारप हाय नहीं फैलाना पड़ेगा ।
2. युप शनि हर तरह से रहायता देंगे और राजदरबार के सभी शक्तिशाली शत्रुओं को मार देंगे ।
3. मच्छ रेखा [माली] पन का पूर्ण उत्तम फल होगा । युप शुक्र 2-11

मन्दी हालत :

युप शुक्र का तण्जू उलटे, स्त्री मंद पर्वायां
दोलत का वह रखा होये, स्थावे दोस्त याएं ।

1. धर्ती मगर चांडल राहू जो हर तरफ मंदा धुआ कर दे ।
2. और मैं 21 चाला उम से पहले या 21वें साल शादी व्यर्य होगी याने या तो वह खुद गुजर जायेगी या तलाक हो चरे या दोनों में से कोई एक या दोनों ही घर-बार रे भागे हुए और हर तरह से अपनी बदचतनी तरफ मंदा गृहस्थ । ऐसा ऐसाज जानाही [जनार्नाजाज] कि उसे गदे इश्क में अपनी पत्नी/पति और बेटी/बेटे मर्द का टेवा/ओरत का टेवा में कोई फर्क नहीं होगा और जलती हुई लक्ष्मी होगी । हर तरफ नंदी हालत की नींव का कारप केवल अपने ही फर्जी विचार होगे । व्यापार, सट्टा का फल मंदा ही होगा । टेवे वाले को खुब नितने की जाय खुद ओरत दोलत भी मर्द होंगे । मिथ उसे खाते जाएंगे । प्रगड़े घर में भी बेबुनेयाद, औरतों की लानत और मौत बीमारी पर व्यर्य लम्बे खर्च, पुल्प की तलाक तक नींवत और गृहस्थ की हर तरफ से मंदी हालत होगी । ओरत के टेवे में स्त्री की कई बार शादी या स्त्री के माता-पिता बरबाद होंगे । अपर टेवे वाले की [चाहे मर्द चाहे स्त्री] 21 साल रे पहले या 21वें साल में शादी हो जाये तो यह मंदी हालत से शुक्र व युप दोनों ग्रह [वनावटी सूर्य] गृहस्थी हालत की तण्जू जल्टी या शुक्र युप के सब काम, चीजें, रिस्तेदार और लक्ष्मी का तो पुंजा निकाल देगा और कभी माफ ना करेगा । उंगवत का माय ऐसा व्यक्ति मिथ वृष के नीचे थे वही बरबाद हो । केनु का प्रभाव सबसे मंदा होगा ।
3. अगर ऐशा काम [भिजती, जेलबान, शुलिच] का हो तो आपु तक शान्ति ।
4. शादी के बक्त लड़की की तरफ से [जब यह चाहे मर्द चाहे ओरत के खाना नं. 7 का हो] खालिच चांदी की ढली ऐन उस बक्त जब लड़की का संकल्प हो उसी दान करने वाले के हाथों से लड़की को दान किया जाने के बाद ही, लड़की दान किये जाने की तरह दान करवा कर लड़की के अपने पास रखने के लिए दी जाये तो हर तरह से गृहस्थ सुख में मरद होगी बरना मर्द और ओरत हर दो की जुदाई और तलाक और मंदी बरबादी का जीवन होगा । यह चांदी की ढली खुद-ब-खुद समय के उत्तर-चालाव से न कभी युप हो न कर्मी चोरी होगी । ध्यान रिक्क यह रहे कि खुद उसे बेचकर न खाएं । बदनामी की मंदी मिट्टी उड़ती, ओरत की मंदी सेहत और पन बरबाद के समय पर मैं यही चांदी की ईंट रहायक और चौकीदार होगी । शनि का उपाय : नारियल चलते पानी में बहाना सहायक होगा । कुत्ते से सम्बन्ध बरबादी का कारप होगी ।
5. यह नं. 7 जब वर्पंफल के हिसाब से आये [चाहे जन्म कुण्डली के हिसाब हां] तो घर में खालिच चांदी की ईंट और इसके बलावा एक वर्तन में दरिद्रा का पानी डालकर उसमें खालिच चांदी का टुकड़ा डालकर टांका लगायकर मुंह वर्तन का बंद करके पर में रखे । जब तक यह वर्तन पर मैं रहे यह के मर्द असर से बचाव होता रहेगा । पानी देखते जाएं जब खुश होता नजर आये तो उसमें पहले ही उसमें और पानी निलाकर गुंह बंद करवा दिया करें ।
6. अगर शादी 21 याल उम में पहले हो चुकी हो तो यह नं. 7 याल [चाहे स्त्री भी चाहे पुल्प] चांदी के वर्तन नितास या चांदी या कोई गोल वर्तन [कटोरी आदि] में गंगाजल या गिरी भी दरवा का पानी डालकर उसमें घालिच चांदी का एक और

198

दुक्ष डालकर | यजन की शर्त नहीं चाहे कितना छोटा चाहे कितना बड़ा हो। धर्म स्थान में देवे | रख आये। और ऐसा ही थेर वर्तन | मंगल या किसी नदी का पानी चलता रहने याता या कुदरती पानी | येरेज, ओते या बर्फ का पानी। पर उसमें खालिय चांदी का दुक्ष डालकर औरत अपने पास रखे तो हर प्रकार से भूद द होती।

7. युप शनि केतु में से जो कोई नं. 11 में हो उसी ग्रह से संबंधित युप शनि केतु नं. 11। धीरे काम या रितेदार टेपे याते को खाएं या बरवाद करें।

8. दूसरी नर ओता 42 साल के बाद नर्सीय होती। मंगल शनि मुश्तरका या मंगल शनि अकेले-अकेले नं. 5

एहू साना नं. 8

[नकाह कूच मौत का मालिक, कढ़वे धुएं का सदृश]

दुकुम मौत मालिक न फरियाद जोई
सिर्फ दादा अपनी, न दिलदार कोई।

चाल चन्द्र और हुक्म शनि का, असर राहू दो मिलता हो। नेक मंगल जन 12 नेठा, यहू मंदा नहीं होता हो। बाकी घरे बद मंगल नहीं, मौत नग़दा बजता हो। चरदी¹ कच्ची छत² अपनी उड़ती, लेख नर्सीय मंदा हो। 28 साल यब³ मंगल आये, शनि⁴ फेह खुद पाता हो। सोया नर्सीय पकड़ जाये, उज़दा खजाना भरता हो।

1. मंगल बद सूरज का दुष्मन होगा।
2. यहू अब शनि के खिलाफ मंदा होगा।
3. मंगल नेक हो या नं. 1-8 में आ जाये।
4. शनि नेक हो या नं. 8 में आ जाये।

हस्त रेखा :

Free by Astrostudent

मंगल बद के पर्वत पर यहू का निशान।



नेक हात्त :

1. यहा तया फकीर को एक न एक दिन बहवर कर देगा या उसका भाग्य कोरेक्जाह की तरह रंगबिरंगा होगा जिसका प्रभाव चलते पंगुड़ की तरह नीचे-ऊपर शक्की ही होगा।
2. अब यहू का भेद चौकोर चांदी का दुक्ष 40/43 दिन अपने पास रखने से खुलेगा। चाल चन्द्र की और हुक्म शनि का और यहू नं. 2 का दिया हुआ असर साय होगा।
3. यहू अब गंदा ना होगा।
4. 28 साल आयु मंगल नेक हो या नं. 1-8 या जावे तो सोया नर्सीय जगा दे और उज़दा खजाना भर दे।

नेक मंगल नं. 12

मंगल नेक या नं. 1-8 या शनि नेक या नं. 8 में आ जावे

मर्दी हात्त :

1. बैईमानी से कमाया हुआ पेसा उसकी अपनी कमाई हुई को 8 गुना कम कर देगा। कड़वा धुंगा नेक कुड़म्ब से होता हुआ भी काफिरों की करतूतों से बदनाम होगा। अपने व्यक्तिगत विचारों के मंदे नर्तने होंगे। रंग-बिरंगे भाग्य का फैसला रहने पर होगा। जब से यह बदली जाये तो चन्द्र फौल यहू के खिलाफ चलेगा और यहू शनि के खिलाफ चलेगा चाहे टेवे में कितना ही उच्च नेठा हो यहू का फल बहव ही होगा। अदालती झाँड़ और उनमें लम्बे खर्च जिस तरह मौत के आये कोई चाहे नहीं उसी तरह मंदे यस्त में कोई मददगार ना हो। कोई फरियाद ना सुने। हर हातत में अपने पास ही होता देने याता और दिलदार होगा। यहू अपने असर में लेटा हुआ धूनी हाथी मौत का हुक्मनामा साय लिए हुए कड़वा धुंगा और

199

- युर ही जोत के लिए गरजारी का नगाड़ा बजा रहा होगा। अचानक दुर्घटना, जहमत, वंभारी और इन हाँनि करेना स्थानकर जब यहू पर तिर और केतु को दुम बिनकर शनि बतोर सांप खाया हो भैठे और चन्द्र के पहर है। ऐसी हाँनि में पूर्णता हुई ग्रह जल वंगे खोना और मनुष्य शरीर भिट्ठी में भिसे हुए की तरह हात छोया।
2. पर का सबसे बड़ा आदर्शी अगर पूर्ण यहू | काला, काना, निस्यंतान। हाथी कद और सांपी के रूप का हो तो यहू का सारे पर उप्र प्रभाव न दांगा।
 3. दक्षिण का दरवाजा, उत्तर व फर्श दाखिले में अंदर जाते वक्त नीचा दर नीचा होता जाये। सिर्फ इस बदली जाये। मकान साथ भड़भूजे की भट्टी | जिरमे तांबे का ऐसा आलना शुभ होगा। सब मन्दे प्रभाव देंगे।
 4. जब कुण्ठली में नं. 8 का यहू वर्पफल के हिसाब से नं. 8 में आ जाए तो उरका हाथी कब्जे में गिरकर भर जावे यानि बड़ तुकसान हो। उपाय : | यहू नं. 8 में आने वाले साल जन्म दिन के बाद जब 8वां प्रत्यु गुरु हो तो बादाम हर रोज भंग में लेजा कर आधे वापिस लेते आएं और अपने आने वाले जन्म दिन तक उपाय जारी रखें तो हाथी के तुजरते के लिए पुत तो हो जायेगा।
 5. उपाय : खोटे रिक्के | उपर शुदा। जिनकी बजार में कुछ कीमत ना हो और जमीन में टकहने पर कोई आवश्यक ना हो सिक्का | दरिया में ढालते जाना शुभ होगे। तकरीबन 8 रिक्के या हर ऐसे एक रिक्का 43 दिन तक ढालना या नारियल किलो रिक्के के 8 दुकड़े करके दरिया में ढाल देने चाहिए।
 6. मौत का नगाड़ा बजता होगा। खालकर जब 21 साल उप्र में यहू के शुभ ग्रह से सम्बन्धित काम किये जाएं। शुक्र 21 साल में जब मंगल वद हो | मंगल या वुध दोनों में। किसी भी पर में सिवाय मंगल नं. 12 के।
 7. शनि और यहू की ज्यू | 9 साला, 11 साला। पर चचा की माली शनि नं. 2 या 3 व औलाद जो जड़ कटती होगी खालकर जब चचा शनि से सम्बन्धित सामान खरीदे। शनि नं. 6 के समय यहू नं. 8 को किसी के नोत के तुम्भनामा की तकनील | पूर्ति। और जिसने जहां मरना है वहां से जाकर भार देने का पूर्ण हक्क होगा और कमी रहने पर शनि द्वारा जन बनकर नोत का तुम्भ देने के लिए साथ खड़ा होगा।

यहू साला नं. 9

परतो का सम्पूर्ण बद्ध इकीम् इस्टर् भर देशान्।

पर्म तेरी दोलक या बच्चों की जाते,
बच्ची कहाँ तक जो हाथी से बजती।

पर्म जला जब यहू भट्टी, चुप गुरु 5-11 हो।

ग्रह चोये का तप्त धे। आतं, यहू मंदा सुद होता है।

झगड़े अदालती दून से करता, पक्की निरन्तरता होती है।

शनि टेवे जब 5वें बैठा, तुम्भ शनि से पाता हो।

उपाय केतु या पालन कुत्ता, भाव रेवा चाहे कितना हो।

सरसाम हटाता फूँक धे अपनी, ठीक पानत को करता हो।

तप्त भर जब खाली होवे, चेहरे तुम्भी मंदा हो।

संतान हालत स्वयं ऐंगं करता, पैदा होता और मरता हो।

योग संतान का रेसा मंदा, न हो मरे न पैदा हो।

बार कई हो कुत्ता मरता, आयु औलाद की बड़शता हो।

1. 4-16-28-40-52-64-76-88-100-114 साला आयु।

हस्त रेखा :

किस्मत रेखा की जहू | २. का वर्ज नं. 9। पर यहू का निशान।



200

नेक हस्तत :

पागलो के इताज के लिए नमरे उत्तम । जो सरसाम की वृ. नं. 5-11
बीमारी को तो फूक मार कर ही ठाक करे देगा मगर लालच के मारे
दईमान गिरुका धर्म ईमान भट्टी में जलता होगा वृ. अब चुप होगा
मगर गुन न होगा ।

मन्दी हस्तत :

1. फक्की आयु के फजूल खर्च जो लूटेरे बन कर सा जाये ।
2. नर ओलाद माता के पेट में या पेदा होते ही मरती जाये । बाप दादा सुखुल तबाह भाई तंव करेने सेंकन जब अपने खून
के रुचियों से अदालती झगड़े करे तो पूरी पक्की निरंतानता निलेगी ।
3. यह अब 9 गुण मंदी ताकत का मालिक होगा जो चन्द्र को भी मध्यम कर देगा । खाना नं. 5 संतान, खाना नं. 11 आमदन
कराई पर भी यह का मंदा ही असर होगा ।
4. जन्म कुण्डली के खाना नं. 4 के ग्रह 6, 16, 28, 40, 52, 64, 76, 80, 100, 114 सात की आयु में जब कभी भी खाना
नं. 1 में आये यह का मंदा प्रभाव उन शुहों की चीजें, काम या रिस्तेदार खाना नं. 9 से संरक्षित पर होगा ऐसा प्राप्ती धर्म के
अद्वृत और कार्येवार को भट्टी में डालकर उड़ता हुआ धुंआ नना देगा । क्योंकि धर्म की देतक को यह का हाथी जब अपनी
सूँड से बजा रहा हो तो कितने दिन बजेगी । इसके उल्ट किंतु भी तरह की केद व संपन वह फँस्ट न करेगा चालिगों से
संक्षिप्त झगड़े रंतान पर बीमारी बलायें बद मंदी छत, भट्टी, टूटोखाना, घर की दहलीज के नीचे से बंदा पानी गुजरना, काला
कुत्ता गुम होना, विल्सी का रेना, काले रिस्तेदार की भोत, नारून झड़ना यह के मंदे झर की निशानी होगी । केतु [कुत्ता
या दुनियायी तीन कुत्ते सुसुर के पर जमाई बहन के घर भाई नानके घर दोहता] का पूरी नेक नीपत से पालना सहायक होगा
चाहे कुत्ता कई बार ॥। दफा तक ॥ परे मगर संतान की आयु बढ़ता होगा । खानदान में पुश्तरका रहना या खुद मुख्तियार
न होना, सुखुल से ताल्लुक न तोड़ना मंगल बद की सलाह से भचना, वृ. कायम रखना [चोटी, सोना] उत्तम व मुख्तियार फल
देगा ।
5. चेहत और मान मंदी होगी और बड़ों की ओर से परेशानी निलेगी [जब खाना नं. 1 खाली हो] ।
6. नर चंतान न पेदा हो और न ही मेरे ओलाद का योष हर तरफ से मंदा होगा । शनि नं. 5 का दिया हुआ प्रश्नाव मंदा होगा
[जब शनि नं. 5 हो] ।

यह खाना नं. 10

[सांप की भूमि (सहायक), सांप की सिरी (मध्यमक)]

करे दोस्ती जब तु हाथी या उजा ।

बड़ा रखना दरवाजा अच्छा ही होगा ।



दुगना यह हो नेक शनि से, मंदे नजर आयु घटता हो । टेवे में मंगल बद आ जब थे, तो द हाथी घर भरता हो ।
गर टेवा कोई अंघा होवे, हाथी अंघा खुद होता हो । घर डरे घर अपना मारे, मंदा नंग सिर काला हो ।
चन्द्र अकेला चोये रेता, खाली धुंआ आ होता हो । दिमाग फटे या हो चिर फटता, बिजली यह जर कड़कता हो ।
खाली मंदिर से यह खोता, तेज स्वभाव मंदा हो । शिव! ग्रह पर कीचड़ देता, उपाय मंत्र का उत्तम हो ।

1. युप शनि केतु ।

हस्त रेखा :

शनि के दुर्व व्याप्ति की जड़ में राहु का निशान ।

201

नेक हालत :

पिता के लिए शुभ और सांप भी अच्छे स्वभाव याता । हंर जगद मान पाने याता । भगव फिर भी शिष्म हाथी से चौचड़ या भय लगा रहेगा यानि राहु का अच्छा या बुरा प्रभाव शक्ति ही होता है जो शनि के इशारे पर चतेजा यानि जैसा शनि देखा रहा ।

2. धनी होने की निशानी सदायक तो सांप की मणि का काम देये जो सांप [शनि] के जहर को भी चूस जावे ।
3. यहू घन के लिए 2 गुप्त शुभ होगा शेरों का नामी शिकारी जब शनि उत्तम हो ।
हाथी होगा जिसे के प्रभाव की गति भी दुगनी तेज और शुभ होगी व्यापारी कमाल का आपु सम्भवी ।

मन्दी हालत :

1. चाहे बाप के लिए अच्छा भगव माता के लिए [चन्द्र के असर में] मंदा ही होगा और खुद अपनी सेहत भी शक्ति होगी । जैसा भी हो राहु अब शक्ति प्रभाव का होगा जिसका फेरला शनि की हालत पर होगा । खर्च चाहे लम्बा भगव अच्छा यज्ञ शनि नेक हो बरना ढोने को लोहा और उसकी भी अफीम बनाकर खा जाने के स्वभाव का स्वामी होगा । जो जट्ठी जपदाद के बोयले कर दे ।
2. सांप की सिरी [रिफ्क कटा हुआ सिर] जो मारने के लिए सांप से भी आधेक भयानक और रुठिन ।
3. तंगिली और यंजूरी उग्री दूषरे से भयायत चंदा करने का बहाना बनेगी ।
4. यहू का मंदा असर रिफ्क घन दोलत पर होगा ।
5. दृष्टि और आपु का बताय ही होगा । शनि मंदा ।
6. हाथी की मंदी लीद रे घर भर जाये मंदी हालत ।
7. निर्धनी और कप्ट पर कप्ट आये मंगल बद हो ।
8. यहू का अंदा हाथी होगा जो गैरों रे डर कर अपनी ही फोज मारेगा अंदा टेवा याने लाना नं. 10 में कर्द्द ऐसा यह जो आप्स में दुश्मन हो । सूर्य शुक्र मंगल वादि ।
9. यहू का मंदा असर टेये वाले पर न होगा । मंगल नेक ।
10. छाली दिनांकी धुंआ परेशानी का कारण, दिमाप फटे या सिर चन्द्र नं. 4
- कटे या नजर गुम हो जाये और घन दोलत पर बिजली की तरह मंदा प्रभाव होगा मंगल का उपाय भद्रदगार होगा ।
11. काला नंगा सिर रखना घन हानि की निशानी होगा । जब मंगल का राय न हो ।

यहू खन्ना नं. ॥

[पिता को बोती मारे या भूह न देखे प्लैर या उह चाती खेती से मार देवे ।

बड़े नाम बदनाम जब सीना जोरी
कसम याकर बचेगे सब माल चोरी ।

जन्म दुनिया नेटा होते, याप यहा रहता नहीं । राहु टेये चमक देवे¹ न्.² यहा होता नहीं ।
दृ. भागा पांची भागे, भागता लंगार शनि है । बेठा 5, तीजे, योगी अलयार है ।

एक तीने पापी थे, यहू बदता आप से ।

उमर पिता सुख याग उपासा, न ही दोलत घन मिलता था । औलाद केतु दरवेश हो मंदा, वक्त बुर्ज तक उम्दा हो ।
घर्म भैंदर और दान हमेशा चलती हवा या पार्ना हो ।

घन न मांगे मां से अपनी, ना ही लेगा नाप से ।

बंद पद्म घन दोलत सड़ता, जनिय भरीज प्राप्ती हो ।

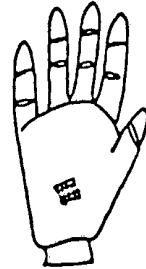
1. खाना नं. 3 के ग्रह का प्रभाव होगा । [हात खाना नं. 5 विजली पढ़ती देखे] ।

2. पुर्ण टेवे में यदि वृहस्पत से अब नाप नाया दादा तो स्त्री के टेवे में उसका सबुर होगा जिसका अर्थ भी यही है कि स्त्री का सबुर टेवे वाले का नाप ही हुआ करता है ।

3. वृहस्पत की आयु । [6 साल] या नाप के जीवन तक ।

हस्त रेखा :

हथेली के खाना नं. 11 में यहू का निशान ।



नेक हात तर :

1. चाहे पिता नहीं रहा करता मगर पिता की आयु तक यहू का प्रभाव घन के लिए अच्छा ही रहेगा । पिता [वृहस्पत] के बाद वृहस्पत [लोना, पीली चीजें] कायम रखना या रहना सहायक बल्कि आवश्यक होगा ।

2. योनी अलंकार हो । यहू अब पिता पर भाषी न होगा । शनि नं. 3-5

3. स्वयं अपनी शक्ति और भाग्य बदलता ही जायेगा । घन अपने माता-पिता से भी न मांगेगा, न पोखा देगा, स्वयं की शक्ति से अनार बनेगा ।

मन्दी तरह :

1. फि तरह मंगल बद वाला ऐसे धरने में जन्म लेगा जहाँ कि उसके जन्म के पहले मासिक की तरफ से हर तरह की नजरें इनपत और बरकत होंगी जिसे वो मंगल बद वाला बरबाद कर सके । उसी तरह यहू नं. 11 वाला भी ऐसे समय जन्म लेगा जबकि उसके माता-पिता खूब ऐरव्य की जिन्दगी बंदर कर रहे हों । उसके जन्म पर बन्द पद्म घन दोलत बरबाद फिजूल खर्च, आग सांप की घटनाएं नाहक जुमाने और मरीजों की बीमारियों पर खर्च पहले, अपने से बद्ध पहला अधिकारी से विनाकारण ही झगड़ा और नाहजनी से तुकसान हो ।

2. अब खाना नं. 2 का ग्रह अगर कोई या नं. 2 [दुनियादी मान, सबुहल] भी यहू के मंद धुंए की स्थाही से भरपूर होगा । जन्म वक्त का हाथी [धनाद्यता] घटते-घटते 36 साल की उम्र तक शून्य हो जायेगी । जन्म समय और बड़े पुराने बने हुए काम और प्रसिद्ध हाथी अब अपने जाप पुरानी खाईयों में गिरकर भरते जाएंगे अर्यात चबूत्र बनाये काम बिना कारण निवाड़ जाते होंगे ।

3. गुरु वृहस्पत [पिता] बैठने की जगह की जड़ नष्ट और बरबाद करती होंगी । जन्म लेते बल्कि जन्म लेने से पहले ही पिता का मुंह न देखे या माता के पेट में आने के समय से पिता को ग्रहचाली गोली या हादसे से मार देश । अमूमन ॥ मास ॥ साल या हृद ॥ साल उम्र में या पूरी होते ही वृहस्पत [पिता] की चीजें, काम, रिश्तेदार सम्बन्धी खत्म या नष्ट हो जाएंगे । अगर किसी कारण वज्र जाएं तो चोने से खाक बन चुका होगा जैसा कि किसी बैंझान की करम की ऐतावर से भी पोखा हो जावे । नाहक दुखों से फिजूल खर्च । आग लगे या चोरी होवे, कर्ज अदा करने वाला आदामी भर जाये बोरह बोरह हर तरफ से मंदा ही माली छाल होगा । माय्य का कच्चा, कढ़वा धुआ पूरे-पूरे विरोध से तंत्र कर रहा होगा ।

4. पिता, ससुर या नाना की दोलत, आयु और सुख सागर और तोशा [बचा हुआ मान घन] शून्य होगा । अपनी कर्माई के फालत घन का पैरता खाना नं. 3 के ग्रह की हात तर पर होगा । यहू की विजली [विस्तार] के लिए पढ़े पक्ष पर नं. 5 के वक्त वृहस्पत बरबाद होंगा । जिस तरह बैंझान और हल्क चे जात करने वाला का कोई यक्कान नहीं होता उसी तरह यहू का अब कोई यकीन नहीं कि काम वो वृहस्पत [पिता] पर मंदा प्रभाव कर जाये । केतु [भोलाद] दरवेश और शनि [चीजें, काम संबंधी

शनि ये सम्बन्धित और जिसमानी अंग और नजर आदि का फल भी मंदा हो सकता है वर्त्क खुद शुरू [वृहस्पत] पिंडा आप तक मंदा ही होगा लेकिन अगर वृहस्पत [वाचा] या पिंडा शुरू किए दूसरे ग्रहों की मरद को अच्छी हालत और तम उत्तर या स्थानी हो तो ये सब मंदी हालत [ज्ञान का चुत ठोटी होना, सोने का रख दो जाना और रख भी ऐसी जो कि याम न आए अंथा लंगड़ा हो जाना] खुद टेवे वाले पर हो सकता है। बाप की बनाय उसका समुर और नाना भी हो सकते हैं जो राहु के पूछाल से चल जाए या जल उठे या उस टेवे वाले लड़की/लड़का के कान न आये। राहु नं. 11 के बक्त व येटा या यावा पोता लम्बी उम्र तक इह दुनियां में इकट्ठे नहीं चल सकते। जुदाई अवश्य होगी और कई बार जल्दी भी सकती है।

5. पर्व मंदिर और दान हमेशा सहायक होंगे। वृहस्पत कायम रखना। [जित्न पर सोना कायम रखना] सहायक वर्त्क जल्द होगा बरना सोने को कोद होगा। जिस पर राहु की चीजें महकता पुलिंग की मुक्त वर्दी [इयूटी की वर्दी चाहे किसी विभाग की हो कोई वहम की बात न होगी] या हवियार, नीले कपड़े, बिजली का सामान, नीलम की अंगूठी आदि का कारेब या सम्बन्धी [राहु से सम्बन्धित] उनका सम्बन्ध कायम करने से वृहस्पत [मासा, माल, धन, सम्मान] सबका और भी नुकसा होगा।
6. मंगी को बतार खेत खेला पेला कभी-कभी देना सहायक होगा। अगर वृहस्पत भी नं. 11-3 में हो तो सोने की यजा लोहा [शनि] को शरीर पर कायम रखना रहायक होगा। चांदी के गिलास में पीने की चीजों का प्रयोग और चांदी के के या नाली [टोटी] में रिंगरेट आदि का इत्तेमाल राहु की जहर घटाएगा।
7. भाई की गर्दन चरवाद, तापा लावल या लंगड़ा हो। मंगल नं. 3
8. केतु का असर मंदा ही होगा याने नर संतान कान टांगे रेड की हड्डी, पेशाव की नाली, पुटना, पांव दर्द, चांट, सफर में हानि केतु के रिश्तेदार [मासा, मालू खानदान] के कान केतु से सम्बन्धित दोनों से हानि हो रक्ती है। केतु नं. 5

राहु खाना नं. 12

[शेषभिल्ली सुधर शाही भनदरजे रुग्णालम व फलक दर्जक्षयत]

रहा भूखा दिन भर कमाई जो दोता।
चजाने भरे क्या न जब यत सोता।

रात का आहम उत्तम, या गुजर सुन्हत की।
सकड़ी¹ मीठी पवन² मीठी, पुंआ तो कहवा ही है।
मंद शनि खुद योग हो मंदा, अंथ मंदा जो योगी हो।
चोर अप्यारी गवन न उमदा, छींक उत्ट मंद होती है।
मंगल टेवे हो ही जिस दम सारी, उज शाही सुख होता हो।

ब्रह्मशनासी दुनियां होगा, नेक चतता जब शनि।
खर्चां पर का होता हायी, लगता कानो शुष्प ही है।
शशु ग्रह जब साय हो बैठा, हरद तवाही होता हो।
चारेश पुंआ न माया भरता, आरनान हवा चाहे भरती हो।
॥ शुक्र से कन्चा बढ़ती, युप गुरु धन देता हो।

1. शनि 2. वृहस्पत

इस्त रेखा :

हयेली के खाना नं. 12 में राहु का निशान [जाल]

नेक हालत :

1. जेमा युप टेवे में हो पेसा ही राहु का प्रभाव होगा।
2. राहु का नेक असर मयनों और रींगरों से सम्बन्धित है।



204

3. शोध्यचिलती या योरे कुछ, कुदरत को कुछ और ही मंगू हो । इर्दे अन्दर अन्दर हाथी जैसे बड़े होते जाए भगर कर्माते के नेक कागों में लगता । अपनी मृशी और इच्छा से किया हुआ होगा जो कर्जा न होय चल्क बहनों और देटी | युप से संबंधित | रितेदार की पातना में लगता होगा ।
4. यह यह आएम उत्तम और सुगुहत अर्मार होगे । अच्छे साते-पीते होने । शवुओं से सदा वचाव रहेगा ।
5. यह शाही व सुखिया हर प्रकार से उत्तम मंगत साथी
6. यादगाही सुयह | मस्त भोला | और संणाहि व्रतमशनाह | जानी | शनि उत्तम हो । होगा । योगाध्यास दिन व दिन उत्तम प्रभाव देंगे ।
7. तड़कियों की ऐदाइश और कायम रहना धन की आमदन जमा शुक्र नं. 10-11 दोनों अधिक होगे । युप वृहस्पति नीव होने यानि जैसा युप वैरी तड़कियों की गिनती और हालत होगी । जैसा वृहस्पति वैरी धन की आमदन जमा आदि । युप वृहस्पति के कान चीजें रितेदार धन देने कभी तंशहाल न होगा ।

मन्त्री हालत :

1. नेक कायम शुरू करने के बज्जे आगे से उलट ठीक मंदे परिणाम की पहली निष्ठानों होगी । फोजदाहि, चोही, बमचारी, बन्न के सुन्दर्य में परिणामी और मंदे परिणाम होगे ।
2. कर्माते के फिजूलखचों के लिए नाहक मारी बोझ की घटनाएं ।
3. फर्जी नीव रहीत और पूरी न होने वाली उम्मीदों के खुशक दरिया के स्थानी देवे वाले की जान, उरके मकान की छत, यह के भूचाल हरदम कापती और हिलती रहेगी ।
4. आसमान पर उड़ता हुआ पुंजा स्वयं भेहनती, दिन भर कर्माई करता और हर तरह से बोझ ढोता रहेगा चल्क यह को भी न सो सकेगा भगर मंदे यहू की कृपा से परिणाम वही काला कड़वा पुंजा होगा जो दम भी थोट देवे और नाहक खुदकुशी तक के भी हालत बना देवे ।
5. बेआएगी व फिजूलखी के फरजी बदल आम होगे ।
6. आसमान चाहे साथ ही पुरं से भर जाए भगर धन की बारिश कहां होगी । ऐसा मंदा कि जिस कदर निदनाजी से और जिस अंग से सुन्यास की कोशिश करे यह मंदा हो जाये । दिमाग से कोशिश करे तो धनत मगर वाकी शरीर खूब भोटा ताजा, आंखों से बजेद होकर उन्यास दूटे तो आंखे खत्म वाकी शरीर रह जायेगा । आखिरी नीतोला वही होगा जो कि शनि की हालत का हो चाहे शनि युप का प्रभाव नेक मगर खुद यहू का अपना असर मंदा और कड़वा पुंजा ही होगा ।
[अगर शनि मंदा हो]
7. नाहक तोहमत लेने वाला या बदनाम हो ।
8. तबाही करने वाले हहद से भरपूर शरातों से खरान होगा । शनु ग्रह सूर्य शुक्र ग्राय जायी ।

उपाय :

रात को आएम करने की जगह पर मंगत की चीजें [खांड की बोरी या चौफ की बोरी] कायम करने से यहू उत्तम फल देगा । युटी पकाने की जगह में ही बैठकर रोटी खाना यहू के नंदे प्रभाव से बचाता रहेगा ।

केतु

| एफर की आंधी में संगर में लड़के पोते आमे बाने बाते घर में कुट्टन्, दरवेश आकबत अंदेश, नस्त ! —

नजर पांच तेरे जो उयडे पड़े ।
सभी जेर रहते ही सर पर चढ़े ।

गुरु मंगल व बुध तीनों ग्रहों का, केतु कुत्ता त्रिलोकी हो । आठवें कान मुंह दूने खुलता, छठे टेढ़ी दुम जिसकी हो ।
मिसे केतु बुध कुत्ता दुगियां, पार्षी बुध ही होता हो । गुरु मंगल बुध न पर 2, केतु मंदा ही होता हो ।
सफेद काला दो रंग-पिरंगा, लाल मिला बुध होता हो । शनि मंगल कोई साथ ही नहीं, करते सभी का मंदा हो ।
केतु तत्त्व हे फैरी जी जंचा, छठे मंगल केतु मरता हो । कुतिया बच्चा, जब एक ही होता, नस्त कायम कर जाता हो ।

1. कुत्ते की नस्त या केतु की अधिलिपत मुंह खाता नं.2 के ग्रह । उदाहरणः मंगल नं.2 तो शेर जैसा मुंह, कल खाना के ग्रह - बुध नं.8 तो बकरी जैसे कान । दुम खाना नं.6 के ग्रह - मरतन्, छनि नं.6 तो सांप की दुम । जब 2-6-8 उत्तम केतु |३ संतान की आयु, 2 माली हालत, 6 मैन्दरे की जिनती, कभी मंदा न होगा । बृहस्पत का उस्तुष्यक होगा ।

बाम हालत 12 घर

केतु तत्त्व पर पिसर संतान हो मिलता, फर्जी फिझ भी होता है	सफर हक्कनत घर 2 उम्दा, उत्तम 6वें ही अकेला हो ।
रंग-पिरंगा हाल हो तीने, म्युर भाई खुद अपने जो ।	बुम हालत पांच लड़के उसके, बेटा जल्द न चौथे हो ।
6 बहादुर घर 7 बैठे, औलाद कबू 8 भरता हो ।	पिता नावें घर अपना तारे, दरवें छनि पर चलता हो ।
उम नजर ना माली सर्वी, केतु पापा घर ॥ जो ।	ऐश करे घर 12 फ़तनी, माया फ़ती घर भरता हो ।

केतु का दूसरे ग्रहों से सम्बन्ध :

बृहस्पत	- उम्दा आसन, नेक आकबत ।
सूर्य	- तूफान, स्वयं बरबाद केतु भामा मंदे ।
चन्द्र	- कुत्ते का पसीना, दोनों मंदे ।
शुक्र	- कानदेव की नाली, शुक्र की जान, गाय का बछड़ा ।
मंगल	- शेर के बरबर का कुत्ता ।
बुध	- कुत्ते की जान (सिर में) एक अच्छा तो दूसरे बुध ।
शनि	- सांप, कान नदारद, केतु पर शनि का फ़सला होगा ।
रहू	- केतु का प्रभाव, रहू के साथ चलिक रहू के हाय या रहू की मर्जी पर होगा ।

सुरुदम बतो माया खेश य

तू दानी हिसाबे कमोबेश य

केतु नेक हालत :

1. सांसारिक काम के हल करने के लिए इधर उधर उलाह करने के लिए दोइ धूप का या 48 साता आयु का समय केतु का समय होगा ।
 2. जर्द |बृहस्पत| लाल |मंगल| अण्डे का रंग |बुध| तीनों ग्रहों का एक नाम केतु |तीन कुत्ते होगा| जो तीनों ही जमाने के मालिक होंगे । ऐसाया पार्षी जस्तर है । जान से मातने की बजाय कबू तक सहायता देगा |चारपाई तत्त्वा| ।
 3. केतु |बुध के| भाग ।
- , |अ| जान नं.8 का ग्रह जैसे बुध नं.8 तो बकरी जैसे जान - संतान |केतु| जी आयु का फ़रज़ा मगर कम अक्सत की शर्त नहीं

।३। युध नं.२ के ग्रह जेरो मंगल नं.२ शेर जेरा युध । अण्डापत नस्त, सांतारिक रहन-सहन का हाल मात्रा हालत ।

।४। दुष नं.६ का ग्रह जेरो शनि नं.६ यांप जेरी दुष, सदस्तो की गिरती, स्वभाव, अंदलनी चात, नन्ध या वह नर्झी जो इस्तम्भ भेद बता दे या जिसके द्वाय इसका इलाज हो सके खाना नं.१० के ग्रह से सम्बन्धित, जानवर विषेला पूँछ याले होते हैं ।

4. केतु नेकी का फरिशता - सफर का मातिक और आर्हार तक सहायता देने वाला यह है ।

5. केतु युध दोनों मिल कर कुत्ते का घिर |कुत्ते की जान सिर में| होगा, पानि जब तक युध उम्दा या नं.१२ में उसके तीनों हिस्से वृहस्पत, मंगल, युध न हो, केतु नं.२ मात्री हालत, नं.८ ओताद की आयु, नं.६ भैन्ति की गिरती, मला ही होगा चाहे कैसा और कही भी भेठा हो ।

6. केतु से अर्ध सुफेद व काला दोरंगा कुत्ता होगा मगर लाल रंग |सूर्य| के साथ होने से युध होगा जिसमें चाल व प्रभाव तो युध की होगी मगर मियाद केतु की होगी । अब नर कुत्ते की नस्त की जगह मादा नस्त लेंगे |कुतिया| और युध की चीजें काम आदि पर पहले प्रभाव देगा ।

7. कुतिया का नर बच्चा जो एक ही पैदा हुआ हो, खानदानी नस्त कायम करेगा ।

8. मंद युत्ते के लिये अपनी कमजोरी किसी से कहना या दूसरों के आगे रोना और भी कष्टदायी कर देता । वृहस्पत का उपय सहायता करेगा ।

9. मंदी सेहत के समय चन्द्र का उपाय । नन्तु जब लड़का मंदा हो तो घर्म स्थान में कम्बल देना शुभ होगा ।

10. केतु के इलाज के लिए उसकी नन्म इलाज का भेद खाना नं.१० के ग्रह होने । पांव या पेशाव के कष्ट के समय रेशम का अति सुफेद धागा चांपना या चोंना छला डालना |जो चन्द्र की चीजें हैं| अति सहायक होती है । केतु को चारपाई भी माना है मगर यह चात में चूके केतु को शुक्र का फल माना है इसलिए चारपाई नस्त में वह चारपाई मानी है जो दहन के समय मामा की तरफ से या नड़की के माता-पिता की तरफ से लड़की को दहन में दी जाती है । ऐसी चारपाई का ओताद के जन्म समय |जन्म के सम्बन्ध में| प्रयोग में लाना सबसे उत्तम है चाहे केतु टेवे में किरन्न ही मंद, नीच, बरबद क्यों न हो । जब तक वह चारपाई घर में प्रयोग में लाई जा रही हो केतु का फल कभी मंदा न होगा ।

केतु भन्ती हालत :

1. गोया पापी ग्रह |जब शनि यह दृष्टि आदि से| केतु को किसी तरह आकर मिले दूसरों पर प्रभाव के लिए युध ही होता है । मगर यह जान से नहीं मारता चाहे जिस जगह जन्म लिया वहां कुछ भी न रहे, न रहने देवे । दुनिया का धोखे-बाज उत्ताया होगा ।

2. जब तक युध |केतु की ऋत दुष| अच्छा, केतु युध ही होगा ।

3. घर्म स्थान में पांव |नन्तु| परिव्र मानते हैं या घर्म स्थान में अन्दर का केतु |नया पैदा हुआ या बना हुआ बच्चा| सदा जीवित रहेगा ।

4. केतु का मकान वच्चों तथा स्त्री की हालत मंदी ही रखेगा । वृहस्पत या सूर्य जब शनु ग्रहों से स्वयं ही मर रहे हों तो केतु बरवाद होगा ।

5. केतु नदे के जन्म दासकर जब टेवे में चन्द्र और शुक्र किसी तरह से इकट्ठे हो रहे हों तो वच्चे का जित्स सूखने तथ जाया करता है । ऐसे उमय में वच्चे के जित्स पर दरिया, नदी, नाले या बेरे ही कोई मिट्टी या गाढ़नी मत कर खुशक होने दें घन्टे आप घन्टे के बाद वच्चे को गोप्य अनुग्रह ठड़े या गर्म पानी से जो भी ठीक हो नहता देवे । 40-43 दिन लातार करने में शहीर या नूखना ठीक हो जाएगा ।

केतु याना नं. ।

। हर समय बच्चे बनाने वाला, गरे शहर के बच्चों की फिक्र में भलता होगा ।

रिजिक तेरा जब तुशारो, है आज मिलता
लंगोटा फिकर कल का, क्यों तू ढीला करता ।

* सोच रहे थे सफर की अपने, बच्चा नया आ पहुंचता हो । अपने बक्स मंदा चाहे फितना होवे, पिता गुरु को तारता हो ।
जान काहुप वह हर दग खाता, हड़काया कुत्ता^x घाटे लेख पा हो । 7-6 हो नेशक मन्दा, उंच असर रुपी देता हो ।
खाली पड़ा जब 6-7 टेवा, तुफान जन्म घर आता हो । युध शुक्र न यहू जम्दा, उत्तम वृहस्पति रवि होता हो ।
दरवेश उंचा हो मदद खुदाई चरप पिता के धोता जो । मंगल गद्दी जब 12 पाई केतु बुझ नहीं होता हो ।
बाद शारी जब केतु मंदा, मदद शनि से पाता हो । वरना कुत्ता हड़काया ऐसा, पिता रुपी भी काटता हो ।

हस्त रेखा :

सूर्य के बुर्ज नं. । पर केतु का निशान होवे ।

नेक हालत :

1. चाहे सफर के लिए हुम्म और उस का फिकर हर समय साय लगा हुआ और तबदीली के लिए हर समय तैयारी होती और बाकी सब हालात तैयार हो मए भार छेर आखिर पर सफर न होगा ।
2. यजा का चलन कोन रेके के नाम पर हर समय नए बच्चे बनाने वाला । गरे शहर के बच्चों की फिकर में मरता होने दोलत और कामदेव की बेहाई दोनों एक साय बढ़ते होने । उसका आज का रिजिक कोई ठेक नहीं सकता इस्तिए उसे का फिकर न होगा, जिसके डर से बार-बार दम न रुक होता रहे ।
3. अब सूर्य का असर अच्छा होगा चाहे याना नं. में नीच या नदा हो रहा हो । केतु जब कभी वर्षफल के अनुसार नं. आवे, लड़का/योहता/भांजा पेदा होने की निः ती । केतु केवा भी नदा हो, वृहस्पति का प्रभाव उत्तम ही होना दरवेश नेवा दर्जा खुदाई और पिता गुरु के चरण पांत और पिता की मंदी सन्द में हर प्रकार की सहायता देगा ।
4. केतु का नं. । पर कभी मंदा प्रभाव न होगा । मंगल नं. 12
5. अब सूर्य नीच न होगा भगर लड़कों को युध [कच्चो शाम] और सूर्य नं. 6 और 7 केतु [धारक सरेण्] के समय गूर्ध की ओर गुड़ या जानार में आयाग स्नान-पीने और खर्चने के लिए तांचे के परे आदि देना विष उगान होगा ।

मन्दी हालत :

1. यदि मंगल नं. 12 में हो तो केतु नं. । का प्रभाव मंदा न होगा । यह ग्रह इस घर फर्जी फिकर पेदा किया करता है । नं. । में येठा हुआ नं. 7 या नं. 6 पर युध असर करे तो बेशक भगर नूर्ध पर कभी युध असर न देगा । शादी के बाद जब केतु मंदा हो तो शनि जहर सहायता करेगा या शनि का उपाय शुभ फल देगा बला केतु ऐसा मंदा होगा कि युरु पिता को भी काट खांदगा । पैदाइश तो चाहे जद्दी घर से बाहर [परदेश, सरण, मुसाफियाने या नानके घर हो] भगर जन्म के घर पर वह जगह जाहां पर कि जन्म असर में हुआ [जद्दी मकान पर नहीं] मंदा तुफान ऊ दड़ेगा । पड़ोसी घर पर भी मिट्टी उड़ती होगी ।
2. मंदे समय की निशानी युध उे सम्बन्धित वस्तुओं से गुरु होगी फिर शुक्र [युहक पर की चाँचे] बाद में मंगल [खून मंदा या जहरी हांकर] और आखिर में वृहस्पति की दृश्य में मिट्टी घर देगा जो इधर-ज्यहर फर्जी चक्र में दौड़ने का बहाना होगी ।
3. युध और शुक्र दोनों या मंदा हाल होगा । याना नं. 2-7 खाली ।

4. मंदी गंदत, याम्बार जब दोषता/प्राता पैदा हो।

सूर्य नं. 7

केतु खाला नं. 2

। आसूदा (सूर्य) तुम्हारन् मुराफिर ।

हुई पैदा कोलाद हर घर जो तेरी,
बुझापे में नुग्रह कोन देगा दिरेरि ।

खाली 8 मंदिर अंकला, नेक और चेहूदा हो।

तिलक बुद्धरत्न मंदद पे उम्भकी, आठ दृष्टि खाली हो।

कोई भाग शुक्र हो हर दम उम्दा, येठा शुक्र रुचाह मंदा हो।

एज खितावां सेखा चाहे उच्चां, भाया जमा नहीं होती हो।

उफर उग्में बहुत लिखा, दुष्मरान आनूदा हो।

बेठा ग्रह जब हो। 8 में कोई अल्पायु द्वुद जहरती हो।

चन्द्र असर न उत्तम देगा, उच्च हुआ या तरसता हो।

आई चलाई लालो करता, नर्तीजा दलाल-दलती हो।

1. यह के अलावा खासकर केतु के शनु चन्द्र या मंगल।

इस्तर रेखा :

वृहस्पत के वर्ज नं. 2 पर केतु का निशान हो। →

नेक हालत :

1. हर नया सफर सेहत की तपदारी पर हो। नई दिशा की ओर हाँगी यदि पहले दक्षिण को चले तो वापिस पर्शिचम ठहरे। फिर पूर्व में आए। चाहे भाग्य पूनता हुआ है मगर हाकिम मुराफिर सफर खुशकी का बहुत होगा और तरक्की देंगा।

2. शुक्र भाग सदा उत्तम चाहे शुक्र स्वयं केगा भी येठा हो। चन्द्र का प्रभाव उत्तम होने की कोई शर्त न होगी।

3. चाहे चन्द्र उच्च और बरसते पानी का त्वानी क्यों न हो चाहे रुजदत्वार में खिताव मिले लालों की आई चलाई पर भी कल चले। मगर धन जमा न होगा सिर्फ दलाल की दलाली की तरह अपना हित्सा होगा। केतु अब शुक्र वृहस्पत की नकल या नक्ली सोने और रंग-विरंगी ऐटी की तरह किस्त का दर्जा या जेंगा वृहस्पत हो येसी ही हालत नाया धन दोतर की। औ जैसा शुक्र हो येसा ही हाल गृहस्थी गुजरान का होगा। क्योंकि ग्रह चाल कुल्तू केतु का मुँह इस घर का माना है। जैसा भय भग्ने येड़ होने वाले घर के मालिक नं. 2 का मालिक शुक्र पक्ष्य घर वृहस्पत का है, की ऐटी पर सज़ करेगा।

4. सफर और हक्कमत चाहे अधिक हो मगर हर दो का हर तरह से उत्तम फल और हर और तरक्कियां तुम्हारन आसूदा। माये पर तिलक कुदरत युहायता देगा या माये पर तिलक की जगह केतु का निशान दिशाप शुम होगा।

नं. 8 खाली और केतु हर तरह से अकेला हो। प्रिश्न
पर केतु का चिनह।

5. 24 दिन आयु केतु की मियाद के बाद सुद कमाई करने वाला और नर्तीनक जीवन वाला होता जायेगा।

सूर्य नं. 12

मन्दी हालत :

1. हर घर में अंताद बनाए जाने से बुझापे में कोई सहायक बच्चा न होगा।

2. नं. 8 यसे ग्रह से सम्बन्धित प्रभाव के उम्मय आम मियाद का उम्मय वृहस्पत 16, सूर्य 22 आदि दोनों पर-जहकत अल्प आयु लेंगे। जब यह के अतिरिक्त नं. 8 में कोई भी ग्रह खारकर केतु के शनु चन्द्र या मंगल।

केतु अन्न नं. 3

। दूं दूं कला रहने वाले कुल्तू भर नेक दरवेज।

बुझ प्यास न खून भाई का करते,
गले बाजू बाधें तलवार कटते ।

नेपो मालिक की याद हो रखता, दुखिया भला ही करता हो । दुखिया भाईयों से अक्षर होता, परदेश¹ जुटा ही फिरता हो । अहर शुक्र चुप न कुछ उम्दा, मंदा घेटी फल होता हो । समुण्ड परना हरदम दुखिया, जंगल मंगल बद होता हो । मंगल टेवे जब 12 बैठा, मच्छ मुआयन तारता हो । उम्र 24 में उत्तम होगा, या जब लड़का पहला हो । केतु मंदे हो मदद गुरु की, तिसका नेहर का भला होता हो । ऐद की छढ़ी जो दर्द करती, योग्र भिस्म² पे उम्दा हो ।

1. दृष्टि बाजू गले से चिपटे भाई फिर भी ग्रह सहायक हो यह उह अब घन को स्वयं ही बहवर कर दे । सदा ग्रहण करेगा
2. जब कल या ऐद की छढ़ी पांव, पुटने, कमर आदि केतु से संबंधित किसी भी जगह दर्द हो ।

इस्तर रेखा :

मंगल नेक के चुर्ज नं.3 पर केतु का निशान ।



नेक हालत :

1. जाहे अपने सुखत और भाई सब का रंग विरंगा हाल [नेक व बद दोनों प्रकार का] मगर चंद्रन अवश्य नेक होगी ।
2. द्वितीय और मालिक की नेकी को परखने वाला भला होगा । हर समय बिना जुलाए या जड़ने वाला भेहमान ।
3. 24 दिन शायु से पहले लड़के के जन्म से मच्छ रेखा [माली] मंगल खाना नं.12 तभा तन्द्र विजयक आयु रेखा हर दो का नेक फल, खासकर उत्तम समय जब काँई न कोई सफेद बाल बूढ़ा पूर्वज साथ मदद पर हो ।

मन्दी हालत :

1. अपना दिमाग लगाए बिना ही दूसरों की हाँ में हाँ मिला कर दुखी होगा ।
2. बिना कारप दूँ दूँ करते रहते वाले कुत्ते का स्वभाव मगर अंदर से नेक दरवेश । अमूमन भाईयों से तंय या दुखिया परदेश के जीवन में मार फिरे । यह ग्रह अब आयु और घन को स्वयं हीते बहाने बनाकर बरबाद करता जाएगा । और हर समय मंगल होगा ।
3. दीयार्ती पुकदमों में लम्बी-लम्बी चालें करके घन बरबाद करेगा । स्त्री और सहितों रे बिना कारप जुर्दाई का भहाना बन जायेगा ।
4. सुसुरात के कुत्ते के साथ से छोटा भाई दुखिया होगा ।
5. साय का भगान गिर हुआ या कुत्तों के टट्टी फिरने की जगह की तरह बरबाद हो । ऐसे टेवे वाले के भकान में 3 लड़के एक पेता या तीन पेते और एक लड़का आमतौर पर अमूमन रहते होंगे और या 3 खिड़कियां और तीन दरवाजे होंगे ।
6. दक्षिण के दरवाजे के साथ से हर साल उंतान के विष्ण अवश्य होंगे ।
7. भाई के खून से प्यास बुझाना अपना ही बाजू काटना होगा ।
8. उंतान नालायक निकम्मी हो ।
9. दक्षिण के द्वार वाले मकान में लगातार रहने से तीव्रे साल से उंतान [लड़के और लद्धिकियां हर दो] का मंदा हाल बल्कि उनकी भीतै शुरू हो जाएगी और चन्द्र या मंगल जो भी नं.8 में हो की मियाद तक मंदा प्रभाव चलेगा ।

जब चन्द्र, मंगल या दोनों नं.8 में हो [दक्षिण के दरवाजे का साथ ।

210

10: गुर्पर्जण शराव

चन्द्र या मंसल 3-4 में ।

[१८ के बंगुड़े क्षेत्र नारदून वाली भाग मोटा और छाटा।]

उपाय :

1. फ़ैफ़ड़े या मंदी सेहत के समय में वृहस्पति की चीजें चतते पानी में बहाना या केसर का तिलक उच्च होगा । मार्ती हात को ठीक करने के लिए शरार पर सोना । कान, धड़ की हड्डी, पाव, पुटने, कमर आदि केतु से सम्बन्धित चीजों में दूर उत्तम होगा ।
2. मंदे सफर से बचने के लिए चतते पानी में सूर्य चन्द्र की मुश्तरका चीजें बहाना उत्तम होगा ।

केतु साना नं. 4

[बच्चों को ढाने वाला कुत्ता, ज्वार भाय, सुमुद्र में तुफ्लन ।

सफर अपने का फत चाहे मीठा मिलेगा,

मगर चोप देहि का सहना पड़ेगा ।

मुझ तूभान आपु माता, आपु धन स्वयं उत्तम हो ।

मुह टैये न जग तक उत्तम, कन्या बहुत उष होती हो ।

उष उपाय गर करे, दोनों दुख हो दूर ।

चौम चन्द्र सब रद्दी करता, लड़का पैदा न होता हो ।

पैदा कोई जब लड़का होता, आपु सदा पूरी होती हो ।

कुल उसकी चलती रहे, माया मिले जस्त ।

हस्त रेखा :

चन्द्र के बुरे खाना नं. 4 पर केतु का निशान ।

नेक हातात्मा : Free by Astrostudents

1. दाप के लिए उत्तम फल वर्तिक वृहस्पति पिता गुरु की शक्ति उत्तम उच्च तथा नेक करता होगा ।
2. विपरीत शुतान के लिए सब करना पड़ेगा । देर से भी संतान कुत पुर्येहित की आशीश से । जब वृहस्पति उच्च हो जन्म कुंडल में या ही जावे वर्षफल में। ऐसी संतान लन्ती आपु की होंगी चाहे माता की आपु तथा धन के लिए वह एक तुफान होगा और इन्हमें उष रीढ़ी का फल मदा होगा । स्वयं धनवान भेनती परिषम ग्रन्तिक पर छोड़ने वाला हो ।
3. इस सधारण ली चुक्का करे । गैन्डर में भान या कुल पुर्येहित को पीते रंग की चीज देकर आशीश लेना उत्तम होगा ।
4. कन्या अधिक, भूदेश्वर, उत्तर ललाह का स्वामी, धन की कोई जब चन्द्र या मंसल नं. 3-4 में हो । रीढ़ी न छोड़ी ।



मार्ती शुतात्मा :

1. बच्चों को ढाने वाला कुल्ला - स्वर्ण का स्तानव्य मंद, पेशान में शक्ति का आना [मधुमेह] आदि । माता और स्वयं की संतान इस भैंडा इत्याय । सुमुद्र में तूभान की शक्ति ज्वार-माय [संतान बहुत देरी] 34-68 खल से पैदा हो और वह भी कुत पुर्येहित [जिसे धरने ही हट दुके हो] की आशीश न नियित रहेंगी या कायण हो ।
2. ऐसु चन्द्र दैर्घ्य रेखे न माता सुखी न संतान नहे । कुएं में चन्द्र या मंसल नं. 3-4 [अंगूठे का नारदून वाला हित्या ग्रहण भी भीषण संकेत] ।
3. सजुओं लीजे विचार करन धन ।

२।।

केतु खना नं. ५

| अपनी ऐटी के टुकड़े के लिए मुरु का निशान |

मुरु नेक थे जब जवानी के चढ़ते;
मिले पोते इतने न थे जितने लड़के ।

शत वृहस्पत जो टेपे होता, केतु वैषा ही होता है ।
चन्द्र मंगल ३ चोथे बेठा, पांच शनि जाहे ९ बेठा हो ।
मुरु मन्दा ४५ मन्दे, दमा औलाद को लगता हो ।
शृण पितृ जब टेपे बेठा, केतु वृहस्पती मंदा हो ।

१. चन्द्र मंगल से सम्बन्धित चीजों का दान उत्तम होगा । जब शनि ५ या ९ हो, वरना केतु मंदा न होना खासकर जब चन्द्र मंगल ३-४ में होवे ।

हस्त रेखा :

सूर्य की तरफकी रेखा पर केतु का निशान ।



नेक हालत :

१. उठती जवानी के समय नेक होवे तो अपने लड़कों ते पोतों की संख्या अधिक । केतु का फल अपने लिए उत्तम । लड़कों की आयु हालत वृहस्पत पर होगी । २४ साल की आयु तक रोटी के लिए मुरु का निशान । बाद में स्वयं उत्तम । वृहस्पत की शर्त न होगी ।
२. नर संतान पांच से कम न होगी । माली हालत में केतु का मंदा प्रभाव न होगा । वृहस्पत, सूर्य या चन्द्र खाना नं. ४-६-१२ में होवे ।
३. अब शनि संतान के सम्बन्ध में कोई मन्दा प्रभाव न देगा न ही दो स्त्रियों का झगड़ा । संतान की संख्या एक ही लो से ९ लड़के ३ लड़कियां । जब शनि नं. ९, शुक्र नं. ४ हो पूरी मच्छ रेखा कायम ।

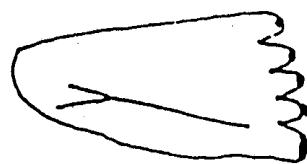
सूर्यी हालत :

१. टेवे वाला स्वयं तो बहुत सुन्दर या मगर पता नहीं यदि सुंदरता जवानी में कहां मई और वह एतान के लिए मंदा और लड़कों को यांस [दमा] की जीमारियां थीं या ४५ साला ऊँ तक केतु का मंदा हाल । बेशक लड़के कितने भी हए हो मगर जीवित शायद कोई ही हो । घर में कुत्तों के रोने की आवाज आए । जब वृहस्पत मंदा हो ।
२. केतु का वृहस्पती प्रभाव मंदा ही होगा । चाहे दो लड़के जीवित हो मगर वह पूरी तरह मुखिया और मुव्व देने वाले होंगे । शृण पितृ वृहस्पत । शुक्र यह ज्ञाने पापी यह खाना नं. २-५-९-१२ में ।
३. केतु का प्रभाव मंदा, गर्हन, पशु वीमार मंदे हालत, चन्द्र, मंगल की चीजों का दान उत्तम । जेशा धर्म ईमान येर्सी ही मंतान की हालत होगी । चन्द्र या मंगल नं. ३-४ में ।
४. तीन लड़के नस्त होने पर ३६ गाला आयु तक फिर तीन कायम दबाय ग्याएँकर जब चन्द्र मंगल भी ज्ञाना नं. ३-४ में हो । शनि ५-९ हो ।

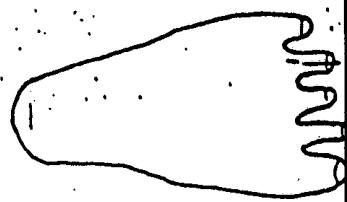
- લાલ કિતબ પણ મ દર્જ -

211-A

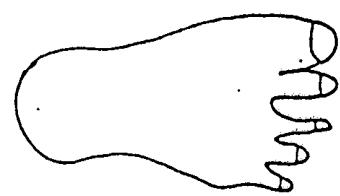
①



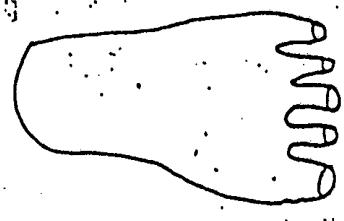
⑨



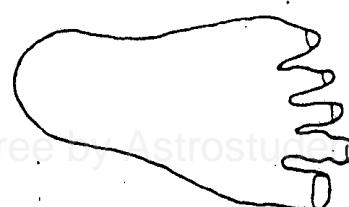
④



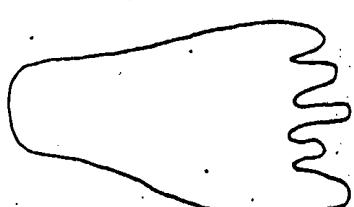
⑩



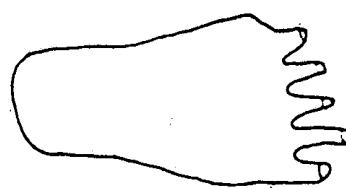
⑤



⑪



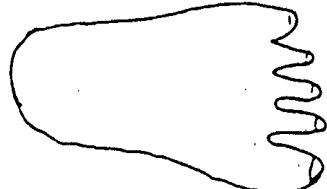
⑥



⑫



⑦



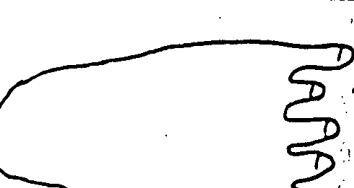
⑬



⑧

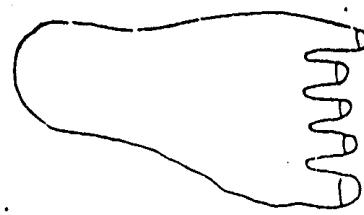


⑭

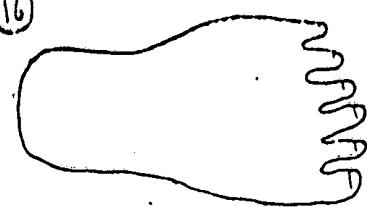


- पाँव की उंगलियाँ -

(15)



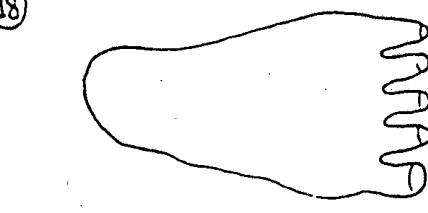
(16)



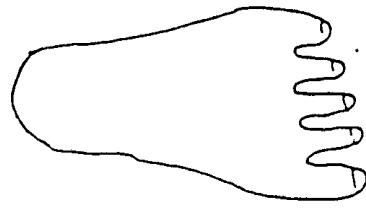
(17)



(18)



(19)



१११

२१२

केतु घन्ना नं. 6

। शेर कद शुंशार कुत्ता, दो रंगी दुनियां ।

इगम थी अगर कुत्ता दुनिया में करता,
एुपे फिरता शर घर में बुजदिल न डरता ।

रंग दो रंगा केतु होता, असर होता¹ भी दो रंगा है । केतु की चीजों पर केतु मंदा, पर मंदा न दूसरों पर । शुरु भले औलाद हो बढ़ता, शुक्र मुसीभत करता हो । शुरु मंसल न हो जब शारी, न ही मिला नुषा । १२ हो ।

मामू माता न बेशक उन्दा², शनि भला ही होता है । ग्रह टेप³ कोई शायी रेत, खुद मंदा दुष्प दुष्परे पर । टेवे कोई नर जब दो उत्तम, तृफान⁴ केतु का मंदा हो । बढ़ता केतु खुद नेकी अपनी, रक्कन्दुर खुद न जब रुक हो ।

१. अपनी संतान तथा सलाहकार सदा नेक सलाह देने ।
२. जा चन्द नं. २ में हो रेसी हालत में नुदापा हल्का ।
३. सिनाए नुध जो अन नेक प्रभाव देना ।
४. स्त्री की अंगूठी बाए हाय में शुभ ।

इस्तर रेखा :

इस्तरी की आयत में केतु का निशान हो ।

स्थापन :



पांव में रेखा ।

१. इस ग्रह की सही हालत प्रभुष्य में पांव से मिलेगी । पांव में सब कुछ हाय की तरह मिला है । पांव सदा जमीन पर लग है । जमीन को शुक्र माना है । शुक्र का वर्ज अंगूठे पर होता है इस्तरी पांव की रिफ एक रेखा - वह यह कि पांव रेखा यदि ऐडी से निकल कर अंगूठे तक चली जाये तो सुखारी का सुख होगा ।
२. उंगलियों को छोड़कर [पांव की] अगर शंख, चक्र, सिद्ध का निशान दाएं पांव पर हो तो दुर्ज या ग्रह के कायन होने का नेक प्रभाव हाय की तरह होना । मगर बाए पांव पर चक्र, शंख, सिद्ध वर्ज के नीच होने का प्रभाव देंगे ।
३. अगर बायां पांव दाएं से बड़ा हो तो कम होता, डरपोक । पांव का अंगूठा छोटा हो तो केतु नीच या मंदा होगा । ऐसा व्यक्ति एक जगह न रहेगा ।

पांव की उंगलियाँ

४. अंगूठे तर्जनी बाहम मिले हो
५. अंगूठे छोटा हो
६. अंगूठा छोटा तर्जनी बड़ी
७. अंगूठा और तर्जनी बहवर
८. अंगूठा बड़ा तर्जनी छोटी
९. तर्जनी मध्यमा से बड़ी
१०. तर्जनी मध्यमा से छोटी
११. तर्जनी मध्यमा से बहुत छोटी
१२. अनामिका मध्यमा से छांटी
१३. कर्निटिका अनामिका से बड़ी
१४. कर्निटिका अनामिका बहुत बड़ी
१५. अर्नामिका अनामिका गे बहुत ही बड़ी
१६. अर्नामिका अनामिका गे छांटी

फल

मन्द भाष

एक जगह न रहे

पहले लड़के या लड़की का सुख नहीं

प्रबन्धता से रहने वाला, समृद्ध

दुश्षरे का तुलाम रहे

बोत गरेव घर की तथा उच्च दुख मिले

बोत का पूरा सुख

स्त्री सुख हल्का

स्त्री सुख हल्का

नेक भाष्य

मंदा भाष्य

जलात हो

शुभ

17. करनेवा अनमिका के बणवर
18. पांचों उंगलियां बणवर या दराज लम्बी
19. पांचों एक दूसरे से बड़ी होती जाएं, क्रम से पांच की उंगलियों के नाखून
20. सुर्व तारे रंग के
21. नीते रंग के
22. नरद रंग के
23. स्थाह रंग के

नेक हास्त्र :

1. जैरा वृहस्पत टेवे में होगा वैसा ही केतु का हाल होगा ।
2. केतु रे लड़का कुत्ता, गधा सूअर भी माना है । ऐसे पुरुष की संतान ददे इन पशुओं की तरह नालायक हो जाए तो जिस तरह एक नानूलों कुत्ता शेर की खाल पहन कर अपने मालिक की सहायता कर सकता है, उसी तरह वह संतान अपने पिता वशायत्र अवश्य करेंगी । जिये तरह केतु नं. 1. ने सूर्य की सहायता दी चाहे सूर्य टेवे में कैसा और कहीं भी देव हो उस तरह नं. 6 का केतु वृहस्पत को कभी मंदा न होने देगा । चाहे वृहस्पत, केतु खाना नं. 6 के समय, कहीं भी और कैसा भी हो ।
3. इन प्रभाव भी भला ही होगा । अपनी संतान तथा दूसरे सलाहकार देक उत्तम फल देगा । इस घर में उह चाती कुत्ते (केतु की देवी) जून की जगह माती गई है । शवु दने रहे हो । घन पर घन आयेगा ।
इस्त्र रेत्यः हाथ का अंगूठा सीधा रहे ।
4. अफैला ही बैठा हुआ हर तरह से उत्तम फल देगा । और मामूली कुत्ता भी शेर की खाल पहन कर अपने पुरु [३] | जो गद्द करेगा । ऐसा पुरुष स्वयं के लिए अच्छा भगव दूषण के लिए उह अवश्य देना ।
5. और केवल लाङाला कुत्ता, दो दीरी सुंसारिक भाग्य [घर का और नीच भी] त्वयं सुखिया होवे ।
6. दिनांक नं. 7 ~ जीवन बढ़ने की इच्छा का साय होगा ।
दिनांक नं. 8 ~ इमला रोकने की शक्ति का साय होगा ।
दिनांक नं. 9 ~ उत्तम सेने की शक्ति का साय होगा ।
दिनांक नं. 10 ~ स्वाद का साय होगा ।
दिनांक नं. 11 ~ अलीरं जपने की आदत का साय होगा ।
दिनांक नं. 12 ~ यज्ञदबोहि का साय होगा ।
7. यह केतु दीर्घी का तक भला होगा ।
8. उत्तम वृहस्पत है । जैरा वृहस्पत जैसा हाल काटकर उत्तमता दे ।
9. युक्त ओर्डरेस द्वारा करता होगा ।
10. केतु अर्धनी दीर्घी के बड़ा और उत्तम फल होता होगा । यह अर्धनी उल्लङ्घन और युद्ध से युद्ध ही न भरे ।
11. युक्त लालक २० वर्ष ~ साकृ जागरूक की युक्ति और देव परदेव के लिएक है लालक ।

दुय नं. 6

वृहस्पत उम्दा ।

युक्त कायम या उत्तम ।

जब वृ., मंगल नं. 6 में न हो और न ही नं. 12 या वृ., मंगल या युक्त हो ।

जब तक वृ. नेक हो या नं. 2 की दृष्टि भली हो ।

संस्कार : नींदे वर उल्लं रेखा वर्षीने का तरफ ये नींदे को शह की छड़ा पर पीठ को दो भागों में बटने याती रेखा ।

कन्ती हातत :

1. केतु ग्रूपन नुष का शुभ और शुक्र का मित्र होता है लेकिन इस घर में केतु की चात उत्त होगी । अब केतु नुष का मित्र और शुक्र का शत्रु होगा ।
2. कुत्ता व्या जाने हत्ये का स्वाद या कुत्ते को भी हजम नहीं होता के आधार पर ऐसा व्यक्ति बेकदर हर जगह पांव की ठोकर से लड़खड़ाते पत्थर नाचीज टुकड़ा की तरह होगा । मामा तथा मामा खानदान पर भी मंदा हो सकता है ।
3. वायं शाय पर सोने की अंगूठी सहायता करे जब केतु खाना नं.6 जर नं.2 की दृष्टि से केतु वरचाद हो रहा है । की चीजों काम या संक्षियों का फल वरचाद और मंदा हो ।
4. मंदी हातत में दिमागी खाना नं.1 होशियाही तथा 15 खुदाई का साथ होगा । 4-खुदफसदमी
5. सफर वैमतलब और शुभ विन बुलाए स्थें होये । वृहस्पत मंदा हो ।
6. मामा और मात्र का हात अच्छा न होगा नुद्रपा हत्तम होगा । चन्द्र नं.2 मगर वैतु अब केतु की दृष्टि चीजों या संतान पर मंदा न होगा ।
7. केतु स्वायं और दूसरे साथ बैठे ग्रह [सिवाये नुष के जो नेक होने] कोई भी ग्रह सिवाये नुष नं.6 के दोनों का हात मंदा होगा ।
8. केतु हर तरफ से मंदा तुफान पेड़ा करता होगा । अपना ही कुत्ता काट खाये पांव पर खराबियां शुक्र की मंदी निश्चनी होगी और विचारे पर नुष प्रभाव वृ. के मदे प्रभाव की निश्चनी होगा । वृहस्पत या शुक्र दोनों में से कोई मंदा ।
9. दोनों का मंदा फल । शुक्र नं.6

केतु खाना नं.7

| गढ़रिये का पालतु कुत्ता, नन्ध्ये का साथी - झेर का मुक्कनता करने वाला कुत्ता |

सब कुछ के होते जो यत्ता रहेगा ।
तो यह नस्त तेरी को जाहिर करेगा ॥

तरह कुत्ते की शुभ¹ मारे, चम्की² हवाई चलती है । बदता कबीला साफ हो रह्ते, मिट्टी³ पत्थर न कर्दे हो । ग्रह शुभ हो जब कोई मंदा, वरचाद⁴ खुदी वह होता हो । केतु चक्र⁵ जब तरब का करता, लेख मंदा सब उत्तम हो । नुसान मंदा नुष शूदा यायदा⁶, जहमत शीमायी पाता हो । शुक्र वृहस्पती आप भै जलता, पत्थर तुफनी चलता हो ।

1. नुष शुक्र ॥
2. वृहस्पत सहायक ।
3. शनि मंदा न होगा ।
4. शुभ ग्रह स्मय ही या टेये याला तक्कदुर खुटी से वरचाद हो ।
5. लड़का यालिंग हो जाये या लड़के की (उमर के साल : 48)×40 के उत्तर के बहवर घन याएगा । 7-9-31-43-55-47-74-95-103-115 साला आपु लड़के की (उमर : 48)×40 = वर्ष की धामदर के बहवर घन फालतु ।
6. महगूद फिरदोही का यायदा दोचाह याद होगा । मगर अब फिरदोही की जबह महगूद यत्ता और रुद्र में मायूग जाता होगा । जर्त टेये याला, जवान करे मगर यायदा न हटे, का यापत हो ।

215



प्रस्त रेखा :

शुग के नं. 7 पर केतु का निशान ।

नेक हालत :

1. याम तोर पर जिस तरह व्यां के बहन-भाई उसी तरह टेवे वाले के बच्चे होते । 24 जात की आयु में 40 साला उजाहा का धन दोतात आ जाएगा । (लड़के की आयु के साल : 48) $\times 8 =$ धन की बरकत जैसे लड़के की उमर हो 24 साल तो $24 \div 48 \times 8 = 4$ गुना यानि जन्म दिन पर जमा हुए के मुकाबले पर लड़के के 24 साला आयु में 4 गुना धन जमा हो जाएगा । ज्यों ज्यों दूषण लड़का बढ़ेगा धन जमा होता जाएग बढ़ता जाएगा ।
2. केतु अब गर्ली का भेर बद्धादुर बच्चों का साथी उनमें प्यार और भेर से टक्करने वाला घट्टरेये का पालतू कुत्ता होगा जो शत्रुओं को कुत्ते की तरह मार भगाएगा ।
3. रिजक देने वाली हवाई चक्री मदद पर चलती होती । शुक्र, शनि कभी मंदा न होगा और शत्रु ग्रह चन्द्र, मंगल से कोई मंदा होये स्वयं ही बरचाद होए । जवान करे मगर यायदा न हटे पर कभी जीवन में निःश्वस न होगा । सभी कुछ के होते हुए जो ऐता रहेगा वह उसकी कन्ती और जट्ठी नस्त के खून के असर को जाहिर करेगा ।

मन्दी हालत :

1. सामने पर का हाल केतु की चाँचों पर नहीं हो ।
2. टेवे वाला अपनी खुदी और तप्पक्कुर से बरचाद होगा नहीं तो नहीं होगा ।
3. अगर केतु मंदा हो तो इस तो जिस दिन खाना नहीं पर आये [7-19-31-43-55-67-74-95-103-105] या जब वालिंग हो जाए उन्दा होगा ।
4. मन्दी जबान सूठा वायदा झहनत यामाही देगा । शुक्र गृहस्थी आग में जलता और पत्त्वर निज्जने वाला तुफान चलता होगा ।
5. महमूद फिरदोशी को अशर्हन्दों का यायदा दोबाहु याद न होगा बुध मन्दी हो । मगर महमूद टेवे वाला उन्हें मायूस करने को जाता और उसका कफन बद्दू से भर होगा ।
6. बुध की 34 साला आयु के बाद तारेण और जो शत्रुता करे स्वयं ही बरचाद होंगा । 34 चतुर आयु तक शत्रु अवश्य भले लगे रहेंगे मगर इनके बाद उन्हें कुत्ते की तरह मार देगा ।

केतु खाना नं. 8

[बच्चों की मुहान्त के रम में छत पर ऐने वाला कुत्ता, मौत के यम को पहले देख सेने वाला कुत्ता]

मेरे बच्चे इतने कबू भर रही हैं ।

गिला भर चुकों का तू म्या कर रही है ।

मारक पर जब केतु येठा, फिल्लन उप पत्त्वर गनि आ होता हो मर्द औरत न सुखिया जांडा, लहक करने जा सकता हो । पहले 6वें तक बुध जो देता, रक्कन कायम 34 तक हो । येठा मगर 7 से 12 तक, बाद³ 34 जा चकती हो । गुरु, गंदिर⁴ जब छाली टेवे, उच्च गुरु या उत्तम हो । आया गुरु ईं जब दूने, केतु मिना तब कायम हो ।

216

उर्द्ध्वर्षी या शाय हो कोई, केतु मंदा हो जाता हो ।
मुकु रुप हो तो केनु मंदा, भला मंगल न रहता हो ।
मंगल मुकु 6-12 थेटे खंतान, मंगलीक मंगल बद चौथ हो ।
वर्षा हो संतान यी, जब चन्द्र दूजे हो ।

शाय की दोरंगी होगी, केतु देता फल 2 का हो ।
बुध शुक्र ना होगा उत्तम, संतान देई से पाता हो ।
पन संतान न उत्तम गिनते, मंगल केतु दो⁵ मन्द हो ।
चन्द्र ही जब हो बुध, चन्द्र पालन होये ।

1. मंजल नं. 12 तो केतु नं. 8 पर मंदा प्रभाव न रहेगा ।

2. मरर स्वयं की आयु लम्बी होगी ।

3. वर्षनी शादी के बाद, अपनी बहन की शादी के बाद या लड़की की शादी के बाद [जो भी पहले हो] संतान कायम होगी, 48

4. घट्ट 2 के समय खाना नं. 2 खाती ही निनेगे ।

बुध खाना नं.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
किस छत्र संतान होगी	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40

5. जब तक बुध शुक्र उत्तम हो केतु मंदा नहीं हो सकता ग्रह चाल चाहे कोई भी हो ।

इस्तर रेखा :

मंगल बद के दुर्ज नं. 8 पर केतु का निशान हो ।

नेक हस्तर :



1. केतु के बच्चे दुरे होने का फेरला सदा खाना नं. 12 से होगा । जब तक बुध मंदा ना हो केतु मंदा न होगा ।

2. संतान जल्द कायम हो या देर से भार अपनी आयु सदा तम्बी 70 से कम कभी नहीं अधिक चाहे हो ।

3. यह बर ग्रह चाली कुत्ते केतु के कानों की जगह है मौत के यनों के आने की आहट जल्द सुन लेता होगा यानि उसे मौत आने का पहले पता लग जाता होगा ।

4. 34 चाल थायु में नर संतान कायम होगी । 34 साल से पहले या बाद दोनों तरफ ही एक साय शायद ही जीवित हो । जन्म फुण्डटी में यदि बुध खाना नं. 1 से 6 में बैठा हो तो नर चंतान 34 साल तक की पैदा हुई आखीर तक कायम रहेगी । कई भार 45-48 साल आयु तक सिफर या एक और बाद में दूसरे लड़का कायम होगा ।

[अ] खाना नं. 6 केतु का अपना धर भी है और वहाँ केतु नीच भी है इसलए बुध खाना नं. 6 में हो तो 34 साल से पहले और बाद दोनों ओर की संतान कायम रहने की हालत ज्ञायज हो सकती है ।

[ब] स्वयं अपनी बहन या अपनी लड़की की शादी के बाद जो भी पहले हो के बाद नर संतान कायम होगी ।

5. जब केतु कायम निना जायेगा । किसी उपाय की जल्दत मंजल नेक हो, बृहस्पत नं. 2-1 या चन्द्र नं. 2. न होगी । संतान की वर्षा होगी लेकिन यदिन चन्द्र मंदा हो तो चन्द्र पूजन सहायक होगा ।

6. केतु का प्रभाव कभी मंदा न होगा ।

बृहस्पत और मंगल नं. 6-12 में न हो ।

स्त्री हस्तर :

1. बुध केतु नं. 8 हो तो बुध और शुक्र अमूल्य मन्दे पर्यंते में होने या उरका चाल चलन उरकी स्त्री के स्वस्त्र्य पर प्रभावित हो जाएगा । यानि स्त्री के स्वास्त्र्य की रक्त के लिए केतु की पूजना और चाल चलन की संभाल जरूरी है ।

2. बच्चों के गम, उदासी से भरा हुआ उत पर लेटकर रोने याता कुत्ता । नर संतान कञ्च में भरती जाए । मन्दे समय की पहली निशानी कुत्ते या उत पर गैठपर रोना होगा । संतान कायम होने का समय 34 साल की आयु की हड्डनी होगी । 48 साल

८१

'उगा तक संतान का पुण्य छला हो । केतु की बीमारी पेशाव की नाली में कतह-कतह निकलना महीनों तक ।

3. 25 खाला आपु तक केतु का प्रभाव उच्च मगर 26वें साल से गहरा और केतु साथ में दुष्प्रश्नी मन्द होते । पुरुष स्त्री के वृद्धरथ जीवन में कोई घन सुखी न होते ।
4. केतु की चीजें [दोरण काजा उफेद कम्बल पूरा कम्बल उएका दुकड़ा नहीं] पर्व स्थान में उत्तम सहायता देता । जब कर्द्द साथ या सार्वी हो तो कम्बल [दोरणा] के दुकड़े में दूसरे सार्वी ग्रह की चीजें बाय कर बाहर बाहने में दबाना सहायक होते ।
5. संतान की मंदी हालत [वृहस्पत का उपाय जो केतु नं. 4 में दिया गया है सोना केचर का प्रयोग] सहायता करता । कान छेड़ सहायक होता । 96 फटे सुखर कामन रखना जल्दी है । केतु की बीमारी जुलाद, दर्द, फोड़, जल्द आदि सहर की सर्व का अहाना होता । बाना नं. 2 खाली हहू नं. 2 के समय खाली भिन्नते ।
6. केतु स्वयं मंदा गिना जायेगा । भाग्य को दोरंगी होगी और केतु कोई भी ग्रह सारी नं. 8 में अपना फल नं. 2 का दिया हुआ देता ।
7. न सिर्फ केतु मंदा वृत्तिक मंदत भी भला न होता । दुष्प्रश्नी की मायूर करने वाले और नर संतान देर से कायम होती । वृहस्पत मंदा हो ।
8. संतान पन दोनों मंदे वृत्तिक मंदत केतु दोनों का ही फल मंदा होता । दुरु मंदत कोई नं. 6-12 या मंदत बद नं. 4.
9. केतु की सब चीजें मंदी और चारपाई तक गंदी । दुख, छत माकान से गिर जाये । वृहस्पत पर-मार रहने का मकान और उसका तो खाना ही बरचाद होता । शनि या नंदत कोई नं. 7 में ।
10. ऐसे देवे याते के जन्म से अमून तक पहले माई की मौत होती । मंदत नं. 12, शनि नं. 1 में ।

केतु खाना नं. 9

[इस्यान की जबान समझने वाला कुत्ता, नाप का हुम्म सन्ते वत्त रेय]

पिता माता एहसान हम पर जो करते ।
आपु गुनरे सारी ऐय उनके परते ।

केतु कायम स्वयं पिता को, तरत्व नहीं वह नामा को । तारे नर संतान 3 ही जिन्दे, सुखिया हो और उम्दा हो ।
चन्द्र भले धर माता तारे वृहस्पत भते पिता तारता हो । शनु ग्रह धर तीसरे बढ़े, नर उंतान नारता हो ।
काल नीतते ग्रह सातवें के, उत्तम अचर केतु देता है । सुख न गेटा लावल्दी देवे, हुम्म विपाता होता हो ।
ईट सोने की जब पर रखता, केतु¹ जिस्म जुल उत्तम हो । सोना बढ़ेगा हरदम जवन, जितना² मार जर भरता हो ।
बौलाद केतु में लड़का अपना, नेक चलाही हांता है । हाल होना हो छस जो बगता, पहले बता ही देता हो ।
शुक्र शनि फल हर दो उन्द्य, गुरु भला ग्रह नंदिर जो । भाव भला ना वेश्वक नाता, चाय नावें चाहे चन्द्र हो ।
मुजहन लिखी परदेश हो उल्लन, केतु पालन से बढ़ता हो । मालिक रिस्त दो शेरी कुत्ता, बनोर बना सुदशाल्ता हो ।

1. केतु के हिस्से कान, ईड़ की हड्डी, पांव, टांगे, पेशावाह आदि ।
2. जिस कदर सोना पहले पर में कायम होना उतना ही और फालतु आएगा पर उन दंतों को जोड़ से भी बद जायेगा ।

इस्त रेय :

वृहस्पत के वुर्ज नं. 9 पर केतु का निशान ।



नेक हालत :

1. दस्ती की शर्त है तेवरीसी की नहीं। दस्ती मेहनत से धन कमाएगा। कुत्ते की बफादारी और सूरज की बहादुरी इर दो सिन्न यथा भर्तार होगा। ऐसी उपर्याही ओलाद में जल्ल होगी। केतु की जाति अच्छी या बुरी हालत का फेरला वृहस्पत की हालत पर होगा।
2. दस्ती भेनत के काहेवार [हुनरयंदी वगरह] से अमीर होगा। केतु पालन संगार के तीन कुत्ते [दुनियावी कुत्ता, दरवेश, दोहता भान्डा आदि] की पालना से बढ़ता होगा।
3. शुक्र शनि और वृहस्पत का उम्दा फल और नं. 2 का हर एक ग्रह चन्द्र समेत उत्तम फल देगा।
4. खाना नं. 7 के ग्रह की आयु [सूर्य 22 साल, वृहस्पत 6 साल आदि] के सात गुजरने पर केतु का प्रभाव उत्तम होता। नामदारी को मर्द बनाना और लावल्दो को ओलाद देने के सम्बन्ध में ऐसे व्यक्ति की आशीष विद्याता से कम न होगी। यद्यपि यह में सोने की ईट, जिल्ल या कानों में सोना जब तक कायम होगा तो संतान धन और केतु से सम्बन्धित चीजें [कान, रीढ़ की हड्डी, दर्द जोड़, टांगे, सुटने वगरह] पर केतु का प्रभाव उत्तम होगा।
5. घर में रखे सोने के बण्डर सोना बढ़ता जाएगा। फिर उच्चे बण्डर फिर और बढ़ता जाएगा। अपनी संतान अपने सात का दाहु पहाड़े बताने यादी होगी। ठीक बलाहकार होगी। परदेश में अधिक रहेगा। आदमी की बोली समझने यात्ता कुत्ता। चप का हुम्म भानने वाला लड़का। माता पिता का एहसान सारी उड़ न भूलेगा। सोना बढ़े। $1+1=2$ -- $2+2=4$ व्यक्ति
6. पिता को चन्द्र से ही तारता हो। 12-24-48 साला आयु तक उच्च हालत कर देगा।
7. संलग्न नर रंगन होगी जो उत्तम हालत की होगी।
8. मातृ खानदान को तारेगा। चन्द्र भरे घर का या उत्तम हो।
9. पिता खानदान को तारेगा [मंत्री समान हो] वृहस्पत या ग्रह उत्तम या खाना नं. 2 उत्तम हो।

मन्दी हालत :

1. मंदी हालत में माया की जड़ काट कर रख देगा। उनका तो खाना ही बरबाद कर देगा। वेशक केतु कायम ही हो और चन्द्र भाष भी मंदा हो चाहे चन्द्र कायम या नं. 9 में साय ही क्यों न हो।
2. नर संतान भरती जाए। शुक्र ग्रह [चन्द्र मंसल] नं. 3.
3. चोर छाकू फिर भी मंदा ही हाल होगा। शुक्र मंदा।

केतु खाना नं. 10

[चुपचाप अपने रस्ते पर चलने वाला भौकरज [मंदी हाल] भौका झनास [नेक हालत]

उजाइ बण्डर नुआफी हो देता।

घरे पेट दोलत न कंगल होता।

- | | |
|---|--|
| शक्की केतु दरवार शनि के, जान केतु खुद मंदा हो। | मंसल राजा चाहे सायी बैठे, भला दोनों ना होता हो। |
| शनि टेवे घर अच्छे होते, मिट्टी सोना दे जाती हो। | जुरे घरे में जर शनि जा रेठा, सोना मिट्टी खा। जाती हों। |
| ताकत शनि ग्रह धोखा होता, इन्चाक शनि पर होता है। | उज्र पापी 48 करता, चलन संभलते उम्दा हो। |
| शनि अंकला 6 घर बैठा, नारी खिलाड़ी होता हो। | तड़का पैदा 3 होके मरता, शनि पाया घर चौया हो। |
| उपाय वही उत्तम होगा, गिना केतु घर 8 का जो। | माया दोलत न केतु मंदा, नीच रिफ ओलाद का हो। |
| 1. दोलतमंद मगर नुरे कामो वाला, परई स्त्री [चाहे खूबसूरत मिट्टी] कफन का सवूत देगी। | |

219



इत्तरेण :

शनि के बुरे नं. 10 मन्त्रमा वर्ग जड़ पर केतु का निशान ।

नेक इत्तरत :

1. निए कदर भाई उजाड़ वह मुआफी देता जाए वह और भी बढ़ता जाएगा कंगाल न होगा ।
2. शक्की हालत फैसला धन पर मगर मालोदोलत पर कभी मंदा न होगा अमर हो तो रिफ्फ संतान पर दुय प्रभाव है ।
3. पुण्याप अपने रस्ते पर चलने याता कुत्ता ।
4. पर्नी, अगर युर चर्चि दूम्हूरत स्टी में फैक्स का सबूत देगी ।
5. मिट्टी से सोना मिले । 24 साल की आयु में लड़के ही लड़के शनि उत्तम हो या उत्तम शर्दे में शृंखला का फल ज्ञातन हा ।
6. नामी खिलाई होगा । खेल चाहे कोई भी हो । जिसमें चाल चलन की नेक बद खेले भी शब्दन्त है ।

मन्दी हालत :

1. मंदी हालत में केतु की मुत्तलका जानदार घीजो पर 24, 48 साल उपर तक मन्दा बरर देश नहीं के शनि मन्दा हो ।
2. ओलाद की बरवाई के उपर चलक पाप की उम्र । यह केतु यह 42 साल, दोनों 45 साल, केतु 48 साल, पहले चांदी का बर्तन [कूजा], शहद से भर कर रख दें और बाहर बीएने में दबा दें । 48 साल के बाद कुत्ता रखना जल्दी है जो सहायक नं. 8 में दिया हुआ उपाय सहायक होता । अकेला केतु मंदा हो तो मंगल से सहायता होती लेकिन जब मंगल भी 10 में हो तो नं. 3 दोनों का ही फल मंदा होगा । ऐसाज जनाही होगा । गृहस्थी कारोबार के हर जगह तीन काने - सोने को मिट्टी शनिश्चर मंदा या में घटे हों ।
3. तीन नर संतान नष्ट होनी अपर घन के लिए मंदा नहीं शनि नं. 4

केतु स्त्री नं. 11

| शीढ़ स्वभाव यत्ता कुत्ता ।

फिकर छोड़ गुजरी क्ष जो चली भई है ।
नलर रख तू आई की जो आ रही है ।

ताकत केतु हो ॥ गुना उम्द्य दीलत जर देता है ।

भल्य शनि या 3 घर आया, केतु दुय नृ होता हो ।

केतु गुरु 5-11 होते, जन्म लंग जो लड़का हो ।

यक्त केतु माता मर्ती, दोलत नगर द्युद बढ़ती हो ।

साथी शनि दुय तीजे रेठ, बरर केतु! क्ष मंदा हो ।

टेवे स्त्री चाहे कैसा बेठ, शर्त शनि न करता हो ।

जिस्म ज्ञ उस दुर्दा निनते, ताता अनुन ऐद हो ।

शनि में न होगी उत्ती, ओलाद मकान जड़ कटती हो ।

1. चाहे स्वयं बहुत दर्दिं और स्वयं केतु ओलाद व शनि का फल मंदा ही होगा । लेकिन बरर नं. 5 का राह किसी दूसरी शर्तों से मददगार हो तो ओलाद ॥ गुना उम्दा नेक होगी ।

5-11-23-36-48 याता ज्ञ में चन्द्र का फल मंदा या चिकर ही होगा और दोहे की झवन में असर की निशानी हुआ करेगी ।

इत्तर रेखा :

एथेरी के शाना नं. 11 [शामदन] पर केतु का निशान हो ।



नेत्र इस्तर :

1. जो मुजर पई वह अच्छी होगी । सदा आग का छायात रखना होगा । जट्टी जापदाद तो इतना न होपी जितनी स्वयं पैदा केरु एनदरबार के सिए एनयोग जब तक नं. 3 में नुप न हो । इरदन एक अंकता 2-11 की तरह बढ़ता होगा ।
2. मुर का आसन गाँड़ स्वभाव । कुत्ता स्वयं केतु की शक्ति [कामदेवो]
3. घन दौलत ॥ मुना उत्तम [शनि नं. 3]
4. ॥ मुना नेक माती ढालत ॥ 23-36-48 साला आयु में नं. 1 में आने पर उन्होंना प्रभाव - जब नर उहो/स्त्री उह मरे ।
5. राजदरबार के लिये राजयोग होगा - खाना नं. 3 में नुप हो ।

मन्दी इस्तर :

1. अपने लड़के के जन्म पर [ओरत के टेवे में लड़का और दोहरा] मनून माता न होगी । केतु की आयु तक चन्द्र का अपनी माता की नजर अल्क आयु और माता और संतान का आपसी मुजरें चन्द्र की जानदार और बहने वाली चीजें सभी असर लेंगे । यह संतान स्वयं नेक होगी ।
2. स्वयं धर्मी यहर रंतान नेप । जब यह नं. 5 का किसी प्रकार दूसरी शर्तों के कारण सहायक ही हो मगर स्त्री के टेवे में सब उठट या हर इस्तर में केतु का असर नेक और मुवारिक होगा ।
3. शुभ काम के समय पीछे से दी गई आवाज मरे असर की निशानी हुआ करेनी ।
4. चन्द्र का फल खासकर 5-11-23-36-48 साला आयु में मंदा नुप नं. 3 या सिफर ही होगा ।
5. मकान संतान दोनों की उन्नति न होगी मगर स्त्री के टेवे में शनि जब शनि मंदा हो । नुप होने पर केतु कभी मंदा न होगा ।
6. नर संतान मुर्दा पैदा होगी । शनि की चीजें सफेद मूर्ती खासकर यह तो स्त्री के सिरहाने रखकर सुवरे धर्म स्थान में सहायक होगा । स्त्री बचेगी । दूसरे साल फिर दोबाह नर संतान पैदा होगे । पहली संतान शायद ही जीवित पैदा हो ।

केतु खन्ना नं. 12

[ऐश्वर्य व्याहर, चट्टी विष्वस्त्र]

भरे जर करीता चाहे बच्चों से तेह ।

ऐवज भर मुर का तू किस जन्म देष्ट ।

- | | |
|---|--|
| आप बढ़ता सायी बढ़ते, बढ़ता कुल परिवार हो । | मर्द माया होने फलते, फलता सब गुलजार हो । |
| ठंच केतु यह खाली रेत, सुख गृहस्ती बढ़ता हो । | शनि शुक्र और मुल तानों का, असर मुवारिक देता हो । |
| मदद धाई न मंगल जिनते, लड़का जाती खुद तारता हो । | शर्तं तरक्की केतु लेते, मकान सफर फल उम्मा हो । |
| शत्रु जिन चाहे सायी रेत, औलाद केतु न मंदा हो । | टेवे यह का दुश्मन सायी ¹ जहर केतु का देता हो ² । |
| भौलाद न देता होगी शर्की, मंदा केतु खुद होता हो । | केतु 12 ना असर जो देवे, निशानी दूजे जा देता हो । |
| भौलाद द्वन्द धन दोलत अपने, सुखउत घरे आ भरता हो । | जबर दो तरफी पाप जो मंदा, बाहर टेवे से होता हो । |
| भौलाद उत्ताय राह होना, दूप अंगूठा चूतता ³ हो । | मंगल यह से हमद हो भरता, लड़के तरफ़े चार । |
| | शत्रु रेता खुद रक्षा करते, फले फूले गुलजार । |

1. यह के शत्रु - शुक्र सूर्य मंगल । केतु के दुश्मन - चन्द्र मंगल । [जैन जब यह नं. 6 के साथ उसके दुश्मन सूर्य चंद्र या मंगल हो केतु का असर मंदा होगा ।]

221

2. जब तक चाहत चलन उम्दा रहे मगर ऐयश तर्पियत उम्दा फल होगा ।

3. जब नर औलाद तो कायम मगर चन्द्र माय दौलत शार्ति का फल मंदा हो रहा हो ।

[अ] औरत के टेंये में खुद केतु का प्यार या उम्बन्ध पैदा करना मददगार होगा ।

[ब] जब नं. 6 में एहू के दुश्मन तो केतु बरबाद लेकिन जब नं. 2 के दुश्मन हो तो केतु का उम्दा असर सिर्फ 1/3 दो लड़के होगे ।

इस्तर रेखा :

हथेली के खाना नं. 12 में केतु का निशान ।



नेक हालत :

1. तरक्की की शर्त है तवदीली की नहीं ।

2. केतु जब नं. 12 का फल जाहिर न करे नं. 2 के सुन्हल में या नं. 2 का फल देगा । निशानी नं. 2 के सम्बन्धित चीजों से और वृहस्पत के ग्रह की तर्पियत होगी । आदमी के यहां संतान के जन्म दिन या उनकी 24 साल अंत से इज्जत तथा शूर जगा होगे । ऐसे आरम तथा घन होगा ।

3. शनि शुक्र वृहस्पत तीनों का उत्तम फल अगर मंगल बड़ा भाई ताया भाई भासू अप्पि की सहायता न होगी । सिर्फ लड़का तारेगा । तरक्की की शर्त होगी । मकान सुफ़न का फल उत्तम हो ।

4. भरने लगे तो एक झोले में ही कर्बला भर दे । नर संतान 6 से 12 जो सेहत और दौलत में उत्तम हो [खाना नं. 12 कोई दुश्मन ग्रह ही सारी हो] वर्षत कि केतु सेवा या केतु कायम रहे ।

5. मंगल और राहू हरद करेंगे या उनकी मुतलका आशेया या रिश्तेदार मदद न करेंगे मगर केतु अपने लड़के केतु की मुतलकी व रिश्तेदार हर तरह से बरकत लाएंगे और हर तरफ बरकत होगी ।

6. दौलतमंद परिवार का मालेक, जद्दी विरला कुदरतों हक होगा । केतु का फल ऊंच होगा । वृहस्पति सुख में सब तरफ बरबुद अपना आप, आत औलाद, रिश्तेदार सभी मुलगार में शानु शोकत जब तक ऐसा फलन्दी कायम रहे [जब नं. 6 खाती एहू नं. 6 अफेल्य]

मन्दी हालत :

1. टेंये याले पर कम्भी मन्दा असर ना होगा ।

2. औलाद नहीं कर्की केतु बरबाद ।

3. जब केतु का त्रिलक्ष्मुक नेक और उम्दा हो औलाद बरबाद या नदारद जब नं. 6 में एहू के साथ हो ।

[1] मंगल तो औलाद 28 साल उपर तक नदारद

[2] चन्द्र तो औलाद 32 साल उपर तक नदारद

[3] सूरज तो औलाद 42 साल उपर तक नदारद

[4] शुक्र तो औलाद 25 साल उपर तक नदारद मगर जब ऐयश तर्पियत हो तो औलाद की बरकत होगी और केतु मन्दा न होगा । ऐसा आदमी मंगल वद के इन्सान से मिलता जुलता होगा ।

4. केतु नं. 12 में दोता हुआ भी येमानी होगा । अगर किसी दूरारे

केतु [औलाद] की जड़ कटती होगी । केतु वेशक नं.

उच्च फल का मुकर्रर है मधर जब एहू नं. 6 के साथ नुप भी तो केतु पर कोई नुप असर ना होगा । हालांकि नुप और केतु दोनों बाह्य दुश्मन हैं । खाना नं. 6 में एहू के साथ एहू के ही दुश्मन [सूरज, मंगल, शुक्र] के साथ एहू के दोस्त या ज्यके एहू के बरबर के ग्रह हो तो केतु नं. 6 पर कोई नुप असर ना होगा वेशक वह उह एहू के दोस्त या एहू के बरबर के केतु के दुश्मन ही क्यों न हो ।

नं. 6 में एहू के साथ उसके दुश्मन [चन्द्र, शुक्र, मंगल]

222

' उहो को पद्द ढे केतु का नेक अहर मी हो तो भी थोसाद
नहना चिर्क द्वे तड़के कायम ।

सूरज हो या नं.2 में दुश्मन [चन्द्र या मंगल शुभ]
चन्द्र नं.2

बिर्गी सापलद हे भयान के लिए ताइनीन या सापलद या मफन ही बना-बनाया खरीद तो ऐहे टेये खला भी सापलद से दूर
न होगा ।

Free by Astrostudents